ओ३म्

वार्षिक विवरण

१९६४-६५

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
प्रो० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

दिसम्बर १९९५ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :
जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह
	—श्री सूर्यदेव (जनवरी १६६५ से)
कुलपति	—डा० धर्मपाल
आचार्य एवं उपकुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री हरवंशलाल शर्मा
कुलसचिव	—प्रो० जयदेव वेदालंकार
डीन, प्राच्य विद्या संकाय	—प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री
डीन, मानविकी संकाय	—प्रो० विष्णुदत्त राकेश
डीन, विज्ञान संकाय	—प्रो० एस. एल. सिंह
डीन, जन्तु विज्ञान संकाय	—प्रो० डी. के. माहेश्वरी
डीन, छात्र कल्याण	—प्रो० डी. के. माहेश्वरी
वित्त अधिकारी	—श्री जयसिंह गुप्ता
संग्रहालयाध्यक्ष	—डा० कश्मीर सिंह राही
	—प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री (मई ६५ से
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीश प्रसाद विद्यालंकार

———

सम्पादक-मण्डल

विषय-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ संख्या

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
२५-	कम्प्यूटर केन्द्र	१०२
२६-	पुस्तकालय विभाग	१०५
२७-	राष्ट्रीय छात्र सेना (एन.सी.सी.)	१०६
२८-	विश्वविद्यालय छात्रावास	१११
२९-	शारीरिक शिक्षा विभाग	११२
३०-	राष्ट्रीय सेवा योजना	११५
३१-	कन्या गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय देहरादून	११७
३२-	वित्त एवं लेखा	१२०
३३-	विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान का विवरण	१२१
३४-	आय का विवरण	१२३
३५-	व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)	१२५
३६-	विश्वविद्यालय के शिक्षक/शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की सूची	१२८
३७-	दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले विद्यार्थियों की सूची	

जस्टिस महावीर सिंह
परिद्रष्टा
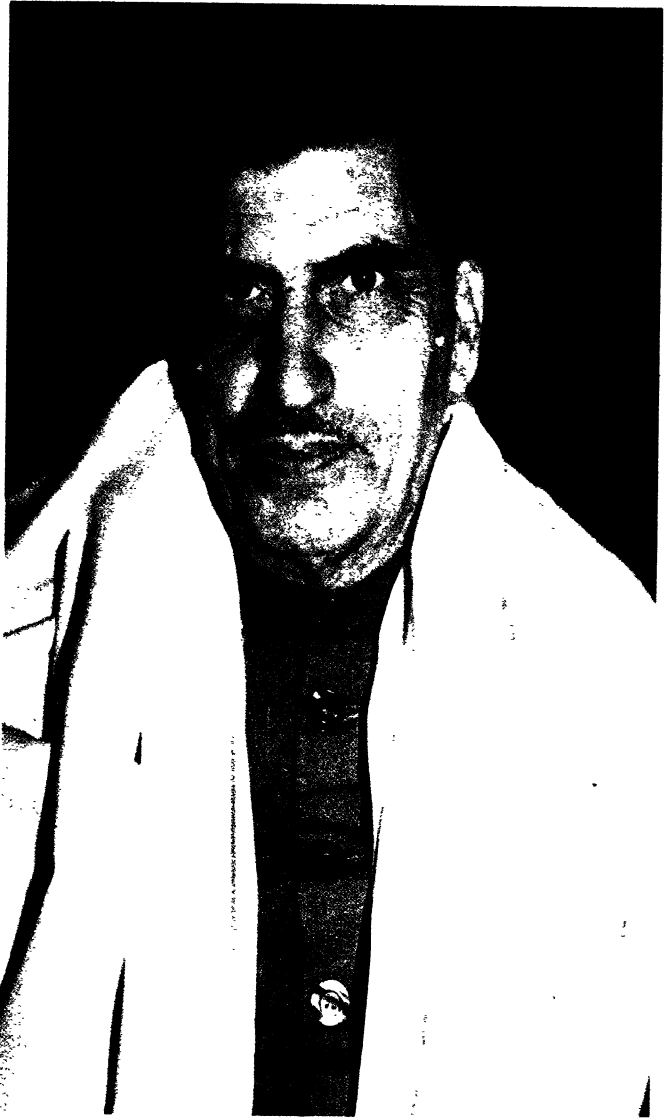
श्री सूर्यदेव
कुलाधिपति

आमुख

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के ६५ वर्ष पूरे कर रहा है। भारत में पुनर्जागरण और निर्माण की मशाल जलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के समानान्तर भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्त्तन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के रूप में किया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अध्यापन-अनुसन्धान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी प्रशंसा महात्मा गाँधी, दीनबन्धु एण्ड्रूज, पण्डित मदनमोहन मालवीय, मान्य गोखले, महाकवि रविन्द्रनाथ, नरेन्द्र देव, जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा इन्दिरा गाँधी जैसे लोकनायक मनीषियों ने की है। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद विज्ञान, वैदिक ज्ञान, प्राच्य विद्या और मानविकी के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय में कुलपति जी के आमन्त्रण पर इस वर्ष संस्कृत विभाग में डा० रमाकान्त शुक्ल, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा, आचार्य ज्ञानचंद शास्त्री, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने विशिष्ट व्याख्यान दिए।

हिन्दी विभाग में वृन्दावन के श्री जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, नई दिल्ली के डा० गंगा प्रसाद विमल, अलीगढ़ के डा० तारकनाथ बाली आदि अनेक विद्वान् पधारे तथा अमूल्य व्याख्यान दिए।

इस वर्ष के दीक्षान्तोत्सव पर विश्वविद्यालय में माननीय डा० शिवराज पाटिल, लोकसभाध्यक्ष, भारत सरकार ने दीक्षान्त भाषण पढ़ा।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग ने अपने प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत समीपस्थ ग्रामों में शिक्षा, घरेलू उपकरणों के प्रयोग, जनसंख्या पर रोक तथा स्वरोजगारों की सूचना आदि कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया ।

विश्वविद्यालय के अनेक विद्वान प्राध्यापक विदेशों में विशिष्ट व्याख्यानों के लिये आमन्त्रित किये गये । डा० कौशल कुमार जापान गये ।

विश्वविद्यालय के गणित विभाग के प्रो० डा० एस०एल० सिंह डीन-विज्ञान संकाय को रामानुजम् मैथमेटिकल सोसाइटी ने २५ से २७ मई १९९५ तक चले दशम् अधिवेशन में उनकी गणितीय उपलब्धियों हेतु सम्मानित किया गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय बायोग्रेफिकल सेन्टर कैम्ब्रिज, इंग्लैण्ड की एडवाइजरी कौन्सिल का सदस्य चुना गया ।

इस सत्र से विश्वविद्यालय में कला संकाय में स्नातक स्तर पर कम्प्यूटर, गणित, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान पाठ्यक्रम का तथा विज्ञान संकाय में औद्योगिक सूक्ष्म जीव विज्ञान पाठ्यक्रम का विधिवत् अध्यापन प्रारम्भ किया गया ।

इसी सत्र से मनोविज्ञान विभाग के अन्तर्गत एक महत्त्वपूर्ण दो वर्षीय पाठ्यक्रम पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स इन पर्सनल मैनेजमेण्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स प्रारम्भ हुए ।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन-प्रकाशन तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों तथा शोध समितियों में भाग ले कर अपने पद की गौरववृद्धि की । कुछ शिक्षकों को प्रोन्नति मिली । मैं सभी को बधाई देता हूँ । विभागों के प्रगति विवरण में अलग-अलग इन विद्वानों के निजी क्रिया-कलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है ।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के

अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रो० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव

गुरुकुल काँगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ६५ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में सँजो दिया और फिर इन्हीं शाखाओं से नई टहनियां फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धी एवं उपयोगिता से भारत-वर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर बाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदान्त की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्संदेह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रांति का स्रोत महर्षि दयानंद जी सरस्वती के

डा० धर्मपाल
कुलपति
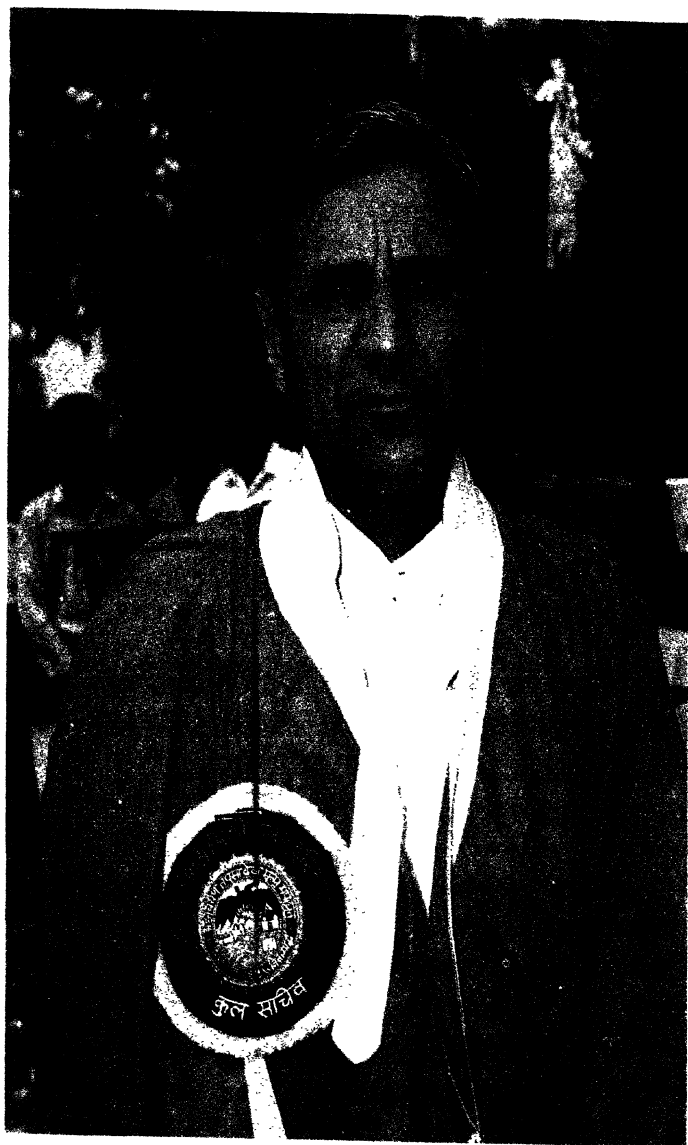
डा० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव

शिक्षा सम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रथ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया।

१९५२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चंद्र और इंद्र (दोनों स्वामी श्रद्धानंद जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरंतर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकर्षित किया। प्रमुख विदेशी आगंतुकों में सी०एफ०ए० एण्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी बेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में बार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया।

इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गांधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा–सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द जी हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे —

१. वेद महाविद्यालय
२. साधारण (कला) महाविद्यालय
३. आयुर्वेद महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएं इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहां इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार

से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुना लाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गये।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्यामसिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेद सिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्या-

लंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरु गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गयी। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गयी। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम०ए० कक्षायें विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच डी. (शोध व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीर सिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर०सी० शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्यवसायिक शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय को शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ९५ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिंदी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्यों में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक

एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्व कुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहां स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

विद्यालय विभाग

प्रथम कक्षा से बारहवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्या विनोद का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद विद्यालय (प्राच्य संकाय)

अभी तक प्रथम वर्ष से द्वितीय वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद, संस्कृत, दर्शन, इतिहास तथा योग में एम०ए० और पी-एच०डी० को उपाधियां प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय (मानविकी संकाय)

इसमें प्रथम वर्ष से द्वितीय वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम०ए० तथा पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की जा सकती है। सत्र ९२-९३ के छात्राओं के लिए भी एम०ए० कक्षाओं की अलग से व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही बी०ए० (अलंकार सामान्य) का पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ हुआ है।

विज्ञान महाविद्यालय (विज्ञान संकाय)

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० को उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, कम्प्यूटर और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ गणित, भौतिकी, रसायन में चल रही हैं। विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान संकाय की अलग व्यवस्था की गयी है जिसमें रसायन शास्त्र के साथ जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, औद्योगिक सूक्ष्म जीव विज्ञान पढ़ाये जा रहे हैं। इस संकाय में बी०एस-सी० के अतिरिक्त माइक्रो-बायोलोजी में स्नातकोत्तर तथा पी-एच० डी० की व्यवस्था है। साथ ही जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान में पी-एच०डी० उपाधि हेतु भी व्यवस्था है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिए जाने के बाद इस महाविद्यालय में पर्याप्त विस्तार हुआ है तथा भविष्य में इसके तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जन-कल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय गुरुकुल के जो भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत पाँच वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आँशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत सात वर्षों से चल रहा है। अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा का एक वर्षीय प्रमाण-पत्र' पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रजी बोलना सिखलाया जाता है।

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त एक प्रोजेक्ट वनस्पति विज्ञान विभाग में चल रहा है। साथ ही शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों — परिद्रष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देश में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसारित है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर
कुलपतिप्रतिवेदनम्

ओ३म्

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। (यजुर्वेद १९/३९)

श्रद्धेया! संन्यासिनः, सम्मान्याः लोकसभाध्यक्षाः श्री शिवराजपाटिल-महोदयाः, परिद्रष्टृपदभाजः श्रीमहावीरसिंहमहोदयाः, कुलाधिपतयः श्री-सूर्यदेवमहाभागाः, सार्वदेशिकार्यप्रतिनिधिसभाप्रधानापदभाजः श्रीरामचन्द्र-वन्देमातरम् महाभागाः, मञ्चस्थाः विद्वांसः- नवस्नातकाः, ब्रह्मचारिणः, विश्वविद्यालयस्य सहयोगिनो नराः, नार्यश्च ।

अद्य गुरुकुल काँगड़ीविश्वविद्यालयस्य चतुर्नवतितमे दीक्षान्तसमारोहक्रमे समागतानां महानुभावानां स्वागत व्याहरन् अमन्दमानन्दमनुभवामि । सहृदयानां मान्यानामातिथ्यक्रमे यदि जायेत क्वचित् काचित् त्रुटिस्तर्हि नूनं सा मर्षणीया ।

हे प्रियस्नातकाः ! देवानामीप्सिततमं गुरुकुलमिदममरहुतात्मना पुण्य-श्लोकेन स्वामिश्रद्धानन्देन चतुर्नवतिवर्षेभ्यः प्राग् भगवत्याः भागिरथ्या पवित्रे तटे स्थापितम् । एतस्माद् गुरुकुलाद् विद्यापारङ्गता देशप्रेमरससिक्ताः ये स्नातका उपाधिवन्तः समभवन् तेषु प्रतिष्ठावन्तो लब्धकीर्तयः पं० इन्द्रविद्यावा-चस्पति-आचार्यरामदेव- स्वामिसमर्पणानन्द- पं० अभयदेव- आचार्यप्रियव्रत-डॉ० सत्यकेतु- पं० चन्द्रगुप्त- डॉ० रामनाथ वेदालंकार- स्वामिधर्मानन्द-प्रभृतयः सम्प्रत्यपि गुरुकुलस्य कीर्तिं सर्वासु दिक्षु प्रसारयन्ति । अस्माक प्रत्ययोऽस्ति द्रढीयान् यन्नवाः स्नातका इत उपाधि गृहीत्वा विश्वविद्यालय यशोगाथां गायं गायं स्वकर्मसु दक्षतां प्रकटयन्तः प्रतिष्ठामवाप्स्यन्ति ।

दीक्षान्त समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डा० पाटिल

हे आर्यबान्धवा: ! अस्मिन् दीक्षान्तसमारोहावसरे विश्वविद्यालयस्य संक्षिप्तं प्रगतिवृत्तं भवतु नाम भवतां कर्णगतमिति विमृश्य समासेनोदीर्यते। यद्यपि अर्थबाधया समुन्नतिः प्रबाध्यते तथापि गुरुकुलस्य प्रोन्नतिर्न हीयते। साम्प्रतममुष्मिन् विश्वविद्यालये चत्वारः संकाया: प्रवर्धमानास्सन्ति ते प्राच्यविद्या-मानविकी-विज्ञान-जीवविज्ञानसंकाया: सन्ति । एकैकस्य संकायस्य विभागानां विवरणं प्रस्तूयते ।

प्राच्यविद्यासंकाय:

१— वेदविभाग: – वेदविभाग: डॉ० मनुदेवबन्धुमहोदयस्य अध्यक्षतायामुन्नतिपथमारोहति । अस्मिन् विभागे प्रोफेसरपदभाग् रामप्रसाद वेदालंकारो विराजते । अयमेव आचार्यपदमुपकुलपति-पदञ्चालङ्करोति । वेदविभागे वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-वेदाङ्गादीनां सर्वाङ्गीणा शिक्षा दीयते । कर्मकाण्डपरम्परां द्रढयितुं डॉ० मनुदेव बन्धुमहोदयस्य निदेशकत्वे वैदिकप्रयोगशालाऽपि प्रवर्तते । अस्मिन्नेव विभागे विश्वविद्यालयस्यानुदानसहायतया वैदिकवाङ्मय-निर्वचनकोषनाम्न्यां बृहत् शोधयोजनायां डॉ० रूपकिशोर-डॉ० अशोककुमारौ कार्यं कुरुतः । अस्मिन्नेव विभागे एकवर्षीय वैदिक-कर्मकाण्ड-प्रमाणपत्रपाठ्यक्रमोऽपि प्रचलति । अत्र डॉ० दिनेशचन्द्रः अध्यापने शोधकर्मणि च निरतोऽस्ति । डॉ० मनुदेवस्य निर्देशने द्वौ छात्रौ पी–एच०डी० उपाधिभ्यां विभूषितौ। वेद विभागेन वेदमन्त्रोच्चारण-प्रतियोगिताऽपि समायोजिता ।

२—संस्कृतविभाग: – संस्कृतविभागे प्रो० वेदप्रकाशशास्त्री अध्यक्षपदमलङ्करोति। अयमेव सम्प्रति प्राच्यविद्यासंकायस्य अध्यक्षपदभार वहति। अस्मिन् विभागे डॉ० सोमदेव, डॉ० रामप्रकाशौ रीडरपदभाजौ स्तः। प्रवक्ता चास्ति डॉ० ब्रह्मदेव: । अस्मिन् विभागे पञ्चविंशतिः शोधछात्रा: शोधकर्मरता: । अस्मिन्नेव विभागे संस्कृतदिवससमारोह: सम्मानित: । अस्य विभागस्य प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणा सह अन्ये सहयोगिन: अखिलभारतीयप्राच्यविद्यासम्मेलने भागं ग्रहीतुं गता:। प्रो० वेदप्रकाश शास्त्रिण: निदेशकत्वे त्रिदिवसीया राष्ट्रिया वैदिकसंगोष्ठी समायोजिता । प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणः अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञरूपेण तैस्तैर्विश्वविद्यालयैः सादरमामन्त्रिता: ।

३—दर्शनविभाग: — दर्शनविभाग: डॉ० विजयपालशास्त्रिणोऽध्य-क्षतायां प्रगतिमान् वर्तते। अस्यैव विभागस्य प्रोफेसरपदभाग् डॉ० जयदेव वेदालंकार: सम्प्रति विश्वविद्यालयस्य कुलसचिवपदमलंकरोति। अस्मिन्-विभागे डॉ० त्रिलोकचन्द्र-डॉ० उमरावसिंहविष्टौ कार्यं कुरुत:। अत्र प्राच्य-पाश्चात्यदर्शनशास्त्रे शोधकार्यं प्रचलति।

४—प्राचीनभारतीयेतिहासविभाग: – विभागाध्यक्ष: डॉ० कश्मीरसिंह: चारुतया कार्यं निभालयति। विभागे प्रोफेसरपदभाग् डॉ० श्यामनारायण-सिंहोऽस्ति। डॉ० राकेशशर्मा प्रवक्तृपदे कार्यं करोति। इतिहासविभागा-न्तर्गत: पुरातत्त्वसंग्रहालय: डॉ० कश्मीरसिंहस्य निदेशकत्वे चारुतयोन्नति करोति।

५—योगविभाग। – डॉ० ईश्वरभारद्वाजस्याध्यक्ष्येऽयं विभाग: प्रचलति। अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तरश्रेण्यां पाठ्यक्रम: समारब्ध:। सम्प्रति युगानु-रूपं अस्य विभागस्य महती ख्याति: प्रवर्धते। समये-समये ईश्वरभारद्वाजस्य आकाशवाणीत: वार्त्ता: प्रसरन्ति। अयं सम्मेलनेष्वपि भागं गृह्णाति।

६—श्रद्धानन्दशोध संस्थानम् – अस्माकं विश्वविद्यालये अभिनवं श्रद्धानन्दशोध संस्थानं संस्थापितम्। अत्र डॉ० भारतभूषण: अध्यक्षपदभारं वहति। डॉ० महावीरस्तत्रैव रीडरपदभागस्ति। आशासे भविष्यति काले बहुलतया शोधकार्यं प्रचलिष्यति।

मानविकीसंकाय:

७—हिन्दीविभाग: :– हिन्दीविभागे डॉ० सन्तरामोऽध्यक्षपदम-लंकरोति। अस्मिन् विभागे डॉ० विष्णुदत्तराकेश आचार्यपदभारं वहन् मान-विकी संकायस्याध्यक्षपदमपि सनाथीकरोति। अस्मिन् विभागे डॉ० भगवान् देव पाण्डेय-डॉ० ज्ञानचन्द्र रावलौ रीडरपदभाजौ। डॉ० कमलकान्तबुधकर: पत्रकारितां स्वरुचि तनुते। डॉ० भगवान् देवपाण्डेय: अस्मिन्नेव वर्षे डी० लिट० उपाधिना आत्मान घोषयति।

८—आंग्लभाषाविभाग: – डॉ० नारायणशर्मण: अध्यक्ष्येऽयं विभाग: प्रचलति। अस्मिन् विभागे समेषां प्राध्यापकानां निर्देशकत्वे शोधकार्यं प्रचलति।

अस्मिन् विभागे प्रो० सदाशिवभगत, डॉ० श्रवणकुमार शर्मा, डॉ० अम्बुजशर्मा, डॉ० कृष्णावतारादयः कार्यनिरताः सन्ति। डॉ० अम्बुजकुमारः शिष्टपरिषदः सदस्योऽस्ति।

९—मनोविज्ञानविभागः :— प्रो० ओम्प्रकाशमिश्रस्य अध्यक्षतायामयं विभागः कार्यं करोति। अस्मिन् विभागे "इकोलोजिकल पर्सपेक्टिव एण्ड बिहेवियर" विषये एकं राष्ट्रियं विद्वत्सम्मेलनमभूत्। अत्र शताधिकैर्विद्वद्भिः भागो गृहीतः। अस्मिन्नेव विभागे अस्मिन् वर्षे 'पर्सनल मैनेजमेण्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स" विषये अभिनवः पाठ्यक्रमः समारब्धः। सम्प्रति पञ्चविंशतिः छात्राः अध्ययनरताः सन्ति। अस्मिन् विभागे डॉ० सतीशचन्द्र धमीजा, डॉ० एस०के० श्रीवास्तव, डॉ० चन्द्रपाल खोखर प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति।

१०—प्रौढ़शिक्षाविभागः :— अस्मिन् विभागे डॉ० रामदत्त शर्मा अध्यक्षपदभार वहति। अयं विभागः साक्षरतावर्धनाय नित्यशः कार्यं करोति। मध्ये-मध्ये प्रतियोगिता अपि समायोजयति। डॉ० जसवीरसिंहमविकः सहायकरूपेण कार्यं करोति।

विज्ञानसंकायः

११—गणितविभागः :— सम्प्रतिविभागाध्यक्षपदे प्रो० विजयपालसिंहो-राजते। विभागेऽस्मिन् डॉ० श्यामलालसिंहः प्रोफेसरपदं वहन् विज्ञान-संकायस्य अध्यक्षपदभारमपि वहति। प्रो० श्यामलालसिंहेन अस्मिन् वर्षे बहुषु स्थानेषु विद्वत्सम्मेलनेषु भागो गृहीतः। अस्मिन् विभागे डॉ० वीरेन्द्र अरोड़ा, डॉ० विजयेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ० महीपाल सिंह, डॉ० गुलाटी प्रभृतयः कार्यं कुर्वन्ति।

१२—भौतिकविज्ञानविभागः :— डॉ० हरिश्चन्द्रग्रोवरः अध्यक्षपदम-धितिष्ठति सम्प्रति अस्मिन्विभागे राष्ट्रियस्नातकभौतिकीपरीक्षा समायोजिता। शिलांगवासिना डा० पी०एन० राममहोदयेन विभागे विशिष्टं व्याख्यानं दत्तम्। अस्मिन् विभागे डा० वाई० सिंह महोदयेन विद्वानतिथि-रूपेण कार्यमकारि। डा० बी०पी० शुक्ल, डा० राजेन्द्र कुमार, डा० पी० पी० पाठक, डा० यशपालादयो विभागे कार्यव्यापृतास्सन्ति। विभागेऽभिनवा प्रयोगशाला निर्मीयते।

१३—रसायनविज्ञानविभागः – डॉ० कौशलकुमारो विभागाध्यक्षपदे विराजते । अस्मिन्विभागे नवीना प्रयोगशाला विनिर्मिता । अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तर प्रमाणपत्रपाठ्यक्रमः प्रचलति । अनेन पाठ्यक्रमेण विभागस्य महती ख्यातिः प्रथिता । अस्य विभागस्य छात्राः शीघ्रमेव जीविकां लभन्ते । डॉ० ए०के० इन्द्रायणस्य शोधपत्रं एशियन जॅरनल ऑफ कैमिस्ट्री पत्रिकायां प्रकाशितम् । अस्यैव विदुषः आकाशवाणीतः वार्ताः समये-समये प्रसरन्ति । डॉ० रजनीशदत्त-कौशिकस्य निर्देशने त्रिभिश्छात्रैः लघुशोधप्रबन्धाः प्रस्तुताः । डॉ० श्रीकृष्णस्य निर्देशकत्वे छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति । अस्मिन् विभागे प्रतिवर्षं प्रो० ओम्प्रकाशसिन्हा बलिदानदिवसः समायोज्यते । डॉ० इन्द्रायणस्य 'फण्डामेण्टल्स इन कैमिस्ट्री' नामको ग्रन्थः प्रकाशनतामेति । गर्वस्यविषयोऽयमिन्द्रायणस्य नाम "इण्डियन सोलिडेरिटी काउन्सिल" पुरस्काराय प्रस्तावितम् ।

१४—कम्प्यूटरविज्ञानविभागः – विगतसप्तवर्षेभ्यः कम्प्यूटर विज्ञानविभागः कार्यं करोति । अस्यविभागस्याध्यक्षपदं डॉ० विनोदकुमारः अलंकरोति । अत्र कर्मजितभाटिया-सुनीलकुमार-दुर्गेशकुमारादयः प्रवक्तारः सन्ति । वेदव्रतद्विजेन्द्रपन्तौ तकनीकोसहायकौ स्तः । अस्मिन् वर्षे विभागे नवीनपाठ्यक्रमस्य समावेशः कृतः । विभागीयप्राध्यापकानां शोधलेखाः प्रकाशनाय प्रेषिताः । डॉ० विनोदकुमारः विभिन्नेषु शोधसम्मेलनेषु च भागं गृह्णाति । अस्मिन् वर्षे अलंकारसामान्यपाठ्यक्रमे कम्प्यूटर विषयस्य प्रावधानं कृतम् ।

जीवविज्ञान संकायः

१५—वनस्पतिविज्ञानविभागः – डॉ० पुरुषोत्तमकौशिकः अध्यक्षपदमलंकरोति । अस्मिन् विभागे डॉ० डी०के० माहेश्वरी प्रोफेसर पदभारं वहन् जीवविज्ञानसंकायस्याध्यक्षपदमपि अलंकरोति । अस्मिन् विभागे डॉ० गंगाप्रसादगुप्त, डॉ० नवनीतौ कार्यनिरतौ स्तः । विभागेऽस्मिन् समये-समये विदुषां भाषणानि समायोज्यन्ते । शोधयोजनाप्यत्र प्रचलति । प्रो० डी०के० माहेश्वरी भारतस्यानेकैः विश्वविद्यालयैः विशिष्टभाषणाय आमन्त्रितस्तथैव जर्मनविश्वविद्यालयेनापि समाहूतः । प्रो० माहेश्वरीनिर्देशने द्वाभ्यां छात्राभ्यां शोधकार्यं कृतम् ।

१६—जन्तुविज्ञानविभागः – सम्प्रति विभागे डॉ० ए०के० चोपड़ा अध्यक्षपदमलंकरोति । प्रोफेसरपदभाग् डॉ० बी०डी० जोशी महोदयः विभागस्य समुचितामुन्नतिं करोति । अस्य विभागस्य विभिन्नेषु कार्यक्रमेषु महतीभूमिका दरीदृश्यते । अत्र शोधकार्यं सम्यक् प्रसरति । विभागे डॉ० तिलकराजसेठ, डॉ० दिनेशभट्ट, डॉ० देवराजखन्नाप्रभृतयः सन्ति कर्मासक्ताः । विभागे नियमानुसारं शोधपत्रिका प्रकाश्यते । विभागेऽस्मिन् प्राध्यापकानां बृहच्छोधयोजनाः प्रचलन्ति । अस्मिन् विभागे सद्भावना निबन्धप्रतियोगिता समायोजिता । राष्ट्रियसेवायोजना कार्यक्रमं डॉ० ए०के० चोपड़ा, डॉ० देवराजखन्नामहोदयौ चारुतया प्रचालयतः ।

१७ - पुस्तकालयविभागः – गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालयस्य पुस्तकालयः देश-देशान्तरेभ्यः समागतानां शोधकर्तॄणामुत्कर्षस्य केन्द्रमस्ति । प्राच्यविद्यासम्बन्धिनः दुर्लभाः ग्रन्थाः अत्र सहजतया प्राप्यन्ते । अस्मिन् पुस्तकालये वैदिकसाहित्य-संस्कृतसाहित्य-दर्शनशास्त्रादीनां हस्तलिखिताः ग्रन्थाः द्रष्टुं शक्यन्ते । अत्र भारतवर्षस्य सर्वासां भाषाणां पत्रिकाः समागच्छन्ति । पुस्तकालये निर्धनमेधाविछात्राणां कृते जीविकाव्यवस्थापि प्रचलति । भूतपूर्वकुलपतेराचार्यप्रियव्रतस्य नाम्ना त्रिसहस्राधिकाः ग्रन्थाः पुस्तकालये उपहारीकृताः परिवार जनैः । डॉ० जगदीशविद्यालंकारस्य आध्यक्ष्ये पुस्तकालयः दिने-दिने उन्नतिपथमधिरोहति । अस्मिन् वर्षे श्री सत्यदेव विद्यालंकारलिखितः स्वामिश्रद्धानन्दाख्यो ग्रन्थः पुनरपि प्रकाश्यते ।

१८—पुरातत्वसंग्रहालयः – पुरातत्त्वसंग्रहालये संग्रहीतानां पाण्डुलिपीनां परिरक्षणाय प्रकाशनाय च केन्द्रीयमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयेन अनुदानं दत्तम् । संग्रहालये नैकाः प्राचीनः मुद्राश्च सन्ति । परसहस्राः जनाः सग्रहालय द्रष्टुं गुरुकुलमुपागताः । पाण्डुलिपिग्रन्थानां परिरक्षणाय संरक्षरणयन्त्रमपि संग्रहालये विद्यते ।

१९—कम्प्यूटरकेन्द्रम् – अस्माकं विश्वविद्यालये कम्प्यूटरकेन्द्रं प्रचलति । कम्प्यूटरकेन्द्राध्यक्षः श्री दिनेशविश्नोई अस्ति । श्री अचलगोयलः प्रणाली विश्लेषकपदे कार्यं करोति । श्री मनोजकुमार, श्री महेन्द्रअसवाल, श्री अरुणकुमार, श्री शशिकान्त, श्री राजेन्द्रादयः केन्द्राभ्युदये साहाय्यं कुर्वन्ति । अस्मिन् वर्षे कम्प्यूटरकेन्द्रस्य विस्तारोऽपि जातः । कम्प्यूटर-उपकरणानि अस्मिन् वर्षे बहूनि क्रीतानि ।

विश्वविद्यालयस्य बहुधा विस्तारं कर्तुं भवननिर्माणे रुचिविशेषः प्रादुर्भवति। मुद्रणकार्यालयस्य पूर्वस्यां दिशी नूतनं भवनं निर्मितम्। अस्मिन्नेव वर्षे मानविकी संकायस्य भवनस्य निर्मितिर्जाता। शिक्षाविस्तारं कर्तुं महिला-छात्राणां कृते पृथग् रूपेण महिलाविद्यालयः प्रचलति।

प्रियस्नातकाः! येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां रक्षणाय, राष्ट्रैकतायाः अखण्डतायाः चरित्रस्य धार्मिकसद्भावस्य च परिरक्षणाय गुरुकुलीयशिक्षा-पद्धतिरुद्भाविता सञ्जीविता च। तानि जीवनमूल्यानि भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं प्रदास्यन्ति। यद्यपि नात्र संशयो विद्यते यद् वर्तमाने काले जटिलाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति। परं भवतामात्म-विश्वासो गुरुजनानामाशीर्वादेन सह निश्चित जीवनमुन्नेष्यति। युष्माकं जीवनं ससुखं कर्तुं परेशं महेशं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां शिक्षकानां कर्मचारिणां ब्रह्मचारिणां अभिभावकानाञ्च सहयोग एवं प्रशस्यते। कुलाधिपति-श्रीसूर्यदेवमहोदयानां, श्री महावीरसिंह परिद्रष्टृमहोदयानां निर्देशनेऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे महाजनाः सज्जनाः।

नूनमद्यास्माकं सौभाग्योदयो जातो यदस्माकं मध्ये भारतस्य लोकसभाध्यक्षाः श्रीमन्तः शिवराजपाटिल महोदयाः दीक्षान्तभाषणाय शोभन्ते। एषां सम्पूर्णं जीवनं राष्ट्राय समर्पितं विद्यते। राजनीतिक्षेत्रे भवतां कार्यपद्धतिः वृक्षच्छायेव समेषां परितापहर्त्री विद्यते। भवता गुरु-कुलमुपेत्य गुरुकुलीयशिक्षां प्रति निजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवताम् अपरिमितेन साहाय्येन विश्वविद्यालयस्य परिवृद्धिः प्रतिष्ठा च प्रवर्त्स्येते।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानां धन्यवादं व्याहरन् सकलजगज्जेगीयमानं विश्वनाथमभ्यर्थये—

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः॥

९ अप्रैल १९९५

डॉ० धर्मपालः
कुलपतिः

दीक्षान्त अभिभाषण

द्वारा

माननीय श्री डा० शिवराज पाटिल

अध्यक्ष लोकसभा (भारत)

(दिनाँक ६ अप्रैल, १६६५ : स्थान- हरिद्वार)

माननीय कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा जी, कुलपति जी, आदरणीय पण्डित जी, आचार्यगण, बन्धुओं, बहनों एवं नवस्नातकों !

आज गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में आपने मुझे यहाँ आमन्त्रित कर युगपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की तप:स्थली देखने का जो सुअवसर प्रदान किया है, उसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूँ। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश की स्वाधीनता, अखण्डता, समृद्धि तथा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। वे मानव कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। वे देश के युवकों को एक ऐसे वर्ग के रूप में तैयार करना चाहते थे जो ज्ञान-विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं में पारंगत होने के साथ-साथ वेदिक ज्ञान एवं विश्व प्रसिद्ध भारतीय संस्कृति से भी भली-भाँति परिचित हो तथा राष्ट्र के रचनात्मक विकास में अपनी भूमिका निभा सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षा संबन्धी अवधारणाओं के अनुरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी भारत के लिए एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षानीति बनाना चाहते थे, जिसमें प्राचीन विद्याओं के साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का समन्वय हो। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् १६०२ में इस गुरुकुल की स्थापना की थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि देश की आजादी और आजाद भारत की बहुमुखी प्रगति तब तक सम्भव नहीं होगी, जब तक देश में शिक्षा, हमारी राष्ट्रीय संस्कृति एवं भारतीय पद्धति के अनुरूप लागू नहीं होती। वस्तुत: शिक्षा-

पद्धति ऐसी होनी चाहिये जो जीवन निर्माण करने वाली, इंसानियत लाने वाली और चरित्र निर्माण करने वाली हो और जो जीवन में विभिन्न विचारों को आत्मसात कर सके ।

यह गुरुकुल एक विचार और आन्दोलन के रूप में अस्तित्व में आया, केवल एक संस्था के रूप में नहीं । वैदिक साहित्य व दर्शन के अध्ययन-अध्यापन के साथ राष्ट्रीयता की रक्षा करना इसका उद्देश्य था । इसलिए सरकारी विश्वविद्यालयों द्वारा अपनाई गई शिक्षा पद्धति से हट कर इस गुरुकुल ने समानता के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा देने की योजना तैयार की थी । शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी हो इसकी योजना भी सर्वप्रथम इसी गुरुकुल ने कार्यान्वित की थी । यह संस्था तत्कालीन भारतीय विश्वविद्यालयों से सर्वथा भिन्न थी और किसी प्रकार की सरकारी सहायता नहीं लेती थी, क्योंकि उसका उद्देश्य ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति तैयार करना था जो विदेशी प्रभाव से मुक्त रहकर राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत नवयुवक तैयार कर सके । वर्तमान शताब्दी में सरकारी नियन्त्रण से सर्वथा स्वतंत्र रहते हुए सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए सबसे पहली और सफल क्रांति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने ही की थी । अब इसमें हिन्दी, संस्कृत, वेद, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति, मनोविज्ञान और अंग्रेजी साहित्य विषयों में शोध आदि करने की व्यवस्था भी विद्यमान है । मुझे ज्ञात हुआ है कि इस गुरुकुल का पुस्तकालय उत्तरी भारत का एक महत्वपूर्ण पुस्तकालय है, जिसमें प्राचीन साहित्य, धर्म और दर्शन पर न केवल दुर्लभ पुस्तकें बल्कि प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ भी सुरक्षित हैं । गुरुकुल का एक महत्त्वपूर्ण दर्शनीय संभाग संग्रहालय है जिसमें प्राचीन इतिहास अभिलेख, पुरातत्त्व और उत्खनन से प्राप्त दुर्लभ सामग्री रखी गयी है । इस संग्रहालय में हरिद्वार और काँगड़ी ग्राम तथा जनपद के अन्य स्थानों से प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ दर्शनीय हैं । इसी संग्रहालय में स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष भी है, जिसमें स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमंडल और दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं । यह और भी गर्व की बात है कि इस विश्वविद्यालय का एक महत्त्वपूर्ण कार्य ग्राम विकास योजना है । सड़कों का निर्माण, वृक्षारोपण, बायोगैस प्लांटों की स्थापना, आर्थिक विकास परिवार कल्याण, सार्थक ज्ञान आदि विश्वविद्यालय द्वारा ग्रामोत्थान के लिए किए जा रहे प्रमुख कार्य हैं ।

स्वामी जी का विलक्षण व्यक्तित्व, उनकी विलक्षण प्रतिभा इस विश्व-

मंचस्थ पदाधिकारीगण तथा संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि
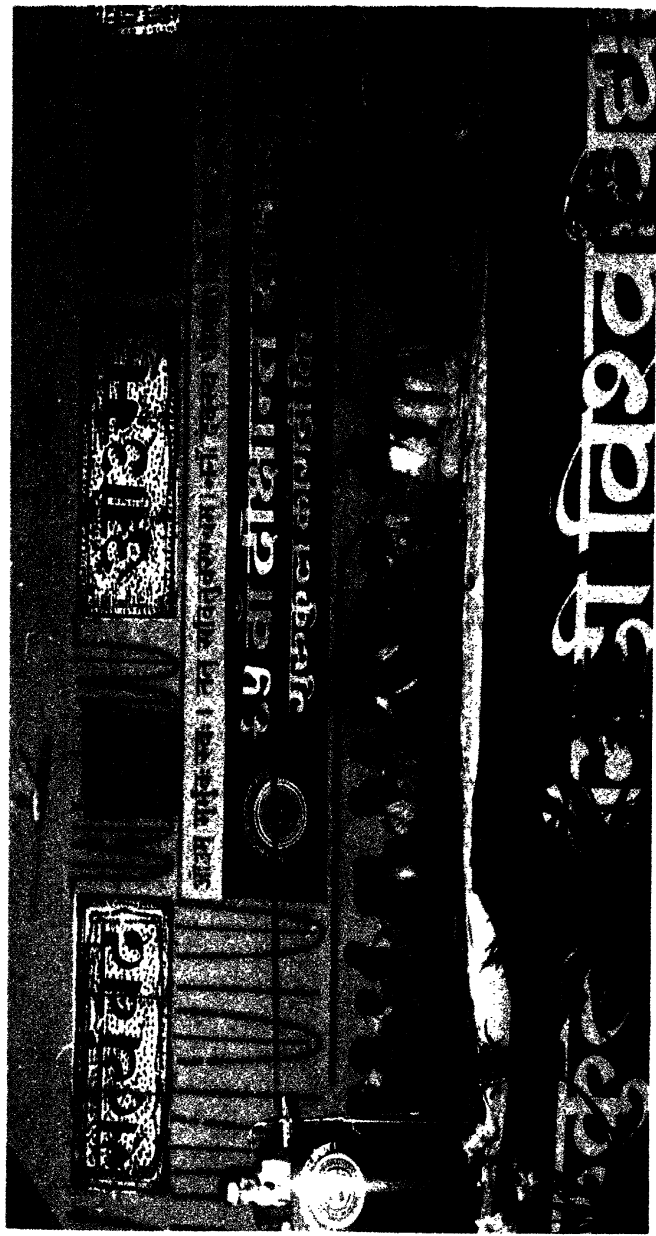
मुख्य अतिथि डा० शिवराज पाटिल को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए कुलपति डा० धर्मपाल, साथ में कुलाधिपति श्री सूर्यदेव

विद्यालय के विलक्षण स्वरूप का परिचायक है। स्वामी जी में अध्यात्मिक एवं लौकिक गुणों का अद्भुत संगम था। इसलिए वे इस प्रकार के आधुनिक विश्वविद्यालय और प्राचीन गुरुकुल परंपरा को साकार रूप देने में सफल हुए। वे देश के युवकों को अपने गुरुकुल में शिक्षा देकर एक ओर उन्हें आत्म-साक्षात्कार की शिक्षा देना चाहते थे और दूसरी ओर उन्हें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सुसज्जित कर देशभक्त, भारतीय संस्कृति के रक्षक, दलितों एवं जरूरतमंदों के सहायक, अल्पसंख्यकों के हमदर्द, अस्पृश्यता, जात-पात, धार्मिक वैमनस्य एवं रूढ़िवादिता के कट्टर विरोधी और पारस्परिक सौहार्द, समानता तथा मेल-मिलाप के प्रबल समर्थक बनाना चाहते थे क्योंकि ये सभी गुण स्वामी जी के अपने व्यक्तित्व में विद्यमान थे।

शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा अतीत की उपलब्धियों का मूल्यांकन होता है, वर्तमान की समस्याओं का समाधान खोजा जाता है और भविष्य के लिए रूपरेखा बनाई जाती है। शिक्षा ही वह त्रिवेणी है जो वास्तव में मन को बल देती है, आत्मा को पवित्र करती है और मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाती है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उस प्रशिक्षण को "शिक्षा" कहा जाता है जिसके द्वारा इच्छाशक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित होता है। अतः इसे शब्द-समूह की स्मृति के रूप में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिये। सही शिक्षा वह है जो हमें विभिन्न लौकिक विषयों के ज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान करवाए तथा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने की प्रेरणा, शक्ति, सामर्थ्य एवं कौशल प्रदान करे और अन्ततः हमें सत्य व ईश्वर से मिला दे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रणीत शिक्षा पद्धति की सार्थकता, उपयोगिता और सार्वकालिकता इसी बात से सिद्ध होती है कि वर्ष १९८६ में घोषित और १९९२ में संशोधित हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत संस्कृत और भारत की अन्य प्राचीन भाषाओं के अध्ययन, अनुसंधान और शोध को बढ़ावा देने के लिए स्वायत्त आयोग के गठन, पूरे देश में सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने, माध्यमिक स्तर

तक नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने, मुक्त अध्ययन प्रणाली को जीवन-पर्यन्त अवसर के रूप में प्रोत्साहित करने और शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने पर विशेष बल दिया गया है।

शिक्षा में हमारा दृष्टिकोण केवल व्यवसायमूलक न होकर जीवन परक भी होना चाहिए । जीवन को पद्धति वैज्ञानिक दृष्टि से रखते हुए हम राष्ट्र की रचनात्मक धारा के साथ जुड़ते चलें, सत्य के ग्रहण तथा असत्य के परित्याग के लिए सदैव तत्पर रहें। उपनिषद् कहती है —आत्म-ज्ञान सत्य से मिलता है, सत्य त्याग और सहिष्णुता से प्राप्त होता है, जिसे तप कहते हैं। सत्य के साक्षात्कार के लिए गुरु ज्ञान है तो श्रद्धा जीवन की आस्था और मार्गदर्शिका है । स्वाध्याय, दान और संयम तप की रक्षा करते हैं, इनके बिना ज्ञान तथा शिक्षा की प्राप्ति करना दुष्कर है। ज्ञान की नींव ब्रह्मचर्य है। अत: शिक्षा के मूल में तर्क, स्वाध्याय, संयम, त्याग, सहिष्णुता, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य का स्थान अनिवार्य रूप से रखा जाए ।

गुरुकुल कांगड़ी में दी जा रही शिक्षा में उपर्युक्त सभी उद्देश्य और लक्ष्य निहित हैं। इन गुणों से सुसज्जित शिक्षित युवक जिस क्षेत्र में भी कार्य करते हैं, वहीं अपना और अपनो शिक्षण—संस्था का नाम गौरवान्वित करते हैं । मेरी यह मान्यता है कि ऐसे युवकों के हाथों जन-कल्याण सुनिश्चित है। मैं चाहता हूँ कि देश में ऐसे गुरुकुल विश्वविद्यालय अन्यत्र भो स्थापित किये जायें । मुझे प्रसन्नता है कि इस गुरुकुल के अधिकारीगण तथा आचार्यगण स्वामी जी के आदर्शों का निष्ठापूर्वक अनुसरण कर रहे हैं और अपने शिष्यों को भी उन पर चलने हेतु प्रेरित कर रहे हैं।

प्रिय स्नातकों, आप जिस संस्था से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सार्वजनिक जीवन में पदार्पण कर रहे हैं उसकी परम्परा और इतिहास गौरवशाली है। यह वह संस्था है जहाँ हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया था। आज भी इस संस्था में गणमान्य नेता आकर अपने को धन्य समझते हैं। संस्कृति, साहित्य, धर्म, दर्शन, चिकित्सा, पत्रकारिता, राजनीति विज्ञान तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में यहाँ के स्नातकों ने नि:सन्देह नाम अर्जित किया है और आप सभी इस परम्परा को बनाये रखेंगे । मेरी इच्छा है कि आप जीवन के विविध क्षेत्रों का चयन करें और राष्ट्रसेवा के लिए स्वयं को समर्पित करें। समाज के टूटते हुए रिश्तों

और सम्बंधों को मधुर एवं सुदृढ़ करें और समानता तथा सामाजिक न्याय के लिए विवेकसम्मत वातावरण बनायें। मेरी शुभकामना है कि आप सभी अपने जीवन में निरन्तर सुख-समृद्धि की ओर अग्रसर हों और साथ ही राष्ट्र के रचनात्मक विकास में अपना सक्रिय योगदान दें।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने दीक्षान्त समारोह के निमित्त मुझे आमन्त्रित कर स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जैसे महामानव को श्रद्धाँजलि अर्पित करने का जो सुअवसर मुझे दिया, इसके लिए मैं उन्हें साधुवाद और धन्यवाद देता हूं। आचार्यगण और उपस्थित भाई-बहनों के लिए मेरी मंगल-कामनाएँ।

नमस्ते एवं धन्यवाद।

प्राच्य विद्या एवं मानविकी संकाय

१. १८ जुलाई १९९४ को यज्ञोपरान्त सत्र प्रारम्भ हुआ।

२. इस वर्ष संकाय में अलंकार कक्षाओं के साथ-साथ सामान्य अलंकार (बी०ए०) पाठ्यक्रम छात्रों में काफी लोकप्रिय हो रहा है।

३. १५ अगस्त १९९४ को मुख्य कार्यालय के प्रांगण में स्वतन्त्रा दिवस धूम-धाम से मनाया गया। ध्वजारोहण कुलपति महोदय द्वारा किया गया।

४. २३ दिसम्बर १९९४ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह-पूर्वक मनाया गया। इसके पश्चात् विश्वविद्यालय से एक शोभा यात्रा निकाली गयी जो श्रद्धानन्द चौक से शिवमूर्ति होती हुई डा० हरिराम आर्य इण्टर कालेज के प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा में परिणित हुई। इस शोभा यात्रा में हजारों व्यक्ति सम्मिलित हुए।

५. दिनांक २६ जनवरी १९९५ को केन्द्रीय कार्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

६. २५ अप्रैल १९९५ से वार्षिक परीक्षायें आयोजित की गईं।

७. १८ मई १९९५ को सत्रावसान हुआ।

८. शिक्षा सत्र में छात्रों की संख्या इस प्रकार रही :

नाम कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
विद्यालंकार	१०	३	६
बी०ए०	१६०	२६	–
एम०ए० हिन्दी	२५	२३	–

शोभायात्रा

दीक्षान्त पूर्व यज्ञ करते हुए मुख्य अतिथि डा० शिवराज पाटिल, जस्टिस महावीर सिंह, वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा अन्य

नाम कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
अंग्रेजी	१३	२४	–
मनोबिज्ञान	४४	१४	–
वेदालंकार	१२	५	२
संस्कृत	१५	१७	–
वेद	८	–	–
दर्शन	६	५	–
इतिहास	११	५	–
योग	५	३	–
योग डिप्लोमा	४४		
हिन्दी पत्रकारिमा डिप्लोमा	५		
अंग्रेजी दक्षता प्रमाण पत्र	१८		

———

वेद विभाग

जनपद हरिद्वार में पुण्यसलिला भागीरथी (गंगा) के तट पर सन् १६०० ई० में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आज एक विशालकाय वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। यह विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय मनीषियों के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलते हुए व्यावहारिक ज्ञान के साथ वैदिक साहित्य एवं संस्कृति के उच्चतम अध्ययन-अध्यापन तथा शोध का प्रमुख केन्द्र है।

विभाग में अनेक छात्र विभागीय प्राध्यापकों के निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं। यह विभाग विदेशी छात्रों के अतिरिक्त इन्जीनियरों, डाक्टरों, मनोवैज्ञानिकों, राजनेताओं और अध्यात्मप्रेमीजनों को भी अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है।

वेद-सम्मेलन—

इस वर्ष इस विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर वेद-सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री सूर्यदेव जी, डा० धर्मपाल जी, आ० रामप्रसाद जी, डा० मनुदेव बन्धु, डा० रूपकिशोर शास्त्री, डा० दिनेशचन्द्र, पं० सुखदेव शास्त्री, श्री वेदव्रत जी, श्री महेन्द्र कुमार जी एवं आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री आदि वेदमनीषियों ने अपने विचार प्रकट किए। सभी वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद-मार्ग पर चलने का आह्वान किया। सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि दयानन्द वेदभाष्य ही सभी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। ब्र० ब्रह्मदेव, ब्र० अशोक, ब्र० सन्दीप, ब्र० सदानन्द, ब्र० दीनदयाल और ब्र० सत्यदेव (वेदालंकार) ने वेद सम्मेलन में मन्त्रपाठ किया तथा उत्सव पर यजुर्वेद का पाठ किया। अधिष्ठाता श्री महेन्द्र कुमार जी ने सभी वक्ताओं और श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

वैदिक संग्रहालय एवं प्रयोगशाला

डा० मनुदेव बन्धु के निर्देशन में यह संग्रहालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। इसमें ब्राह्मण ग्रन्थों एवं सूत्रग्रन्थों में निर्दिष्ट सभी प्रकार के यज्ञीय पात्रों, हवनकुण्डों, अनेकों प्रकार की जड़ी-बूटियों तथा अनेकों वैदिक पुस्तकों का संकलन किया गया है। पौर्णमास यज्ञ का वीडियो कैसेट तथा वैदिक भक्ति संगीत के कैसेट आदि संग्रहालय में विराजमान हैं। विभाग के छात्रों को वैदिक कर्मकाण्ड में प्रयोगात्मक ज्ञान कराने हेतु प्रयोगशाला में हवन के साथ-साथ षोडश संस्कारों का ज्ञान कराया जाता है। उपदेशक बनाने के लिए छात्रों को तैयार किया जाता है। प्रत्येक कक्षा में कर्मकाण्ड अनिवार्य कर दिया गया है।

इस वर्ष बी०ए० के छात्रों को 'धर्म, दर्शन एवं संस्कृति' का पाठ अनिवार्य रूप से पढ़ाया गया। वेदालंकार में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर ५०० रु० की विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। एम०ए० वेद के छात्रों को १०० रु० की धनराशि दी गयी।

विशिष्ट व्याख्यान—

इस वर्ष वेद विभाग में डा० वीरेन्द्र कुमार शर्मा, भूतपूर्व प्रि० राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज लखनऊ, डा० निगम शर्मा और डा० ओम्प्रकाश पाण्डेय लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रमुख व्याख्यान हुए।

भावी कार्यक्रम—

बी०एस-सी०, एम०एस-सी० और बी०ए० की कक्षाओं में वेद (धर्म, दर्शन और संस्कृति) विषय को अनिवार्य पत्र के रूप में पढ़ाने की योजना है। वैदिक वनस्पति, वैदिक रसायन, वैदिक भौतिकी और वैदिक गणित पढ़ाये जा रहे हैं। आशा है १९९५-९६ से बी०एस-सी० के छात्रों को वेद का एक प्रश्नपत्र अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा।

इस समय वेद विभाग में चार उपाध्याय अध्यापन कार्य में संलग्न हैं। उनका व्यक्तिगत विवरण तथा कार्य निम्न प्रकार है—

(१) प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
एम०ए० (वेद)
(आचार्य एवं उपकुलपति)

अब तक ५४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस वर्ष वैदिक आदर्श परिवार भाग (२), वेदाध्ययन (एक-तीन भाग), व्यावहारिक योग पुस्तकें छपी हैं। वैदिक अध्यात्म विषय पर प्रवचनों के तीन कैसेट तैयार हुए हैं — (१) व्यावहारिक जीवन में साधना (२) साधना के मन्दिर में प्रवेश का अधिकारी (३) सम्मति—असम्मति, विद्या-अविद्या तथा शरीर-आत्मबोध पूर्वक ओ३म् स्मरण। ये कैसेट इस समय बाजार में उपलब्ध हैं।

ऋषिकुल विद्यापीठ हरिद्वार के वेद सम्मेलन में विशिष्ट व्याख्यान दिया। अनेकों पुस्तकों के अनुवाद संस्कृत, अंग्रेजी, उड़िया और नेपाली भाषा में हो चुके हैं। आचार्य एवं उपकुलपति के रूप में अनेकों समारोहों की अध्यक्षता की।

दिल्ली, हिमाचल, उ०प्र०, हरियाणा एवं गुजरात आदि प्रान्तों में वैदिक धर्म और आर्य समाज का प्रचार किया।

(२) डा० मनुदेव 'बन्धु'
एम०ए० (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, पी-एच०डी०
रीडर एवं अध्यक्ष

इनके निर्देशन में दो छात्रों को इस वर्ष दीक्षान्त समारोह में पी-एच० डी० (Doctor of Philosophy) की उपाधि प्रदान की गयी। श्री विनोद कुमार को 'वैदिक युग्म एवं गणदेवता" विषय पर और श्री गजानन्द को "अथर्ववेद के दार्शनिक तत्व" विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गयी।

इस वर्ष राकेश शर्मा का "आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति के वेदविषयक कार्यों का मूल्यांकन" विषय की रूपरेखा स्वीकृत हुई। इससे पूर्व चार छात्र शोध कार्य में संलग्न हैं।

नव–स्नातक/स्नातिकाएँ

मुख्य अतिथि श्री पाटिल को 'गुरुकुल समाचार' भेंट करते पत्र के मुख्य सम्पादक

अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन रोहतक में २६-२८ दिसम्बर ९४ में "वैदिक न्याय एवं दण्ड व्यवस्था" विषय पर शोध लेख प्रेषित किया।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ के सहयोग से २४-२६ मार्च, ९५ को आयोजित "वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार" वैदिक गोष्ठी में, उपनिषदों में वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक स्वरूप" विषय पर शोधपत्र वाचन किया। एक सत्र का संयोजन भी किया।

ऋषिकुल विद्यापीठ हरिद्वार के राष्ट्रिय वेद सम्मेलन में "महर्षि दयानन्दीय वेदभाष्यस्य प्रासङ्गिकता" विषय पर संस्कृत में व्याख्यान दिया।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर १३ अप्रैल ९५ को आयोजित वेद सम्मेलन में "आर्य विचारधारा और उसका उपादेयता" विषय पर व्याख्यान दिया।

सम्प्रति भारत विकास परिषद् हरिद्वार, जीव दया मण्डल हरिद्वार और अखिल भारतीय प्रा० वि० सम्मेलन के सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं।

विभिन्न पत्रिकाओं में अनेक शोध लेख प्रकाशित हुए।

(३) **डा० रूपकिशोर शास्त्री**
प्रवक्ता
एम०ए०, पी-एच०डी०

इनके निर्देशन में पांच छात्र शोध कार्य कर रहे हैं—

(i) जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण — एक समीक्षात्मक विवेचन
शोधकर्त्ता —हीरासिंह

(ii) ताण्ड्यमहाब्राह्मण में उपलब्ध निर्वचन और उसके सिद्धान्त
—श्रीमती सरस्वती आर्या

(iii) Bhakti Tattwa in the Upanishads and its development in the Bhagwadgita— Chhaya Bhattacharya

(iv) जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण में उपलब्ध निर्वचन और उसके सिद्धान्त
—कर्णसिंह

(v) महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा एवं मारीशस में उसका प्रभाव
—सुनीलदत्त चतुआ

"वैदिक वाङ्मय निर्वचन कोष" पर (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत) बृहद शोध योजना का कार्य कर रहे हैं।

"वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप" नामक पुस्तक का सम्पादन किया।

अनेकों सम्मेलनों और गोष्ठियों में भाग लिया।

(४) **डा० दिनेशचन्द्र धर्ममार्तण्ड**
प्रवक्ता, वेद विभाग
एम०ए०, पी-एच०डी०

शोध निर्देशन— एक शोधार्थी का "वैदिक पुरुषमेध" नामक विषय पर शोध-कार्य हेतु पंजीकरण हुआ।

कान्फ्रेन्स/सेमिनार

(i) ३७वें अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन (A.I.O C.) म०द० वि०वि० रोहतक में २६-२८ दिसम्बर, ६४ में 'भक्तेर्वैदिकी मीमांसा' विषय पर संस्कृत में शोध-पत्र वाचन किया।

(ii) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय म०द० वेदपीठ, दिल्ली के सहयोग से २४-२६ मार्च, ६५ को आयोजित 'राष्ट्रीय वैदिक संगोष्ठी' में "यास्ककालीन वर्णव्यवस्था" विषय पर शोध-पत्र वाचन किया।

(iii) प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ४ फरवरी, ६५ को 'जनसंख्या शिक्षा एवं विकास' विषय पर आयोजित गोष्ठी में भाग ग्रहण।

(iv) सितम्बर ९४ में अकादेमिक स्टाफ कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय से ओरियण्टेशन कोर्स सम्पन्न किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

(i) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर १० अप्रैल ९५ को 'मन्त्र एवं श्लोकपाठ प्रतियोगिता' में निर्णायकत्व वहन।

(ii) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर १३ अप्रैल ९५ को आर्य और वेद सम्मेलनों में क्रमश: 'आर्यत्व की पहचान' और 'जीवन में सफलता के लिए वेद की आवश्यकता' विषय पर व्याख्यान दिए।

(iii) मोदीनगर, हापुड़, गुरुकुल महाविद्यालय, ततारपुर, गु० महाविद्यालय कुण्डा (बिजनौर), वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, नया बांस दिल्ली एवं पटियाला आदि आर्यसामाजिक स्थानों पर १३ विशिष्ट व्याख्यान दिये।

एतद्तिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और विभाग से सम्बधित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में यथावसर भाग लिया।

प्रकाशन— ०५ शोध पत्र/लेख प्रकाशित और ०३ शोध पत्र/लेख प्रकाशनार्थ स्वीकृत।

एतद्तिरिक्त विभागीय एवं विश्वविद्यालयीय अपने समस्त शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कार्यों को पूर्ण निष्ठा सहित सम्पन्न किया।

"वैदिक वाङ्मय-निर्वचन कोष"

—डा० रूपकिशोर शास्त्री
प्रधान गवेषक

"वैदिक वाङ्मय-निर्वचन कोष" इस नाम से वृहद् शोध योजना के अन्तर्गत एक कोष का निर्माण चल रहा है। यह वृहद् शोध योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत एवं अनुदानित है। इसके प्रधान गवेषक एवं सञ्चालक डॉ० रूपकिशोर शास्त्री, प्राध्यापक वेद विभाग हैं। डॉ० शास्त्री की अगाध लगन एवं निष्ठा का ही सुफल है कि वैदिक साहित्य की श्रीवृद्धि में परम सहायक तथा विश्व विश्रुत यह कार्य इनके वैदुष्यपूर्ण मार्गदर्शन में अनवरत प्रगति पर है। इस प्रोजेक्ट में परम परिश्रमी की भूमिका सुयोग्य युवा विद्वान् डॉ० अशोक कुमार शर्मा अन्वेषक तथा जे०आर०एफ० बहुत अच्छी तरह से निभा रहे हैं।

इस शोध योजना का अब तक का कार्य लगभग ४०% हो चुका है। निर्वचन परम्परा का यह कोष समस्त वैदिक साहित्य में विद्यमान प्रत्यक्ष-वृत्ति, परोक्षवृत्ति एवं अतिपरोक्षवृत्तिपरक निर्वचनों का निर्वहन एवं प्रतिनिधित्व करेगा। उक्त निर्वचन वैदिक वाङ्मय में बहुतायत में है। शोधपूर्ण तरीके से इनके संग्रह हो जाने पर वेदमन्त्रों का समझना तथा विषय की गम्भीरता और सरल हो जायेगी। यह इसका यथार्थ पहलू होगा। वैदिक साहित्य में संहिताएँ, शाखाएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग, सूत्रग्रन्थ, लक्षण ग्रन्थ एवं परिशिष्ट ग्रन्थ सम्मिलित हैं। इन ग्रन्थों में जहां भी उपलब्ध निर्वचन हैं, उन्हें शोध शोधकर एकत्रित किया जा रहा है।

उक्त शोध योजना में हुए शोध कार्य की प्रगति एवं परिणाम को देखते हुए जहाँ हम लोग आशान्वित हैं वहीं प्रसन्नता भी है कि गुरुकुल

कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग में सुचारू रूप से चल रहा यह प्रोजेक्ट समय पर पूर्ण होगा, क्योंकि विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का इसमें सराहनीय सहयोग मिल रहा है। शीघ्र पूरा होने में जहां लगन, निष्ठा तथा सभी का सहयोग है वहीं इस कार्य में आधुनिक तकनीकी से शोध प्रोजेक्ट कार्यालय लगा हुआ है। कम्प्यूटर तथा इलैक्ट्रोनिक (दो भाषाई) टाइपराइटर द्वारा सुव्यवस्थित तथा समय पर कार्य होता है।

संस्कृत–साहित्य विभाग

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस वर्ष सितम्बर, ६४ को संस्कृत दिवस सोल्लास मनाया गया। जिसमें स्थानीय संस्कृत विद्वानों के अतिरिक्त अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर डा० रमाकांत शुक्ल जी ने अपना विशिष्ट व्याख्यान एवं कविता पाठ प्रस्तुत किया। समारोह की अध्यक्षता गुरुकुल के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने की। आचार्य पं० रामनाथ जी वेदालंकार ने भी संस्कृत की महत्ता पर अपना विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया। संस्कृत विभाग में डा० निगम शर्मा पूर्व विभागाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, आचार्य ज्ञानचन्द शास्त्री साहित्य विभागाध्यक्ष, जयभारत संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार तथा वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए।

नवम्बर में पाठ्यक्रम समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें प्रो० हरिनारायण दीक्षित अध्यक्ष संस्कृत एवं डीन कला संकाय नैनीताल तथा श्री कैलाशपति मिश्र जी, प्रो० अध्यक्ष संस्कृत विभाग, डीन कला संकाय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने भाग लिया।

जनवरी, ६५ में डा० करुणेश शुक्ल एवं डा० मानसिंह जी संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सहयोग से शोध समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

२४, २५, २६ मार्च को प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री के निर्देशन में "वैदिक वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार" विषय पर एक अखिल भारतीय शोधगोष्ठी सम्पन्न हुई। इसके उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री सूर्यदेव जी, कुलाधिपति गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय ने की। इस समारोह का उद्घाटन भाषण प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय द०वे० पीठ दिल्ली ने तथा स्वागत भाषण डा० धर्मपाल जी कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व-

विद्यालय ने प्रस्तुत किया। इस गोष्ठी के विभिन्न शोध सत्रों की अध्यक्षता डा० वी०के० वर्मा, प्रो० बी०एच०यू०, डा० एस०आर० भट्ट, अध्यक्ष दर्शन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० करुणेश शुक्ल प्रो० अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय तथा डा० रणजीत सिंह प्रिंसिपल जी ने की। समापन समारोह की अध्यक्षता न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह, परिद्रष्टा गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय ने की। इस वर्ष भी विभाग के छात्रों ने विविध प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण कर पुरस्कार प्राप्त किए।

विभागीय आचार्यों का कार्य-विवरण :

प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री

(१) १८, १९, २० सितम्बर, ९४ को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या में विशिष्ट व्याख्यान दिये।

(२) २८–३० नवम्बर ९४ को स्नातकोत्तर आर्य कालेज अम्बाला में वैदिक गोष्ठी में विशेष वक्ता के रूप में भाग ले कर शोधलेख प्रस्तुत किया।

(३) २७–२९ दिसम्बर ९४ में रोहतक विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन में भाग लेकर शोधपत्र का वाचन किया।

(४) २०, २१ फरवरी, ९५ को गोरखपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत पुनश्चर्या में विशेष विद्वान् के रूप में तीन व्याख्यान दिये।

(५) २४–२६ मार्च, ९५ में राष्ट्रिय वैदिक गोष्ठी का निदेशक रूप में कार्य किया। यह गोष्ठी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्राच्य विद्या संकाय के अन्तर्गत सम्पन्न हुई।

(६) मेरठ विश्वविद्यालय, कुमायूँ विश्वविद्यालय नैनीताल, काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर की शोध समिति एवं पाठ्यक्रम समिति में विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित हो कर कार्य किया।

(७) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के द्वारा गठित निरीक्षक मंडल के संयोजक के रूप में कार्य किया।

(८) आर्यसमाज की विभिन्न इकाईयों में समय-समय पर आर्य सिद्धांतों के गहनतम विषयों पर विशेष व्याख्यान दिये। इनकी संख्या लगभग ५० है।

(९) इनके शोध निर्देशन में १३ शोधार्थियों को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है। इस समय १० शोध छात्र इनके निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं।

(१०) ९४-९५ के सत्र में संस्कृत विभागाध्यक्ष का कार्यभार वहन करते हुए प्राच्य विद्या संकाय के डीन पद पर कार्य किया।

(२) डा० सोमदेव शतांशु
प्रवाचक (रीडर)

१९९४-९५ के शिक्षा सत्र में अपने विभाग तथा विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर दायित्वों का सुचारू रूप से निर्वहन किया।

स्वामी सम्पूर्णानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रभात आश्रम, मेरठ द्वारा अगस्त ९४ एवं मार्च ९५ में आयोजित शोध गोष्ठियों में "वैदिक संहिताओं में गौ का महत्व" तथा "वैदिक चिकित्सा विज्ञान" विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत किये।

नवम्बर में मनीषिका कलकत्ता द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शोध गोष्ठी में भाग ग्रहण कर वैदिक देवों के स्वरूप विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

मार्च में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में "वैदिक वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार" विषय पर आयोजित शोध गोष्ठियों में शोधपत्र प्रस्तुत किया।

"समर्पण शतोसौरभम्" का सह सम्पादन किया।

एतदतिरिक्त वैदिक विषयों पर विभिन्न आर्यसमाजों में व्याख्यान दिये।

डा० रामप्रकाश

इनके निर्देशन में शोधार्थी अपना कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय वैदिक गोष्ठी में इन्होंने लग्नपूर्वक कार्य किया।

डा० ब्रह्मदेव

विभागीय उन्नति के लिए सतर्कता के साथ कार्य करते हैं। छात्रों को समय-समय पर प्रतियोगिताओं में भाग दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

दर्शन शास्त्र विभाग

अपने स्थापना काल से लेकर दर्शन विभाग ने उन्नति के अनेक सोपान पार किये हैं। यह बात बड़े गौरव से कही जा सकती है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग के तत्वावधान में जितनी राष्ट्रिय संगोष्ठियाँ, कार्यशाला एवं सेमिनारों का आयोजन किया गया उतनी संख्या में किसी अन्य विभाग में आयोजित नहीं किये गये। प्राय: प्रत्येक वर्ष राष्ट्रिय स्तर पर एक संगोष्ठी अवश्य ही इस विभाग द्वारा आयोजित की जाती है।

इस वर्ष मार्च ६५ में प्राच्य विद्या संकाय के अन्तर्गत वैदिक वर्ण व्यवस्था पर एक राष्ट्रिय सेमिनार का आयोजन किया गया था जिसमें मुख्य भूमिका दर्शन विभाग की ही थी।

आगामी अक्टूबर ६५ में दर्शन विभाग को एक अन्य राष्ट्रिय गौरव प्राप्त होने वाला है। इस वर्ष भारतीय दार्शनिक परिषद् (I.P.C) का अधिवेशन गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में होने जा रहा है जिसका संयोजन डा० यू०एस० बिष्ट कर रहे हैं। इसकी युद्धस्तर पर तैयारी मार्च ६५ से ही प्रारम्भ हो गई है।

गत तीन वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महिला कालेज में दर्शन विषय में एम०ए० की कक्षाएँ चल रही हैं जिसमें दर्शन विभाग के प्राध्यापक ही पढ़ाते हैं। महिला कालेज का दर्शन विभाग एक छात्रा से लेकर प्रारम्भ किया था किन्तु आज उसमें ग्यारह छात्राएँ नियमित रूप से अध्ययन कर रही हैं।

विभागीय प्राध्यापक वर्ग-

विशिष्ट योग्यता एवं गतिविधियां–

डा० जयदेव वेदालंकार (वर्तमान कुलसचिव)

प्रकाशन— विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध लेख प्रकाशित हुए।
सम्पादन— गुरुकुल पत्रिका मासिक के मुख्य सम्पादक पद पर सफलता के साथ कार्य किया।
शोध कार्य— दो छात्रों ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। इस समय पांच शोध छात्र शोध कार्य में निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं।

डा० विजयपाल शास्त्री

पद—रीडर एवं अध्यक्ष

शैक्षिक योग्यता—एम०ए० (दर्शनशास्त्र, संस्कृत, हिन्दी)

शास्त्री, साहित्याचार्य

पी-एच०डी०, डी०लिट्०

इस वर्ष मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ ने दीक्षान्त समारोह पर डी० लिट्० की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया। डी०लिट्० का शोध प्रबन्ध था-त्रिक दर्शन का समीक्षात्मक तत्त्वमीमांसीय अध्ययन"। यह प्रबन्ध काश्मीर शैव दर्शन की अद्वयवादी शाखा से सम्बन्ध रखता है। काश्मीर शैव दर्शन की अद्वयवादी शाखा का विशिष्ट नाम त्रिक दर्शन है। उसके छत्तीस तत्त्वों की मान्यता का गवेषणात्मक समाधान इस प्रबन्ध में प्रस्तुत है।

इस प्रबन्ध के प्रकाशन के लिए राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली ने २४००० रुपए (चौबीस हजार रुपये) अनुदान दिया है।

प्रकाशन—दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१— पातंजल योग विमर्श
२— त्रिक दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन

सम्पादन— गुरुकुल पत्रिका मासिक का सह-सम्पादन किया।
शोधकार्य— इस समय छः शोधार्थी पी-एच०डी० के लिए निर्देशन में शोधरत हैं।

डा० यू०एस० बिष्ट— प्रवक्ता सीनियर ग्रेड

प्रकाशन— दो पुस्तकें (पूर्व प्रकाशित)

शोधलेख— ३२

व्याख्याम- एन्डोमेन्ट व्याख्यान, 'जैन दर्शन' ६६ वां अधिवेशन आई०पी०सी०

सम्मेलन— अखिल भारतीय दर्शन परिषद् एवं आई०पी०सी० वार्षिक अधिवेशनों में सक्रिय भाग लिया। इन दोनों दार्शनिक संस्थाओं की आजीवन सदस्यता।

परीक्षक— ७ विश्वविद्यालय

सदस्यता— सदस्य, कार्य परिषद् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

डा० त्रिलोकचन्द

पद— वरिष्ठ प्रवक्ता

विभाग— दर्शन शास्त्र

योग्यताएँ— एम०ए०, पी-एच०डी०

अन्य योग्यतायें— योग सर्टिफिकेट, योग डिप्लोमा, योग का एक वर्ष का कोर्स।

कार्य—

१. मई ९४ में पंचमढ़ी (मध्य प्रदेश) में जबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के ३८वें अधिवेशन में भाग लिया।

२. गुरुकुल कांगड़ी बिश्वविद्यालय में प्राच्य विद्या सम्मेलन में "वर्ण-व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था—एक विश्लेषण" यह शोधपत्र पढ़ा।

३. योग निकेतन ऋषिकेश में १५ जून १९९४ को 'मनुष्य अपनी आयु बढ़ा-घटा सकता है' यह पत्र पढ़ा जो सार रूप में १७ जून १९९४ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित हुआ।

४. 'मनुष्य का आहार', हमारे माता-पिता नामक लेख अक्टूबर ९४ में अमर उजाला नामक समाचार पत्र में प्रकाशित हुए।

व्याख्यान

१. योग निकेतन ऋषिकेश में विदेशी साधकों के मध्य अनेकों बार व्याख्यान हुए जिनमें जर्मन, जापान, इंग्लैण्ड, इटली, फ्रांस, कोरिया, अमेरिका आदि देशों के नागरिक उपस्थित हुए।

२. गुरुकुल महाविद्यालय बरनावा (मेरठ) में योग विषय पर दो व्याख्यान हुए।

३. नगला मदेड (मुजफ्फरनगर) इण्टर कालेज में योग विषय पर व्याख्यान हुआ।

४. सप्त सरोवर हरिद्वार में ९५ में हुए भारत विकास परिषद् के सम्मेलन में प्राणायाम विषय पर विशेष व्याख्यान दिया।

५. नन्हेड़ा अनन्तपुर (रुड़की) में अप्रैल ९५ में आयोजित यज्ञ पर व्याख्यान दिया।

योग शिविरों का संचालन

१. व्यास आश्रम, सप्तसरोवर हरिद्वार में १ अप्रैल से ५ अप्रैल तक योग शिविर का संचालन किया।

२. आर्य समाज, आयुधनिर्माणी, पूर्वी क्षेत्र मुरादनगर जनपद गाजियाबाद में २३ अक्टूबर से ३० अक्टूबर १९९४ तक योगसाधना शिविर का संचालन किया जिसका समापन श्री रामचन्द्र विकल (पूर्व साँसद) द्वारा सम्पन्न हुआ।

३. आर्य समाज ऋषिकेश में जून ९४ में एक सप्ताह के योग शिविर का सँचालन किया।

४. तपोवन आश्रम, देहरादून में जुलाई १९९४ में एक सप्ताह के योग शिविर का संचालन किया।

५. आर्य समाज कोटद्वार जनपद पौड़ी गढ़वाल में अगस्त ९४ में आठ दिवसीय योग शिविर का संचालन किया।

६. आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार में एक सप्ताह के योग शिविर का संचालन किया।

—●—

पुस्तकें—

१– प्रथम किरण

२– योग से रोग निवारण

३– पातञ्जल योग और श्रीअरविंद योग

४– नशा मुक्ति (अप्रकाशित)

५– प्राणायाम का महत्व (अप्रकाशित)

६– ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप (अप्रकाशि त)

———

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवम् पुरातत्व विभाग

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की स्थापना इतिहासविद् पंडित हरिदत्त वेदालंकार जी के द्वारा की गई थी। विभाग के प्राध्यापकों द्वारा भारतीय इतिहास का लेखन भारतीय दृष्टिकोण को आधार मानकर प्रामाणिक संदर्भों से लिखा गया जिसके कारण विभाग की ख्याति चहुँ ओर स्थापित हुई। इस ख्याति का श्रेय पं० हरिदत्त वेदालंकार जी के साथ-साथ डा० सत्यकेतु विद्यालंकार (पूर्व कुलपति, कुलाधिपति, पूर्व विधान परिषद् सदस्य उ०प्र०) पंडित चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, डा० बिनोद चंद सिन्हा जी को जाता है।

वर्तमान में विभागीय शिक्षक अध्ययन, अध्यापन, सर्वेक्षण, लेखन, उत्खनन, अनुसंधान आदि कार्य पूरी लगन के साथ करने में अग्रसर हैं। इस सत्र में शोध कार्य में पाँच छात्रों ने शोध विषय प्रस्तुत किए। शोध विषयों को स्वीकृत करने के लिए अधिकृत कमेटी आर०डी०सी० की मीटिंग दिसम्बर, ९४ में प्राच्य विद्या संकाय के अध्यक्ष कक्ष में सम्पन्न हुई।

कमेटी द्वारा निम्न छात्रों के शोध विषय पर विचार किया गया :

१. श्री नवनीत कुमार — निर्देशक डा० काशमीर सिंह भिन्डर
२. श्रीमती आभा — निर्देशक डा० काशमीर सिंह भिन्डर

इन दोनों के विषय स्वीकृत किये गये तथा इनके अतिरिक्त दो छात्र-छात्रा के विषय डा० काशमीर सिंह भिन्डर के निर्देशन में तथा एक छात्रा का विषय डा० एस०एन० सिंह के निर्देशन में कुछ संशोधन के साथ आर०डी० सी० ने निर्णय लिया कि प्रस्तुत विषयों को संशोधित कर विभागीय अध्यक्ष के माध्यम से पुन: विषय विशेषज्ञों की स्वीकृति हेतु प्रेषित किया जाए।

डा० एस०एन० सिंह के निर्देशन में शोधार्थी श्री देवेन्द्र का कार्य प्रगति

पर है तथा डा० सिंह के निर्देशन में ही सम्पन्न "वैदिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतत्व" नामक शोध विषय पर श्री ऋषिपाल आर्य को दीक्षान्त समारोह पर पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गई।

डा० राकेश शर्मा के निर्देशन में श्रीमती सरोज सिंह ने अपना शोध कार्य पूरा कर कुलसचिव कार्यालय में प्रस्तुत कर दिया है। डा० शर्मा विभाग में शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विश्वविद्यालय में एन०सी० सी० के प्रभारी भी हैं।

सत्र में विभागीय छात्रों द्वारा दक्षिण भारत की शैक्षिक यात्रा भी की गई।

पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान पाठ्यक्रम

स्नातक स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम चलाये जाने की विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना के अन्तर्गत माननीय कुलपति डा० धर्मपाल जी के निर्देशानुसार विभाग में पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान का पाठ्यक्रम चलाए जाने हेतु एक प्रस्ताव तत्कालीन विभागाध्यक्ष डा० एस०एन० सिंह द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेजा गया था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सत्र १९९४—९५ से इस विषय को प्रारम्भ करने की स्वीकृति प्रदान की जिसके फलस्वरूप इस विषय का पाठ्यक्रम शिक्षा समिति में पारित करा कर तत्कालीन अध्यक्ष डा० काशमीर सिंह भिन्डर के निर्देशन में प्रारम्भ किया गया तथा पुरातत्व संग्रहालय से श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, क्यूरेटर ने अध्यापन व प्रेक्टिकल आदि कार्य किया।

इस विषय में छात्रों ने विशेष रुचि दिखाई तथा १३ छात्रों ने प्रवेश लिया।

———

पुरातत्व संग्रहालय

ज्ञान प्रसार के लिये शिक्षण सस्था में संग्रहालय की भूमिका के महत्व का सही-सही आकलन करते हुए महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) द्वारा गुरुकुल परिसर में गुरुकुल संग्रहालय की स्थापना सन् १६०७ में की गई थी। तत्कालीन संग्रहालय में गुरुकुल संग्रहालय शीघ्र अपना गरिमामय स्थान बनाने में सफल रहा। दुर्भाग्यवश सन् १६२४ की बाढ़ में गुरुकुल के साथ-साथ गुरुकुल संग्रहालय को भी भारी क्षति का सामना करना पड़ा। क्षति के प्रभाव से लगभग २५ वर्षों तक संग्रहालय का पुनर्गठन संभव नहीं हो सका।

स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश के तत्कालीन शिक्षा मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द जी द्वारा उत्तर-प्रदेश राज्य के संग्रहालयों के विकास एवं सुधार सम्बंधी सुझावों के लिए एक "संग्रहालय पुनर्गठन समिति" की स्थापना की गई थी। समिति द्वारा हरिद्वार नगर में एक क्षेत्रीय संग्रहालय की आवश्यकता के सम्बन्ध में विशेष रूप से संस्तुति प्रस्तुत की गयी। समिति की संस्तुति के परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल के तत्कालीन मुख्याधिष्ठाता एवं कुलपति पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (स्वामी श्रद्धानन्द के कनिष्ठ पुत्र) ने पुनर्गठित संग्रहालय की स्थापना का निश्चय किया। परिणामत: सन् १६५० में गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती के पावन पर्व पर गुरुकुल संग्रहालय का विधिवत् उद्घाटन किया गया।

सन् १६८२ से प्रारम्भ सत्र में संग्रहालय को विधिवत् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं शिक्षा मंत्रालय द्वारा विश्वविद्यालय का एक अग स्वीकार किया गया। इसी सत्र में संग्रहालय वर्तमान भवन में भी स्थानांतरित कर दिया गया। षष्ठ पंचवर्षीय योजना में संग्रहालय के समुचित विकास को ध्यान में रखते हुए संग्रहाध्यक्ष (क्यूरेटर) एव संग्रहालय सहायक (म्यूजियम असिस्टैन्ट) के पद आयोग द्वारा स्वीकृत किये गये। परिणामतः संग्रहालय के नियोजन एव प्रदर्शन को नयी दिशा मिली। गत १० वर्षों में हुए परिवर्तन

वर्तमान संग्रहालय की दीर्घाओं में परिलक्षित हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त विश्वविद्यालय बजट व्यवस्था के अतिरिक्त संग्रहालय को समय-समय पर विकास हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अनुदान देता रहा है। उत्तर-प्रदेश शासन, राष्ट्रीय संग्रहालय एवं राष्ट्रीय अभिलेखागार से भी विकास के लिये अनुदान प्राप्त होता रहा है।

वर्तमान सत्र में मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय अभिलेखागार के माध्यम से सूर्यकान्त श्रीवास्तव, क्यूरेटर संग्रहालय द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपि परिरक्षण परियोजना के लिए ६६,६६७/- रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इस अनुदान का ७५% भाग राष्ट्रीय अभिलेखागार एव शेष २५% विश्वविद्यालय द्वारा वहन करना किया गया है।

परियोजना के अन्तर्गत पाण्डुलिपियों के रसायन उपचार के लिए संग्रहालय में एक लघु प्रयोगशाला स्थापित की गयी है। प्रयोगशाला का उद्घाटन विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा माननीय महावीर सिंह जी के कर-कमलों द्वारा २० सितम्बर १९९४ को सम्पन्न हुआ। वर्तमान में संग्रहालय की पाण्डुलिपि-संग्रह का उपचार किया जा रहा है। पाण्डुलिपि संरक्षण के लिये न्यूनतम व्यय पर यह सुविधा अन्य संस्थाओं एवं आश्रमो को प्रदान करने की योजना है। रखरखाव की दृष्टि से दुर्लभ पाण्डुलिपियों के लगभग ०९०० पृष्ठों की माइक्रोफिल्मिग भी तैयार करायी गयी हैं।

अध्ययन की दृष्टि से मुख्य-मुख्य पाण्डुलिपियों की फोटोस्टेट प्रति बनवा कर प्लास्टिक फ्लैप्स में रखा गया है जिससे दुर्लभ पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखा जा सके।

संग्रहालय के पाण्डुलिपि संकलन का अध्ययन करते समय कुछ दुर्लभ पाण्डुलिपियां भी प्रकाश मे आई। उनमें से उल्लेखनीय हैं स्वामी दयानन्द द्वारा रचित "सत्यार्थ प्रकाश" की प्रथम प्रेस कापी जो स्वामी जी द्वारा संशोधित भी की गयी है। इस खोज को राष्ट्रीय, स्थानीय एवं आर्यसमाज के सभी पत्रों ने प्रकाशित किया।

सामान्य दर्शकों एवं पुरातत्व के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के ज्ञान

के लिये संग्रहालय के केन्द्रीय कक्ष में "आद्य ऐतिहासिक संस्कृति कक्ष" का नियोजन इस वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस कक्ष में सिन्धु सभ्यता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ हरिद्वार जिले के नसीरपुर नामक स्थान से प्राप्त आद्य ऐतिहासिक ताम्र निरवात सभ्यता (कॉपर होर्डस कल्चर) के विभिन्न उपकरण, गेरूये रंग वाले मृद्भाण्डों वाली सभ्यता (ऑकर कलर्ड कल्चर) के अवशेष एवं चित्रित रक्त-श्याम मृद्भाण्डों एवं भूरे रंग वाले मृद्भाण्डों वाली सभ्यताओं के अवशेष भी प्रदर्शित हैं। आद्य ऐतिहासिक काल की अन्य सभ्यताओं के अवशेषों के प्रदर्शन की सम्भावनायें व्यापक हैं। अगर आर्थिक सहयोग एवं अवसर उपलब्ध हुआ तो इस दिशा में ठोस कदम उठाने का प्रयास किया जा सकेगा।

नवनियोजित कक्ष का उद्घाटन वर्तमान लोकसभा के अध्यक्ष माननीय शिवराज पाटिल द्वारा ६ अप्रैल १९९५ को विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा माननीय जस्टिस महावीर सिंह, कुलाधिपति सूर्यदेव, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वन्देमातरम एवं कुलपति धर्मपाल आदि विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

संग्रहालय के अति विशिष्ट दर्शनार्थियों में माननीय शिवराज पाटिल अध्यक्ष लोकसभा, नई दिल्ली एवं माननीय मदनलाल खुराना, मुख्यमंत्री दिल्ली राज्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विशिष्ट दर्शकों की सूची में निम्न-लिखित नाम भी उल्लेखनीय हैं—

१. श्री इन्द्रजीत सिंह, सेक्रेटरी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली
२. श्री असीम बनर्जी, सेक्रेटरी इंटक, नई दिल्ली
३. श्री हरनाम जोहर, अध्यक्ष पंजाब विधान सभा, चंडीगढ़
४. श्री यशवीर सिंह, अध्यक्ष खादी ग्रामोद्योग आयोग, भारत सरकार
५. जस्टिस महावीर सिंह परिद्रष्टा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
६. श्रीमती रेखा अग्रवाल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
७. डा० सत्यप्रकाश अग्रवाल, प्रशासनिक अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली
८. श्री वेदव्रत शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
९. डा० गायत्रीनाथ पंत, उपकुलपति राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली

१०. श्री आई०एन० शिन, अध्यक्ष कोरिया व्यापार मण्डल

११. प्रोफेसर तुकीमाशा निशीमोरा, जापान

संग्रहालय में कार्यरत वर्तमान कर्मचारियों की उपलब्धियाँ—

क्यूरेटर—सूर्यकान्त श्रीवास्तव

"पाण्डुलिपि परिरक्षण परियोजना" सम्बन्धी कार्यों को पूरा करने से पूर्व संग्रहालय को समस्त पाण्डुलिपि संग्रह का अवलोकन किया। अवलोकन में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश की प्रथम प्रेस कापी उपलब्ध हुई। पाण्डुलिपि में स्वामी दयानन्द जी द्वारा कहीं-कहीं संशोधन किये गये हैं। इस उपलब्धि को सूचना को राष्ट्रीय, स्थानीय एवं आर्यसमाज के प्रमुख पत्रों में उचित स्थान प्रदान किया गया।

— संग्रहालय परिचय पुस्तिका का लेखन, नियोजन एवं प्रकाशन कार्य सम्पन्न किया।

— संग्रहालय के केन्द्रीय कक्ष में "आद्य ऐतिहासिक कक्ष" का नियोजन एवं प्रदर्शन कार्य किया जिसका विधिवत् उद्‌घाटन लोकसभा अध्यक्ष माननीय शिवराज पाटिल के द्वारा सम्पन्न हुआ।

— विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक स्तर पर प्रारम्भ किये गये व्यवसायिक पाठ्यक्रम के पुरातत्व विज्ञान एवं संग्रहालय विज्ञान के विषयों का अध्यापन कार्य किया।

—गत वर्ष काश्मीर राज्य के उत्पल राजवंश के स्वर्ण सिक्के के पहचान की सूचना को वेटस्फाई लिमिटेड लन्दन ने सिक्कों के प्रमाणिक सन्दर्भ ग्रन्थ "क्वाइंस फैक्ट्स एण्ड फोट्स" के आगामी संशोधित प्रकाशन में सम्मिलित किया गया।

— ऑरेंटियल न्यूमेस्टिक सोसाइटी लन्दन के भारतीय सिक्कों के विशेपज्ञ निकोलस रोड्स द्वारा मांगने पर नन्दी गुप्त के स्वर्ण सिक्के पर विस्तृत लेख न्यूमेस्टिक सर्किल में प्रकाशन के लिये भेजा गया।

सहायक क्यूरेटर— डा० सुखबीर सिंह

पाण्डुलिपि परिरक्षण परियोजना के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यों को पूर्ण करने में सहयोग किया।

संग्रहालय सहायक

डा० प्रभात कुमार ने पाण्डुलिपि परिरक्षण परियोजना के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यों एवं केन्द्रीय कक्ष में आद्य ऐतिहासिक कक्ष के नियोजन में पूर्ण सहयोग किया।

बृज एकादमी बृन्दावन द्वारा अप्रैल ९४ में पर्यावरण पर आयोजित गोष्ठी में भाग लिया।

कार्यालय लिपिक

श्री अरविन्द कुमार ने अपने कार्यों के दायित्व के साथ-साथ कक्ष नियोजन में महत्वपूर्ण सहयोग किया।

कार्यालय के अन्य कर्मचारियों रमेशचन्द्र पाल, ओमप्रकाश, गुरुप्रसाद एवं फूलसिंह ने भी पाण्डुलिपि परिरक्षण परियोजना के क्रियान्वन एवं केन्द्रीय कक्ष नियोजन एवं प्रदर्शन कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

———

योग शिक्षा विभाग

१. विभाग की स्थापना व इतिहास

इस विभाग में इस समय योग शिक्षा डिप्लोमा (एकवर्षीय), स्नातक कक्षाएँ (त्रिवर्षीय) व स्नातकोत्तर कक्षाएँ (द्विवर्षीय) चलाई जा रही हैं। पाठ्यक्रम में एक्यूप्रेशर व प्राकृतिक चिकित्सा को भी सम्मिलित किया गया है। निकट भविष्य में विभाग में चिकित्सालय की व्यवस्था करना प्रस्तावित है।

२. विभाग की मौलिक छवि

विभाग की बढ़ती हुई गतिविधियों के फलस्वरूप विभागीय छवि उज्ज्वल हुई है। यही कारण है कि अध्ययन हेतु भारत के विभिन्न प्राँतों से छात्र यहां आ रहे हैं। योग व एक्यूप्रेशर चिकित्सा हेतु स्थानीय लोगों के अतिरिक्त आस-पास के जिलों से भी रोगी आ रहे हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा डा० ईश्वर भारद्वाज को बोर्ड आफ स्टडीज, कालेज एफिलिएशन कमेटी, आर०डी०सी० का सदस्य मनोनीत किया गया है। जूनियर व पी०जी० डिप्लोमा, बी०ए०, एम०पी०एड०, पी-एच०डी० का परीक्षक मनोनीत किया है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् (भारत सरकार) द्वारा विषय विशेषज्ञ के रूप में चयन समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है। विभिन्न प्रतियोगिताओं हेतु मुख्य निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया जाता है। इस प्रकार विभाग निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है।

३. विभागीय क्रियाकलाप

१. विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्र संख्या इस प्रकार रही—

डिप्लोमा	१०

अलंकार/बी०ए० प्रथम खण्ड	१४
द्वितीय खण्ड	७
तृतीय खण्ड	४
एम०ए० प्रथम खण्ड	३
द्वितीय खण्ड	४

२. अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता, ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट में आयोजित की गई जिसमें विश्वविद्यालय योग टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह प्रथम अवसर था जब विश्वविद्यालय ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

३. एम०ए० द्वितीय वर्ष के छात्र सुरक्षित गोस्वामी को नेहरू युवा केन्द्र हरिद्वार ने 'सबको शिक्षा, सबको स्वास्थ्य' कार्यक्रम के संचालकों को योग शिक्षा देने के लिये प्रशिक्षक के रूप में आमन्त्रित किया जिसमें विभिन्न जिलों के प्रतिनिधियों ने योग शिक्षा प्राप्त की।

४. जुलाई, ६४ में भारत विकास परिषद् भेल के तत्वावधान में योग व एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण व चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें डा० ईश्वर भारद्वाज (शिविराध्यक्ष) तथा ब्र० सुरक्षित गोस्वामी (एम०ए० द्वितीय वर्ष) ने १०८ प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दिया। शताधिक लोगों ने चिकित्सा कराई।

५. एम०ए० द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत छात्र रामजोत ने अखिल भारतीय योग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता बंगलौर में आयोजित की गई थी।

६. छात्र सुरक्षित गोस्वामी को दिल्ली दूरदर्शन पर 'योग साधना' धारावाहिक में प्रदर्शन का अवसर मिला। इसी छात्र को लखनऊ दूरदर्शन ने योग धारावाहिक बनाने का निमंत्रण दिया है।

७. विभाग में स्लाइड प्रोजेक्टर क्रय किया गया जिससे छात्रों को स्लाइड के माध्यम से शिक्षण दिया गया। वैक्यूम क्लीनर, बी०पी० इंस्ट्रूमेंट, आलमारियाँ व मेजकुर्सी भी क्रय किये गये।

८. छात्रों द्वारा प्रोजेक्ट के रूप में आसनों के चित्र तैयार करवाये

गये।

शिक्षकों का शोध कार्य, प्रकाशन कार्य, संगोष्ठियों में भागीदारी तथा अन्य उपलब्धियां–

१. डा० ईश्वर भारद्वाज
(प्रवक्ता, विभागाध्यक्ष)
शास्त्री, साहित्याचार्य, एम०ए० (हिन्दी, दर्शन), एन०डी० योग डिप्लोमा, पी-एच०डी०

(क) शोधकार्य

१. मकरासन व गोमुखासन का दमा की चिकित्सा में योगदान
२. शवासन व नाड़ी शोधन प्राणायाम का उच्च रक्तचाप पर प्रभाव
३. कब्ज में तड़ागी मुद्रा का योगदान
४. गजकरणी व अम्लपित्त-प्रतिषेध

(ख) प्रकाशन कार्य

(अ) पुस्तकें— १. औपनिषदिक अध्यात्म विज्ञान
२. उपनिषदों में संन्यास योग
३. यौगिक चिकित्सा (प्रकाशनाधीन)

(ब) शोध-पत्र

१. गुरुकुल पत्रिका– २
२. प्रौढ़ शिक्षा (दिल्ली) १

(ग) संगोष्ठियों में भागीदारी

१. जनवरी, ९५ में केन्द्रीय योग अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली तथा स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 'उदर रोगों की यौगिक चिकित्सा' पर आयोजित तृतीय राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भाग लिया तथा कब्ज व अम्लपित्त रोग चिकित्सा पर दो शोध पत्रों का वाचन किया।

२. जनवरी, १९९५ में ही उक्त संस्थान द्वारा ध्यान की विधि व तकनीक पर आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार व कार्यशाला में भाग लिया।

३. मार्च, १९९५ में केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली द्वारा 'योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा' के लिए

'अनुसंधान व प्रशिक्षण' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में विषयविशेषज्ञ के रूप में भाग लिया तथा उपर्युक्त विषय पर विचार व्यक्त किए।

४. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार तथा अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली के सौजन्य से 'वैदिक वर्णव्यवस्था' पर आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया तथा शोधपत्र वाचन किया।

(घ) रेडियो-वार्ता—आकाशवाणी नजीबाबाद से 'योग एवं स्वास्थ्य' विषय पर दो वार्ताएँ प्रसारित हुईं।

(ङ) अन्य—

१. विश्वविद्यालय अतिथिगृह के प्रभारी का दायित्व वहन किया।

२. विद्याधिकारी—विद्याविनोद परीक्षाओं में सहायक परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

३. हिमाचल प्रदेश, सागर, पंजाब, लखनऊ, हिसार विश्वविद्यालयों में परीक्षक के रूप में नामांकित।

४. हिमाचल प्रदेश व कानपुर में बोर्ड आफ स्टडीज का सदस्य नामित।

५. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् नई दिल्ली द्वारा योग शिक्षकों के चयन हेतु गठित चयन-समिति में विषय-विशेषज्ञ नामित।

६. प्रौढ़ शिक्षा विभाग द्वारा जन-जागृति अभियान के अन्तर्गत ग्राम जगजीतपुर व जमालपुर में लगाए गए शिविर में 'योग द्वारा स्वास्थ्य रक्षण' तथा 'दैनिक जीवन में आहार-चर्या' विषय पर व्याख्यान दिए।

७. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा जनसंख्या नियंत्रण पर आयोजित गोष्ठी में 'योग द्वारा जनसंख्या नियंत्रण' विषय पर व्याख्यान दिया।

८. गुरुकुल पत्रिका के सम्पादन कार्यों में सहयोग।

९. आर्य वानप्रस्थाश्रम में योग पर व्याख्यान-शृंखला।

२. **डा० सुरेन्द्र कुमार—**
एम०ए० (दर्शन) पी-एच०डी०
(अस्थाई प्रशिक्षक)

१. विभागीय दायित्व वहन करते हुए डिप्लोमा व अलंकार कक्षाओं को अध्यापन कराया तथा क्रियात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया।

२. गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० में आयोजित 'वैदिक वर्ण व्यवस्था' पर राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया।

३. विभागीय कार्यों में विभागाध्यक्ष का सहयोग किया।

५. आवश्यकताएँ—

विभागीय कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है—

१. स्टाफ—प्रवक्ता, प्रशिक्षक, प्रयोगशाला सहायक, प्रयोगशाला अटेंडेंट, सेवक।

२. उपकरण—टेलीविजन, वी०सी०आर०, टेपरिकार्डर, आडियो व वीडियो कैसेट, प्राकृतिक चिकित्सा व योग चिकित्सा सम्बन्धी उपकरण।

३. भवन—प्रशिक्षण हाल, व्याख्यान कक्ष, प्रयोगशाला व योग चिकित्सालय भवन।

४. सेमीनार/विजिटिंग फैलो/शैक्षिक यात्रा हेतु धन की व्यवस्था।

६. विभागीय कार्य में सहयोग—

निम्नलिखित अध्यापक महानुभावों ने सहयोग प्रदान किया।

(क) अध्यापन कार्य–

१. प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र–एम०ए० सप्तम पत्र (उत्तरार्द्ध)

२. डा० आर०डी० शर्मा—एम०ए० सप्तम पत्र (पूर्वार्द्ध)

३. डा० विजयपाल शास्त्री—एम०ए० अष्टम पत्र

४. डा० मनुदेव बन्धु—एम०ए० द्वितीय पत्र

५. डा० जी०आर० शर्मा—एम०ए० चतुर्थ पत्र

६. डा० विनोद कुमार शर्मा—एम०ए० चतुर्थ पत्र

७. डा० स्वदेश भूषण शर्मा—एम०ए० षष्ठम पत्र

(ख) शोधकार्य—

१. डा० स्वदेशभूषण शर्मा—ऋ० रा० आयु० कालेज

२. डा० विनोत कुमार अग्निहोत्री—ऋ० रा० आयु० कालेज

३. डा० सुनील जोशी—गुरु० रा० आ० कालेज

४. डा० दयानन्द शर्मा—गुरु० रा० आ० कालेज

(ग) व्यवस्था सम्बन्धी—

मान्य कुलपति डा० धर्मपाल जी, मान्य आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदलंकार जी, मान्य कुलसचिव प्रो० जयदेव जी वेदालंकार, मान्य डीन, प्रा०वि० संकाय प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री जी, मान्य वित्ताधिकारी श्री जयसिंह गुप्ता जी ने विभागीय कार्यों को गति प्रदान की। एतदर्थ विभाग की ओर से उक्त सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद।

हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग के अन्तर्गत एम०ए०, पी-एच०डी० के अतिरिक्त पिछले चार वर्षों से हिन्दी पत्रकारिता में एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चल रहा है। पत्रकारिता जगत् के मनीषियों ने इस पाठ्यक्रम की प्रशंसा की है। उनका सक्रिय सहयोग भी इस पाठ्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने में बराबर मिलता रहा है।

हिन्दी विभाग में महिला शिक्षा के अन्तर्गत छात्राओं के लिए स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान की व्यवस्था है।

सत्र १९९४-९५ की अवधि में हिन्दी विभाग में पठन-पाठन का कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। विभाग में विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान हुए। इनमें वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन के निदेशक डा० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल मुख्य हैं। २८-२-९५ को आपका 'हिन्दी साहित्य के इतिहास का सिंहावलोकन' विषय पर व्याख्यान हुआ। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली के निदेशक डा० गंगा प्रसाद विमल, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा० महेन्द्र कुमार तथा डा० तारकनाथ बाली, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० रवीन्द्र भ्रमर, महर्षि दयानन्द बिश्वविद्यालय रोहतक के हिन्दी विभाग के रीडर डा० नरेश मिश्रा, जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० नित्यानन्द शर्मा तथा बी०एस०एम० (पी०जी०) कालेज, रुड़की के प्राचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' विभागीय कार्यों से विश्वविद्यालय पधारे।

दिनांक १५-११-९४ को शोध उपाधि समिति की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित विषय स्वीकृत किये गये—

१. सूरसागर में प्रयुक्त लोकोक्तियों एवं मुहावरों का साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन— लता शर्मा

२. गुसाईं गुरुपंथ और उनका बानी साहित्य–श्रीमती आशा भटनागर

३. अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में भारतीय जीवन–पुष्पा बत्तरा

४. गढ़वाल का लोक साहित्य : स्वरूप एवं संवेदना–हरीश डिमरी

५. सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य : संवेदना और शिल्प—वीरेन्द्रपाल सिंह

६. महाकवि ग्वाल के काव्य में अभिव्यक्ति-विधान–अनिल कुमारी

७. संत मंगतराम प्रणीत 'समता प्रकाश' का दार्शनिक अध्ययन–
अमिताभ शर्मा

८. प्रेमचंद की कहानियों में यथार्थबोध–अशोक कुमार

९. हिन्दी पत्रकारिता के विकास में स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान–
सुभाष चन्द भाटो

इस सत्र में निम्नलिखित छात्रों को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई—

नाम	विषय	निर्देशक
१. रमेश दत्त शर्मा	साठोत्तरी हिन्दी कविता में जीवन–मूल्य (सन् १९७० से १९९२ तक)	डा० ज्ञानचन्द रावल
२. कु० विजय लक्ष्मी	अम्बाप्रसाद सुमन का समीक्षा-साहित्य	डा० विष्णुदत्त राकेश
३. विनोद बाला रावल	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के सृजनात्मक साहित्य में सौन्दर्य और प्रेम	डा० भगवानदेव पाण्डेय

इस सत्र में निम्नलिखित छात्रों ने लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया—

नाम	विषय	निर्देशक
१. संजय वर्मा	आर्य समाज की विज्ञान पत्र-कारिता	डा० विष्णुदत्त राकेश

२. कु० शिवानी विद्या- महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य डा० सन्तराम वैश्य
लंकार का अध्ययन

हिन्दी पत्रकारिता के छात्रों ने प्रायोगिक समाचारपत्र 'शतपथ' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया।

शिक्षकों की उपलब्धियाँ :

१. डा० विष्णुदत्त राकेश

एम० ए० (आगरा वि०), पी-एच० डी० (जोधपुर वि०), डी० लिट्० (विक्रम वि०)

—प्रोफेसर, हिन्दी विभाग तथा डीन, मानविकी संकाय।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा समीक्षा-ग्रंथों में अनेक लेख तथा शोध-पत्र प्रकाशित हुए। इन्होंने कई शोध ग्रंथों की समीक्षात्मक भूमिकाएँ लिखीं। हरिद्वार शहर तथा शहर से बाहर के अनेक साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आयोजनों में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित हुए जहाँ अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान से लोगों को लाभान्वित किया। विभिन्न विश्व-विद्यालयों के शोध प्रबंधों का परीक्षण किया। आपके वेदमंत्रों का दूसरा हिन्दी काव्यान्तरण 'पर्णगंधा' नाम से प्रकाशित हुआ। इस सत्र में आपके निर्देशन में एक छात्र ने लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया तथा एक छात्र को पी-एच०डी० का उपाधि प्राप्त हुई। आपके निर्देशन में कई छात्र पी-एच०डी० उपाधि हेतु अनुसंधान कर रहे हैं।

२. डा० सन्तराम वैश्य

एम० ए० (अवध वि०), पी-एच० डी० (काशी हिन्दू वि०)

—रीडर एवं अध्यक्ष

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा समीक्षा-ग्रंथों में कई लेख प्रकाशन के लिए स्वीकृत हुए। प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा 'जनसंख्या एवं स्वास्थ्य' विषय पर आयोजित निबन्ध

प्रतियोगिता में निबन्धों का मूल्यांकन किया तथा 'नारी शिक्षा—जनसंख्या नियंत्रण में सहायक या बाधक' विषय पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में भाग लिया। हिन्दी भाषा एवं साहित्य परिषद्, एस० एम० जे० एन० (पी० जी०) कालेज, हरिद्वार द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में निबन्धों का मूल्यांकन किया तथा 'वर्तमान संदर्भ में गांधीवाद की प्रासंगिकता/अप्रासंगिकता' विषय पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में भाग लिया।

इनके निर्देशन में इस सत्र में एक छात्रा ने लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। कई छात्र पी-एच०डी० उपाधि हेतु अनुसंधान कर रहे हैं। अध्यक्ष के रूप में अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन कर, विभाग को गतिशील बनाने के लिए प्रयासरत् हैं।

३. **डा० ज्ञानचन्द रावल**

एम० ए०, पी-एच० डी० (गु० काँ० वि० वि०)

—रीडर

इनके निर्देशन में एक छात्र को पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई तथा कई छात्र पी-एच० डी० उपाधि हेतु अनुसंधान कर रहे हैं।

४. **डा० भगवान देव पाण्डेय**

एम० ए०, पी-एच० डी० (काशी हिन्दू वि०)

—रीडर

इनके निर्देशन में एक छात्र को पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई तथा कई छात्र पी-एच० डी० उपाधि हेतु अनुसंधान कर रहे हैं। इन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय में डी० लिट्० उपाधि हेतु अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया जिसकी मौखिक परीक्षा सम्पन्न हुई।

५. **श्री कमलकान्त बुधकर**

एम० ए० (मेरठ वि०)

—लेक्चरर

इनके नवभारत टाइम्स में कई आलेख तथा टिप्पणियाँ प्रकाशित हुईं। अनेक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आयोजनों में सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान किया। आकाशवाणी इलाहाबाद तथा पत्रकारिता विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आमंत्रित किये गये। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया। हिन्दी पत्रकारिता के छात्रों के प्रायोगिक समाचार पत्र 'शतपथ' के चौथे अंक के प्रकाशन में सक्रिय सहयोग दिया।

———

श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वैदिक शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिये की थी। इस विश्वविद्यालय में प्रारम्भ से ही वेद की शिक्षा पर सर्वाधिक बल दिया जाता रहा है। वैदिक वाङ्मय में विद्यमान विविध-विधाओं को मानव-जाति के समक्ष प्रस्तुत करने में इस संस्था के विद्वान् आचार्यों और स्नातकों का महनीय योगदान रहा है।

वर्त्तमान में गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० के कुलपति डा० धर्मपाल जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में वैदिक अनुसन्धान को गति प्रदान करने के लिये एक पृथक् विभाग की स्थापना की गई है, जिसका नाम 'श्रद्धानन्द वैदिक शोध-सस्थान एवं प्रकाशन केन्द्र' रखा गया है।

यह विभाग उच्चस्तरीय अनुसन्धान कार्य करने के लिए बृहद् योजना बना रहा है। शीघ्र ही वैदिक अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, वैदिक भौतिक शास्त्र, वैदिक रसायन, वैदिक वनस्पति विज्ञान आदि विषयों पर साहित्य प्रकाशित करने की योजना है।

डा० भारतभूषण विद्यालंकार, प्रोफेसर वेद विभाग एवं निदेशक शोध संस्थान तथा डा० महावीर अग्रवाल रीडर एवं उपनिदेशक के कुशल निर्देशन में विभाग निश्चय ही कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेगा। इस क्रम में 'वैदिक पर्यावरण' पर एक बृहद् शोध-योजना प्रो० बी० डी० जोशी, प्रोफेसर जीव विज्ञान के साथ चल रही है, जिसका प्रारूप प्रकाशित किया जा चुका है।

गुरुकुल के स्नातकों एवं उपाध्यायों का वैदिक वाङ्मय को विशिष्ट योगदान रहा है। इन विद्वानों द्वारा लिखित वेद-वेदांग, उपनिषद् आदि से सम्बन्धित साहित्य कुछ अप्रकाशित है और कुछ अप्राप्य है, इसलिये शोध संस्थान ने इस सम्बन्ध में एक ग्रन्थ लिखकर प्रकाशन की योजना बनाई है, जिससे वैदिक साहित्य को गुरुकुल का योगदान सबके समक्ष प्रकट हो सके।

संस्थान के आचार्यों का कार्य-विवरण :

भारत भूषण विद्यालंकार
पद- प्रोफेसर वेद विभाग एवं निदेशक श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान

१. उक्त कालावधि में प्राच्यविद्या सम्मेलन रोहतक में पत्र-वाचन किया।

२. प्रभात आश्रम मेरठ में शोध गोष्ठी के अन्तर्गत वैदिक भौतिकी विषय पर पत्र प्रस्तुत किया। 'पावमानी' में प्रकाशन।

३. ऊना (हिमाचल प्रदेश) में वैदिक संस्कृति में पर्यावरण पर शोध-लेख प्रस्तुत किया।

४. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय वेद संगोष्ठी में वैदिक संस्कृति एवं पर्यावरण विषय में शोध-पत्र वाचन एवं सत्र संचालन।

५. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में एम० एस–सी० कक्षाओं को वैदिक भौतिकी विषय का अध्यापन।

६. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेद सम्मेलन में व्याख्यान।

७. ज्वालापुर महाविद्यालय में वेद सम्मेलन का सयोजन।

८. रुड़की विश्वविद्यालय प्राङ्गण में भारत-विकास-परिषद् में वैदिक विज्ञान एवं पर्यावरण पर पत्र-वाचन।

९. विभिन्न प्रान्तों में वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

१०. विभिन्न पत्रिकाओं में तीन शोध लेख।

११. वर्तमान में ४ छात्र शोधकार्यरत।

१२. वैदिक पर्यावरण पर बृहद् प्रोजेक्ट डा० बी०डी० जोशी, प्रोफेसर जीव विज्ञान के सहयोग से। इसके प्रथम स्वरूप में विभिन्न क्षेत्रों को इंगित करते हुए पुस्तिका का प्रकाशन एवं गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर श्री शिवराज पाटिल अध्यक्ष लोक-सभा द्वारा बिमोचन।

१३. अनेक वर्षों से प्रोक्टोरियल बोर्ड के सदस्य के रूप में सक्रिय योगदान।

डा० महावीर अग्रवाल, रीडर

शैक्षिक योग्यता—एम०ए०, (संस्कृत, वेद, हिन्दी)
पी-एच० डी०, व्याकरणाचार्य

शोध संगोष्ठियाँ :

१. महर्षि दयानन्द वि० वि० रोहतक में दिस० १९९४ में आयोजित अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन में भाग लिया और 'ऋग्वेदे पारिवारिक आदर्शाः' शोध-लेख प्रस्तुत किया।

२. गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में समर्पणानन्द जन्म-शती समारोह में आयोजित शोध-संगोष्ठी में 'वेदों में मनोविज्ञान' विषयक शोध-पत्र पढ़ा।

३. गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० में मार्च १९९५ में आयोजित त्रिदिवसीय वेद संगोष्ठी में 'वैदिक वर्ण व्यवस्था' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

४. गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० के वार्षिकोत्सव पर तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वेद-सम्मेलन में 'वेदों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता' तथा 'वेदों में विविध विधाएं' विषय पर व्याख्यान दिये।

५. विभिन्न नगरों एवं आर्यसमाजों में आर्य-सम्मेलनों के अवसर पर आयोजित वेद-संगोष्ठियों में वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायणादि पर व्याख्यान दिये।

शोध कार्य—

१. इस वर्ष ४ छात्रों ने शोध-प्रबन्ध पूर्ण कर विश्वविद्यालय में जमा किये जिनमें दो को पी-एच० डी० उपाधि दीक्षान्त-समारोह में प्राप्त हुई। शेष दो की मौखिक परीक्षा संपन्न हो चुकी है।

२. संप्रति ७ छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं।

३. इस वर्ष ५ छात्रों ने लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

———

अंग्रेजी विभाग

डा० नारायण शर्मा प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष के दो रिसर्च पेपर T.S. Eliot एवं E. Hemingway पर प्रकाशित हुए। इन्हें मेरठ, गढ़वाल, जयपुर विश्वविद्यालयों ने अपने भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के लिए आमंत्रित भी किया। इनके निर्देशन में पांच शोध विद्यार्थी पी-एच०डी० के लिए कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त "वैदिक पथ" पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया। पत्रिका का एक Issue गत मास में ही (Feb. 1995) में प्रकाशित हो चुका है।

श्री एस०एस० भगत, रीडर अपने निर्देशन में अमेरिकन एवं भारतीय Confessional Poetry पर तुलनात्मक कार्य करवा रहे हैं। इन्होंने Indian Association of American Studies का वार्षिक सम्मेलन भी attend किया।

डा० श्रवण कुमार शर्मा ने मेरठ विश्वविद्यालय में हुए Canadian Literature पर Seminar में भाग लिया। इन्हें Indian Association of Canadian Studies के वार्षिक सम्मेलन में आमंत्रित किया गया। इनके निर्देशन में चार रिसर्च स्कालर पी-एच०डी० के लिए शोधकार्य कर रहे हैं।

डा० अम्बुज शर्मा के निर्देशन में तीन शोध विद्यार्थी पी-एच०डी० के लिए कार्य कर रहे हैं। यह विश्वविद्यालय की Senate में (शिष्टपरिषद्) सदस्य निर्वाचित हुए हैं। आर्य समाज के आदर्शों एवं संस्कृति के सरक्षण एवं प्रचार के लिए इन्होंने आकर्षक एवं लोकप्रिय Tape-Cassette का सैट बनवाया है।

डा० के०ए० अग्रवाल की चार पुस्तकें प्रकाशित हुईं एवं एक रिसर्च पेपर। इन्होंने ज्वाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई देहली में Orientation Course भी attend किया।

माननीय कुलपति जी की प्रेरणा एव प्रोत्साहन के फलस्वरूप विभाग उन्नति की ओर सक्रिय है।

———

मनोविज्ञान विभाग

सत्र १९९४–९५ में विभिन्न कक्षाओं में विद्यार्थियों का प्रवेश निम्नांकित है :—

बी०ए०/बी०एस-सी०/अलंकार	प्रथम वर्ष	५७
बी०ए०/बी०एस-सी०/अलंकार	द्वितीय वर्ष	७२
बी०ए०/बी०एस-सी०/अलंकार	तृतीय वर्ष	०८
एम०ए०/एम०एस-सी०	प्रथम वर्ष	३५
एम०ए०/एम०एस-सी०	द्वितीय वर्ष	१४
शोध छात्र		१४

बोर्ड ऑफ स्टडीज :—

इस सत्र में मनोविज्ञान विषय के बोर्ड ऑफ स्टडीज की मीटिंग हुई, जिसमें मेरठ विश्वविद्यालय से विषयविशेषज्ञ के रूप में प्रो० एस०एन० राय ने भाग लिया। इस मीटिंग में पाठ्यक्रम का नवीनीकरण किया गया तथा पी०जी० डिप्लोमा इन पर्सनल मेनेजमेन्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स का पाठ्यक्रम स्वीकृत किया गया। पाठ्यक्रम के नवीनीकरण में विभाग के प्रो० एस०सी० धमीजा, डा० एस०के० श्रीवास्तव तथा डा० सी०पी० खोखर का योगदान महत्वपूर्ण है।

शोध समिति :—

इस सत्र में विभाग की शोध समिति की बैठक हुई, जिसमें ७ छात्रों का शोध विषय स्वीकार किया गया। शोध समिति में विषयविशेषज्ञ के रूप में काशी विद्यापीठ बनारस से प्रो० जी०पी० ठाकुर एवं मेरठ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं हैड डा० एस०एन० राय ने भाग लिया। विभाग में सभी शिक्षकों के निर्देशन में शोध कार्य चल रहा है।

नैट/जे०आर०एफ० में स्थान :—

इस वर्ष विभाग की छात्रा कु० वन्दना शर्मा ने यू. जी. सी. द्वारा संचालित नैट परीक्षा पास की। विभाग के लिए यह उपलब्धि की बात है कि विभाग के छात्र नैट परीक्षा पास कर रहे हैं। गत वर्ष भी विभाग के ही श्री सतीश चन्द्र पाण्डे ने नैट परीक्षा पास की थी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी :—

इस वर्ष विभाग ने एक राष्ट्रीय सेमीनार 'इकोलोजीकल पर्सपेक्टिव एण्ड बिहेवीयर' विषय पर आयोजित किया। यह सेमीनार २४ से २६ नवम्बर, १९९४ में अत्यन्त सफलतापूर्वक किया गया। इस सेमीनार में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने भाग लिया और विभिन्न सत्रों में अपने शोध-पत्र पढ़े। इस अवसर पर तीन अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त मनोवैज्ञानिकों का सम्मान किया गया। जिनके नाम इस प्रकार हैं —

प्रो० हरिशंकर अस्थाना	पूर्व कुलपति, सागर विश्वविद्यालय
प्रो० लालवचन त्रिपाठी	अध्यक्ष, मनोविज्ञान एवं पूर्व कुलपति, गोरखपुर वि०वि०
प्रो० मोहनचन्द जोशी	वर्तमान कुलपति, कुमायुँ विश्वविद्यालय।

सेमीनार का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने किया तथा समापन उद्‌बोधन विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा जस्टिस महावीरसिंह जी ने किया। इस अवसर पर श्री सूर्यदेव जी तथा श्री ओमानन्द जी जैसे विद्वानों की उपस्थिति से सेमीनार गौरवान्वित हुआ। इस सेमीनार के उत्प्रेरक तथा संरक्षक कुलपति श्री डा० धर्मपाल जी के मार्गदर्शन में सेमीनार का प्रबन्ध किया गया तथा इस सेमीनार की कार्यवाही ऑल इण्डिया रेडियो से १५ मिनट तक प्रसारित की गई। इस सेमीनार की सफलता में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा० जयदेव वेदालंकार का योगदान उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के निर्देशक प्रो० ओ०पी० मिश्र, सह निर्देशक प्रो० एस० सी० धमीजा, आयोजन सचिव डा० एस०के० श्रीवास्तव, सह आयोजन सचिव डा० सी०पी० खोखर थे।

इस सेमीनार की प्रोसीडिंग्स 'इकोलोजिकल पर्सपेक्टिव एण्ड बिहेवीयर' के नाम से पुस्तकाकार में प्रकाशित की गई। जिसका विमोचन माननीय श्री

शिवराज पाटिल, अध्यक्ष लोकसभा के करकमलों द्वारा हुआ। इस प्रोसीडिंग्स के सम्पादक प्रो० ओ०पी० मिश्र तथा डा० एस०के० श्रीवास्तव हैं।

पी०जी० डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेन्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स :–

इस सत्र में विभाग ने कुलपति जी की प्रेरणा से पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेन्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स का दो वर्षीय पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया। इस पाठ्यक्रम का सर्वत्र स्वागत हुआ है और इससे इस क्षेत्र की बहुत दिनों से चली आ रही मांग की भी पूर्ति हुई है। उल्लेखनीय है कि ये कोर्स सेल्फ सस्टेनिंग है और आर्थिक रूप से इसका विश्वविद्यालय को योगदान भी उल्लेखनीय है। इस कोर्स के पाठ्यक्रम को बनाने में विभाग के सभी सदस्यों का योगदान उल्लेखनीय है। प्रारम्भ में इस कोर्स के लिए केवल ३१ सीटें स्वीकृत की गई हैं। इस कोर्स का उद्घाटन बी.एच.ई.एल. के प्रबन्ध निदेशक श्री एम०के० मित्तल द्वारा किया गया और इस कोर्स में विशेष व्याख्यान हेतु ब्रिगेडियर के०एस० वर्मा, ओ.सी. रायवाला को निमन्त्रित किया गया।

पी-एच०डी० उपाधि : —

इस वर्ष विभाग के श्री सतीशचन्द्र पाण्डे और श्री आर० के० डागर को पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त हुई। इन दोनों विद्यार्थियों ने प्रो० ओ० पी० मिश्र के निर्देशन में काम किया।

विभाग के शिक्षकों की शैक्षणिक गतिविधियां इस प्रकार हैं :–

प्रो० ओ०पी० मिश्र :

प्रो० ओ० पी० मिश्र ने गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गढ़वाल विश्वविद्यालय की रिसर्च डिग्री कमेटी और बोर्ड ऑफ स्टडीज में विषय विशेषज्ञ के रूप में काम किया। कानपुर विश्वविद्यालय में भी प्रो० मिश्र रिसर्च डिग्री कमेटी और बोर्ड ऑफ स्टडीज में कार्य कर रहे हैं। इसी तरह काशी विद्यापीठ बनारस में भी प्रो० मिश्र रिसर्च डिग्री कमेटी में विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किये गये। इस वर्ष मेरठ विश्वविद्यालय ने भी उन्हें अपने यहां बोर्ड ऑफ स्टडीज में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित किया। इसके अतिरिक्त प्रो० मिश्र लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली तथा अन्य

प्रदेशीय लोक सेवा आयोगों में भी विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे हैं। प्रो० मिश्र के निर्देशन में ६ शोध छात्र कार्य कर रहे हैं तथा २ शोध छात्रों को उनके निर्देशन में पी–एच० डी० डिग्री दी गई। इसके अतिरिक्त प्रो० मिश्र के निर्देशन में ८ विद्यार्थियों ने पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर लघु शोध प्रबन्ध लिखे।

प्रो० एस०सी० धमीजा :

श्री एस०सी० धमीजा के निर्देशन में एम०ए०/एम०एस–सी० के ७ विद्यार्थियों ने लघु शोध प्रबन्ध पूरा किया। इन्हीं के निर्देशन में ५ शोध छात्र अपना पी-एच०डी० का कार्य कर रहे हैं। श्री धमीजा जी के तीन शोध-पत्र "इकोलोजीकल पर्सपेक्टिव एण्ड बिहेवीयर" में प्रकाशित हुए। श्री धमीजा ने छात्रों के लिए तीन पाठ्य पुस्तकें भी लिखी हैं :—

पुस्तकों के नाम :

१. शिक्षा मनोविज्ञान।
२. प्रारम्भिक सांख्यिकी।
३. "डिक्शनरी ऑफ साईक्लोजीकल टर्म्स"।

इसी प्रकार प्रो० धमीजा के निर्देशन में एक शोध-पत्र इस वर्ष साइंस कांग्रेस, कलकत्ता में "ए स्टडी ऑफ साइक्लोजीकल कोरिलेट्स ऑफ कार्डिएक पेशेन्ट" विषय पर पढ़ा गया।

डा० एस०के० श्रीवास्तव :

डा० एस०के० श्रीवास्तव के निर्देशन में इस सत्र में ६ विद्यार्थियों ने अपने लघु शोध प्रबन्ध पूरे किये। इनके निर्देशन में ५ विद्यार्थी पी-एच०डी० का कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के तीन शोध-पत्र प्रकाशित हुए। विभाग की सभी गतिविधियों में डा० एस०के० श्रीवास्तव का योगदान उल्लेखनीय है।

डा० सी०पी० खोखर :

डा० सी०पी० खोखर के निर्देशन में इस वर्ष ५ छात्रों ने लघु शोध प्रबन्ध पूरे किये। विभाग की शैक्षणिक गतिविधियों में आपका योगदान उल्लेखनीय है। इनके निर्देशन में दो छात्र पी-एच०डी० कार्य कर रहे हैं।

————

प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग

प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग सन् १९८३ से हरिद्वार जिले के ग्रामीण एवं शहरी अंचलों में साक्षरता कार्य करता रहा है। इस कार्यक्रम में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग—१९९२ की निर्देशिकानुसार कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इस निर्देशिकानुसार इस कार्यक्रम का संचालन 'उच्च शिक्षा के तृतीय आयाम-प्रसार' के अन्तर्गत किया जा रहा है। प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग द्वारा सत्र १९९४-९५ में निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किये गये।

१.	जन-शिक्षण निलयम	५
२.	सतत् शिक्षा कोर्स	५
३.	जनसंख्या शिक्षा क्लब	१
४.	साक्षरता कार्यक्रम	

१. जन-शिक्षण निलयम :

विभाग द्वारा न्याय पंचायत जमालपुर के पांच ग्रामों—जमालपुर, गाड़ोवाली, सराय, जगजीतपुर एवं अजीतपुर में जन-शिक्षण निलयम संचालित किये गये। इनमें से अजीतपुर ग्राम के जन-शिक्षण निलयम को माह फरवरी, १९९५ से न्याय पंचायत फेरूपुर के ग्राम कटारपुर में स्थानान्तरित कर दिया गया है। इन जन-शिक्षण निलयमों में नवसाक्षरों, ग्रामीणों के लिये समाचार पत्र, पत्रिकायें एवं पुस्तकें तथा खेल सामग्री—वॉलीबाल, फुटबाल, कैरम बोर्ड विभाग की ओर से निःशुल्क उपलब्ध करायी गयी।

२. सतत् शिक्षा कोर्स :

विभाग द्वारा सतत् शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत पांच लघु प्रशिक्षण

आयोजित कराये गये। जिसमें ग्राम जगजीतपुर में फल संरक्षण, ग्राम अजीतपुर में ग्रामीणोपयोगी बिजली के उपकरणों की मरम्मत व रखरखाव, ग्राम सराय में पेन्टिंग, एवं मिस्सरपुर में कढ़ाई प्रशिक्षण आयोजित किये गये। जगजीतपुर ग्राम में छः माह का सिलाई प्रशिक्षण जून-नवम्बर, १९९४ तक संचालित किया गया। वर्तमान में ग्राम जगजीतपुर एवं सराय में छः माह के सिलाई प्रशिक्षण फरवरी, १९९५ से प्रारम्भ किये गये हैं।

३. जनसंख्या शिक्षा :

जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग द्वारा स्वास्थ्य शिविर, प्रसार भाषण, वाद-विवाद एवं निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयीं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ही दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग के सहयोग से एक दिवसीय संगोष्ठी जनसंख्या एवं विकास विषय पर आयोजित की गयी। वाद-विवाद एवं निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किये गये।

४. साक्षरता कार्यक्रम :

विभाग द्वारा साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत परिवार सर्वेक्षण के पश्चात् २५०० निरक्षरों को साक्षर बनाया गया। २५०० निरक्षरों में से नवसाक्षरों ने ३३१ ने उत्तम, १०५६ ने मध्यम एवं ११११३ ने साधारण स्तर प्राप्त किया।

५. प्रकाशन :

सत्र १९९३-९४ में जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत 'जनसंख्या एवं पर्यावरण' विषय पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्राप्त छात्र/छात्राओं के निबन्धों को मूल्याकंन के पश्चात् आठ निबन्धों को 'जनसंख्या एवं पर्यावरण' नामक निबन्ध संकलन के रूप में प्रकाशित किया गया।

६. सूदूर शिक्षा :

विभाग को सूदूर शिक्षा संकाय के रूप में विकसित किया जा रहा है। सूदूर शिक्षा को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इसका श्रेय तत्कालीन कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह जी एवं वर्तमान कुलपति डा० धर्मपाल जी को जाता है। सूदूर शिक्षा पाठ्यक्रम प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं

प्रसार विभाग के अन्तर्गत प्रारम्भ किये जायेंगे। इस आशय का प्रस्ताव सूदूर शिक्षा समिति की बैठक ८-१२-६४ के अनुसार स्वीकार किया गया है।

७. संगोष्ठी/कार्यशाला सहभागिता :

डा० आर० डी० शर्मा, विभागाध्यक्ष ने निम्नलिखित संगोष्ठी/कार्यशाला/बैठकों में भाग लिया।—

(१) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् में अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिये निर्देशिका के निर्माण सम्बन्धी कार्यशाला में जनवरी १६-१८, १६६५ तक भाग लिया।

(२) मनोविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित इकोलोजीकल पर्सपैक्टिव एवं बिहेवियर पर दिनांक २४-२६ नवम्बर, १६६४ में आयोजित संगोष्ठी हेतु इन्फ्लून्स ऑफ रिसैन्ट लाइफ एक्सपीरियन्स आन मेंटल हैल्थ आँफ रूरल फिमेल्स पर शोध पत्र दिया।

(३) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की शोध पत्रिका इन्डियन एजूकेशनल रिव्यू में इन्फ्लूएंस ऑफ रिसैन्ट लाइफ एक्सपीरियेन्स ऑन मेंटल हैल्थ ऑफ स्कूल टीचर्स नामक शोध पत्र प्रकाशन हेतु स्वीकृत हुआ।

(४) प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा उत्तर प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों के प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग के निदेशकों/प्रभारी की बैठक एवं उच्च शिक्षा के तृतीय आयाम पर संगोष्ठी में दिनांक २५-२६ मार्च, १६६५ को भाग लिया तथा लेख प्रस्तुत किया।

डा० जशबीरसिंह मलिक, परियोजना अधिकारी द्वारा निम्नलिखित विभागीय कार्य/संगोष्ठी/कार्यशाला/बैठकों में भाग लिया गया :

(१) प्रौढ़ शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, सतत् शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन एवं संचालन।

(२) १५ जून, १६६४ से १८ जून, १६६४ तक भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ,

नई दिल्ली द्वारा अजमेर, राजस्थान में आयोजित ऑल इन्डिया एडल्ट एजूकेशन कान्फ्रेन्स में भाग लिया।

(३) १-२१ सितम्बर, १९९४ तक गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में रिफ्रेशर कोर्स किया।

(४) १७ दिसम्बर को दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित गोष्ठी 'नेशनल लेवल ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन न्यू थ्रस्ट एरिया ऑन पोपुलेशन एजूकेशन' में भाग लिया।

(५) ४ फरवरी, १९९५ को दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग के सहयोग से जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के अन्तंगत 'जनसंख्या एवं विकास' विषय पर एक दिवसीय गोष्ठी का आयोजन एवं संचालन किया।

(५) २४ मार्च, १९९५ को विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठी 'वैदिक वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार' में भाग लिया।

विभाग में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी :

(१) डा० आर०डी० शर्मा
सहायक निदेशक एवं विभागाध्यक्ष

(२) डा० जशबीर सिंह मलिक
परियोजना अधिकारी

(३) श्री सुदर्शन मल्होत्रा
सहायक कुलसचिव (३१ दिसम्बर, १९९४ तक)

————

गणित विभाग

सत्र १९९४-९५ में नये पाठ्यक्रम के अनुसार स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं का संचालन हुआ। इस वर्ष बी. एस-सी भाग प्रथम, द्वितीय व तृतीय में क्रमशः तीन, दो व दो खण्ड थे। इसके अतिरिक्त बी. ए. प्रथम वर्ष में गणित विषय में ९० छात्रों ने प्रवेश लिया।

विभागाध्यक्ष प्रो० विजयपाल सिंह जी के निर्देशन में स्नातकोत्तर छात्राओं के अध्यापन की अलग परिसर में व्यवस्था की गयी।

प्रो० एस० एल० सिंह, डा० वीरेन्द्र अरोड़ा एवं एम० पी० सिंह के निर्देशन में गणित की नवीन विधाओं एवं प्राचीन भारतीय गणित में कतिपय अभ्यर्थी पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं।

डा० हरबंस लाल गुलाटी ने पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय को वार्षिक परिक्षाओं में सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य सफलतापूर्वक किया।

प्रो० एस०एल० सिंह ने गणित विषय में विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित सम्मेलनों में भाग लिया एवम् अध्यक्षता की। दिनांक २५-२७ मई, ९५ को रामानुजम् मैथमैटिकल सोसाईटी ने ऋषिकेश में हुए दशम् अधिवेशन में प्रो० सिंह को सम्मानित किया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय बायोग्रेफिकल सेन्टर, इंग्लैंड के एडवाइजरी कौन्सिल का सदस्य चुना गया।

प्रो० एस० एल० सिंह के निर्देशन में दो अभ्यर्थियों ने शोध उपाधि प्राप्त की।

———

भौतिकी विभाग

सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

विभाग में माननीय कुलपति डा० धर्मपाल जी के प्रयास से नयी प्रयोगशाला का निर्माण कराया गया।

सत्र १९९४-९५ में भौतिकी विभाग में छात्रों की संख्या निम्न है।—

B.Sc. I — 239	M.Sc. (Pre.) 10
B.Sc. II — 183	M.Sc. (Final) 08
B.Sc. III — 159	Research Sch. 06

विभाग में राष्ट्रीय स्नातक भौतिकी परीक्षा (N.G.P E. 95) सम्पन्न करायी गयी। इसके अतिरिक्त Vibrations of Self Intersteds to Cubic Methods में Dr. P. N. Ram (North Hill Univ. Shilong) ने लेक्चर दिया। श्री राजेन्द्र प्रसाद भारद्वाज ने डा० पी० पी० पाठक के निर्देशन में "Radio Spectrum of Lightning" पर शोध कार्य सम्पन्न कर उपाधि प्राप्त की।

———

रसायन विज्ञान विभाग

गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० में १ अगस्त १९५८ को भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० ज्वाहरलाल नेहरू द्वारा विज्ञान महाविद्यालय के उद्घाटन के साथ ही रसायन विज्ञान विभाग की स्थापना हुई। विभाग में सन् १९८५ तक स्नातक स्तर को कक्षायें थीं, परन्तु स्नातकोत्तर कक्षाओं के प्रारम्भ करने के लिए विभागीय शिक्षकों द्वारा किये जा रहे निरन्तर प्रयत्नों के परिणाम-स्वरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सन् १९८५ में "पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कैमीस्ट्री" कोर्स प्रारम्भ करने की स्वीकृति प्रदान की। इस कोर्स को मिली ख्याति से प्रभावित होकर सन् १९९१ में U G.C. ने M.Sc. Chemistry (Commercial methods of Chemical Analysis) में कक्षाऐं प्रारम्भ करने की स्वीकृति प्रदान की। भारत सरकार की शिक्षा नीति के अनुरूप यह एक रोजगारोन्मुख कोर्स है। आज जहाँ देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त किये हुये छात्रों को रोजगार न मिल पाने की गम्भीर समस्या है, वहाँ हमारे M.Sc Chemistry पास छात्र अपने परीक्षा परिणाम निकलने से पूर्व ही देश के प्रतिष्ठित औद्योगिक प्रतिष्ठानों, संस्थानों में सम्मानित रोजगार पा जाते हैं। गु० कां० विश्वविद्यालय की परम्परा के अनुरूप इस कोर्स के पाठ्यक्रम में "Chemistry in Vedic Literature and Ayurvedic drugs" नाम से विशिष्ट प्रश्न पत्र का समावेश किया गया है। जिसके फलस्वरूप विभागीय शिक्षक आयुर्वेदिक वनस्पतियों एवं औषधियों पर अनुसंधान कार्य में सलग्न हैं, तथा उनके निर्देशन में अनेक शोधार्थी छात्र शोध कार्य कर रहे हैं।

M Sc. Chemistry कोर्स को पास करने वाले छात्रों की योग्यता से प्रभावित होकर जुलाई १९९४ में "पशुपति एक्रीलॉन" उद्योग के अधिकारियों ने कैम्पस इन्टरव्यू लेकर हमारे अनेक छात्रों को कैमिस्ट के पद पर नियुक्ति प्रदान की। इसके अतिरिक्त विभिन्न उद्योगों द्वारा रसायन विभाग से छात्रों की नियुक्ति के लिए सीधे नाम भी मांगे जाते हैं। इनमें मोदी वनस्पति, रेनवैक्सी आदि प्रमुख हैं।

विभाग के डा० आर० के० पालीवाल ने अपने शैक्षणिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुये वि० वि० परीक्षाओं को सुचारू ढंग से सम्पन्न कराने के लिए उड़नदस्ते तथा प्रोक्टोरियल बोर्ड के सदस्य बनकर छात्रों में अनुशासन स्थापित करने के लिए सहयोग किया (विशेषकर छात्र कल्याण परिषद् के चुनाव में)। इनके निर्देशन में तीन छात्र-छात्राओं ने लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

डा० ए० के० इन्द्रायण (रीडर) का एक शोध पत्र "एशियन जनरल ऑफ कैमिस्ट्री" में प्रकाशित हुआ तथा उनका गत वर्ष जापान में आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत शोध पत्र उपरोक्त जनरल में प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुआ। औषध पौधों से सम्बन्धित इनकी एक परियोजना स्वीकृत हुई है। ये आकाशवाणी नजीबाबाद के कार्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्य रहे हैं। इनकी वार्तायें एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आकाशवाणी से प्रसारित हुये हैं। डा० इन्द्रायण की पुस्तक Fundamental in Chemistry के द्वितीय संस्करण का गत वर्ष प्रकाशन हुआ था, इसी पुस्तक के तृतीय संस्करण की प्रक्रिया जारी है।

विभागाध्यक्ष डा० कौशल कुमार (रीडर) ने अगस्त १९९४ में जुटेण्डो यूनिवर्सिटी टोक्यो जापान में आयोजित The International Congress on traditional Asian medicines में भाग लिया तथा Chemistry of traditional recipe used in liver disorder विषय पर अपना शोध पत्र पढ़ा। इनके निर्देशन में तीन विद्यार्थियों ने लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये, तथा एक छात्रा Ph. D उपाधि के लिए शोध कार्य कर रही है।

डा० आर० डी० कौशिक (रीडर) के निर्देशन में तीन छात्र-छात्राओं ने अपने लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये, अनेक शोधार्थी छात्र इनसे मार्ग-दर्शन प्राप्त करते रहे हैं। दो छात्राएं पी-एच०डी० के लिए पंजीकृत हैं।

डा० श्रीकृष्ण (प्रवक्ता) के निर्देशन में दो छात्रों ने अपने लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये। विभाग में तदर्थ रूप से नियुक्त श्री मनोज भटनागर एव ऋषि कुमार शुक्ला ने अपने शैक्षणिक उत्तरदायित्व का निर्वाह किया।

रसायन विभाग में २० सितम्बर, १९९४ को श्री ओमप्रकाश सिन्हा का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर माननीय जस्टिस श्री महावीर सिंह, परिद्रष्टा गु० कां० वि० वि० द्वारा B.Sc की नवनिर्मित प्रयोगशाला के उद्‌घाटन के उपरान्त प्रयोगशाला विभाग को सौंपी गयी। इसी अवसर पर श्री रणवीर सिंह संसद सदस्य ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर ध्यान दिलाते हुये अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया।

वर्ष १९९४-९५ में छात्रों की बढ़ी हुई संख्या के आधार पर विभाग में तीन शिक्षक तथा दो शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की तदर्थ रूप से नियुक्ति की गई। छात्रों की अध्ययन, अध्यापन की व्यवस्था सन्तोषजनक रही तथा Theory and Practicals की कक्षायें सुचारू ढंग से सम्पन्न हुई। शिक्षकेत्तर कर्मचारियों में श्री शशि भूषण (लैब-टैक्नीशियन) श्री नरेश कुमार त्यागी (प्रयोगशाला सहायक) श्री जयपाल सिंह व नरेश सलीम, सुशील कुमार, अरुण कुमार (लैब-अटैण्डेन्ट) श्री मानसिंह (गैस मैन) ने विभाग के संचालन में पूर्ण लग्न एवं तत्परता से सहयोग किया।

जीव-विज्ञान संकाय

संकाय के सभी प्राध्यापक शिक्षण-कार्य के साथ-साथ शोध कार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९४ की भाँति इस वर्ष १९९५ में भी इस संकाय का बी० एस-सी० तृतीय वर्ष का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा, यह श्रेय सभी प्राध्यापकों को जाता है। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि यहाँ से निकले हुए माइक्रोबायलोजी स्नातकोत्तर व शोध की उपाधि से विभूषित छात्र उच्चस्तरीय, Multinational Companies जैसे–Cipla, Cadila, Torrent, Dabur, Mohan Meakins, Jagatjeet Industries, Lupin, Unichem, Armour Chemicals आदि में उच्चपदों पर पदासीन हैं।

संकाय में विभिन्न परियोजनाओं के तहत शोध-काय भी कराया जा रहा है। गत-वर्षों में बहुत ही उपयोगी उपकरणों का समावेश इस संकाय में हुआ है और निरंतर हो रहा है। कुछ नये विषय जैसे Industrial Microbiology, Environmental Sciences, भारत सरकार की नई परियोजनाओं के तहत इस संकाय को मिले हैं, यह दर्शाता है कि इस संकाय के सभी प्राध्यापकों का विषय के प्रति अभिरुचि व लगाव। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इन विषयों को केवल गिने चुने विश्वविद्यालयों को ही दिया है। माननीय कुलपति जी के अथक् प्रयासों से संकाय शीघ्र ही छात्रों के लिए नयी प्रयोगशालाओं को स्वरूप प्रदान करने में सक्षम होगी।

इस सत्र में प्रोफेसर डी० के० माहेश्वरी, डीन, जीव वि० संकाय को जर्मनी की सरकार ने अपने यहां Guest Professor के रूप में आमंत्रित किया, उनकी इस यात्रा से विभाग में अध्ययन व शोध कार्य में निरंतर बढोत्तरी होगी।

वनस्पति विज्ञान विभाग में अनेक अर्न्तराष्ट्रीय वैज्ञानिक पधारे, जिनमें प्रो० वाई० निशीमुरा का नाम प्रमुख है। उनका एक माह का प्रवास

इस विश्वविद्यालय में रहा। आशा है भविष्य में यह संकाय भारतवर्ष में ही नहीं अपितु अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का और अधिक नाम रोशन करेगा।

संकाय में आमंत्रित व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया, और विभागीय सदस्यों को भी अन्य विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया।

सन् १९९४-९५ के प्रवेशानुसार छात्र संख्या निम्न रही।

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी०एस-सी० प्रथम	बायो०	६१
बी०एस-सी० प्रथम	इ० माइक्रो०	१५
बी०एस-सी० द्वितीय	बायो०	६०
बी०एस-सी० तृतीय	बायो०	५१
एम०एस-सी० प्रथम	माइक्रो०	१३
एम०एस-सी० द्वितीय	माइक्रो०	१२

———

जन्तु विज्ञान विभाग

विभाग की मौलिक छवि :

इस विभाग में आरम्भ से ही स्नातक एवं स्नातकोत्तर माइक्रोबॉयलाजी की कक्षाओं में अध्यापन कार्य हो रहा है। विभिन्न शोध-परियोजनाओं पर भी कार्य किया गया। जिसमें विभाग को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। विभिन्न शोध-परियोजनाओं को विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग तथा पर्यावरण मंत्रालय द्वारा अनुदान प्रदत्त किए गए हैं। विभाग में सन् १९९२-९३ से जूलौजी विषयों में स्नातक (आनर्स) कक्षा का अध्यायन कार्य भी आरम्भ हो गया है।

Himalayan Journal of Environment & Zoology नामक शोध पत्रिका का नियमित प्रकाशन विगत् ८ वर्षों से विभाग के प्राध्यापकों द्वारा अपने ही प्रयास के सुचारू रूप से किया जा रहा है। शिक्षा जगत में इस शोध-पत्रिका की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर बढ़ती जा रही है। विभाग द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों का भी आयोजन किया जाता है। साथ ही विभाग के प्राध्यापक राष्ट्रीय एव अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेते रहते हैं।

अत: जन्तु विज्ञाम विभाग अपने विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा विश्वविद्यालय के स्तर को निरन्तर ऊँचा उठाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

१. डा० बी०डी० जोशी, प्रोफेसर :

१. प्रो० जोशी, माइक्रोब्रॉयलाजी विषय के कोआर्डिनेटर पद पर कार्यभार ग्रहण किए हुए हैं। उनके निर्देशन में माइक्रोबॉयलाजी विषय निरन्तर प्रगति कर रहा है एवं हमारे छात्र राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुल का यश फैला रहे हैं। इसी शृंखला में प्रो० जोशी के निर्देशन में इस सत्र में निम्न दो छात्र अपना M.Sc. थीसिज का कार्य कर रहे हैं —

i) श्री कालिका प्रसाद

ii) श्री पुनीत कुलश्रेष्ठ

२. प्रो० जोशी ने विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक निभाया।

३. प्रो० जोशी वर्तमान में विश्वविद्यालय के चीफ-प्रोक्टर का कार्य भी कर रहे हैं।

४. प्रो० जोशी ने इस सत्र में पुन: वार्षिक परीक्षाओं में उड़नदस्ता प्रमुख का कार्य किया।

Following two research papers of Prof. Joshi were published in 1994:

1. Joshi. B D. & Bhasin, Gayatri (1994) Preliminary studies on the changes in the microbial populations of hydrogenperoxide and formaline treated raw buffalo milk. Him. J. Env. Zool. 8 : 13-18.

2. Joshi, B D. & Meetai, S.N. (1994). Effect of urea on the microbial populations of soil in relation to some physico-chemical characteristics. Him. J. Env. Zool., 8 : 28-33.

Following book of Prof. B.D. Joshi was published in this session "Glimpses of Environmental precepts in vedic literature". The book was released by Lok Sabha Adhykshya Dr. Shiv Raj Patil during the annual convocation.

Prof. Joshi delivered lectures in the refresher courses held in the Deptt. of Zoology of Kurukshetra University, Kurukshetra, in November 1994.

Prof. Joshi delivered a radio talk entitled "Himalaya ke paryavaran mein vano ka mahatva" from A.I R. Najeebabad.

Prof. Joshi has been drafted as an advisor in the academic council of Henryk Skolimovsky chair in Eco-Philosophy, at Indian Institute of Ecology & Environment, Delhi.

Prof. Joshi delivered an invited lecture at the inaugural function of Eco-philosophy centre at IIEE, held at India International Centre, New Delhi in March 1995.

Prof. Joshi continues to act as Chief Proctor, GKV, Hardwar.

Prof Joshi acted as Incharge flying squad for annual examination of 1995, and under his guidance flying squad worked very successfully.

Two reseach projects were sanctioned to Prof. B.D. Joshi during 1994-95 session.

1. Haematological alterations in some fresh-water fishes as an index of environmental stress with special reference to eco-physical and hydrobiological conditions in the river Ganga and its tributaries between Hardwar & Rishikesh from U. G. C with a grant of approximately Rs. 3.1 lakh for a period of three years

2. Studies on the eco-biology of selected tributaries of river Ganga between Devprayag and Rishikesh, from G B Pant Inst. of Himalayan Ecology & Develop-

ment, Almora, under the collaboration of Indian Academy of Environmental Sciences Hardwar, for a period of three years with a grant of approximately Rs. 3.25 lakh.

Prof. Joshi attended a number of meetings held in U G C during the session on behalf of the Viswavidyalaya and Zoology, Deptt. to discuss research projects and new courses for GKV.

Prof. Joshi is guiding research leading to Ph. D. degree to four students from this Viswavidyalaya.

Prof. Joshi is acting on the board of experts in the research degree committees and Board of Studies in Zoology and Bio-sciences besides as a special expert to suggest measures to improve standard of Ph. D. degree in certain Universities of Bihar, M P., J & K, U.P. viz. Mithila University, Darbhanga, Jammu University, Jammu, Bhopal University, Avadh University, Faizabad, Garhwal University Srinagar (Garhwal), Sagar University, Sagar, Indian Institute of Ecology & Environment, New Delhi etc.

Prof. Joshi gave an Interview to A.I.R. New Delhi on March 20th, 1995 on the Vedic concept of environment as described in our vedic literature.

Prof. Joshi continues to act as Editor in Chief of Himalayan Journal of Environment & Zoology for the ninth year in continuation.

२. डा० टी० आर० सेठ, रीडर :

डा० सेठ ने विश्वविद्यालय एवं विभागीय क्रियाकलापों में सक्रिय योयदान दिया। आपने विज्ञान संकाय की वार्षिक परीक्षा में सहायक

परीक्षाध्यक्ष का कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डा० सेठ विभिन्न विश्व-विद्यालयों की परीक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों में परीक्षक हैं।

३. **डा० ए० के० चोपड़ा, रीडर एवं विभागाध्यक्ष** :

डा० ए० के० चोपड़ा द्वारा सन् १९९४ में दिनांक १/७/९४ में विभागाध्यक्ष का पद भार ग्रहण किया गया।

1. Research papers :

(i) Chopra, A. K. and Tayal, S. 1993. Alkaline Phosphatase Activity in Relation to Glycogen Content of Three Sheep Cestodes. Ind J. Helminth. 45 : 100-103.

ii) Chopra, A.K., Madhwal, B.P. and Singh, H.R. 1993. Relationship of abiotic Variables and Benthic Fauna in River Yamuna of Garhwal-Himalaya. Ind. J. Ecol , 20 : 53-58.

iii) Chopra, A.K. and Charanjeet, 1994. A Study on Incidence of skin Diseases in people at Hardwar. Him. J. Env. Zool. 8 : 65-70.

iv) Chopra, A.K. and Nirmal J.C. Patrick 1994. Effect of Demestic Sewage on Self-Purification of Ganga Water at Rishikesh. I. Physico-chemical parameters. Advances in Biosciences, 13 : 75-82.

2. Scientific Articles :

i) Chopra, A.K. 1994. Sankat mein Dal Sakti Hei Pechish. Amar Ujala, Meerut, November 19, p. 5.

ii) Chopra, A. K. Rogon ke safay mein sahayak hein keet-bakhshi Machliyan, Amar-Ujala, 1994, Dec. 3, p : 8.

iii) Chopra, A. K. 1995. Jan le sakta hei pani, Amar Ujala, Meerut, Jan. 14, p : 5.

iv) Chopra, A K. 1995, Van Manush-Oranguton, Amar Ujala, Kanpur, Feb. 4, p. 8.

v) Chopra, A K., 1995, Impact of Environmental Stress on Human body. Ecological perspectives and Behaviour, p. 112-116.

3. U.G.C. Project (GKV) :

Epidemiological & Pathological studies of parasitic diseases of Human beings at Hardwar. (Completed).

M. Sc. Dissertation completed :

i) Physico-Chemical and Microbiological Characterisation of Sewage Water of Sewage Treatment Plant at Misserpur (Hardwar). Sri K.K. Joshi.

ii) A study on Tuberculosis Infection in Bharat Heavy Electricals Limited and its Adjoining Areas, Hardwar. Km. Seema Sekhri.

iii) Antimicrobial Effect of Cedrus Deodara on Escherichia coli. Sri Vijay Gupta.

4. Ph. D. Dissertation :

Ph. D. work of Mr. Ravikant & Mr. Nand Kishore is in progress.

5. Other Activities :

i) As Executive-editor of Him. J. Env. Zool. since 1987,

ii) As NSS Programme Co-ordinator, i) Organized an Essay Competition--"Challenge before nation and the role of Youth" at district level, ii) Organised two days "UNIVERSITIES TALK AIDS" training programme,

डा० चोपड़ा द्वारा विभाग के क्रियाकलापों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

४. **डा० दिनेश भट्ट, प्रवक्ता :**

१. डा० भट्ट ने निम्न शोध-पत्र एक राष्ट्रीय संगोष्ठी (National Symp. on Animal Behaviour, DTRC Luck now) में प्रस्तुत किया।

1. Food Restriction Causes Shift in Avian Body weight cycle.

2. Psycho social Impact of AIDS नामक विषय के ऊपर "University Talk AIDS" कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण दिया।

3. **Ph. D. Work :** Ph. D. Work of Ms. Myara Shah, Mr. R.C. Sharma & Anil Kumar is in progress.

4. **Project :** 'Sociobiology of some avain species" नामक विषय पर स्वीकृत UGC Minor project के अन्तर्गत शोध-कार्य प्रगति पर है।

5. **Editing Work :** Managing Editor of "Himalayan Journal of Env. & Zoology".

6. **M. Sc. dissertation :** M. Sc. dissertation of Vandana Gupta & Harshpal Singh.

२. **डा० डी० आर० खन्ना, प्रवक्ता :**

डा० खन्ना ने विश्वविद्यालय में इस सत्र में विश्वविद्यालय एवं विभागीय क्रियाकलापों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(i) राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित क्रियाकलापों में छात्रों का मार्ग निर्देशन किया व दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन कांगड़ी ग्राम में आयोजित किया।

(ii) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ओरिएन्टशन प्रोग्राम में भाग लिया।

(iii) इन्डियन एकेडमी ऑफ एन्वायरमेंटल साइंसेज के फेलो बने।

(iv) ए०एस०सी० इन्दौर द्वारा आयोजित सेमिनार में दिनांक 22/11/94 को "Environment & Pollution" नामक टॉपिक पर व्याख्यान दिया।

(v) एड्स से बचाव पर रा० से० यो० द्वारा आयोजित ट्रेनिंग में भाग लिया।

(vi) हरिद्वार में जिलास्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया।

प्रकाशन :

निम्न टॉपिक पर लेख / शोध पत्र प्रकाशित हुए।

(i) Uttarkashi & "Earthquake"

(ii) उत्तराखण्ड में भूकम्प के प्रभाव।

(iii) Habitat of Adult Mahaseer in Ganga river at Hardwar.

लघु फिल्म लेखन :

"Pearl formation" नामक लघु वीडियो-फिल्म की स्क्रिप्ट ए० वी आर० सी० इन्दौर द्वारा स्वीकृति की गई।

अन्य :

एम० एस-सी० के एक छात्र ने डा० खन्ना के निर्देशन में लघु शोध प्रबन्ध पूर्ण किया व दो छात्रों के कार्य प्रगति पर हैं।

———

वनस्पति विज्ञान विभाग

शैक्षणिक सत्र १९९४-९५ में विभाग में बी० एस-सी० एव एम० एस-सी० माइक्रोबायोलोजी कक्षाओं का अध्यापन कार्य सुचारू रूप से पूर्ण हुआ।

डा० पुरुषोत्तम कौशिक :

१. डा० पुरुषोत्तम कौशिक, विभागाध्यक्ष ने ८ अगस्त, १९९४ को भारत के राष्ट्रपति की ओर से दूरदर्शन विभाग द्वारा आमन्त्रित किये जाने पर "हिमालय के आर्किड" शीर्षक पर १५ मिनट का सचित्र तकनीकी कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसका सीधा प्रसारण राष्ट्रीय चैनल द्वारा दूरदर्शन पर प्रदर्शित किया गया।

२. गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर में १४ एवं १५ मार्च १९९५ दो दिन की राष्ट्रीय सगोष्ठी "पर्यावरण एव विकास" में भाग लिया और एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की।

३. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में आयोजित दिनाक २५ मार्च से २७ मार्च १९९५ तक "डवलपमेण्टल बायोलोजी" विषयक संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किया।

४. डा० कौशिक ने "एकेडेमी आफ प्लान्ट साइन्सेज" डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर में राष्ट्रीय सगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में की नोट लेक्चर दिया।

डा० नवनीत (प्रवक्ता)

1. I have been admitted as a Fellow of Indian Phytopathological Society (FPSI) at the 47th Annual General Body Meeting held on 20th of January, 1995 at Faizabad (U.P.)

2 A paper entitled, "Aeromycology of Gurukul Kangri Pharmacy". has been accepted for presentation at the platinum Jubilee Celebration of Indian Botanical Society to be held at Jammu University, Jammu.

3. A paper entitled, "Aeromycoflora of potato field" has been submitted for publication in Journal of Natural and Physical Sciences, Gurukul Kangri University, Hardwar.

4. A project entitled, "Biopesticidal control of certain tropical diseases associated with oil seed crops" has been sanctioned by T.M.O. & P, CSIR, New Delhi. I am the Co-Principal Investigator of this project.

५. गुरुकुल कांगड़ो विश्वविद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि चुनाव के लिये २२/२/६५ को सहायक निर्वाचन अधिकारी के रूप में कार्य किया।

6. I have prepared the Syllabus of B. Sc. (I) Botany as directed by Dr. R. D. Sharma on 6/3/95.

7. Teaching : B. Sc. I (Bio.), B. Sc. I (Micro.), B. Sc. II (Bio.), B. Sc. III (Bio.), M Sc. (P) Micro. both theory and practicals.

G. P. Gupta :

(i) Attended Annual Conference of Indian Botanical Society held at Botany Department, Chandigarh University, Chandigarh, from 21 to 23 October 1994.

(ii) Attended Refresher Course of Botany at Botany Department of Kurukshetra University, Kurukshetra from 7th March to 27th March 1995.

(iii) Acted as Judge (for Biological groups) at

Kendriya Vidyalaya No. 2, BHEL, Ranipur, Haridwar, on occasion of 22nd Jawaharlal Nehru Exhibition for children on 17/8/94.

(iv) Worked as a member of Expert Committee for preparation of Dictionany of Microbiology organised by Ministry of Human Resources and Development New Delhi at Gurukula Kangri University, Haridwar from July, 27th to July 31, 1995.

(v) "Studies on Pollution **Reduction Potential** of **Eichharnia Crassipes** grown in **Industrial effluent**" **in Press** of J Nat and **Physical Sciences, G. K.** V. Haridwar.

Professor D. K. Maheshwari
Dean, Faculty of Life-Sciences
P.G. Studies & Research in Microbiology,

i) Acting as Dean Student Welfare.

ii) Visited as Guest Professor, Department of Microbiology, University of Ulm (Germany) for a period of 30 days (June-July, 1995).

iii) Selected to participate in INSA International bilateral exchange programme between India and Germany for the year 1995.

iv) Prof. Y. Nishimura, Science University of Tokyo, Japan spent about one month in the laboratory. His visit was sponsored by INSA and Japanese Society of Promotion of Sciences.

v) Nominated Member, NEW YORK Academy of Sciences, USA in the year 1995.

Invited as resource person

a) In UGC Refresher course at Behrampur University, Behrampur (Orissa), Meerut University, Meerut, Kurukshetra University, Kurukshetra, H.S. Gour University, Sagar.

b) Invited to deliver a lecture in Second International Seminar cum workshop on the design and establishment of a computerised database of legumes of South Asia (April, 26th - May, 3, 1995) at Central Department of Botany, Tribhuwan University, Kathmandu (Nepal).

c) Invited to deliver lecture in the Department of Microbiology, Guru Nanak Deo University, Amritsar.

d) Acted as UGC expert to visit University of Delhi during UGC JRF/Lectureship examination.

e) Awarded Major research project by a high power committee of Technical mission on oil seed crops with a special emphasis on funding for Instruments (1994–1997).

f) Awarded a Major research project from UGC, New Dehli (1994-1997).

g) Sanctioned a Major research project from Council of Science & Technology (U.P.)

h) Department got recognition for financial support from UGC for vocational course on Industrial Microbiology.

Expert member :

Board of studies in Microbiology at H.S. Gour University, Sagar, M.D.S. University Ajmer, R.D. University, Jabalpur.

Subject expert of :

INSA, UGC, DST, CST (U.P.), M.P.C.S.T. and Department of Biotechnology, Govt. of India.

Subject Expert in Microbiology, Ministry of Human Resources and Development, Govt. of India, New Dehli.

Creative Achievements : Ph. D. awarded 03 (1994-95)
Research Projects 03

Ph. D. awarded from Barkatullah University, Bhopal to Mrs. Jaspal Kour on the topic "Production of ethanol by aquatic biomass residue".

Ph. D. degree awarded from Gurukul Kangri University to Mr Rajesh Sawhney on the topic "Studies on the **Rhizobium** symbiotic with **Acacia nilotica** and **Acacia catechu** with special reference to substandard soil".

Ph. D. degree conferred to Mr. Ajay Khandelwal on the topic "Investigation on growth of some tree legumes in degraded land amended with **Rhizobium** and **Eichhornia** residue".

Research Publications :

Paper mill sludge as a potential source for cellu-

lase production by **Trichoderma reseei** GM 9123 and **Aspergillus niger** using mixed cultivation. Carbohydrate Polymers 23, 161-163, (1994) (England).

Effect of Carboryl and 2, 4-D to nitrogenase and uptake hydrogenase in agar cultures and root nodule formed by **Rhizobium leguminosarum**. J. Gen. and Appl. Microbiol. 40, 563-568. (1994) (Japan).

Effect of 2, 4-D on growth, nitrogenase and uptake hydrogenase activity in agar culture and root formed by **Bradyrhizobium japonicum.** Microbiol Res. 34 (5), 329-334. (1994) (Germany).

Lipid variation at different temperature on two species of **Xenorhabdus.** J. Basic Microbiol. 34 (5), 329-334. (1994) (Germany).

Growth and cellulase biosynthesis by various **Trichoderma** species. J. Pure & Appl. Biol. 9, 41-53, 1994.

Bioconversion of Cellulose. Facts & Prospects. In Frontiers of Microbial Technology (ed. P. S. Bisen). CBS Publishers & Distributors, New Delhi, pp. 279-298, 1994.

Research Paper Communicated :

Bioconversion of water hyacinth to composts and its chemical characteristics. Compost Science and Utilization (USA).

The influence of nitrogen sources on cellulase

biosynthesis in Trichoderma pilulifera. Mycol. Research (England).

Bioconversion of paper mill sludge by mixed cultivation of **Trichoderma pseudokoningii** and **Aspergillus niger.** J. Basic Microbiol. (Germany).

Invited article :

Bradyrhizobium japonicum growth characteristics, nodule formation, leghaemoglobin and nitrogenase activity in **Glycine max** var. JS-72-44. J. Indian Bot. Soc Platinum Jubilee Vol. (In press) 1995.

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

विगत सात वर्षों से कम्प्यूटर विज्ञान विभाग विश्वविद्यालय में कम्प्यूटरीय शिक्षा के विस्तार के लिए निरन्तर प्रयासरत है। इस सत्र में विभाग में निम्न सदस्य कार्यरत रहे—

१.	डा० विनोद कुमार	रीडर एवं विभागाध्यक्ष
२.	श्री कर्मजीत भाटिया	प्रवक्ता
३.	श्री सुनील कुमार	प्रवक्ता
४.	श्री दुर्गेश कुमार	प्रवक्ता
५.	श्री वेद व्रत	तकनीकी सहायक
६.	श्री द्विजेन्द्र पन्त	तकनीकी सहायक
७.	श्री अवधेश कुमार	आपरेटर
८.	श्री राय सिंह	भृत्य

विभाग की सत्र ६४-६५ की उपलब्धियों का ब्यौरा निम्न प्रकार है :

१. नये पाठ्यक्रमों का समावेश :

(i) बी० ए० कक्षाओं के लिए कम्प्यूटर पाठ्य-क्रम लागू किया गया।

(ii) सुदूर शिक्षा के अन्तर्गत "कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा" पाठ्यक्रम आरम्भ करने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृति प्रदान की गयी।

२. शोध पत्रों का प्रकाशन :

निम्न शोध पत्र प्रकाशन हेतु भेजे गये :

(i) लेखक डा० विनोद कुमार

"Efficient Enumeration of spanning Trees for overall Reliability Evaluation of Computer Communication Networks" Reliability Engineering and System Safety (U. S. A.) Communicated" (सह लेखक डा० के० के० अग्रवाल)

(ii) लेखक डा० विनोद कुमार एवं सुनील कुमार

"Reliability Tree–A New Concept for Performance Evaluation of Computer Communication Networks" IEEE Trans. on Reliability (U. S. A.) (सह लेखक डा० के० के० अग्रवाल)

(iii) लेखक डा० विनोद कुमार

"An Efficient Algorithm for Allocating Task to processors in a Distributed System" IEEE Trans. on Software Engineering (U.S.A), Communicated (सह लेखक डा० एम०पी० सिंह एवं पी० के० यादव)

(iv) लेखक डा० विनोद कुमार

"On the design of an efficient generalized processor-distance based task allocation model for a distributed computing system" (सह लेखक एम०पी० सिंह एवं पी०के० यादव) (Communicated).

(v) लेखक डा० विनोद कुमार

"An efficient generalized task allocation method for a distributed computing system" Reliability Engineering and System safety (Communicated) (सह लेखक एम० पी० सिंह एवं पी० के० यादव)

(vi) लेखक डा० विनोद कुमार एवं महेन्द्र असवाल

"On the Design of optimal link-reliability based Computer Communication network". Computer networks and ISDN Systems (Communicated), (सह लेखक : डा० के० के० अग्रवाल)

३. शोध सम्मेलनों/पाठ्यक्रमों/प्रदर्शनियों में सहभागिता :

(i) डा० विनोद कुमार ने निम्न सम्मेलनों में भाग लिया।

१. डिजिटल इक्विपमेंट कारपोरेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "हाई परफारमेन्स इन्जीनीयरिंग एण्ड साइन्टिफिक कम्प्यूटिंग विद एलफा ए० एक्स० पी०" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन।

२. एजुकेशनल कन्सलटेन्ट्स लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा आयोजित "नेटवर्किंग एजुकेशनल इन्सटिट्यूशन्स" विषय पर सम्मेलन।

३. रामानुजन मैथेमेटिकल सोसाइटी द्वारा पी० एल० एम० एस० पी० जी० कालिज ऋषिकेश में (२५-२७ मई, १९९५) आयोजित वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया व शोध-पत्र पढ़ा।

(ii) श्री कर्मजीत भाटिया ने निम्न पाठ्यक्रमों/सेमिनार में भाग लिया।

१. विभिन्न कम्प्यूटर फर्मों द्वारा हयात रीजेन्सी होटल, नई दिल्ली में आयोजित सेमिनार व प्रदर्शनी में भाग लिया।

२. कम्प्यूटर सोसाइटी आफ इन्डिया द्वारा कलकत्ता में (नवम्बर २४-२७, १९९४) आयोजित "एक्सपोजीशन एण्ड कनवेन्शन"।

३. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा आयोजित (२२-३-९५ से ११-४-९५ तक) रिफ्रेशर कोर्स।

(iii) श्री सुनील कुमार को आई० आई० टी० खड्गपुर द्वारा "Parallel and Distributed Systems" विषय पर (जुलाई ३–८, १९९५) आयोजित अल्पावधि पाठ्यक्रम में भाग लेने की स्वीकृति प्रदान की गयी।

४. पी-एच०डी० के लिए शोध छात्रों का पंजीकरण।

डा० विनोद कुमार के निर्देशन / सहनिर्देशन में तीन शोध-छात्र पी-एच०डी० के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं।

५. विभागीय सदस्यों द्वारा व्याख्यान :

डा० विनोद कुमार ने निम्न व्याख्यान दिये।

(i) रसायन विज्ञान विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों को "कम्प्यूटरीय शिक्षा के आधारभूत तथ्य" विषय पर एक व्याख्यान।

(ii) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में "साफ्टवेयर डिजाइन में आधुनिकतम तकनीक" विषय पर ६ विशेष आमन्त्रित व्याख्यान।

(iii) मनोविज्ञान विभाग द्वारा संचालित "डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेन्ट एण्ड इन्डस्ट्रियल रिलेशन्स" पाठ्यक्रम में २१ सैद्धान्तिक व्याख्यान।

(iv) रुड़की विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर इन्जीनीयरिंग विभाग द्वारा आयोजित "एन०एल०पी०" कोर्स में दो विशेष आमन्त्रित व्याख्यान।

६. अन्य विभागों को सहयोग :

पूरे विश्वविद्यालय में कम्प्यूटरीय शिक्षा के विस्तार के लिए विभाग प्रयासरत है। विभागीय सदस्यों के सहयोग से गणित, भौतिकी व रसायन विभाग में स्नातकोत्तर पाठ्य-क्रमों में कम्प्यूटर सम्बन्धी एक-एक विषय समाहित किया जा रहा है। विद्यालय विभाग को भी कम्प्यूटर लैब की स्थापना तथा कम्प्यूटर सम्बन्धी विषय आरम्भ करने में विभाग अपना पूरा सहयोग दे रहा है।

७. आमन्त्रित व्याख्यानों का आयोजन :

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग को इस मद में वि० वि० अनुदान आयोग

द्वारा एक लाख रुपये (प्रतिवर्ष) की स्वीकृति प्रदान की गयी है। वर्तमान सत्र में निम्न व्याख्यानों का आयोजन किया गया—

	वक्ता	विषय	व्याख्यानों की संख्या
i)	प्रोफेसर जी. वी. सिंह जे. एन. यू०, दिल्ली	नेचुरल लेंग्वेज प्रोसेसिंग प्रिंसिपल्स	१
ii)	डा० ओ. पी. सक्सेना पी.एल.एम.एस.पी.जी. कालिज ऋषिकेश	एकाउन्टिंग प्रिंसिपल्स	३६
iii)	डा० वी. एन. शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋषिकेश	फाइनेन्शल मैनेजमेन्ट	१६
iv)	प्रोफेसर आर. सी. जोशी कम्प्यूटर इन्जीनीयरिंग विभाग, रुड़की विश्व-विद्यालय रुड़की	आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स	१८

८. प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन :

डा० विनोद कुमार के संयोजकत्व में महाविद्यालयों के शिक्षकों/कर्मचारियों के लिए अल्पावधि प्रशिक्षण पाठ्य-क्रमों का आयोजन करने हेतु विश्वविद्यालय को रु० ६-४५ लाख का अनुदान प्राप्त हुआ था। इससे दो पाठ्यक्रमों का आयोजन गत वर्ष किया गया। इस वर्ष ३० मई से ११ जून, १९९४ तक तृतीय प्रशिक्षण पाठ्य-क्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्य-क्रम का समापन एवं प्रमाण-पत्र वितरण माननीय न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी (परिदृष्टा गु० कां० विश्वविद्यालय) द्वारा किया गया।

९. विश्वविद्यालय कार्यों के कम्प्यूटरीकरण में सहयोग :

विभाग में कार्यरत तकनीकी सहायक श्री द्विजेन्द्र पन्त ने प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक कक्षाओं में सहयोग के अतिरिक्त बी० एस-सी० की कक्षाएँ पढ़ाईं तथा विश्वविद्यालय कर्मचारियों के वेतन सम्बन्धी आंकड़ तैयार करने हेतु साफ्टवेयर डिजाइन किया।

१०. शैक्षणिक निकायों में सक्रियता :

डा० विनोद कुमार निम्न निकायों के सदस्य हैं तथा विभिन्न विश्व-विद्यालयों की शिक्षा समितियों में बाह्य विशेषज्ञ मनोनीत हैं।

i) सिस्टम सोसाइटी ऑफ इण्डिया के आजीवन सदस्य

ii) रामानुजन मैथेमेटिक सोसाइटी आफ इण्डिया के सदस्य

iii) कम्प्यूटर सोसाइटी आफ इण्डिया के सदस्य

११. विभागीय पुस्तकालय की स्थापना :

श्री सुनील कुमार (प्रवक्ता) के निर्देशन में विभाग में स्नातकोत्तर (एम० सी०ए०) छात्रों के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की गयी। इसमें श्री कर्मजीत भाटिया ने भी योगदान दिया।

१२. गत दो वर्षों से डा० विनोद कुमार, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के अध्यक्ष का कार्य भी कर रहे हैं। वहाँ पर भी श्रीमती नूपुर के निर्देशन में एक विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की गयी। इस सत्र में दो नये कम्प्यूटर क्रय किये गये तथा लैब में एयर कन्डीशनर की स्थापना की गयी। छात्राओं के लिए होस्टल का निर्माण किया गया जिसका उद्घाटन मान्य कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी द्वारा किया गया।

———

कम्प्यूटर केन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदान से १९८७ में की गई थी। १९८८ में कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (P.G.D.C.A) एवं बी० एस-सी० त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम को विधिवत् शुरु किया गया। साथ ही विश्वविद्यालय के क्रिया-कलापों को कम्प्यूटरीकृत करने के विभिन्न कार्य शुरु किये।

श्री दिनेश बिश्नोई, अध्यक्ष कम्प्यूटर केन्द्र, श्री मनोज कुमार एवं श्री महेन्द्र असवाल, कम्प्यूटर आपरेटर, श्री अरुण कुमार, ट्रेनी प्रोग्रामर, श्री शशिकान्त, स्टेनोग्राफर, श्री राजेन्द्र ऋषि, लैब अटेण्डैन्ट आदि ने केन्द्र की प्रगति में पूर्ण सहयोग दिया।

कम्प्यूटर केन्द्र की गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार से है—

१. कम्प्यूटर केन्द्र का विस्तार :—

कम्प्यूटर केन्द्र की प्रगति को देखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्ष १९९३ में प्रयोगशाला का विस्तार करने के लिए ५ लाख रु० की स्वीकृति प्रदान की। इसके साथ ही प्रयोगशाला के लिए नवीन कम्प्यूटर क्रय करने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से २० लाख रु० की अतिरिक्त स्वीकृति प्राप्त हुई। उपरोक्त सन्दर्भ में क्रय की प्रक्रिया पूरी हो गई है और शीघ्र ही केन्द्र में आयातित कम्प्यूटर उपकरण शामिल कर लिए जायेंगे। कम्प्यूटर विस्तार भवन का निर्माण भी लगभग पूर्ण हो गया है। नये सत्र से विश्वविद्यालय के छात्र नवीन उपकरणों को उपयोग में ला सकेंगे।

२. कम्प्यूटर विस्तारित प्रयोगशाला हेतु पांच कम्प्यूटर उपकरण क्रय किये गये हैं एवं श्री अवधेश कुमार को आपरेटर पद पर नियुक्त किया गया। उपरोक्त प्रयोगशाला से, अन्य कार्यों के अतिरिक्त, वर्तमान सत्र से

आरम्भ B.A. (Computer Science) की कक्षा के छात्रों की प्रयोगात्मक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए प्रयाग में लायी जा रही है। कम्प्यूटर उपकरण क्रय कर लिया।

३. शोध पत्रों का प्रकाशन :—

(क) C.S I. Proceedings में श्री दिनेश कुमार बिश्नोई का निम्न शोध पत्र प्रकाशित हुआ।

"Lexical Organization in generation of Hindi sentences using TAG".
(सह लेखक डा० आर. सी. जोशी, डा० कुमकुम गर्ग)

(ख) श्री महेन्द्र असवाल ने भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) द्वारा केरल (त्रिवेन्द्रम) में २०-२४ दिसम्बर १९९४ तक आयोजित "राष्ट्रीय अन्तरिक्ष विज्ञान संगोष्ठी" में भाग लिया एवं शोध पत्र प्रस्तुत किया, तथा

(ग) निम्न शोध पत्र प्रकाशन के लिए भेजा गया।

"On the design of optimal reliability based Computer Communication Network"

Computer Networks and ISDN Systems (U.S.A.)

लेखक : डा० विनोद कुमार

(सह लेखक : डा० के. के. अग्रवाल, महेन्द्र असवाल)

(४) मनोविज्ञान विभाग द्वारा संचालित प्रबंधन पाठ्यक्रम की प्रायोगिक कक्षाएं कम्प्यूटर केन्द्र में आयोजित की गई।

(५) श्री दिनेश बिश्नोई ने आई० आई० टी० कानपुर में कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में Advanced Natural Language Processing पर ५ सप्ताह की कार्यशाला में भाग लिया।

(६) श्री मनोज कुमार शर्मा ने यू० जी० सी० के INFLIBNET Programme के अन्तर्गत National Conference on Library Automation में भाग लिया।

(७) श्री मनोज कुमार शर्मा यू० जी० सी० के INFLIBNET Programme के अन्तर्गत आयोजित पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण के लिए ३ सप्ताह की ट्रेनिंग हेतु अप्रैल माह में अहमदाबाद गये ।

(८) श्री मनोज कुमार शर्मा ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का वेतन व उससे सम्बन्धित अन्य विवरण तैयार करने के लिए सॉफ्टवेयर बनाया ।

(९) नये सत्र से श्री दिनेश बिश्नोई के निर्देशन में विश्वविद्यालय कर्मचारियों के लिए कम्प्यूटर में अल्पावधि पाठ्यक्रम आरम्भ करने हेतु योजना है ।

पुस्तकालय विभाग

परिचय :

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय समस्त देश के शोध छात्रों का पावन मंदिर है। प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध साहित्य की दृष्टि से यह पुस्तकालय एक राष्ट्रीय महत्व का पुस्तकालय है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है :

१- संदर्भ ग्रन्थ संग्रह, २- पत्रिका संग्रह, ३- आर्य साहित्य संग्रह, ४- आयुर्वेद संग्रह, ५- विभिन्न विषयों का हिन्दी संग्रह, ६- विज्ञान संग्रह, ७- अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८- पं० इन्द्र जी संग्रह, ९- दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०- पाण्डुलिपि संग्रह, ११- गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२- प्रतियोगितात्मक संग्रह, १३- शोध प्रबन्ध संग्रह, १४- रूसी साहित्य संग्रह, १५- आरक्षित पाठ्य पुस्तक संग्रह, १६- उर्दू संग्रह, १७- मराठी संग्रह, १८- गुजराती संग्रह, १९- गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक संग्रह, २०- मानचित्र संग्रह, २१- वेद मन्त्र कैसेट संग्रह।

सदस्य :

पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या में गत पांच-छ: वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। वर्ष १९९३-९४ में पुस्तकालय सदस्य संख्या १४८२ थी तथा वर्ष १९९४-९५ में १६१६ हुई। विश्वविद्यालय पुस्तकालय की सुविधाओं का लाभ वर्ष १९९४-९५ से कन्या महाविद्यालय की छात्राओं को भी दिया जा रहा है।

पुस्तकालय की विशिष्टताएँ :

यह पुस्तकालय देश का एकमात्र ऐसा पुस्तकालय है जहाँ आर्य समाज की पुस्तकों का संग्रह एक पृथक वीथिका के रूप में किया हुआ है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा लिखित पुस्तकों का पृथक प्रकोष्ठ पुस्तकालय में बनाया हुआ है। पुस्तकालय का संदर्भ विभाग प्राच्य विद्याओं के सभी प्रमुख संदर्भों को समेटे हुए है।

पुस्तकालय का समय :

पुस्तकालय खुलने का समय प्रातः ६ से सायं ५ बजे तक है। सत्रावसान में पुस्तकालय प्रातः ६-३० से १-३० तक खुला रहता है।

विभागीय पुस्तकालय :

विश्वविद्यालय के छात्रों की सुविधा एवं उपयोग हेतु विभिन्न विभागों में विभागीय पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। जिसके अन्तर्गत रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, वेद, हिन्दी पत्रकारिता, अंग्रेजी एवं कन्या महाविद्यालय आदि विभागों में विभागीय पुस्तकालय हैं। आलोच्य वर्ष १९९४-९५ में पुस्तकों को विभागीय पुस्तकालयों हेतु इश्यू किया गया।

प्रगति के आयाम :

आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित गुरुकुल पत्रिका एवं वैदिक पथ के विनिमय में अनेक प्रतिष्ठानों से ५६ पत्रिकाएँ प्राप्त हुई हैं। विश्वविद्यालय के विभागीय पुस्तकालयों हेतु आलोच्य वर्ष में मनोविज्ञान एवं कम्प्यूटर विषयों में क्रमशः ४० हजार एवं ५२ हजार रुपये विशेष रूप से प्रदान किये गये। इसी प्रकार कन्या महाविद्यालय पुस्तकालय हेतु १५ हजार रु० की पुस्तकें क्रय की गई।

विश्वविद्यालय के श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रतिवर्ष एक ग्रन्थ प्रकाशित किये जाने के लक्ष्य के अन्तर्गत इस वर्ष भी श्री सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा सृजित ग्रन्थ "स्वामी श्रद्धानन्द" जिसका प्रकाशन १९३३

में किया गया था, का पुनर्प्रकाशन विश्वविद्यालय द्वारा आलोच्य वर्ष में किया गया है। उक्त ग्रन्थ दुर्लभ एवं अप्राप्य कोटि का है। प्रकाशन केन्द्र द्वारा विश्व-विद्यालय को ६०००/ रु० की आमदनी इस वर्ष हुई तथा २१ ग्रन्थ विश्व-विद्यालय के प्रकाशनों के अन्तर्गत विनिमय में प्राप्त हुए।

आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा विभिन्न विषयों की ३००८ नई पुस्तकें क्रय की गई जिन पर २ लाख रु० का विनियोजन किया गया। इसी क्रम में भारत सरकार, उ०प्र० सरकार तथा अन्य स्वयंसेवी संगठनों द्वारा १४०७ पुस्तकें भेंटस्वरूप विश्वविद्यालय पुस्तकालय को प्रदान की जिनका मूल्य लगभग १७ हजार रु० है। वर्ष १९९४-९५ में विश्व-विद्यालय मे कार्यरत शोध छात्रों एव प्राध्यापकों के अनुसंधान कार्य हेतु २३९ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाएँ मगवाई गई हैं जिन पर ७२ हजार रुपये का विनियोजन किया गया है।

गुरुकुल के पूर्व आचार्य, कुलपति एवं परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत जी द्वारा संग्रहीत ३००० ग्रन्थ पुस्तकालय को भेंटस्वरूप प्राप्त हुए।

गुरुकुल पुस्तकालय देश का पहला ऐसा पुस्तकालय है जहाँ कार्य संस्कृति के आधार पर किये गये कार्य के आधार पर भुगतान का सिद्धान्त स्वीकृत है तथा पुस्तकालय का बहुत सा कार्य इस कार्य संस्कृति के आधार पर कराया जा रहा है। पुस्तकालय द्वारा विश्वविद्यालय के निर्धन एवं मेधावी छात्रों को पुस्तकालय में आंशिक रोजगार दे कर उन्हें उनकी शिक्षा दीक्षा के कार्यों में सहायता प्रदान की जाती है। इसी प्रकार छात्रों को विभिन्न प्रति-योगिता परीक्षाओं की तैयारी हेतु पृथक से प्रतियोगिता संग्रह प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है।

पुस्तकालय के फोटोस्टेट विभाग द्वारा इस वर्ष विभागीय एवं शोध छात्रों का ४० हजार रु० का फोटोस्टेट का कार्य किया गया तथा २३ दुर्लभ पुस्तकों को इस इकाई द्वारा सुरक्षित किया गया।

पुस्तकालय कार्यवृत्त—एक नजर

	वर्ष १९९२-९३	वर्ष १९९३-९४	वर्ष १९९४-९५
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय उपयोग।	२६०००	२८०००	२९५००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या।	४५०	९३९	१४०७
३. नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	१९५०	१७०८	३००८
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	३०००	२७००	३२६५
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	२८००	२६३३	३२५३
६ पत्रिकाओं की संख्या	२६०	२२८	२३९
७. सजिल्द पत्रिकाओं को जिल्द-बन्दी को संख्या।	७८१३	७९०१	८०५०
८. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या।	१९६	८८	१४९
९. पुस्तकों की जिल्द-बन्दी	९२८	१४००	१७२८
१०. पुस्तकों का कुल संग्रह	१११२७६	११३९२३	११८३३८
११. सदस्य संख्या	११७१	१४८२	१६१६
१२. पुस्तकों पर विलम्ब शुल्क	—	२५६०.५० रु	१३४० रु
१३. गुम पुस्तकों का मूल्य	—	३७०७.१० रु०	२९८२.४० रु०
१४. विभागीय पुस्तकालय हेतु इश्यु पुस्तकें।	—	—	१३४५
१५. विनिमय में प्राप्त पुस्तकों/पत्रिकाओं की संख्या।	—	—	२१+५६=७७
१६. प्रकाशन केन्द्र द्वारा पुस्तकों के विक्रय से प्राप्त राशि।	—	—	६०००-०० रु०
१७. फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित पुस्तकों की संख्या	—	—	२३
१८. फोटोस्टेट द्वारा विभिन्न विभागों का किया गया कार्य।	—	—	४०,०००-०० रु०
१९. कुल इश्यू की गई पुस्तक संख्या।	—	३३७२१	३४७३६

———

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)

उपक्रम १/३१ यू०पी० एन०सी०सी० कम्पनी

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार)

छात्रों में "अनुशासन एवं एकता" एवं देश का कर्त्तव्यपरायण नागरिक बनाने के उद्देश्य को लेकर सम्पूर्ण भारत में एन० सी० सी० का योगदान सराहनीय है। विश्वविद्यालय में एन०सी०सी० मुख्यालय द्वारा मात्र ५२ छात्र कैडट को प्रशिक्षण देने की स्वीकृति है। आशा है इस वर्ष यह संख्या दो प्लाटून अर्थात १०२ छात्रों को कैडट के रूप में पंजीकरण को स्वीकृति मिल जायेगी।

गत वर्षों की भांति इस सत्र में भी १/३१ यू० पी० एन० सी० सी० कम्पनी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के श्रेष्ठ छात्रों का कैडट के रूप में बटालियन मुख्यालय के कमान अधिकारी ले० कर्नल सुरेश जोशी एवं कम्पनी कमान्डर लैफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा द्वारा चयन कर तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया। विश्वविद्यालय के छात्रों को गुरुकुल इन्टर साईंस में गत वर्षों की भांति पंजीकृत किया गया।

इस सत्र में भी उपर्युक्त छात्र कैडट्स को ३१-यू०पी० एन०सी०सी० बटालियन के कमान अधिकारी ले० कर्नल सुरेश जोशी, प्रशासनिक अधिकारी मेजर अजय कृष्ण शर्मा एवं कम्पनी कमान्डर लेफ्टिनेन्ट डा० राकेश शर्मा के निर्देशन में भारतीय सेना के जूनियर कमीशन अफसरों एवं हवलदारों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर एवं बी.एच.ई.एल. सैक्टर-I के परेड मैदान में गहन प्रशिक्षण दिया गया।

रक्षा मन्त्रालय भारत सरकार के निर्देश के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष एन० सी०सी० मुख्यालय द्वारा एन०सी०सी० बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में यह प्रशिक्षण शिविर

रायपुर (देहरादून) में आयोजित किया गया जिसमें वि०वि० के २७ कैडट्स ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण शिविर में वि०वि० के कैडट्स ने पूर्ण उत्साह एवं लगन की भावना से प्रशिक्षण प्राप्त किया। साथ ही वि०वि० के ५ छात्र कैडट्स ने केन्द्रीय मुख्यालय द्वारा सितम्बर में आयोजित "नेशनल इन्टिग्रेशन कैम्प" कोयम्बटूर (तामिलनाडू) में भाग लिया। इसके अतिरिक्त आर्मी अटैचमैन्ट कैम्प (सेना के साथ रह कर प्रशिक्षण) में भी इस सत्र में विश्वविद्यालय के ५ छात्र कैडेट्स ने भाग लेकर गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय कैडट्स का बी० एवं सी० प्रमाणपत्रों में उत्तीर्ण होने का प्रतिशत अत्यन्त उत्साहवर्धक क्रमश ८०% एवं ७५% रहा। उल्लेखनीय है उक्त प्रमाणपत्रों के लिये क्रमश: 'बी०' प्रमाणपत्र के लिये दो वर्ष का प्रशिक्षण एवं एक कैम्प तथा 'सी' प्रमाणपत्र के लिये 'बी' प्रमाणपत्र, तीन वर्ष का प्रशिक्षण एवं दो कैम्प आवश्यक हैं।

गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी ६५ के अवसर पर मान्य कुलपति श्री धर्मपाल जी द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् एन०सी०सी० परेड सलामी ली तथा परेड निरीक्षण करने के उपरान्त बी० तथा सी० प्रमाणपत्रों की परीक्षा में उत्तीर्ण कैडट्स को प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया।

———

विश्वविद्यालय छात्रावास

विश्वविद्यालय छात्रावास में सभी संकायों के छात्रों को आवास व्यवस्था उपलब्ध करायी गई। छात्रावास में सीमित कमरों के कारण अधिकांश छात्रों को शहर में रहना पड़ रहा है। छात्रावास के छात्रों के लिए कैन्टीन व्यवस्था उपलब्ध कराई गई। विश्वविद्यालय में नये पाठ्यक्रमों के खुलने से छात्रों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, अतः छात्रावास में और भी कमरों का निर्माण आवश्यक है। एम०सी०ए० के सभी छात्र जो अधिकांश बाहर के हैं, उन्हें अलग से प्राइवेट तौर पर छात्रावास की सुविधा प्रदान की गयी है। यदि विश्वविद्यालय छात्रावास की सुविधा बढ़ायी जाती है तो निश्चित रूप से यहां पर विद्यार्थियों की संख्या और अधिक बढ़ेगी।

———

शारीरिक शिक्षा विभाग

विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग को इस वर्ष अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय योग चैम्पियनशिप में दूसरा स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ जो कि अभी तक की उपलब्धियों में अपना अलग महत्व रखता है। यह प्रतियोगिता २६ नवम्बर, १६६४ को चित्रकूट ग्रामोद्योग विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की गयी। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की छः सदस्यीय टीम का प्रतिनिधित्व सुरक्षित गोस्वामी ने किया था।

पिछले वर्षों की तरह नार्थजोन तथा अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय की निम्नलिखित टीमों ने भाग लिया।

१. अखिल भारतीय भारोत्तोलन एवं शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिता — जोराहट, आसाम
२. अखिल भारतीय अन्तरविश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता — चित्रकूट
३. अखिल भारतीय स्क्वैश रैकिट प्रतियोगिता — हरिद्वार
४. नार्थ जोन (उत्तर क्षेत्र) अन्तर विश्वविद्यालय वॉलीबॉल — नौनी, हिमाचल प्रदेश
५. उत्तर क्षेत्र अन्तरविश्वविद्यालय फुटबॉल प्रतियोगिता — फैजाबाद
६. उत्तर क्षेत्र अन्तरविश्वविद्यालय टेबल-टेनिस प्रतियोगिता — लुधियाना
७. उत्तर क्षेत्र अन्तरविश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता — फैजाबाद
८. उत्तर क्षेत्र अन्तरविश्वविद्यालय हॉकी प्रतियोगिता — चंडीगढ़
९. उत्तर क्षेत्र अन्तरविश्वविद्यालय बैडमिंटन प्रतियोगिता — लखनऊ

इसके अलावा इस वर्ष यू॰पी॰ अन्तरविश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन कम श्रेणियों में हुआ अतः इसमें भी हमारे विश्वविद्यालय की

फुटबॉल टीम ने फैज़ाबाद में भाग लिया तथा अन्तरविश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश एथलेटिक्स में भी हमारी टीम ने मेरठ में भाग लिया।

भेजी गयी सभी टीमों का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

इस वर्ष गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा अखिल भारतीय अन्तरविश्वविद्यालय स्क्वैश-रैकिट प्रतियोगिता का उद्घाटन २४-१२-६४ को गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह ने ध्वजारोहण तथा टीमों की मार्चपास्ट की सलामी लेकर किया। इस प्रतियोगिता में पूरे भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों की १४ टीमों ने भाग लिया तथा इस प्रतियोगिता का समापन २७-१२-६४ को B.H E.L के कार्यपालक निदेशक श्री एम० के० मित्तल द्वारा पारितोषिक–वितरण द्वारा निर्विघ्न हुआ। इस प्रतियोगिता में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर प्रथम, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वितीय तथा पंजाब वि० विद्यालय चंडीगढ़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज द्वारा डा० रामकुमार सिंह डागर, निदेशक शारीरिक शिक्षा को अपनी कार्यकारिणी वर्ष १६६४-६५ में Executive Committee में सदस्य के रूप में रखा। वर्ष १६६४-६५ में निदेशक, शारीरिक शिक्षा को अखिल भारतीय भारोत्तोलन एव शरीर–सौष्ठव प्रतियोगिता जो कि जोराहट आसाम में हुई, के आब्जर्वर के रूप में नियुक्त किया गया था। डा० डागर ने इस वर्ष ५-६-६४ से २४-६-६४ तक एल० एन० सी० पी० ई०, ग्वालियर में Refresher Course attend किया तथा दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा फिजिकल एजुकेशन तथा खेल के ऊपर १७-१८ जून, १६६४ तक आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया।

विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों की लगन एवं उनका शारीरिक शिक्षा की तरफ रुझान को देखते हुए तथा बार-२ उनके शारीरिक शिक्षा में डिप्लोमा खोलने के अनुरोध को देखते हुए विश्वविद्यालय में अगर यह कक्षायें चलायी जायें तो इससे शारीरिक शिक्षा विभाग में काफी उन्नति होगी। विश्वविद्यालय में एक पक्के बॉस्केटबॉल कोर्ट तथा लॉन टेनिस कोर्ट बनाये जाने की भी जरूरत है। इसके साथ-साथ खिलाड़ियों को वर्ष १६६४-६५ में हॉकी तथा क्रिकेट में १५-१५ दिन के कोचिंग कैम्प भी लगाये गये। जिससे खिलाड़ियों को सभी नियमों तथा Strategies से भी अवगत कराया

गया तथा इस प्रकार के आयोजन आने वाले समय में अन्य खेलों में भी session के आरम्भ से ही किये जायेंगे।

वर्ष १९९५-९६ के लिए गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को उत्तर क्षेत्र अन्तर बिश्वविद्यालय पुरुष प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी दी गयी है। जिसका आयोजन नवम्बर-दिसम्बर में विश्वविद्यालय प्रांगण में किया जायेगा।

अन्य वर्षों की तरह इस वर्ष भी उत्तर क्षेत्र तथा अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को विश्वविद्यालय की तरफ से Track suit तथा kit दिये गये। विभाग के निदेशक डा० आर०के०एस० डागर ने मनोविज्ञान विभाग से इस वर्ष पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

———

राष्ट्रीय सेवा योजना

स्वतन्त्रता के पश्चात् छात्रों के लिए समाज सेवा के कार्यों को विधिवत् सुधार लाने के साथ-साथ शिक्षित जनशक्ति की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए समझा गया। अतः २४ सितम्बर १९६९ को तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री वी०के० आर०वी० राव ने राष्ट्रीय सेवा योजना को ३७ विश्व-विद्यालयों में प्रारम्भ कराया। जिसका प्रत्यवचन "मुझको नहीं तुमको" द्वारा वैदिक सत्यता के ढंग से जीवनयापन करने की आवश्यकता का समर्थन करता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई लगभग १२ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई थी जिसके प्रथम कार्यक्रम अधिकारी प्रो० बी०डी जोशी थे। वर्तमान में डा० डी० आर० खन्ना रा०से०यो० के कार्यक्रम अधिकारी हैं।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी छात्रों की श्रमशक्ति एवं सामूहिकता द्वारा सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हेतु अनेकानेक कार्य किए गए।

१) २४ सितम्बर, १९९४ को राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया।

२) छात्रों द्वारा विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण किए गए।

३) एक दिवसीय कैम्प, पाँवधोई (ज्वालापुर), सीतापुर, लोधा मण्डी (हरिद्वार) में आयोजित किए गए। जिनमें मुख्य रूप से निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं सफाई कार्य किए गए।

४) दस दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर दिनांक ६-३-९५ से १५/३/९५ तक कांगड़ी ग्राम में आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन लखनऊ के श्री यादव, प्रभारी रा०से०यो० द्वारा किया गया। शिविर में जन साक्षरता, पथ निर्माण एवं नालियों की सफाई एवं सोकपिटों का निर्माण,

सड़क की मरम्मत, विश्वविद्यालय के पुराने परिसर भवन के आसपास गंगा की ठोकरों में खाली स्थानों में पत्थरों को डालकर उन्हें मजबूत किया गया।

सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण व स्वास्थ्य परीक्षण जैसे कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया गया।

स्वास्थ्य–परीक्षण एवं चिकित्सा शिविर का संचालन मेडिकल प्रैक्टिशनर एसोसिएशन के चिकित्सकों के सहयोग में सम्पन्न हुआ।

५) उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त हर सप्ताह छात्र विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय सेवा एवं अपने व्यक्तित्व के निर्माण के कार्यों में संलग्न रहे हैं।

६) पचास छात्र निरक्षरों को साक्षर बनाने के कार्यों में प्रयासरत हैं।

७) AIDS की रोकथाम के लिए ३० छात्रों को प्रशिक्षित किया गया जिसको रा० से० यो० के समन्वय डा० ए०के० चोपड़ा ने आयोजित किया तथा प्रो० बी०डी० जोशी, डा० भट्ट, डा० मालेश, डा० सुनील जोशी जैसे विशेषज्ञों ने AIDS पर व्याख्यान दिए।

८) सद्भावना निबन्ध प्रतियोगिता / ६४ का जिला–स्तरीय आयोजन किया गया जिसमें प्रथम आने वाले दो छात्रों को दो-दो हजार रुपए का नकद पुरस्कार हरिद्वार-विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष के कर-कमलों द्वारा दिया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक, डा० ए०के० चोपड़ा की प्रेरणा व डा० खन्ना, कार्यक्रम अधिकारी के प्रयास से रा० सेवा योजना की विभिन्न गतिविधियां सुचारू रूप से चलाई जा रही हैं।

————

कन्या गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय देहरादून

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का द्वितीय परिसर कन्या गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय ४७ सेवक आश्रम रोड पर स्थित है। १-१-१९८६ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस संस्था को विधिवत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का द्वितीय परिसर घोषित किया गया। इस महाविद्यालय में पहले स्नातक स्तर की कक्षाएं ही पढ़ाई जाती थीं, परन्तु १९९३ में एम०सी०ए की कक्षाओं का प्रारम्भ होने से महाविद्यालय की (अध्यापन कार्य में) अभूतपूर्व प्रगति हुई। जुलाई १९९४ से इसी महाविद्यालय के पाठय-क्रम में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी विषयों में एम०ए० की कक्षाएं प्रारम्भ की गई। छात्राओं की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्नातक-कोत्तर छात्राओं के लिए नए छात्रावास का निर्माण हुआ। यहां आज की परिस्थितियों को देखते हुए आधुनिकतम सुविधाएं छात्राओं को प्राप्त हैं।

महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शत-प्रतिशत रहा। छात्राओं ने सभी विषयों में अच्छे अंक प्राप्त किए।

महाविद्यालय की छवि: :

संस्था का एक बृहद पुस्तकालय है, जहां विभिन्न विषयों की उपयोगी पुस्तकें हैं तथा दैनिक पत्र-पत्रिकायें नियमित रूप से आती हैं।

जनवरी १९९५ में श्रीमती सुदेश खन्ना पुस्तकालयाध्यक्षा ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पुस्तकालय विज्ञान का पुनश्चर्या पाठयक्रम पूर्ण किया।

संस्कृत विभाग :

महाविद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, गणतन्त्र दिवस,

स्वाधीनता दिवस एवं गुरुकुल जन्मोत्सव के अवसर पर छात्राओं ने "सरस्वती वन्दना", व्याखान, गीत आदि प्रस्तुत किये। साथ ही संस्कृत दिवस पर संस्कृत भाषा का महत्व प्रस्तुत किया।

अंग्रेजी विभाग :

१९९४ के सत्र से अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० कक्षाएं प्रारम्भ की गई। इस वर्ष परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया।

हिन्दी विभाग :

सदा की भांति अध्यापन कार्य सुचारु रूप से हुआ। श्रीमती रंजना राजदान ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर से अगस्त मास में दूसरा पुनश्यचर्या पाठ्यक्रम पूर्ण किया।

चित्रकला विभाग :

चित्रकला विभाग कन्या गुरुकुल का एक महत्वपूर्ण विभाग है जहां छात्रायें अनेकानेक रूपकारों का सृजन कर जीवन में उनकी उपयोगिता के विषय में ज्ञान प्राप्त करती हैं। विभिन्न अवसरों पर सुन्दर सुसज्जित व्यवस्था की संयत पृष्ठभूमि प्रस्तुत करना इस विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जिसमें अनेक प्रकार के चित्रों के साथ रंगोली, अल्पना सज्जा का प्रमुख स्थान है। विभाग की अध्यक्षा श्रीमती भगवती गुप्ता को इस वर्ष वरिष्ठ प्रवक्ता की प्रोन्नति प्राप्त हुई।

संगीत विभाग :

भारतीय शास्त्रीय संगीत का यह विभाग सतत: भारतीय संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में कार्यरत है। इस विभाग में भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्यापन के अलावा भारत के विभिन्न प्रांतीय संगीत एवं नृत्यों को कन्याओं को सिखाकर सभी प्रांतों के प्रति सम्मान की भावना को जागरूक कराया। श्रीमती प्रतिभा शर्मा एवं श्रीमती मीरा दासगुप्ता ने अत्यन्त लगन एवं परिश्रम से छात्रावास के उद्घाटन के अवसर, गुरुकुल जन्मोत्सव एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संगीत एवं नृत्य के विभिन्न सुन्दर कार्यक्रम तैयार

कराये जिनकी अत्यन्त प्रशंसा की गई । दोनों की इस वर्ष वरिष्ठ प्रवक्ता के पद पर प्रोन्नति हुई ।

कम्प्यूटर विभाग :

यह विभाग इस महाविद्यालय का आधुनिकतम विभाग है। इस विभाग में अधिकांश छात्राएं आसपास के जिलों से आकर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। विभाग में चार प्रवक्ताएं एवं एक तकनीकी सहायिका कायरत है।

मई माह में कम्प्यूटर विभाग की छात्राओं ने क्विज प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया और इस प्रतियोगिता में कु० श्रद्धा आर्य, कु० सुरभि ने प्रथम स्थान प्राप्त किये।

क्रीड़ा विभाग :

१८ मई से ३० जून १९९४ तक श्रीमती बलबीर कौर ने पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (एथलैटिक्स नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ स्पोर्टस पटियाला) से किया।

सरस्वती यात्रा :

जनवरी १९९५ में विद्यालंकार की छात्राएं श्रीमती अलका गोयल के संरक्षण में राजस्थान की यात्रा पर गई।

इस प्रकार कन्या गुरुकुल (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, देहरादून निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता जा रहा है।

वित्त एवं लेखा

मास नवम्बर 94 में विश्वविद्यालय का 1994-95 का संशोधित बजट एवं वर्ष 1995-96 का अनुमानित बजट वित्त समिति की बैठक दिनांक 26-11-94 में प्रस्तुत किया गया। वित्त समिति ने निम्न प्रकार बजट स्वीकृत किया।

बजट सारांश

		संशोधित अनुमान 94-95	बजट अनुमान 95-96
1.	वेतन एवं भत्ते आदि	1,43,58,760.60	1,64,81,820.00
2.	अंशदायी भविष्यनिधि	1,35,270.00	1,55,140.00
3.	अन्य व्यय	42,29,150.00	39,93,250.00
	योग व्यय	1,87,23,180.00	2,06,30,210.00
	आय (—)	31,23,180.00	27,91,300.00
	योग	1,56,00,000.00	1,78,38 910.00

समीक्षाधीन वर्ष 1994-95 में वित्त समिति एवं कार्य परिषद् द्वारा 1,56,00,000 का अनुरक्षण अनुदान स्वीकृत किया गया था किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1,39,03,000 का अनुदान ही दिया गया। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार है :-

—वित्त अधिकारी

विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान का विवरण

1994-95

अष्टम् पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निम्न अनुदान प्राप्त हुए :–

1- भवन निर्माण के लिए	14,50,000.00
2- उपकरण के लिए	1,50,000.00
3- वेतन के लिए	2,00,000.00

अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से—

1- कम्प्यूटर केन्द्र	15,00,000.00
2- अन्एसाइण्ड ग्रान्ट	1,50,000.00

मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट

1- डा० डी. के. माहेश्वरी	2,65,000.00
2- डा० बी. डी. जोशी	1,30,000,00

भारत सरकार से प्राप्त

1- मनोविज्ञान सेमिनार	20,000.00

अन्य स्रोत

एसोसियेशन ऑफ इन्डियन यूनिवर्सिटी	7,500.00
इण्डियन नैशनल साईन्स	10,000.00
अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ, नई दिल्ली	15,000.00
सी. एस. आई. आर. नई दिल्ली से मनोविज्ञान सेमिनार	20,000.00

कम्प्यूटर भवन, जीव विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला, रसायन विज्ञान प्रयोगशाला एवं लेक्चर थियेटर तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारी आवास भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

जयसिंह गुप्ता
(वित्ताधिकारी)

आय का विवरण

1994-95

क्रम सं०	आय का मद	धनराशि
(क)	अनुदान :—	
1-	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	1,39,03,000.00
	योग (क)	1,39,03,000.00
(ख)	शुल्क तथा स्रोतों से आय–	
1-	पंजीकरण शुल्क	34,491.00
2-	पी–एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	7,100.00
3-	पी–एच०डी० मासिक शुल्क	35,270.00
4-	परीक्षा शुल्क	4,07,069.00
5-	अंक-पत्र शुल्क	27,740 00
6-	विलम्ब दण्ड एवं टूट-फूट	85,339.00
7-	माइग्रेशन शुल्क	6,820.00
8-	प्रमाण–पत्र शुल्क	8,110.00
9-	नियमावली, पाठ्यविधि तथा फार्मों का शुल्क	1,07,407.00
10-	सेवा आवेदन	3,220.00
11-	शिक्षा शुल्कादि	10,74,820.00
12-	प्रवेश व पुन: प्रवेश शुल्क	1,15,615.00
13-	भवन शुल्क	2,53,455.00
14-	क्रीड़ा शुल्क	1,57,742.00
15-	पुस्तकालय शुल्क	1,62,475.00
16-	परिचय–पत्र शुल्क	7,350.00

क्रम स०	आय का मद	धनराशि
17-	एसोसियेशन शुल्क	7,010.00
18-	प्रयोगशाला शुल्क	4,15,690.00
19-	मंहगाई शुल्क	63,005 00
20-	पुस्तकालय से आय	49,187.00
21-	विकास	70,835.00
22-	पड़ताल शुल्क	2,940.00
23-	पत्रिका शुल्क	34,755.00
24-	अन्य आय (मिश्रित)	61,494.00
25-	किराया प्रोफेसर क्वार्टर	29,450.00
26-	वाहन ऋण	84,284.00
27-	छात्रावास	16,520.00
28-	श्रद्धानन्द प्रकाशन	14,797.00
29-	निर्धनता शुल्क	43,875 00
30-	साईकल स्टेण्ड शुल्क	23,750 00
31-	संग्रहालय	99.00
32-	विद्युत	2,100.00
33-	कमरा किराया (अतिथि गृह)	10,700 00
34-	टेलीफोन	1,080.00
	योग (ख)	34,25 594.00
	सर्वयोग (क+ख)	1,73,28,594.00

–वित्ताधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1994-95

क्रम सं०	व्यय का मद	धनराशि
(क)		
1-	वेतन	1,37,08,398.00
2-	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	1,36,833.00
3-	ग्रेच्युटी	91,753.00
4-	पेंशन	4,32,116.00
	योग (क)	1,43,69,100.00
(ख)		
1-	विद्युत व जल	1,32 941.00
2-	टेलीफोन	89,439 00
3-	मार्ग व्यय	2,50,589.00
4-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	45,170.00
5-	लेखन सामग्री व छपाई	1,35,198.00
6-	डाक एवं तार	15,375 00
7-	वाहन एवं पेट्रोल	2,16,493.00
8-	विज्ञापन	39,215.00
9-	कानूनी व्यय	73,332.00
10-	आतिथ्य व्यय	79,960.00
11-	आडिट व्यय	540 00
12-	दीक्षान्त उत्सव	49,233.00
13-	लॉन संरक्षण	4,995 00
14-	भवन मरम्मत	7,09,046,00

क्रम० स०	व्यय का मद	धनराशि
15-	एमरजेन्ट एण्ड अनफारसीन	6,213.00
16-	मिश्रित	1,56,199.00
17-	उपकरण एवं मरम्मत	2,35,497.00
18-	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	2,72,709 00
19-	सदस्यता अंशदान	36,913.00
20-	परीक्षकों का पारिश्रमिक	2,02,039.00
21-	मार्ग व्यय परीक्षक	90,449.00
22-	निरीक्षण व्यय	54,917.00
23-	प्रश्न-पत्रों की छपाई	72,246.00
24-	डाक तार व्यय	22,562 00
25-	लेखन सामग्री	26,651.00
26-	अन्य व्यय	2,684 00
27-	नियमावली तथा पाठ्यविधि छपाई	34,760.00
28-	छात्र कल्याण निधि	3,415,00
29-	छात्रों को छात्रवृत्ति	31,188.00
30-	वाग्वर्धनी सभा	2,002.00
31-	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	19,724.00
32-	सरस्वती यात्रा	14,564.00
33-	सांस्कृतिक कार्यक्रम	9,160.00
34-	खेलकूद एवं क्रीडा	1,14,777.00
35-	सेमीनार	4,953.00
36-	रसायन प्रयोगशाला	84,073.00
37-	भौतिक प्रयोगशाला	17,885.00
38-	जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	52,643.00
39-	वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	56,958 00
40-	गैस प्लान्ट	1,475.00
41-	जनरल आफ नैचुरल फिजीकल साइन्स	1,083 00
42-	पुस्तकें	96,842.00
43-	जिल्दबन्दी एवं पुस्तक सुरक्षा	13,279.00
44-	केटेलॉग एण्ड कार्ड्स	12,921.00
45-	पत्रिकाओं की छपाई	35,295 00

क्रम सं०	व्यय का मद	धनराशि
46-	ग्रीन हाऊस	4,979.00
47-	निर्धन छात्र कोष	600.00
48-	समाचार पत्र और पत्रिकाएं	72,573.00
49-	पढ़ते हुए कमाओ	7,930.00
50-	वाहन हेतु ऋण	1,48,200.00
51-	वेद प्रयोगशाला	6,438.00
52-	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	11,629.00
53-	योग	9,731.00
54-	गणित विभाग	7,118.00
55-	श्रद्धानन्द प्रकाशन	57,317.00
56-	एल०टी०सी०	1,77,219.00
57-	पुस्तक रख-रखाव	18,178.00
58-	कम्प्यूटर रखरखाव	66,502.00
59-	अंग्रेजी लैब	5,800.00
60-	हिन्दी पत्रकारिता	12,903.00
61-	कम्प्यूटर मिश्रित व्यय	16,949.00
62-	कम्प्यूटर सामग्री	12,225.00
63-	कम्प्यूटर स्टेशनरी	1,269.00
	कुल आकस्मिक व्यय	42,63,162.00
	कुल वेतन व्यय	1,43,69,100.00
	कुल व्यय	1,86,32,262.00

—वित्त अधिकारी

विश्वविद्यालय के शिक्षक/शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की सूची

प्राध्यापकों की सूची

प्राच्य विद्या संकाय

१- वैदिक साहित्य

१- प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, एम० ए०, आचार्य/उपकुलपति, विभागाध्यक्ष
२- डा० भारत भूषण, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर
३- डा० मनुदेव, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
४- डा० रूपकिशोर शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
५- डा० दिनेश चन्द्र, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

२- संस्कृत साहित्य

१- श्री वेद प्रकाश शास्त्री, एम० ए०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२- डा० महावीर अग्रवाल, एम० ए०, पी-एच० डी, रीडर
३- डा० सोमदेव शतांशु, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
४- डा० रामप्रकाश, एम० ए०, पी-एच० डी, डी० लिट्, रीडर
५- डा० ब्रह्मदेव, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

३- प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व

१- डा० श्यामनारायण सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२- डा० कश्मीर सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
३- डा० राकेश कुमार, एम० ए०, पी-एच० डी०, वरि० प्रवक्ता

४. दर्शन शास्त्र

१- डा० जयदेव वेदालंकार, एम० ए०, पी-एच डी०, डी० लिट्, प्रोफेसर
२- डा० विजयपाल शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३- डा० त्रिलोक चन्द्र, एम० ए०, पी-एच० डी०, वरि० प्रवक्ता
४- डा० उमराव सिंह बिष्ट, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता

५- योग शिक्षा विभाग

१- डा० ईश्वर भारद्वाज, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

मानविकी संकाय

१- हिन्दी साहित्य

१- डा० विष्णुदत्त राकेश, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट् प्रोफेसर
२- डा० सन्तराम वैश्य, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३- डा० ज्ञान चन्द्र रावल, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
४- डा० भगवान देव पाण्डेय, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
५- श्री कमलकान्त बुधकर, एम० ए०, प्रवक्ता

२- अंग्रेजी साहित्य

१- डा० नारायण शर्मा, एम.ए , पी-एच. डी., प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२- श्री सदाशिव भगत, एम. ए., रीडर
३- डा० श्रवण कुमार शर्मा, एम.ए., पी-एच. डी., वरि. प्रवक्ता
४- डा० अम्बुज कुमार, एम.ए., पी-एच. डी., प्रवक्ता

३- मनोविज्ञान

१- प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, एम. ए., प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष

२- श्री सतीश चन्द्र धमीजा, एम. ए., रीडर
३- डा० सूर्य कुमार श्रीवास्तव, एम. ए., पी-एच. डी., वरि. प्रवक्ता
४- डा० चन्द्रपाल खोखर, एम० ए०, पी-एच डी०, प्रवक्ता

४- शारीरिक शिक्षा विभाग

१- श्री आर० के० एस० डागर, एम. ए., एम.पी.ई., डी.पी.ई.

५- प्रौढ़, सतत् शिक्षा

१- डा० आर० डी० शर्मा, एम.ए., पी-एच.डी., सहायक निदेशक
२- डा० जे. एस, मलिक, एम ए., पी-एच,डी., परियोजना अधिकारी
३- श्री सुदर्शन लाल मल्होत्रा, सहायक कुलसचिव

विज्ञान संकाय

१- गणित

१- डा० एस० एल० सिंह, एम. एस-सी., पी-एच. डी., प्रोफेसर
२- श्री विजयपाल सिंह, एम. एस-सी., रीडर, विभागाध्यक्ष
३- डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, एम एस-सी., पी-एच. डी., रीडर
४- डा० विजयेन्द्र कुमार शर्मा, एम. एस-सी., पी. एच-डी., रीडर
५- डा० महिपाल सिंह, एम. एस-सी., पी.एच-डी., रीडर
६- डा० हरवंश लाल गुलाटी, एम. एस-सी., डी. फिल., वरिष्ठ प्रवक्ता

२- रसायन विभाग

१- डा० कौशल कुमार, एम.एस-सी. पी.एच-डी., रीडर, विभागाध्यक्ष
२- डा० ए. के. इन्द्रायण, एम. एस-सी., पी. एच-डी., रीडर
३- डा० रामकुमार पालीवाल, एम. एस-सी., पी. एच-डी., रीडर
४- डा० रजनीश दत्त कौशिक, एम.एस-सी., पी-एच डी. वरि. प्रवक्ता
५- डा० रणधीर सिंह, एम. एस-सी., पी-एच. डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
६- डा० श्रीकृष्ण, एम.एस-सी., पी-एच. डी, प्रवक्ता

३- भौतिक विज्ञान

१- डा० बुध प्रकाश शुक्ला, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
२- श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर, एम० एस-सी०, रीडर
३- डा० राजेन्द्र कुमार, एस. एस-सी०, पी-एच० डी०, वरि. प्रवक्ता
४- डा० पी.पी. पाठक, एम.एस-सी., पी-एच. डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
५- डा० यशपाल सिंह, एम. एस-सी., पी-एच. डी, प्रवक्ता

४- कम्प्यूटर साइंस शिक्षा विभाग

१- डा० विनोद कुमार शर्मा, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर विभागाध्यक्ष
२- श्री कर्मजीत भाटिया, प्रवक्ता

५- कम्प्यूटर केन्द्र

१- श्री दिनेश चन्द्र बिश्नोई, सिस्टम मैनेजर
२- श्री अचल कुमार गोयल, प्रोग्रामर
३- श्री महेन्द्र सिंह असवाल, आपरेटर
४- श्री मनोज कुमार, आपरेटर
५- श्री द्विजेन्द्र पन्त, आपरेटर
६- श्री वेदव्रत, तकनीकी सहायक
७- श्री विनीत कपूर, तकनीकी सहायक

जीव विज्ञान संकाय

१- वनस्पति विज्ञान

१- डा० डी०के० माहेश्वरी, एम०एस-सी०, पी-एच०डी०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष तथा डीन, छात्र कल्याण
२- डा० पुरुषोत्तम कौशिक, एम० एस०-सी०, पी-एच० डी०, रीडर
३- डा० गंगा प्रसाद गुप्ता, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
४- डा० नवनीत, एम० एस-सी०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता

२- जन्तु विज्ञान

१- डा० बी०डी० जोशी एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर
२- डा० टी० आर० सेठ, एम० एस–सी०, पी-एच० डी०, रीडर विभागाध्यक्ष
३- डा० ए० के० चोपड़ा, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर
४- डा० दिनेश चन्द्र भट्ट, एम० एम-सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
५- डा० देवराज खन्ना, एम० एस–सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून (द्वितीय परिसर)

१-	श्रीमती प्रतिभा शर्मा	एम० ए०, संगीत	वरिष्ठ प्रवक्ता
२-	" भगवती गुप्ता	एम०ए०, ड्राईंग एवं पेन्टिग	प्राचार्या
३-	" सुनृता चौहान	एम.ए., पी-एच.डी. वेद	वरिष्ठ प्रवक्ता
४-	" सरोज नौटियाल	एम० ए०, संस्कृत, बी.एड.	प्रवक्ता
५-	" मीरा दासगुप्ता	एम ए., संगीत, अंग्रेजी	वरिष्ठ प्रवक्ता
६-	" रंजना राजदान	एम.ए., पी-एच. डी., हिन्दी	प्रवक्ता
७-	" हेमलता के०	एम० ए०, अंग्रेजी	प्रवक्ता
८-	" बलबीर कौर	एम.ए., डी.पी.ई.	पी.टी.आई.
९-	" नूपुर	बी.एस -सी., एम. सी.ए.	प्रवक्ता

प्रशासन

डा० धर्मपाल	कुलपति
डा० जयदेव वेदालंकार	कुलसचिव
श्री जयसिंह गुप्ता	वित्त अधिकारी

स्थापना अनुभाग

१- डा० शिवचरण विद्यालंकार	सहायक कुलसचिव
२- श्री करतार सिंह	सम्पदा अधिकारी
३- " वेदपाल सिंह	सुरक्षाधिकारी
४- " गन्धर्व सैन	उद्यान अधिकारी

५- श्री सत्येन्द्र पाल सिंह	सचिव, कुलपति
६- " कमलेश नैथानी	नि०स०, कुलसचिव
७- " संजीव कुमार राजपूत	अवर अभियन्ता
८- " आनन्द कुमार सिंह	सहायक
९- " देवी प्रसाद	सहायक
१०- " कैलाश चन्द्र वैष्णव	विद्युतकार
११- " हेमन्त कुमार	जूनियर असिस्टैण्ट–कम–टाइपिस्ट
१२- " मदन गोपाल उपाध्याय	" "
१३- " कुमुद चन्द्र जोशी	" "
१४- " दीपक घोष	" "
१५- " जगमोहन सिंह नेगी	दफ्तरी
१६- " अशोक कुमार	कारपेंटर
१७- " सत्य सिंह	भृत्य
१८- " चन्द्रभान	भृत्य
१९- " महेश चन्द्र जोशी	भृत्य
२०- " योगेन्द्र सिंह	भृत्य
२१- " मदन मोहन सिंह	भृत्य
२२- " घासीराम	भृत्य
२३- " मांगेराय	भृत्य-कम-ड्राईवर
२४- " श्रीराम	ड्राईवर
२५- " नकलीराम	ड्राईवर
२६- " दिवान सिंह	कुक
२७- " गिरिश चन्द्र	भृत्य–कम–पलम्बर
२८- " माता प्रसाद	चौकीदार
२९- " रूल्हा सिंह	"
३०- " राम सिंह	"
३१- " जल सिंह	"
३२- " ईसम सिंह	"
३३- " भूरि सिंह	"
३४- " योगेन्द्र शर्मा	"
३५- " राम बहादुर	"
३६- " हिम्मत सिंह	"
३७- " रमेश चन्द्र	"

३८- श्री श्याम सिंह	चौकीदार
३९- " चन्द्र कुमार मल	"
४०- " राम प्रसाद राय	"
४१- " हरिराम	माली
४२- " श्यामलाल	माली
४३- " घिर्राऊ	माली
४४- " देवेन्द्र कुमार	माली
४५- " बाबूलाल	माली
४६- " बालेश्वर	सफाई कर्मचारी

लेखा अनुभाग

१- श्री नन्द गोपाल आनन्द	अनुभाग अधिकारी	
२- " राम नरेश शर्मा	सहायक	
३- " मोल्हड़ सिंह	जूनियर असिस्टैन्ट–कम–टाइपिस्ट	
४- " राजकिशोर शर्मा	"	"
५- " अशोक डे	"	"
६- " नन्द किशोर	"	"
७- " वीर सिंह	"	"
८- " बलबीर सिंह	भृत्य	
९- " रामकृष्ण	भृत्य	
१०- " महेश चन्द्र जोशी (प्रथम)	भृत्य	

शिक्षा परीक्षा अनुभाग

१- श्री सूर्य प्रकाश	सहायक कुलसचिव	
२- " महेन्द्र सिंह नेगी	सहायक	
३- " प्रेमचन्द्र जुयाल	सहायक	
४- " कालूराम त्यागी	जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट	
५- डा० प्रदीप कुमार जोशी	जन सम्पर्क अधिकारी	
६- श्री महावीर सिंह यादव	जूनियर असिटैन्ट-कम-टाइपिस्ट	
७- " बालकृष्ण शुक्ला	"	"
८- " वीरेन्द्र सिंह असवाल	"	"
९- " राम स्वरूप	"	"

१०- श्री महानन्द	भृत्य
११- " हरपाल सिंह	भृत्य
१२- " कमल सिंह	भृत्य

प्राच्य विद्या संकाय

१- श्री राजपाल सिंह	कनिष्ठ सहायक
२- " राजेश कुमार	भृत्य
३- " प्रेम सिंह	भृत्य
४- " महेन्द्र सिंह	भृत्य
५- " रामसुमन	माली

मानविकी संकाय

१- श्री गिरीशचन्द्र सुन्दरियाल	कार्यालयाध्यक्ष
२- " लाल नरसिंह नारायण	प्रयोगशाला सहायक
३- " सुभाष चन्द्र	लिपिक
४- " कुंवर सिंह	भृत्य
५- श्री हरेन्द्र सिंह	भृत्य
६- श्री शिवकुमार	भृत्य
७- श्री राजेन्द्र कुमार	भृत्य
८- श्री भान सिंह	चौकीदार
९- श्री सन्तोष कुमार	फील्ड अटेंडेंट
१०- श्री बलजीत	सफाई कर्मचारी

विज्ञान महाविद्यालय

१- श्री यशपाल सिंह राणा	कनिष्ठ सहायक
२- श्री कृष्ण कुमार	" "
३- श्री धर्मवीर सिंह	" "
४- श्री रामदास	भृत्य
५- श्री राजपाल	"
६- श्री रतनलाल	"
७- श्री विनोद कुमार	सफाई कर्मचारी

रसायन विज्ञान

१- श्री शशिभूषण	लैब टैक्नीशियन
२- ,, सुरेश गर्ग	लैब असिस्टैन्ट
३- ,, मानसिंह	गैस मैन
४- ,, नरेश सलीम	लैब ब्वाय
५- ,, जयपाल	,,

भौतिक विज्ञान

१- श्री प्रमोद कुमार	लैब टैक्नीशियन
२- श्री ठकरा सिंह	लैब असिस्टैन्ट
३- श्री पुरुषोत्तम कुमार	
४- श्री सुमेर सिंह	

वनस्पति विज्ञान

१- श्री रुद्रमणि	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
२- श्री चन्द्र प्रकाश	प्रयोगशाला सहायक
३- श्री विजय सिंह	लैब अटेंडेंट
४- ,, वीरेन्द्र सिंह	माली/सेवक
५- ,, राम अजोर	माली
६- ,, राजकुमार	सफाई कर्मचारी

जन्तु विज्ञान

१- श्री हरीश चन्द्र	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
२- ,, रजत सिन्हा	स्टोर-कीपर
३- ,, प्रीतमलाल	प्रयोगशाला भृत्य
४- ,, शशीकान्त धीमान	प्रयोगशाला सहायक
५- रिक्त	भृत्य

संग्रहालय

१- श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर

२- श्री डा० सुखबीर सिंह	सहायक क्यूरेटर
३- श्री डा० प्रभात सेंगर	संग्रहालय सहायक
४- श्री हंसराज जोशी	लिपिक
५- श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
६- श्री ओमप्रकाश	भृत्य
७- श्री गुरुप्रसाद	माली
८. श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

कम्प्यूटर

१- श्री दिनेश बिश्नोई	सिस्टम मैनेजर
२- ,, अजय गोयल	सिस्टम प्रोग्रामर
३- ,, मनोज कुमार	कम्प्यूटर आपरेटर
४- ,, वेदव्रत	तकनीकी सहायक
५- ,, रामसिंह	भृत्य

पुस्तकालय

१- पुस्तकालयाध्यक्ष	डा० जगदीश विद्यालंकार	एम.ए., एम. लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच. डी., बी. एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।
२- सहा. पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजारसिंह चौहान	एम.ए.,बी. लाइब्रेरी साइन्स।
३- प्रो० असिस्टैंट	श्री उपेन्द्र कुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
४- सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री ललित किशोर	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
५- सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री मिथलेश कुमार	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, सी.पी.आर., सी. पी. पी.
६- सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।

७- सेमी. प्रो. असिस्टेंट	श्री अनिल कुमार धीमान	एम एस-सी., एम.ए. वी. लाइब्रेरी साइन्स, आई. जी. डी. बाम्बे, डिप्लोमा पत्रकारिता विज्ञान बी. एड., डिप्लोमा इन यू.एन. व आई.यू सी.सी.पी., डी. सी. ए.
८- पुस्तकालय लिपिक	श्री सोमपाल सिंह	एम. ए.
६- पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा
१०- पुस्तकालय लिपिक	श्री रामस्वरूप	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
११- पुस्तकालय लिपिक	श्री मदनपाल सिंह	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, आई.टी.आई., की आपरेटर (मोदी जीराक्स)
१२- बुक बाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल
१३- बुक लिफ्टर	,, गोविन्द सिंह	मिडिल
१४- सेबक	,, घनश्याम सिंह	मिडिल
१५- सेवक	,, शशीकान्त धीमान	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१६- सेवक	,, बुन्दू	—
१७- सेवक	,, शिवकुमार	मिडिल
१८- सेवक	,, कुलभूषण शर्मा	मध्यमा, आपरेटर मोदी जीराक्स
१९- सेवक	,- रामपद राय	कक्षा ५ पास
२०- चौकीदार	,, रामप्रसाद राय	—
२१- स्वीपर	,, सुशील कुमार	कक्षा ६ पास
२२- लिपिक	,, लालकुमार कश्यप	—

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

१- श्रीमती विनीता कुमारी — आश्रम अध्यक्षा

२- श्रीमती सुदेश खन्ना	पुस्तकालयाध्यक्षा
३- श्रीमती भागेश्वरी देवी	स्टोर कीपर
४- श्री ओमप्रकाश नवानी	लिपिक
५- श्रीमती महेश्वरी देवी	सेविका
६. श्री मुन्नालाल	माली
७- श्री सूरतसिंह राणा	भृत्य
८- श्रीमती विमला	सफाई कर्मचारी

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

पी-एच० डी० उपाधि (१९९४)

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	निर्देशक	विभाग	शोध प्रबन्ध का शीर्षक
1.	सोमपाल वेदालंकार	प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार	वैदिक साहित्य	वेदों में आध्यात्मिक तत्व : महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में
2.	साधुराम	डा० सत्यव्रत राजेश	,, ,,	बोधायन तथा आपस्तम्ब धर्मसूत्रों में वर्णित समाज व्यवस्था (वैदिक पृष्ठभूमि में एक अध्ययन)
3.	गजानंद आर्य	डा० मनुदेव	,, ,,	अथर्व वेद में दार्शनिक तत्व
4.	विनोद कुमार	डा० भारत भूषण	,, ,,	वैदिक युग्म एवं गणदेवता (एक समालोचनात्मक अध्ययन)
5.	श्रीमती गरिमा देवी	डा० महावीर	संस्कृत साहित्य	वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण
6.	सतीश कुमारी	प्रो० वेदप्रकाश	,, ,,	औचित्यसिद्धान्तस्य परिप्रेक्ष्ये कालिदासीयनाटकानां समीक्षा-त्मकमध्ययनम्
7.	प्रेमलता	डा० रामप्रकाश	,, ,,	काशिकावृत्ति भाषावृत्त योरेक तुलनात्मकमध्ययनम् ।

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	निर्देशक	विभाग	शोध प्रबन्ध का शीर्षक
8.	देशबन्धु	डा० महावीर	संस्कृत साहित्य	माधवकृत शंकर दिग्विजय एवं आचार्य मेधाव्रतकृत दयानन्द दिग्विजय का तुलनात्मक परिशीलन
9.	ऋषिपाल	डा. एस.एल. सिंह	प्रा० भा० इतिहास	प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतित्व
10.	रमेशकुमार	डा० जयदेव वेदालंकार	दर्शनशास्त्र	विद्योदय भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन (सांख्य, योग, वेदान्त, नाम और वैशेषिक दर्शनों के परिप्रक्ष्य में)
11.	कु० विजयलक्ष्मी	डा० विष्णुदत्त	हिन्दी सा०	डा० अम्बाप्रसाद सुमन का समीक्षा साहित्य।
12.	रमेशदत्त	डा० ज्ञानचन्द्र	हिन्दी सा०	साठोत्तरी हिन्दी कविता में जीवन मूल्य।
13.	कु० विनोद वाला	डा० भगवान देव	हिन्दी सा०	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के सृजनात्मक साहित्य में सौन्दर्य और प्रेम।

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	निर्देशक	विभाग	शोध प्रबन्ध का शीर्षक
14.	वेदव्रत	डा० विष्णुदत्त	हिन्दी सा०	भारतेन्दुकालीन हिन्दी साहित्य पर आर्य समाज का प्रभाव
15.	महेशचन्द्र	डा. एस.एल. सिंह	गणित	अरैखिक एवं अस्फुट विश्लेषण में स्थिर बिंदु प्रमेय Theorems in nonlinear & fuzzy analysis.
16.	बीना	" "	"	A study in fixed point theory and stability problems.
17.	महेन्द्र सिंह	डा० विजय शंकर	वनस्पति विज्ञान	Studies in Biodeterioration of certain crude drugs and their formulation.
18.	सतीश चन्द्र पाण्डेय	प्रो. ओ. पी. मिश्रा	मनोविज्ञान	Role stress, coping strategies and Psycho-social corrects.
19.	रामकुमार सिंह	" "	"	A comparative study of personality factors of successful Unsuccessful male-female Athletes

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	निर्देशक	विभाग	शोध प्रबन्ध का शीर्षक
20.	राजेन्द्रप्रसाद भारद्वाज	डा.पी.पी. पाठक	भौतिक विज्ञान	ORIGIN OF LF-VHF RADIATIONS IN LIGHTNING SPECTRA.
21.	सूरजभान	डा० श्रवण शर्मा	अंग्रेजी	WORDSWORTH & PANT : A COMPARATIVE STUDY
22.	राजेश साहनी	डा० डी० के० माहेश्वरी	माइक्रोबायोलोजी	STUDIES ON THE RHIZOBIUM SYMBIOTIC WITH ACACIA NILOTICA AND ACACIA CATECHU WITH SPECIAL REFERENCE TO SUB-STANDARD.

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

अलंकार तृतीय वर्ष–१९९४

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
कन्या गुरुकुल देहरादून			विद्यालंकार			
1-	1164	910293	कु० ऋचा	श्री भारत भूषण	इतिहास, संगीत-वादन	प्रथम
2-	1165	910296	" शाम्ता अग्रवाल	" शिवकुमार अग्रवाल	हिन्दी, चित्रकला	प्रथम
3-	1166	910295	" वन्दना	" जयशंकर उपाध्याय	हिन्दी, संगीत-गायन	प्रथम
4-	1167	910294	" विभूति आर्या	" सुदर्शन कुमार	हिन्दी, संगीत-वादन	प्रथम
कन्या गुरुकुल हाथरस			विद्यालंकार			
1-	1168	910316	कु० अनीता	श्री राम निवास	हिन्दी, दर्शनशास्त्र	प्रथम
2-	1169	910318	" हेमलता	" योगेन्द्र सिंह	हिन्दी, दशनशास्त्र	प्रथम
3-	1170	910319	" ज्योत्स्ना	" चतुर्भुज शर्मा	हिन्दी, दर्शनशास्त्र	प्रथम
4-	1171	910321	" मालती	" रणवीर सिंह	हिन्दी, दर्शनशास्त्र	द्वितीय
5-	1172	910323	" निर्मला	" शंकर सिंह	हिन्दी, दर्शनशास्त्र	प्रथम

क्र.सं.	अनुक्रमाँक	पंजीकरण सं॰	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय				विद्यालंकार		
1-	1173	910403	अरुण कुमार	श्री रामानन्द	हिन्दी, दर्शनशास्त्र	द्वितीय
2-	1174	910362	अनिल कुमार	" सत्यवीर सिंह	हिन्दी, मनोविज्ञान	द्वितीय
3-	1175	910408	बिजयप्रकाश गुईदेल	श्री भक्त बहादुर गुईदेल	इतिहास, मनोविज्ञान	प्रथम
4-	1176	910407	कौशलेन्द्र प्रपन्न	" अवध किशोर मिश्र	इतिहास. मनोविज्ञान	प्रथम
5-	1177	910009	मनोष कुमार	" देवदत्त शर्मा	इतिहास, मनोविज्ञान	प्रथम
6-	1179	910024	बिजय कुमार	" धर्मवीर सिंह	योग, मनोविज्ञान	प्रथम
				वेदालंकार		
7-	1557	910014	सुबोध कुमार	" काशीनाथ	योग	द्वितीय

दीक्षान्त समारोह १९९५ में उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची
(बी०एस-सी०) कम्प्यूटर ग्रुप-१९९४

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
1-	968	910209	अनुभव आहूजा	श्री एम०सी० आहूजा	कम्प्यूटर, गणित, भौतिकी	प्रथम
2-	969	910201	अरविन्द कुमार	" राजेन्द्र सिंह	" " "	प्रथम
3-	970	910315	भूपेन्द्र सिंह	" तेजपाल सिंह	" " "	द्वितीय
4-	971	910221	देवेन्द्र कुमार	" योगेश्वर प्रसाद	" " "	द्वितीय
5-	972	910207	दीपांकर भगत	" सदाशिव भगत	" " "	प्रथम
6-	973	910223	ज्ञानप्रकाश गुप्ता	" गुलाब चन्द्र गुप्ता	" " "	प्रथम
7-	974	910222	हर्षकुमार	" आर०एल० चुग	" " "	द्वितीय
8-	975	910311	ललित गुप्ता	" आर०पी० गुप्ता	" " "	द्वितीय
9-	976	910057	मनोज कु० जायसवाल	" मुरलीधर जायसवाल	" " "	द्वितीय
10-	977	910211	पराग ग्रोवर	श्री एच०सी० ग्रोवर	" " "	प्रथम
11-	978	910205	राजवीर यादव	श्री राम औतार यादव	" " "	द्वितीय
12-	979	910203	रुपेश कुमार शर्मा	श्री एल० पी० शर्मा	कम्प्यूटर, गणित, भौतिकी	द्वितीय
13-	980	910208	रीतेश गुप्ता	श्री सुशील कुमार गुप्ता	कम्प्यूटर, गणित, भौतिकी	द्वितीय
14-	981	910310	राजेश कुमार गुप्ता	श्री आर० के० गुप्ता	कम्प्यूटर, गणित, भौतिकी	द्वितीय
15-	982	910214	राकेश कुमार	श्री जगदीश प्रसाद	कम्प्यूटर, गणित, भौतिकी	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
16-	983	910206	राजीव यादव	श्री योगेश सिंह यादव	कम्प्यूटर ग्रुप	द्वितीय
17-	984	910170	राजकुमार अग्रवाल	श्री गौरी शंकर अग्रवाल	"	द्वितीय
18-	985	910220	सुरेन्द्र सिंह रावत	श्री ध्यान सिंह रावत	"	द्वितीय
19-	986	910212	संदीप अग्रवाल	श्री विनोद प्रकाश अग्रवाल	"	प्रथम
20-	987	910159	सौरभ अग्रवाल	श्री विनोद प्रकाश अग्रवाल	"	द्वितीय
21-	988	910204	शैलेन्द्र जोशी	श्री रमेश चन्द्र शर्मा	"	द्वितीय
22-	989	910035	विकास चांदना	श्री रमेशचन्द चांदना	"	प्रथम
23-	990	910264	विशाल गुप्ता	श्री युद्धवीर आर्य	"	प्रथम
24-	991	910213	विमलेश कुमार देव पाण्डेय	श्री भगवान देव पाण्डेय	"	द्वितीय

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची
बायो ग्रुप (बी०एस-सी०) वर्ष-१९९४

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
1-	1029	910269	अभिषेक कुमार	श्री भगवान दास	रसा०, जन्तु शा०, वन० शा०	द्वितीय
2-	1030	910241	अनिल कुमार	श्री ओमदत्त	"	द्वितीय
3-	1031	910048	अनिल	श्री जे० पी० पाल	"	द्वितीय
4-	1032	910194	अजीत सिंह	श्री श्याम सिंह	"	प्रथम
5-	1033	910181	अजय कुमार	श्री ब्रह्मदत्त	"	द्वितीय
6-	1034	910176	अजय गोयल	श्री चन्द्रप्रकाश गोयल	"	द्वितीय
7-	1035	910247	अमित उपाध्याय	श्री आर०यू० उपाध्याय	"	प्रथम
8-	1036	910189	अमित कुमार सैनी	श्री सतीशचन्द्र	"	प्रथम
9-	1937	910184	अमित कुमार	श्री बृजमोहन	"	प्रथम
10-	1038	910271	आशीष वर्मा	श्री ओमप्रकाश वर्मा	"	द्वितीय
11-	1039	910245	आशीष आनन्द	श्री सी०एल० आनन्द	"	प्रथम
12-	1040	910298	बासुदेव वर्मा	श्री तेजपाल सिंह	"	प्रथम
13-	1041	910031	चन्द्रप्रकाश	श्री सुरेश चन्द	"	प्रथम
14-	1042	910197	दिनेश सिंह रावत	श्री एम०एस० रावत	"	द्वितीय
15-	1043	910224	दिनेश कुमार मित्तल	श्री सत्यप्रकाश मित्तल	"	द्वितीय

क.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
16-	1044	910180	दिनेश कुमार सिंह	श्री महेन्द्र सिंह	रसा०, वन०, जन्तु	द्वितीय
17-	1045	910178	दिनेश कुमार चौहान	श्री दलपत सिंह चौहान	,,	द्वितीय
18-	1047	910040	हेमन्त कुमार	श्री देवी प्रसाद	,,	द्वितीय
19-	1048	910237	हैदर अली खां	श्री याकूब अली खाँ	,,	द्वितीय
20-	1049	910248	हर्षवर्धन पन्त	श्री हरिशंकर पन्त	,,	प्रथम
21-	1050	910055	हरिस्वरूप श्रीवास्तव	श्री एन०पी० श्रीवास्तव	,,	द्वितीय
22-	1051	910262	जयशंकर आर्य	श्री रामबक्श आर्य	,,	द्वितीय
23-	1052	910179	मोहन बहुगुणा	श्री जीतराम बहुगुणा	,,	द्वितीय
24-	1053	910003	मनोज कुमार	श्री वेदप्रकाश	,,	द्वितीय
25-	1054	910234	मनोज कुमार	श्री बिश्वेश्वर दयाल	,,	द्वितीय
26-	1055	900061	मुनेश कुमार	श्री दयानन्द	,,	द्वितीय
27-	1056	910229	मुकेश ममगांई	श्री पी०आर० ममगांई	,,	द्वितीय
28-	1057	910243	नीरज कुमार निगम	श्री लक्ष्मीस्वरूप निगम	,,	द्वितीय
29-	1058	910038	नवीन कुमार अरोड़ा	श्री रामप्रकाश अरोड़ा	,,	प्रथम
30-	1059	910191	नवीन बोहरा	श्री हरीश बोहरा	,,	द्वितीय
31-	1060	910364	रजनीश भारद्वाज	श्री महेशचन्द्र भारद्वाज	,,	द्वितीय
32-	1061	910196	रवि कुमार	श्री वीरेन्द्र कुमार	,,	प्रथम
33-	1062	910272	राजपाल	श्री रामकृष्ण	,,	द्वितीय
34-	1063	910033	सतीश कुमार	श्री इलम सिंह	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
35-	1064	910230	संजय कुमार	श्री खेम सिंह	रसा०, वन०, जन्तु	प्रथम
36-	1065	910140	सुबोध कुमार	श्री सन्तराम राजपूत	"	
37-	1066	910177	सुभाष चन्दवानी	श्री देश कुमार चन्दवानी	"	
38-	1067	910349	सुधांशुमोहन द्विवेदी	श्री रामविलास द्विवेदी	"	
39-	1068	900075	शीशपाल	श्री मेहरचन्द	"	द्वितीय
40-	1069	910200	शिव कुमार	श्री लालसिंह	"	द्वितीय
41-	1070	910186	सुरेश कुमार	श्री बसन्त कुमार	"	प्रथम
42-	1071	910187	सुरेन्द्रसिंह	श्री शिवसेवक सिंह	"	द्वितीय
43-	1072	910246	सुनील कुमार शर्मा	श्री निरंजन शर्मा	"	प्रथम
44-	1073	910149	शरद चौहान	श्री ब्रह्मपाल सिंह	"	द्वितीय
45-	1074	910039	तेजस्वी सिंह रौतेला	श्री सुरेन्द्र सिंह रौतेला	"	द्वितीय
46-	1075	910225	उमेशचन्द्र जोशी	श्री हरिशचन्द्र जोशी	"	प्रथम
47-	1076	910183	विशाल शर्मा	श्री राधेश्याम शर्मा	"	प्रथम
48-	1077	910185	विनीत कुमार	श्री वेद प्रकाश शास्त्री	"	प्रथम
49-	1078	910240	विकास जवाड़ी	श्री भगत सिंह	"	द्वितीय
50-	1079	910193	विपिन कुमार	श्री सुखवीर सिंह	"	द्वितीय
51-	1080	910050	विनोद कुमार शर्मा	श्री सुगनचन्द	"	द्वितीय

दीक्षान्त समारोह १९९५ में उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची
(बी०एस-सी०) गणित ग्रुप-१९९४

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
1-	992	910132	अंकुश कुमार गुप्ता	श्री इन्द्रसेन गुप्ता	भौतिकी, गणित, रसायन	द्वितीय
2-	993	910171	अवनीश कुमार गुप्ता	,, बी०के० गुप्ता	,,	द्वितीय
3-	994	910160	अरविन्द कठेरिया	,, गोविन्द सिंह कठेरिया	,,	द्वितीय
4-	995	910219	अनुज कुमार गुप्ता	,, ओमप्रकाश गुप्ता	,,	द्वितीय
5-	996	910104	अर्जुन सिंह	,, देवेन्द्र सिंह	,,	द्वितीय
6-	997	910069	धानेश कुमार	,, सन्तराम	,,	द्वितीय
7-	998	910161	धीर सिंह	,, होरी सिंह	,,	प्रथम
8-	999	910071	धनेश कुमार शर्मा	,, दीवानचन्द शर्मा	,,	प्रथम
9-	1000	910062	दीपक वर्मा	,, भगवान वर्मा	,,	प्रथम
10-	1001	900080	धीरेन्द्र चौहान	,, महेन्द्र सिंह चौहान	,,	द्वितीय
11-	1002	910347	जैनेन्द्र सिंह रावत	,, जगमोहन सिंह रावत	,,	द्वितीय
12-	1003	910145	ललित मोहन	,, चन्द्रमोहन बतरा	,,	द्वितीय
13-	1004	910010	मौ० नदीम बेग	,, मौ० सरीफ बेग	,,	तृतीय
14-	1005	910350	मुकेश कुमार	,, शेर सिंह	,,	द्वितीय
15-	1006	900167	मुकुल किशोर शर्मा	,, राधेश्याम शर्मा	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
16-	1007	910147	मनोज कुमार वर्मा	श्री राजकुमार वर्मा	भौतिकी, रसायन, गणित	द्वितीय
17-	1008	910148	नवीन खण्डेलवाल	,, रामशरन खण्डेलवाल	,,	,,
18-	1009	900187	निजपाल सिंह चौहान	,, सुरेन्द्र सिंह चौहान	,,	,,
19-	1010	910275	नवनीत कुमार	,, विनोद कुमार मित्तल	,,	,,
20-	1011	910036	नीरज शर्मा	,, वी०पी० शर्मा	,,	,,
21-	1012	910313	नीरज रतूड़ी	,, वी० के० रतूड़ी	,,	,,
22-	1013	910107	नीरज कुमार	,, अशोक कुमार गुप्ता	,,	,,
23-	1014	920466	रक्षित राधयान	,, कर्मवीर सिंह	,,	,,
24-	1015	910303	राजेश कुमार सिंह	,, गिरजानन्द सिंह	,,	,,
25-	1016	900047	राजेश लोहनी	,, भुवनचन्द्र लोहनी	,,	,,
26-	1017	910301	राजीव सैनी	,, आर० के० सिंह	,,	,,
27-	1018	910141	राजन श्रीवास्तव	,, प्यारेलाल श्रीवास्तव	,,	,,
28-	1019	910142	सुभाष कुमार	,, विजेन्द्र सिंह	,	प्रथम
29-	1020	900171	सतेन्द्र कुमार	,, भोपाल सिंह	,,	द्वितीय
30-	1021	880088	शरद कुमार	,, शिवराम सिंह	,,	प्रथम
31-	1022	910089	सुनील कुमार शर्मा	,, त्रिलोकीनाथ शर्मा	,,	द्वितीय
32-	1023	910144	शालीन भारद्वाज	,, चन्द्रहास भारद्वाज	,,	प्रथम
33-	1024	900130	उमेशचन्द्र पन्त	,, श्यामदत्त पन्त	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमाँक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
34-	1025	910312	विपिन अग्रवाल	श्री एस० सी० अग्रवाल	भौतिकी, गणित, रसायन	द्वितीय
35-	1026	910154	विनय कुमार चतुर्वेदी	,, विष्णुदत्त चतुर्वेदी	,,	,,
36-	1027	910072	बिवेक कुमार त्यागी	,, श्यामकुमार त्यागी	,,	,,
37-	1028	900170	योगेश्वर सिंह	,, हेमचन्द्र चौहान	,,	,,
38-	1541	900122	दिनेश सिंह	,, कृपानाथ सिंह	,,	तृतीय

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
एम० ए० द्वितीय वर्ष दर्शन शास्त्र (१९९४)						
1-	1408	920468	गौतम ब्रह्म	श्री अमिनचन्द्र ब्रह्म	दर्शनशास्त्र	द्वितीय
2-	1409	910257	कृष्ण कुमार शर्मा	श्री सुरेशप्रसाद शर्मा	"	प्रथम
3-	1410	920601	मनोज बडोनी	श्री मुनीन्द्रदत्त बडोनी	"	"
4-	1411	910430	सुनीलदत्त चतुआ	श्री भोजराज चतुआ	"	"
5-	1412	920602	कु० नीरा बडोनी	श्री एम० डी० बडोनी	"	"
एम० ए० द्वितीय वर्ष संस्कृत साहित्य (१९९४)						
6-	1414	920603	धर्मेन्द्र	श्री हुकम सिंह	संस्कृत साहित्य	द्वितीय
7-	1415	930415	हरीश चन्द पनेरु	श्री जयकृष्ण पनेरु	"	प्रथम
8-	1416	900278	नारायणदत्त भट्ट	श्री जयदेव भट्ट	"	"
9-	1418	880023	शशिभानु	श्री जयदेव वेदालंकार	"	"
10-	1419	910491	श्यामचन्द्र मिश्र	श्री नवीन्द्र मिश्र	"	"
11-	1420	890045	विनय कुमार	श्री लोटन सिंह	"	"

क.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
12-	1421	920426	कु० अश्विनी कुमारी	श्री विजयपाल सिंह	संस्कृत साहित्य	द्वितीय
13-	1422	920441	श्रीमती भगवती देवी	श्री वी०पी० कौशिक	,,	तृतीय
14-	1423	920305	कु० बबीता	श्री कंवर लाल शर्मा	,,	प्रथम
15-	1424	920469	,, गीता	श्री मदनमोहन शर्मा	,,	द्वितीय
16-	1427	920329	,, शशिबाला शर्मा	,, श्रीलक्ष्मणदत्त शर्मा	,,	द्वितीय
17-	1428	920598	,, श्रीकुमारी द्विवेदी	,, रामविलास द्विवेदी	,,	प्रथम
18-	1429	920304	,, सुनीता शर्मा	,, कंवरलाल शर्मा	,,	,,
19-	1430	920599	,, उमा द्विवेदी	,, रामविलास द्विवेदी	,,	,,
20-	1431	920641	,, अहल्या	,, भूतल शर्मा	,,	,,
21-	1432	920005	,, गार्गी	,, कामता प्रसाद उपाध्याय	,,	,,
22-	1433	920613	,, कान्ता	,, रामप्रसाद	,,	द्वितीय
23-	1435	920546	,, राजबाला	,, रणधीर सिंह	,,	द्वितीय
24-	1439	920545	बंशीधर बैंजवाल	,, बलराम बैंजवाल	,,	प्रथम
25-	1440	830115	दूधपुरी	,, सेढूराम गोस्वामी	,,	प्रथम
26-	1441	900237	हरीशचन्द्र कलोनी	,, रुद्रदत्त कलोनी	,,	प्रथम
27-	1442	920527	हरिराम	,, नेकीराम	,,	प्रथम
28-	1443	870109	नारायण पण्डित	,, पलकधारी पण्डित	,,	(श्रेणी सुधार) द्वितीय
29-	1445	920439	सत्यदेव दत्त	,, रघुनाथ शर्मा	,,	प्रथम
30-	1446	920470	श्रीनिवास शर्मा	श्री हरिनन्द शर्मा	,,	प्रथम

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
31-	1221	900250	अजय कुमार कौशिक	श्री चरण सिंह	संस्कृत साहित्य प्रथम (श्रेणी सुधार)	
एम० ए० द्वितीय वर्ष हिन्दी (१९९४)						
32-	1447	920327	महोकम सिंह	श्री रामरतन	हिन्दी साहित्य	द्वितीय
33-	1448	920444	सुशील कुमार	,, सुल्तान सिंह	,,	प्रथम
34-	1449	920476	कु० चम्पा	,, धनेश्वर प्रसाद	,,	द्वितीय
35-	1450	920533	,, कुसुम तोमर	,, जालम सिंह तोमर	,,	द्वितीय
36-	1451	920312	,, कविता त्यागी	,, राम निवास त्यागी	,,	द्वितीय
37-	1453	920474	,, लता राघव	,, सुल्तान सिंह राघव	,,	,,
38-	1454	930623	,, मेनका त्रिपाठी	,, वीरेन्द्र त्रिपाठी	,,	प्रथम
39-	1455	920595	,, मंजेशलता सोलंकी	,, रामवीर सिंह सोलंकी	,,	प्रथम
40-	1456	920115	,, मधु शर्मा	,, सुभाषचन्द शर्मा	,,	द्वितीय
41-	1457	920428	,, प्रीती अग्रवाल	,, एन०सी० अग्रवाल	,,	प्रथम
42-	1458	920475	,, सुमन यादव	,, रामप्यारे यादव	,,	तृतीय
43-	1459	920526	,, सुमन मल्ल	,, रणजीत कुमार मल्ल	,,	द्वितीय
44-	1460	920537	,, सुमेधा	,, सोमप्रकाश रोले	,,	प्रथम
45-	1461	920325	,, स्नेह पंवार	,, सूर्यभानु	,,	द्वितीय
46-	1462	920549	,, सुमेधा रानी	,, शंकर लाल शर्मा	,,	प्रथम

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
47-	1463	920615	कु० ऊषा	श्री जुगल किशोर शर्मा	हिन्दी साहित्य	द्वितीय
48-	1464	920429	,, वन्दना विश्नोई	,, हरिगोपाल	,,	प्रथम
49-	1465	920535	,, अलका	,, हुकम सिंह चौहान	,,	द्वितीय
50-	1466	910426	,, दीपा	,, सुदर्शन मल्होत्रा	,,	द्वितीय
51-	1452	920104	,, लता शर्मा	,, वेदप्रकाश	,,	प्रथम
52-	1469	920550	,, मुकेश कुमारी	,, बाबूलाल शर्मा	,,	द्वितीय
53-	1470	920309	,, पवित्रा	,, बाबूराम	,,	द्वितीय
54-	1471	920103	,, राजबाला	,, भयराम	,,	द्वितीय
55-	1472	920098	,, रेखारानी	,, रामकुमार शर्मा	,,	द्वितीय
56-	1473	910436	,, रीता चौधरी	,, फूल सिंह	,,	तृतीय
57-	1474	860127	,, शोभा गुप्ता	,, राजनारायण गुप्ता	,,	द्वितीय
58-	1476	920436	,, उमा चौहान	,, आर० पी० सिंह	,,	द्वितीय
59-	1477	900274	,, व्यंजना शर्मा	,, विजेन्द्र कुमार शर्मा	,,	द्वितीय
60-	1478	920473	बालादत्त जोशी	,, मोतीराम जोशी	,,	द्वितीय
61-	1479	790012	जुगल किशोर	,, भैरवदत्त शास्त्री	,,	द्वितीय
62-	1480	920637	कृष्ण चन्द्र	,, इन्द्र सिंह	,,	द्वितीय
63-	1481	920544	मामचन्द शर्मा	,, आत्माराम	,,	द्वितीय
64-	1482	920328	महेन्द्र कुमार पुरी	,, विश्वनाथ पुरी	,,	प्रथम
65-	1483	920137	प्रकाशवीर	,, जगदीश प्रसाद	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
66-	1484	900324	राजीव कुमार सिंह	श्री रतन सिंह	हिन्दी साहित्य	प्रथम
67-	1485	920592	सुगन्ध पाण्डेय	,, गोमती पाण्डेय	,,	प्रथम
68-	1486	920096	टीकम सिंह	,, लायक सिंह	,,	द्वितीय

एम० ए० द्वितीय वर्ष (इतिहास)

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
69-	1487	920440	अजय परमार	श्री विशम्बर सिंह	प्रा०भा० इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व	प्रथम
70-	1488	920640	धीर सिंह	श्री अतर सिंह	,,	द्वितीय
71-	1489	890198	ताजबीर सिंह	श्री श्रीपाल सिंह	,,	द्वितीय
72-	1235	910494	नवनीत कुमार सिंह	,, पहल सिंह	,,	द्वितीय
73-	1490	920553	कु० सपना रानी	,, पृथ्वीराज राजपूत	,,	प्रथम
74-	1717	920548	,, अर्चना गुप्ता	,, रामकुमार गुप्ता	,,	द्वितीय
75-	1718	920313	,, कल्पना भटनागर	,, राजेश्वर स्वरूप भटनागर	,,	द्वितीय
76-	1719	930501	,, ममता झा	श्री ईश्वरचन्द्र मिश्र	,,	द्वितीय
77-	1720	930608	कु० उपमा	श्री सुरेन्द्र कुमार पाठक	,,	द्वितीय
78-	1491	920605	हरपाल सिंह	श्री अकल चन्द	,,	द्वितीय
79-	1492	920512	हरिकृष्ण	श्री शोभाराम	,,	द्वितीय
80-	1493	910446	राकेश कुमार भटनागर	श्री बालस्वरूप भटनागर	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय		श्रेणी
एम० ए० द्वितीय वर्ष अंग्रेजी							
81-	1495	920478	बचन सिंह	श्री खिलपत सिंह	अंग्रेजी		द्वितीय
82-	1496	930556	जोसेफ के० एम०	श्री के०वी० मैथ्यू	,,		द्वितीय
83-	1497	920477	उमेश कुमार वर्मा	श्री राजकुमार वर्मा	,,		द्वितीय
84-	1499	920539	कु० चारू	श्री कृष्ण बहादुर चौधरी	,,		द्वितीय
85-	1500	920538	" ललिता शर्मा	श्री हुकुम सिंह शर्मा	,,		द्वितीय
86-	1501	920479	" लक्ष्मी	श्री गुलाब सिंह राणा	,,		द्वितीय
87-	1502	920434	" रीता	श्री बी०डी० शर्मा	,,		द्वितीय
88-	1503	920576	" सरोज शर्मा	श्री जन्मीप्रसाद शर्मा	,,		द्वितीय
89-	1504	920427	श्रीमती अंजला कालरा	श्री एस.एस. ओबराय	,,		द्वितीय
90-	1508	920143	कु० नीरज शर्मा	श्री सियाराम शर्मा	,,		द्वितीय
91-	1509	890249	" सुजाता सिंह	श्री रामकुमार सिंह	,,		द्वितीय
92-	1511	910045	राज कुमार	श्री आत्माराम	,,		द्वितीय
93-	1512	910396	राज कुमार	श्री अचपल सिंह	,,		द्वितीय
94-	1513	900261	शैलेन्द्र कुमार सिंह	श्री श्याम राज सिंह	,,		द्वितीय
95-	1211	900279	कु० कविता अग्रवाल	श्री के०ए० अग्रवाल	,,	(श्रेणी सुधार)	प्रथम

क्र.सं.	अनुक्रमाँक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
एम० ए० द्वितीय वर्ष योग						
	1714	910478	प्रतीक मिश्रपुरी	श्री योगेन्द्र दत्त मिश्रपुरी	योग	प्रथम
	1715	920645	बुद्धिप्रकाश	श्री टुन्ची सिंह	योग	प्रथम
	1716	870117	कर्मवीर सिंह	श्री कृपाराम	योग	द्वितीय
एम० ए० द्वितीय वर्ष मनोविज्ञान						
96-	1514	M.A. 890041	आदेश कुमार	श्री राजकुमार	मनोविज्ञान	द्वितीय
97-	1515	M.A. 890048	हृदय प्रकाश	श्री जलेश्वर नाथ	,,	द्वितीय
98-	1516	M.A. 870070	नवीन कुमार	श्री घनश्याम सिंह	,,	द्वितीय
99-	1517	M.A. 890196	रामवीर सिंह	श्री रामकवा सिंह	,,	प्रथम
100-	1519	M.A. 890046	संजय कुमार सिंह	श्री इन्द्रदेव सिंह	,,	द्वितीय
101-	1520	M.A. 920483	कु. अनुराधा कोटनाला	श्री बुद्धिबल्लभ कोटनाला	,,	प्रथम
102-	1521	M Sc 920617	,, अंशिका गुप्ता	श्री रामकुमार गुप्ता	,,	द्वितीय
103-	1522	M.Sc. 920611	,, अन्जना शर्मा	श्री मदनलाल शर्मा	,,	प्रथम
104-	1523	M.Sc. 920435	,, भूपेन्द्र कौर कुकरेजा	श्री जी० एस० कुकरेजा	,,	प्रथम
105-	1524	M.Sc. 920446	,, गुरमीत कौर	श्री गुरुदेव सिंह	,,	द्वितीय
106-	1525	M.Sc. 920596	,, हरप्रीत कौर	,, गुरुदयाल सिंह	,,	प्रथम

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
107-	1526	M.Sc. 920487	कु० कविता	श्री सुभाष चन्द्र	मनोविज्ञान	द्वितीय
108-	1527	M.Sc. 920491	,, कविता कश्यप	,, अशोक कुमार कश्यप	,,	प्रथम
109-	1528	M.Sc. 920490	,, मंजूरानी चौहान	,, रमेशचन्द्र	,,	द्वितीय
110-	1529	M.Sc. 920530	,, नम्रता बंसल	,, महेश कुमार बंसल	,,	प्रथम
111-	1530	M.Sc. 920525	,, मिति सैनी	,, साधुराम सैनी	,,	द्वितीय
112-	1531	M.A. 920486	,, पूनम विनायक	,, द्वारिकानाथ विनायक	,,	प्रथम
113-	1532	M.Sc. 920489	,, पायल भार्गव	,, राजकिशोर भार्गव	,,	प्रथम
114-	1533	M.Sc. 920430	,, रीता शर्मा	,, सीताराम शर्मा	,,	द्वितीय
115-	1534	M.Sc. 920590	,, ऋचा गुप्ता	,, रामनिवास गुप्ता	,,	,,
116-	1535	M.Sc. 920541	,, रीतू तोमर	,, राममेहर सिंह	,,	,,
117-	1536	M.Sc. 920604	,, सपना कश्यप	,, आनन्द स्वरूप कश्यप	,,	प्रथम
118-	1537	M.A. 920485	,, शबनम	,, अब्दुल रहमान खाँ	,,	द्वितीय
119-	1538	M.Sc. 920324	,, वन्दना शर्मा	,, हरिशरण शर्मा	,,	प्रथम
120-	1539	M.A. 910434	श्री चन्द्रदीप	,, रणजीत सिंह	,,	द्वितीय

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
M.Sc. II Chemistry						
1-	1669	890023	अनुराग शर्मा	श्री कपिल देव शर्मा	रसायन विज्ञान	प्रथम
2-	1670	890110	गीतेश अनेजा	" सरबंश राज अनेजा	"	"
3-	1671	920524	निजेश शर्मा	" दीनानाथ शर्मा	"	"
4-	1672	890086	राजेश जोशी	" इन्द्रप्रसाद जोशी	"	"
5-	1673	890087	राजीव कुमार	" रुद्रमणि	"	"
6-	1674	890011	तरुण कुमार पाठक	" के० के० पाठक	"	"
7-	1675	920626	विनय कुमार शर्मा	" जयप्रकाश शर्मा	"	"
8-	1676	890057	विवेक शर्मा	" रामकिशोर शर्मा	"	"
9-	1677	890077	वीरेन्द्र कुमार शर्मा	" रमेशचन्द्र शर्मा	"	"
10-	1678	920498	कु० अर्चना राजपूत	" विनोद कुमार राजपूत	"	"
11-	1679	920502	" बबलेश रानी	" नरेशचन्द	"	"
12-	1680	920499	" कविता बिष्ट	" मोहन सिंह बिष्ट	"	"
13-	1681	920588	" कुसुम शर्मा	" आर० के० शर्मा	"	"
14-	1682	920589	" ममता शर्मा	" सुभाष चन्द्र शर्मा	"	"
15-	1684	920501	" नीरू बर्मा	" जो० आर० वर्मा	"	"
16-	1685	920497	" विमला यादव	" बंशीलाल यादव	"	"

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमाँक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
M Sc. II Year Physics						
1-	1638	870052	हरिप्रसाद शर्मा	श्री तुलसीराम शर्मा	भौतिकी	प्रथम
2-	1639	920516	कृष्णपाल सिंह	श्री कर्ण सिंह	,,	द्वितीय
3-	1640	890071	मनीष कुमार छाबड़ा	श्री हरिकिशन लाल छाबड़ा	,,	प्रथम
4-	1641	920581	नागेश्वर सिंह	श्री राजिन्द्र सिंह	,,	,,
5-	1642	920522	नवीन भारद्वाज	श्री केवल कृष्ण	,,	,,
6-	1643	920519	रवीन्द्र कुमार	श्री दुर्गादास	,,	,,
7-	1644	890172	रविदत्त	श्री के० एस० दत्त	,,	,,
8-	1645	880086	राजकुमार	श्री मुरलीधर	,,	,,
9-	1647	880098	राजीव कुमार	श्री सुरेशदत्त शर्मा	,,	,,
10-	1648	920594	शिव कुमार शर्मा	श्री सत्यप्रकाश शर्मा	,,	,,
11-	1649	890063	विवेक सागर	श्री मेघ सिंह	,,	,,
12-	1708	930569	मनीषकुमार शर्मा	श्री पुरुषोत्तमदास शर्मा	,,	द्वितीय
13-	1650	920559	कु० अर्चना झा	श्री बी०एल० झा	,,	प्रथम

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
14-	1651	920562	कु० धीरा ग्रोवर	श्री प्रेमप्रकाश ग्रोवर	भौतिकी	प्रथम
15-	1652	920507	,, ज्योत्सना राय	श्री रामजी राय	,,	,,
16-	1653	920504	,, रंजना त्रिवेदी	श्री वृन्दावन बिहारी	,,	,,
17-	1654	920505	,, रुपम मित्तल	श्री रवीन्द्र कुमार मित्तल	,,	,,
18-	1655	920560	,, सोमा मित्तल	श्री सोमप्रकाश मित्तल	,,	,,
19-	1656	920561	,, उपमा गोयल	श्री शीतल प्रकाश	,,	,,

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्रों की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
एम० एस-सी० II गणित						
1-	1604	920633	आलोक कुमार चौहान	श्री क्षेत्रपाल सिंह चौहान	गणित	द्वितीय
2-	1605	890186	मुस्तफीजुर्रहमान	श्री हबीबुर्रहमान खान	"	प्रथम
3-	1606	880238	विवेक गोयल	श्री महेन्द्र कुमार गोयल	"	"
4-	1610	920555	कु० मोनिता सरदाना	श्री के० के० सरदाना	"	"
5-	1611	920554	" नीलिमा बाजपेई	श्री बी० डी० बाजपेई	"	"
6-	1612	920493	" सीमा जैन	श्री एन० सी० जैन	"	"
7-	1613	920557	" सोनाली महाजन	श्री बी० के० महाजन	"	"
8-	1614	920492	" विनीता गुप्ता	श्री विजय कुमार गुप्ता	"	"

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पानें वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमाँक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
एम० एस-सी० द्वितीय वर्ष माइक्रोबायोलोजी						
1-	1573	890021	हर्षपाल सिंह	श्री शीतल सिंह	माइक्रोबायोलोजी	प्रथम
2-	1574	890033	कृष्ण कुमार जोशी	श्री मायाराम जोशी	,,	,,
3-	1575	890008	श्री मौ० आफताब बेग	मौ० इदरीस बेग	,,	,,
4-	1576	920120	नोंग्थम्बम सनामाचा मीतेल	श्री नोंयोमबम खौमे सिंह	,,	,,
5-	1577	920119	निगोबम शरतचन्द्र सिंह	श्री निगोबम मुहोन सिंह	,,	,,
6-	1578	890167	राजकुमार	श्री मामराज सिंह	,,	,,
7-	1580	890024	तुषार कुमार	श्री सत्यपाल सिंह	,,	,,
8-	1581	890026	उमेश लूथरा	श्री एस० एस० लूथरा	,,	,,
9-	1583	890020	विनय कुमार शर्मा	श्री रामसेवक शर्मा	,,	,,
10-	1584	920455	कु० गायत्री भसीन	श्री यशपाल भसीन	,,	,,
11-	1585	920511	कु० पूनम	श्री एम० आर० बदलानी	,,	,,
12-	1586	920454	,, प्रवीता अरोड़ा	श्री प्रीतमलाल अरोड़ा	,,	,,
13-	1587	920621	,, शालिनी	श्री भारतभूषण	,,	,,

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
14-	1588	920503	कु० सीमा त्यागी	श्री जे० एस० त्यागी	माइक्रोबायोलोजी	प्रथम
15-	1589	920509	,, सीमा सेखरी	श्री आर० एल० सेखरी	,,	,,
16-	1590	920508	,, बन्दना गुप्ता	श्री के० एम० गुप्ता	,,	,,
17-	1591	920453	,, विभा तिवारी	श्री रघुनाथ तिवारी	,,	,,
18-	1592	920452	,, विजय लक्ष्मी त्रिपाठी	श्री महावीर प्रसाद त्रिपाठी	,,	,,
19-	1579	890034	सुमित्र पाण्डेय	श्री ज्ञानेन्द्र पाण्डेय	,,	,,
20-	1582	890037	विजय गुप्त	श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्त	,,	,,

दीक्षान्त समारोह १९९५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमाँक	पंजीकरण सं॰	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
M Sc. II Physics (1994)						
1-	1586	910449	अनिल कुमार	श्री गोपाल पण्डित	M.Sc. II भौतिकी	प्रथम
2-	1587	910462	अमित कुमार जौहरी	श्री अशोक कुमार जौहरी	,,	,,
3-	1588	910477	आशीष जोशी	श्री जे॰ पी॰ जोशी	,,	प्रथम
4-	1589	910450	आशीष कुमार	श्री विजयपाल	,,	,,
5-	1590	870193	दिनेश कुमार पाण्डेय	श्री एन॰ जे॰ पाण्डेय	,,	,,
6-	1591	910476	देवेन्द्र कुमार	श्री सत्येन्द्र प्रकाश	,,	,,
7-	1592	870183	गिरीश कुमार शर्मा	श्री विजयेन्द्र कुमार शर्मा	,,	,,
8-	1593	910463	कमलेश कुमार	श्री रूप सिंह	,,	,,
9-	1594	910475	प्रभात कुमार	श्री ओमप्रकाश शर्मा	,,	,,
10-	1595	910451	पंकज कुमार गुप्ता	श्री आम शशोधर गुप्ता	,,	,,
11-	1596	910467	पंकज लूथरा	श्री एल॰ एल॰ लूथरा	,,	,,
12-	1597	910456	राजेश वर्मा	श्री नन्द कुमार वर्मा	,,	,,
13-	1599	910461	राम औतार	श्री लाल चन्द्र	,,	,,
14-	1600	910466	सुधीर कुमार पाण्डेय	श्री एच॰ एस॰ पाण्डेय	,,	,,
15-	1602	880184	सुरेन्द्र सिंह	श्री प्रताप सिंह	,,	,,
16-	1603	910464	सौरभ तायल	श्री त्रिलोक चन्द्र	,,	,,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
॥ ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ॥

वार्षिक विवरण
1995-96

ओ३म्

वार्षिक विवरण

१९६५–६६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	श्री सूर्यदेव
कुलपति	डॉ. धर्मपाल
आचार्य एवं उपकुलपति	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार
	(फरवरी, ९६ से प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री)
कोषाध्यक्ष	श्री हरवंशलाल शर्मा
कुलसचिव	प्रो. जयदेव वेदालंकार
डीन, प्राच्य विद्या संकाय	प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री
डीन, मानविकी संकाय	प्रो. नारायण शर्मा
डीन, विज्ञान संकाय	प्रो. एस.एल. सिंह
डीन, जीव विज्ञान संकाय	प्रो. डी.के. माहेश्वरी
डीन, छात्र कल्याण	प्रो. डी.के. माहेश्वरी
वित्त अधिकारी	श्री जयसिंह गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष	डॉ. जगदीश प्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक–मण्डल

* डॉ. श्यामनारायण सिंह, कुलसचिव
* श्री जयसिंह गुप्ता, वित्ताधिकारी
* डॉ. विष्णु दत्त राकेश,
  आचार्य, हिन्दी विभाग
* डॉ. प्रदीप कुमार जोशी, जनसम्पर्क अधिकारी

विषय–सूची

आमुख

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के ९६ वर्ष पूरे कर रहा है। भारत में पुनर्जागरण और निर्माण की मशाल जलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के समानान्तर भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्त्तन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के रूप में किया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अध्यापनअनुसन्धान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी प्रशंसा महात्मा गाँधी, दीनबन्धु एण्ड्रूज पण्डित मदनमोहन मालवीय, मान्य गोखले, महाकवि रविन्द्रनाथ, नरेन्द्र देव, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद तथा इन्दिरा गाँधी जैसे लोकनायक मनीषियों ने की है। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद विज्ञान, वैदिक ज्ञान, प्राच्य विद्या और मानविकी के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय में कुलपति जी के आमन्त्रण पर इस वर्ष संस्कृत विभाग में डॉ. रामकृष्ण शर्मा शिक्षा सलाहकार, भारत सरकार ने अपने विशिष्ट व्याख्यान दिए।

हिन्दी विभाग में नवभारत टाइम्स के अच्युतानन्द मिश्र, पंजाब वि.वि. के डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, दिल्ली के डॉ. महेन्द्र कुमार, डॉ. नरेश मिश्र, डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ पधारे।

इस वर्ष के दीक्षान्तोत्सव पर विश्वविद्यालय में चेक गणराज्य के भारत में महामहिम राजदूत डॉ. ओदोलेन स्मेकल ने दीक्षान्त भाषण पढ़ा।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग ने अपने प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत समीपस्थ ग्रामों में शिक्षा, घरेलू उपकरणों के प्रयोग, जनसंख्या पर रोक तथा स्वरोजगारों की सूचना आदि कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया।

विश्वविद्यालय के अनेक विद्वान प्राध्यापक विदेशों में विशिष्ट व्याख्यानों के लिये आमन्त्रित किये गये।

सत्र १९९६–९७ से एम.बी.ए. कक्षाएँ प्रारम्भ करने हेतु ए.आई.सी.टी.ई. एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन–प्रकाशन तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों तथा शोध समितियों में भाग लेकर अपने पद की गौरववृद्धि की। कुछ शिक्षकों को प्रोन्नति मिली। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति विवरण में अलग–अलग इन विद्वानों के निजी क्रिया–कलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रो. श्यामनारायण सिंह
कुलसचिव

गुरुकुल काँगड़ी–संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा–लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १६०२ ई. को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर–कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा–सा पौधा आज ६५ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में सँजो लिया और फिर इन्हीं शाखाओं से नई टहनियां फूट आई। यह पौधा गुरुकुल काँगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धी एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१६वीं शताब्दीं में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा–पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा–पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा–पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल काँगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदान्त की शिक्षा के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्संदेह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रांति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु–शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षो बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो. महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमेस्ट्री, प्रो. रामचरन दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो. साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो. सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो. प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो. सुधाकर का मनोविज्ञान आदि हिन्दी में अपने–अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो. रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया।

१६५२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरंतर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी

परिद्रष्टा जस्टिस महावीर सिंह

विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकर्षित किया। प्रमुख विदेशी आगंतुकों में सी.एफ. ए. एण्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी बेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १६०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १६०८ के दक्षिण हैदराबाद जल-विप्लव, १६११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शो को स्वीकार करके गुरूकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १६१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द जी हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१६२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे-

१. वेद महाविद्यालय
२. साधारण (कला) महाविद्यालय
३. आयुर्वेद महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं-

बाढ़-१६२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गई। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंगा नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१६२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदन मोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमुना लाल बजाज, डॉ० मुँजे साधुवर, वासवानी आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास

पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं. विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गये।

पं. विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी गुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं. चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तांलकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं. अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं. सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्याग पत्र दे दिया। पं. बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं. प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेद सिंह जी शाहपुराधीश, श्री बद्रीदास जी, पं. ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं. धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं. जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्‌घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गयी। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल' कांगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं. इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गयी। उनके पश्चात् पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम.ए. कक्षाएँ विधिवत् शुरू हुईं, और चार विषयों में पी.एच.डी. (शोध व्यवस्था) भी। इन्हीं के समय १९६६ में डॉ. गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६६ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीर सिंह शास्त्री तथा डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर.सी. शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्यवसायिक शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ६६ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्यों में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्व कुलपति श्री हूजा ने ५००/-रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहां स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिकचेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

विद्यालय विभाग

प्रथम कक्षा से बारहवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्या विनोद का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद विद्यालय (प्राच्य संकाय)

सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद, संस्कृत, दर्शन, इतिहास तथा योग में एम.ए. और पीएच.डी. की उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय (मानविकी संकाय)

८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम.ए. तथा पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की जा सकती है। सत्र ९२-९३ से छात्राओं के लिए भी एम.ए. कक्षाओं की अलग से व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही बी.ए. (अलंकार सामान्य) का पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ हुआ है।

विज्ञान महाविद्यालय (विज्ञान संकाय)

८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया हैं सम्प्रति भौतिकी, रसायन, कम्प्यूटर और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ गणित, भौतिकी, रसायन में चल रही हैं। विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान संकाय की अलग व्यवस्था की गयी है जिसमें रसायन शास्त्र के साथ जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, औद्योगिक सूक्ष्म जीव विज्ञान पढ़ाये जा रहे हैं। इस संकाय में बी. एससी. के अतिरिक्त माइक्रोबायोलोजी में स्नातकोत्तर तथा पीएच.डी. की व्यवस्था है। साथ ही जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान में पीएच.डी. की उपाधि हेतु भी व्यवस्था है। इसी सत्र से इस विभाग में पर्यावरण विज्ञान विषय स्नातकोत्तर पर प्रारम्भ किया गया है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय

का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिए जाने के बाद इस महाविद्यालय में पर्याप्त विस्तार हुआ है तथा भविष्य में इसके तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार

स्वयं पोषित योजना के अन्तर्गत हरिद्वार में भी कन्या कुरुकुल महाविद्यालय में एम.ए., एम. एससी. की कक्षाएं प्रारम्भ कर दी गयी हैं। जिसका पूर्ण विवरण आगे दिया जा रहा है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय गुरुकुल के जो भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के अवास–गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वद्यिलाय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र भी गत पाँच वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आँशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत सात वर्षों से चल रहा है अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत अंग्रेजी भाषा का एक वर्षीय प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखलाया जाता है।

शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों–परिदृष्ट्र महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा–निर्देश में उत्तरोत्तर प्रगति–पथ पर अग्रसारित है।

प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त–समारोह के अवसर पर
कुलपतिप्रतिवेदनम्
ओ३म्

उपहवरे गिरीणां संगमे च नदीनांधिया विप्रोऽजायत।

श्रध्देयाः संन्यासिनः, मान्याः कुलाधिपतयः श्री सूर्यदेव महाभागाः, सम्मान्याः परिद्रष्टारो न्याय मूर्त्तयः **श्री महावीर सिंह** महोदया दीक्षान्त भाषणाय मुख्यातिथिरुपेण समुपस्थिताः साहित्य पयोनिधि प्रस्यूत सुधास्वादसरसस्वान्ताः चेक गणराज्यस्य राजूदतपदमलंकुर्वाणाः महामहिम **डॉ. ओदोलेन स्मेकल महोदयाः**, सार्वदेशिकार्य प्रतिनिधि सभा प्रधान पदभाजः **श्री रामचन्द्र** वन्देमातरम् महाभागाः, मञ्चस्थाः विद्वांस, शिक्षा शास्त्रिणः, आर्यनेतारो, नवस्नातकाः, शिष्ट–कार्यपरिषदोः सदस्याः, विश्वविद्यालयस्य पंचनवतितमेदीक्षान्तसमारोहावसरे समागतानां मान्यांनां महानुभावानाँ स्वागतं व्याहरन् अमन्दमानन्दमनुभवामि। समुपस्थितानां तत्र भक्तां दर्शनेन काऽप्यनिर्वचनीयः हर्षप्रकर्षः समेदेति नश्चेतसि।

हे प्रियस्नातकाः। अस्याः विंशशताब्द्याः प्रथमे वर्षे पुण्यश्लोकेन स्वामि श्रद्धानन्देन मन्दाकिन्याः पवित्रे तटे गुरुकुलमिदं संस्थापितम्। एतस्मिन् गुरुकुले विद्यापारदृश्वाम, वेदमनीषिणः काव्यकोविदाः वाग्मिनः लेखकाः देशप्रेमसिक्ताः नेतारः, अनेके स्नातकाः उपाधिवन्तः समभवन्, तेषु लब्धकीर्त्तिभिः पं. इन्द्रविद्यावाचस्पति–आचार्य अभयदेव स्वामी समर्पणानन्द, आचार्य सत्यव्रत, डॉ. सत्यकेतु, आचार्य प्रियव्रत, पं. चन्द्रगुप्त, डॉ. रामनाथ वेदालंकार, स्वामी धर्मानन्द प्रभृतिभिः गुरुकुलस्य कीर्ति सर्वासु दिक्षु प्रसारिता। अस्माकं प्रत्ययोऽस्ति द्रढीयान् यन्नवाः स्नातका इत उपाधि गृहीत्वां विश्वविद्यलास्य यशोगाथां गायं गायं स्वकर्मसु दक्षतां प्रकटयन्तः प्रतिष्ठाम् आप्स्यन्ति।

हे आर्य बान्धवाः। अस्य विश्वविद्यालयस्य प्रगतियात्रायाः संक्षिप्तं प्रगतिवृत्तं भवतां श्रवणगोचरतां यातु इत्येव विमृश्य दीक्षान्त समारोहावसरे समासेनोदीर्यते। यद्यपि अर्थाभावेन अन्येश्च प्रत्यवायैः समुन्नतिः किञ्चित् प्रबाध्यते तथापित भवताँ स्नेहेन न हीयते।

साम्प्रतममुष्मिन् विश्वविद्यालये चत्वारः संकाया सन्ति। एकश्च कन्या गुरुकुल महाविद्यालय बालिकानाम् उच्चशिक्षायै प्रयतमानोऽस्ति। देहरादून नगरे विश्वविद्यालयस्य अन्यस्मिन् परिसरे महिलाशिक्षा व्यवस्था प्रचलति। प्रवर्त्तमानानां विभागानां विवरणं समासतो प्रस्तूयते।

प्राच्य विद्या संकायः

वेद विभागः

वैदिक ज्ञानविज्ञानान्वेषणे दीक्षितोऽयं विभागों वैदिक ज्ञान प्रसारे सदा सन्नद्धोवर्त्तते–अस्मिन् विभागे इदानीं डॉ. मनुदेवबन्धोरध्यक्षत्वे **डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. दिनेशचन्द्रः, डॉ. सत्यदेवनिगमालंकारश्च** अध्यापननिरताः सन्ति।

जनवरी मासे आचार्य **राम प्रसाद वेदालंकार** महोदयोऽनेकवर्षेभ्यः सर्ववेद्य वेदविद्या प्रदानेन प्रशासन पाटवेन च विश्वविद्यालयस्य सेवां कृत्वा सेवानिवृत्तः।

सत्रेऽस्मिन् **डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय महोदयस्य डॉ. अभेदानन्द भट्टाचार्य** महोदयस्य च विशिष्टं व्याख्यानमभवत्।

डॉ. मनुदेवबन्धुः डॉ. दिनेशचन्द्रश्च कुरुक्षेत्र विश्वविद्यलाये समायोजित वैदिक संगोष्ठ्यां शोधपत्रे पठितवन्तौ। अन्ये चापि प्राध्यापकाः वैदिक सम्मेलनेषु भागं गृहीतवन्तः।

डॉ. रूपकिशोर शास्त्री वैदिकवाङ्मयनिर्वचन कोष निर्माणे संलग्नः **डॉ. दिनेशचन्द्रः**, वैदिक उपमाकोश इत्याख्यां शोधयोजनां विश्वविद्यालयानुदानाय प्रेषितवान्। अनेके छात्रा इदानीं शोधकार्यरताः।

संस्कृत विभागः

विभागोऽयं संस्कृत साहित्य सन्निहित विविधज्ञानविज्ञान प्रसारे सततमग्रगो वर्त्तते संस्कृत साहित्य विभागे शिक्षां प्राप्य अत्रत्याः स्नातका विभिन्नेषु विश्वविद्यालयेषु ससम्मानं कार्यरताः सन्ति।

विभागे प्रो. वेदप्रकाश शास्त्रिणः प्रोफेसरपदे **डॉ. महावीरः, डॉ. सोमदेव शतांशु, डॉ. राम प्रकाश शर्मा** रीडरपदे प्रतिष्ठिताः सन्ति। सम्प्रति चक्रानुसारं, **डॉ. सोमदेवः** अध्यक्षपद भारं वहति।

अस्मिन् शिक्षासत्रे स्नातकोत्तर कक्षासु भारतस्य सप्तराज्यानां नयपाल देशस्य च छात्रा ज्ञानमर्जयन्ति।

भारत सर्वकारस्य संस्कृत शिक्षापरामर्शकपदम् अलंकृतचरस्य **डॉ. रामकृष्ण** शर्मणो विशिष्टं व्याख्यानम् समायोजितम्। अस्य विभागस्य तत्वावधाने महर्षिस्वामिदयानन्द जन्मोत्सवः समायोजितः।

अस्मिन् वर्षे संस्कृत विभागीयाः छात्रा विविधविश्वविद्यालयैरायोजित विभिन्न प्रतियोगितासु पुरस्कृतयाः।

प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री महोदयोऽद्यत्वे प्राच्यविद्यासंकायाध्यक्षत्वेन सह विश्वविद्यालयस्य आचार्योपकुलपतिपदमावहति। नैकान् विश्वविद्यालयान् विशेषज्ञत्वेन च भवान् गतवान्।

अस्मिन् सत्रे **डॉ. महावीर** शास्त्रिणः निर्देशकत्वे चत्वार छात्राः पीएच.डी. उपाधिमधिगच्छन्ति, सप्त छात्राः शोधकार्यरताः सन्ति। एते कानपुर विश्वविद्यलायेन संस्कृत पाठ्यक्रम समितौ विषय विशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रिताः। अस्य विश्वविद्यालयस्य शिक्षापटले स्नातक प्रतिनिधिरूपेण चयनिताः।

डॉ. सोमदेव शतांशुः स्वामिसमर्पणानन्द वैदिक शोधसंस्थानेन समायोजित शोधगोष्ठीषु शोध पत्रं प्रस्तुतवान्। इदानीं डॉ. शतांशोः निर्देशने त्रयश्छात्राः शोधकार्यरताः सन्ति।

डॉ. रामप्रकाश शर्मणो निर्देशकत्वेऽप्यनेके छात्राः शोधकार्य कुर्वन्ति। **डॉ. ब्रह्मदेवः** कुरुक्षेत्र–विश्वविद्यलाये समायोजित शोध संगोष्ठ्यां शोधपत्रं प्रस्तुतवान्।

श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थानम्

अस्य संस्थानस्य निर्देशकपदं **डॉ. भारत भूषण** विद्यालंकारोऽलंकरोति। अस्मिन् वर्षे संस्थानेन वैदिकपर्यावरणविषयकं पुस्तक प्रकाशितम्। स्वामी श्रद्धानन्द समग्र मूल्यांकन इत्याख्यं पुस्तकञ्चापि नूनमचिरमेष्यति दृग्गोचरताम्।

इदं संस्थानम् पुरातत्वसंग्रहालस्य सहयोगेन पुरातत्व सम्बन्धिनी मेकां शोधयोजनां प्रेषितवान्। वैदिक वनस्पतीनां सूक्ष्मजैविक चिकित्सा शास्त्रीयमध्ययनम् इत्याख्या शोधयोजना चापि प्रेषिता।

दर्शन विभागः

इदानीम् अस्मिन् विभागे त्रयोऽध्यापकाः कार्यरताः। **डॉ. त्रिलोक चन्द्र** विभागाध्यक्षः प्रवाचकपदं, **डॉ. विजय पाल शास्त्री** प्रवाचकपद, **डॉ. यू.एस. बिष्टश्च** वरिष्ठ प्रवक्तृपदमलंकरोति। **डॉ. जयदेव वेदालंकारश्च** कुलसचिवपदभार वहन्नपि विभागे विद्याप्रदानरतः।

अस्मिन् वर्षे दर्शन विभागः 'इण्डियन फिलोसफिकल कांग्रेस' इत्याख्यसंगठनस्य सप्ततितमम् अधिवेशनं सगौरवं समायोजितवान्। अस्मिन् भारतवर्षस्य शतत्रयदार्शनिकाः संगताः। **डॉ. विष्टः** अस्य स्थानीय सचिवत्वेन कार्यमकरोत्।

डॉ. त्रिलोकचन्द्रेन–ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूपं इत्याख्यं पुस्तकं प्रकाशितम्। **डॉ. विजयपाल शास्त्रिणो** निर्देशकत्वे द्वौ छात्रौ पीएच.डी. उपाधिम् अलभताम्।

डॉ. विष्टलिखिते १–द कान्सेप्ट ऑफ लैंग्वेज, २–द जैना थ्योरी ऑफ रिअलिटी एण्ड नालेज इत्याख्ये पुस्तके प्रकाशिते। अनेकानिशोध पत्राणि च प्रकाशितानि।

योग विभागः

डॉ. ईश्वर भारद्वाजस्य सन्निर्देशने योग विभागोऽनुदिनमग्रेसरति। विभागेऽस्मिन् एकवर्षीयः डिप्लोमा पाठ्यक्रम, स्नातकस्नातकोत्तर कक्षासु च योगाध्यापनम्ः एकवर्षीयः डिप्लोमा पाठ्यक्रमः, स्नातकस्नातकोत्तर कक्षासु च योगाध्यापनम् प्रचरति। **डॉ० भारद्वाजोऽस्मिन्** सत्रे अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु विषय विशेषज्ञत्वेन आहूतः। भवतां योगस्वास्थ्यविषयिणी वार्त्ता आकाशवाण्या प्रसारिता। चत्वार छात्राः इदानीं शोधरताः।

इतिहास विभागः

अस्मिन् विभागे **डॉ. श्यामनारायण सिंहः** प्रोफेसरपदे **डॉ. कश्मीर सिंहों** रीडर पदे **डॉ. राकेश कुमार**, वरिष्ठ प्रवक्तृपदे अध्यापनरताः। समेषाँ प्राध्यापकानां निर्देशने छात्रैः शाधाकार्यणि क्रियन्ते। अस्मिन् सत्रे **डॉ. राकेश शर्मणः** 'प्राचीन भारते धार्मिक सहिष्णुता' इत्याख्या लघ्वी शोधपरियोजना विश्वविद्यालये स्वीकृता। सम्प्रति प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री विभागाध्यक्षीयं कार्यं निर्वहति।

पुरातत्वसंग्रहालयः

अस्मिन् सत्रे पुरातत्वसंग्रहालये आद्य ऐतिहासिक संस्कृतिकक्षः सन्नियोजितः। अत्र हि सिन्धुसभ्यतायाः, गैरिकरागमृद् भाण्डताम्रनिधिसभ्यतायाः चित्रितधूसरमृद् भाण्डसभ्यतायाश्च अवशेषाः प्रदर्शनपटले चित्रिताः।

श्री शिवराज पाटिल, मदनलाल खुराना, राजेन्द्र गुप्तादयो नेतारः संग्रहालयम् अमुम् प्रेक्ष्य प्राशंसन्। संग्रहालयस्य विकासार्थ (क्यूरेटर) **डॉ. सूर्यकान्त श्रीवास्तवेनैका** शोधयोजना सर्वकारम् प्रति प्रेषिता।

मानविकी संकायः

मनोविज्ञान विभागः

अस्मिन् विभागे चत्वारः प्राध्यापकाः वर्त्तन्ते। तत्र च **डॉ. ओ.पी. मिश्र**, प्रोफेसरपदभाक् **डॉ. एस.सी. धमीजा**, अध्यक्षपदमावहति **डॉ. एस.के. श्रीवास्तव डा. चन्द्रप्रकाश खोखर** महोदयौ प्रवक्तृपदभाजौ।

विभागेन विगतशिक्षासत्रे प्रारब्धः– पी.एम. आई.आर पी–जी डिप्लोमा इति पाठयक्रमः साफल्येन द्वितीयवर्ष प्रचरति। अस्यपाठयक्रमस्य द्वितीयवर्षीयाश्छात्राः शैक्षणिकयात्रायै 'गोआ' नगरी प्रतिगता। मनोविज्ञान विषयस्य छात्रेभ्य एका संगणक प्रयोगशालापि कार्यव्यापृता।

सर्वेऽपि विभागीय प्राध्यापकाः शोधकर्मणि संलग्ना. सन्ति। इदानीमस्मिन् विभागे विंशतिप्रायाः छात्राः शोधकार्य व्यापृता।

परामर्श कार्य नियुक्ति विभागः

विश्वविद्यालयेऽस्मिन् वर्षे Counceling and Replacement Dept परामर्श एवं कार्य नियुक्ति विभागोऽपि संस्थापितः। छात्रेभ्यो व्यावसायिक परामर्श प्रदानं कार्यनियुक्तिश्चास्य प्रयोजनम। **डॉ. ओमप्रकाश मिश्रोऽस्य** विभागस्य निर्देशको वर्तते।

हिन्दी विभागः

साम्प्रतं हिन्दी विभागे पञ्चप्राध्यापकाः कार्यरताः **डॉ. विष्णुदत्तराकेश** प्रोफेसरपदं, **डॉ. ज्ञानचन्द रावलो ऽध्यक्षपदं,** रीडर पदंच, **डॉ. सन्तराम वैश्य डॉ. भगवान देवाश्च** रीडरपदमलंकुर्वन्ति। **डॉ. कमलकान्त बुधकरः** प्रवक्तृपदे कार्यरतः।

अस्मिन् शिक्षासत्रे विविध विश्वविद्यालयेभ्योऽनेके विद्वांसः व्याख्यानादि शैक्षणिककार्यार्थमायाता ते हि **डॉ. हरमहेन्द्रसिंह बेदी डॉ. महेन्द्रकुमार डॉ. महेन्द्रनाथादयः।**

हिन्दी विभागे हिन्दी पत्रकारिता–स्नातकोत्तर डिप्लोमापाठ्यक्रमः प्रचरित **डॉ. कमलकान्त बुधकरस्य** नेतृत्वे पत्रकार छात्राः प्रशिक्षण यात्रायै दिल्ली–इन्दौर भोपाल नगरीगताः। तत्र च विशिष्ट पत्रकारैः सह संभाषणं विचारविनिमयञ्च अकुर्वन्।

डॉ. विष्णुदत्त राकेशस्य निर्देशनेऽनेकेछात्राः शोधरताः। एतस्मात् शिक्षासत्रात् **डॉ. ज्ञानचन्द रावलो** विभागस्य अध्यक्षपदं निर्वहति। **डॉ. सन्तराम वैश्योऽनेकेषु** शोधसंगोष्ठीषु भागं गृहीतवान्। **डॉ. भगवानदेव** पाण्डेयो वैज्ञानिक एवं तकनीकीं इत्याख्यसंस्थानेन आयोजितायां कार्यशालाया सम्मिलितः। **डॉ. बुधकरोऽपि** विविधासु गोष्ठीषु भागं गृहीतवान्। असौ अम्बालास्थ प्रभुप्रेमी संघेन ज्ञानभारती पुरस्कृत्या सभाजितः।

अंग्रेजी विभागः

विभागेऽस्मिन् **डॉ. नारायण शर्मणोऽध्यक्षत्वे डॉ. सदाशिवभगत, डा. श्रवण कुमार शर्मा, डॉ. अम्बुज शर्मा, डा. कृष्ण अवतार अग्रवाल** इत्येते प्राध्यापकाः अध्यापनरताः।

विभागेन स्नातककक्षासु व्यवसायात्मकं आंग्लशिक्षणम् वैकल्पिकपत्रत्त्वेन संचाल्यते। एतत्प्रशिक्षणाय डा. श्रवण कुमार शर्मा हैदराबादस्थं सी.आई.एल. संस्थानं फैकेल्टी एनरिचमेण्ट–योजनायां कैनेडा देशमपि गतवान्। डा. श्रवण कुमारेण 'एलियनेशन इन दी पोएट्री आफ मैथ्यू आर्नलड' इत्याख्यं शोधपत्रं प्रकाशित्। अपरेषाम् प्राध्यापकानां निर्देशनेऽनेके शोध छात्राः शोधकर्मणि संलग्नाः। डा अग्रवाल महोदयस्य एकं शोधपत्रं प्रकाशितम्। डा. नारायण शर्मणोऽनेके शोधलेखाः प्रकाशिताः। विविधविश्वविद्यालयै भवान् विशेषज्ञत्वेनामन्त्रितः।

प्रौढसततशिक्षा प्रसारविभागश्चः

अस्मिन् विभागे **डॉ. आर.डी. शर्मा डा. यशवीर सिंहमलिकौ** कार्यकर्तौ। डॉ. शर्मा अस्य विभागस्य अध्यक्षो वर्तते। एतेन विभागेन भारतीय प्रौढ़ शिक्षासंघस्य सहयोगेन केन्द्रिय क्षेत्रीय प्रौढशिक्षाधिवेशनम् आयोजितम्। जनसंख्या एवं पर्यावरण, जनसंख्या एवं स्वास्थ्य इति पुस्तकद्वयं

विभागेन प्रकाशितम्। निकटस्थयग्राम्यक्षेत्रेषु साक्षरता व्यावसायिक प्रशिक्षणकार्यक्रमाः संचालिताः।

विज्ञान संकायः

गणित विभागः

डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा महोदयः गणित विभागस्य अध्यक्षपदभारं वहति। विभागेऽस्मिन् **डॉ० एस०एल० सिंहः** प्रोफेसर पदभारं वहन् विज्ञान संकायस्य अध्यक्ष पदमपि अलंकरोति। अनेन विभागेन वर्षेऽस्मिन् 'Vedic gemotry and its Relevance to Science and Technology' विषयमधिकृत्य राष्ट्रीय संगोष्ठी समायोजिता। अस्यां संगोष्ठ्यां बहुभिः विद्वद्भिः शोध–पत्राणि पठितानि। विभागे राजस्थान विश्वविद्यालयस्य **प्रो. एम.सी. गुप्ता** महोदयस्य दैनिक जीवने गणितस्य प्रयोगः' विषये अतीव लोकप्रियं व्याख्यानमभूत्। **प्रो. एस.एल. सिंह** महोदयः स्लावाकियां, पोलैंड देशेषु गत्वा वैदिक ज्यामिति विषये पाण्डित्य पूर्णानि शोधपत्राणि अपठत्। एते अनेकाभिः संस्थाभिः समये–समये सादरम् अभिनन्दिताः। डॉ. अरोड़ा महोदयस्य शोधपत्राणि अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकासु प्रकाशितानि अभवन्। अस्मिन्नेव विभागे कार्यरताः **डॉ. विजयेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. महीपाल, डॉ. गुलाटी**, प्रभृतयः नैकेषु विश्वविद्यालयेषु समायोजित शोध संगोष्ठिषु शोध–पत्राणि प्रस्तुवन्ति। **डॉ. रमेशचन्द्र, श्री विवेक गोयल, श्री राकेश कुमार गुप्ता** आदि शिक्षकाः स्वकर्मणि निरताः सन्ति।

रसायन विज्ञान विभागः

विभागेऽस्मिन् अधीयानानां छात्राणां संख्या प्रतिवर्षम् एधमाना वर्तते। **डॉ. आर.डी. कौशिकः** सम्प्रति अध्यक्षपदे प्रतिष्ठितोऽस्ति। विभागे प्रवर्त्तमानः स्नातकोत्तरीयः पाठ्यक्रमः व्यवसायोन्मुखी अर्वाचीनश्चास्ति, एतस्मात् कारणात् ये छात्रा अत्राध्ययननिरताः ते राष्ट्रीयस्तरेषु प्रतिष्ठानेषु प्रतिष्ठिताः भवन्ति।

रसायनशास्त्रे **डॉ. आर.के. पालीवाल, डॉ. ए.के. इन्द्रायण, डॉ. कौशल कुमार, डॉ. आर. डी. कौशिक** तथा च **डॉ. श्रीकृष्ण** महोदयानां निर्देशने स्नातकोत्तर कक्षायाः छात्राः लघुशोध प्रबन्धान् प्रस्तुतवन्तः। **डॉ. इन्द्रायण** महोदयस्य निर्देशने एकेन छात्रेण पीएच.डी. उपाध्यर्थ शोध–प्रबन्धः लिखित। अनेन महानुभावेन आकाशवाण्याः कार्यक्रमस्यैकस्य संयोजनं व्यधायि। **डॉ. कौशल कुमारस्य** एकं शोध पत्रं जापान देशीय शोधपत्रिकायां प्रकाशितमभवत्।

भौतिकी विभागः

सम्प्रति **डॉ. राजेन्द्र कुमारस्य** अध्यक्षत्वे विभागोऽयं प्रगतिपथमारोहति विभागेऽस्मिन् **श्री हरिश्चन्द्रग्रोवर, डॉ० बुद्धप्रकाश शुक्लः, डॉ. राजेन्द्र कुमारश्च** त्रयोऽपि रीडरपदभाजः सन्ति। **डॉ. पी.पी. पाठकः** वरिष्ठ प्रवक्तृ पदे प्रतिष्ठितो वर्तते। अस्मिन् वर्षे पञ्च छात्राणां शोध विषयाः पीएच.डी. उपाध्यर्थ स्वीकृताः। भौतिकी विभागे स्नातकोत्तर कक्षायां "वैदिक भौतिकी" पाठ्यक्रमो विशिष्टरूपेण प्रचरति।

डॉ. बी.पी. शुक्ल महोदयस्य, **डॉ. पी.पी. पाठकस्य** च शोध पत्राणि शोध संगोष्ठीसु स्वीकृतानि।

कम्प्यूटर विभागः

आधुनिक काले संगणक विज्ञानस्य महत्त्वं सर्वैरेव स्वीक्रियते। प्राच्यविद्यासंरक्षणपरायणेऽस्मिन्

विश्वविद्यालये दश वर्षेभ्यः संगणकविज्ञानमपि उच्चस्तरेण अध्याप्यते। एम.सी.ए. नामा सुविख्यातः पाठ्यक्रमोऽस्य विश्वविद्यालयस्य गौरवं प्रख्यापयाति। डॉ. विनोदकुमार शर्मणः आध्यक्ष्ये विभागः नितरामुन्नतिपथमारोहति। विभागेऽस्मिन् **श्री कर्मजीत भाटिया, श्री सुनीलकुमारश्च** द्वावपि स्थायी प्राध्यापक रुपेण कार्य कुरूतः। अन्ये पञ्च अस्थायी प्राध्यापका अपि अहर्निश सेवमानाः तिष्ठन्ति। विभागेन सुदूर शिक्षान्तर्गत स्नातकस्तरीय कम्प्यूटर पाठ्यक्रमः प्रारब्धः यः जनैः भृशं प्रशंसितः।

श्री एम.पी. सिहस्य पी.के. यादवस्य च सहलेखने **डॉ. विनोद शर्मणा** बहूनि शोध–पत्राणि विलिख्य नैकासु विख्यातासु पत्रिकासु संप्रेषितानि शोध संगोष्ठीषु च प्रस्तुतानि। डॉ. शर्मा हैदराबाद नगरे 'कम्प्यूटर सोसायटी ऑफ इण्डिया' संस्थया नवम्बर मासे आयोजिते सम्मेलने तथा च कोयम्बटूर नगरे 'सिस्टम सोसायटी ऑफ इण्डिया' प्रतिष्ठानेन समयोजिते सम्मेलने ससम्मानं शोध–पत्राणि प्रास्तौत्। डॉ० शर्मणः निर्देशने श्री प्रदीप कुमारेण शोध–प्रबन्धः प्रस्तुत। अन्यौ द्वौ छात्रौ शोधकर्मनिरतौ स्तः। अनेन विभागेन समये–समये डॉ. सुधीर ककर, नयी दिल्ली, डॉ. आर.के. गुप्ता रुड़की, डॉ. एस.पी. शर्मा रुड़की, डॉ. आर.सी. जोशी रुड़की, डॉ. आशीष सिन्हा वनस्थली विद्यापीठ, डॉ. एस.पी. सिंह मैमोरियल वि.वि. कनाडा, प्रभृतयः लब्धकीर्त्तयः विद्वांसः व्याख्यानाय' सादरं निमन्त्रिताः। विभागीय पुस्तकालयः श्री सुनीलकुमारस्य निर्देशने दिने–दिने प्रतनुते। अस्मिन् विभागे संगणक विषयस्य विविधानि एक सहस्रमितानि पुस्तकानि अध्येतृणां लाभाय वर्तन्ते। एवं विभागोऽयम् अस्य विश्वविद्यालस्य कीर्ति विस्तारयति।

कम्प्यूटर केन्द्रम्–

विश्वविद्यालयानुदान आयोगसहाय्येन अत्र कम्प्यूटर केन्द्रमपि स्थापितमस्ति। **श्री दिनेशकुमार विश्नोई** महोदयस्य अध्यक्षतायां, **श्री मनोजकुमार, श्री महेन्द्र असवाल, शशिकान्त, श्री राजेन्द्र ऋषि शर्मा, श्री राजीव गुप्ता, श्री पवनीशादीनां** सहाय्येन केन्द्रं प्रगतिपथमारोहति। अस्मिन् केन्द्रे बहूनि आधुनिकोपकरणानि अस्य गौरवं वर्धयन्ति। श्री दिनेश महोदयः शोध–पत्रं जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालयस्य पत्रिकायां प्रकाशनार्थं प्रेषितवान्। श्री महेन्द्र सिंहने गणितविभागे शोध–पत्रं पठितम्। श्री मनोज कुमारेण पुस्तकालयस्य कम्प्यूटरीकरणं क्रियते। आगामिनि सत्रें विश्वविद्यालयीय सदस्यानां कृते कम्प्यूटर प्रशिक्षणस्य योजना निर्मिता।

जीव विज्ञान संकायः

वनस्पति विज्ञान विभागः

डॉ. पुरुषोत्तम कौशिकः अध्यक्षपदमलंकरोति। अस्मिन् विभागे **डॉ. डी. के. माहेश्वरी** प्रोफेसर पदभारं वहन् जीवविज्ञान संकायस्याध्यक्ष पदमप्यलंकरोति। अस्मिन् विभागे **डॉ. गंगाप्रसाद गुप्तः, डॉ. नवनीतश्च** अध्यापन कर्मणि निरतौ स्तः। प्रो. माहेश्वरी महोदयाः जर्मनीस्थ उल्म विश्वविद्यालयेन एकस्मै मासाय विजिटिंग प्रोफेसर रुपेण सादरं निमन्त्रिताः। भारत सर्वकारेण चापि अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक विनिमय कार्यक्रमे जर्मनीदेश प्रति गन्तुम् एते चयनिताः। अस्मिन्नेव सत्रे माहेश्वरी महोदयाः न्यूयार्क एकेडेमी आफ साइंसेज संस्थायाः सदस्यत्वेन नामिताः। नेपालस्य त्रिभुन विश्वविद्यालये भवद्भिः व्याख्यानं प्रदत्तम्। विभागाध्यक्षः डॉ. कोशिक महोदयोऽपि अनेकेषु देशेषु सादरं निमन्त्रयते। डॉ. कौशिकस्य वैज्ञानिक कार्यक्रमः

दूरदर्शने प्रसारितोऽभूत्। कौशिक महोदयः बहुभिः संस्थानैः शोध–संगष्ठिषु सादरं निमन्त्रितः भारतस्य अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमेषु च एतेषां वैदुष्यपूर्णानि व्याख्यानानि आयोज्यन्ते। विभागस्थाः सर्वेऽपि उपाध्याया उच्चशोधकर्मणिनिरताः सन्ति। डॉ. कौशिक तथा च डॉ. माहेश्वरी उभावपि विभिन्नेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं मानितौ।

जन्तु विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान विभागश्च

गौरवास्पदमिदं यत् विश्वविद्यालयानुदान आयोगेन विभागेऽस्मिन् पर्यावरण विज्ञान तथा च कम्प्यूटर एप्लीकेशन पाठ्यक्रम संचालनाय चत्वारिंशल्लक्षपरिमितम् अनुदानं स्वीकृतम्। इमं पाठ्यक्रममुन्नेतुं **प्रो. बी.डी. जोशी, डॉ. ए.के. चोपड़ा** महोदयौ अहर्निशं प्रयतमानौ दृश्येते। पर्यावरण विज्ञानस्थ छात्राणां लाभाय अस्मिन् वर्षे अनेकेभ्यः विश्वविद्यालयेभ्यः विषय पारंगताः विद्वाँसः विभागेन सादरं निमन्त्रिताः। अस्य विशिष्टस्य पाठ्यक्रमस्य संचालनाय विश्वविद्यालयेन **डॉ. दिनेश भट्टः** रीडर पदे, **डॉ. पी.सी. जोशी** च प्राध्यापक पदे नियुक्तौ।

अक्टूबर मासे 'इन्डियन एकेडमी ऑफ इन्वायरमेंटल साइंसेस' संस्थायाः सहयोगेन विभागोऽयं "पर्यावरण परिवर्त्तनस्य जैविक विविधतायां प्रभावः" विषये राष्ट्रीयसम्मेलनम् आयोजितवान्। अस्यां संगोष्ठ्यां पंचविंशति वैज्ञानिकाः संप्राप्ताः। जम्मूविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः प्रो. मल्होत्रा विशिष्टा तिथिपदं समल रोत्। अनेन विभागेन नव वर्षेभ्यः "Himalayan Journal of Environment & Zoology" नाम्नी पत्रिका नियमेन प्रकाश्यते याखलुशिक्षा जगति भृशं प्रशंस्यते।

अस्य विभागस्य प्रोफेसर पदे प्रतिष्ठितस्य डॉ. बी.डी. जोशी महोदयस्य निर्देशने सन्त्यनेके छात्राः शोधरताः। डॉ. जोशी विविधेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रितः। असौ बहवीनां संस्थानां मानद सदस्यरुपेणापि कार्य करोति।

विभागाध्यक्षस्य डॉ. ए.के. चोपड़ा महोदयस्य शोधपत्राणि विशिष्ट पत्रिकासु, शोध संगोष्ठीसु च स्वीकृतानि। एषां निर्देशनेऽपि शोधकार्य प्रचलति। रीडर पदभाजः डॉ. टी.आर. सेठ महोदयाः विभागीयं कार्य साधु सम्पादयन्ति। डॉ. दिनेश भट्टेन शोधपत्राणि शोध गोष्ठीषु प्रस्तुतानि। अस्य 'Sociobiology of Some Avain Species' शोध परियोजना वि.वि अनुदान आयोगेन स्वीकृता। प्राध्यापक पदे नियुक्तः डॉ. डी.आर. खन्ना राष्ट्रीय सेवा योजनायाः कार्य साधु सम्पादयति।

पुस्तकालयः–

अस्माकम् पुस्तकालयो देशस्य शोधछात्रेभ्यस्तीर्थभूतो वर्त्तते। दुर्लभ प्राच्यविद्याग्रन्थरत्नैः सुभूषितोऽयं पुस्तकागारः देशस्य श्रेष्ठो न्यासः। अत्र लक्षाधिकग्रन्थरत्नानि राजन्ते।

विश्वविद्यालयस्य श्रद्धानन्दप्रकाशन केन्द्रेण प्रतिवर्ष ग्रन्थाः प्रकाश्यन्ते। अस्मिन् वर्षे आचार्यरामदेवरचितग्रन्थः 'भारतवर्ष का इतिहास प्रकाशितः। अस्मिन् आवैदिककालात् बौद्धकालान्तिकं भारतीयैतिहांस सर्वथा नवीनदृष्ट्या आलेखितम् पुस्तकालये प्रतियोगिपरीक्षार्थिभ्य पृथक् पुस्तकसंग्रहो विद्यते। अस्मिन् वर्षे पुस्तकालयावलोकनार्थ लोकसभाध्यक्षः शिवराजपाटिलः पूर्वमुख्यमन्त्रि श्री मदनलालखुरानाप्रमुखाः पुरुषाः समायाताः।

शारीरिक शिक्षा विभागः–

छात्राणां शारीरिक, मानसिक वृद्ध यर्थ विश्वविद्यालये शारीरिक शिक्षा विभागः, **डॉ. रामकुमार सिंह डागर** महोदयस्य निर्देशने प्रशंसनीयं कार्य करोति। सत्रेऽस्मिन् विभागः उत्तर क्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालयीन वालीबॉल प्रतियोगतायाः संयोजनमकरोत्। अस्याम् प्रतियोगितायां षड्विंशति

विश्वविद्यालयानां दलानि भागं गृहीतवन्तः। टैक्सप्लास इण्डिया प्रा.लि. प्रतिष्ठानस्य कार्यकारी निदेशकाः श्रीमन्तः जे.सी. जैन महोदयाः ध्वजोत्तोलनमकार्षुः। बी.एच.ई.एल. प्रतिष्ठानस्य कार्यकारी निदेशकाः मान्याः महेन्द्रकुमार मित्तल महोदयाः विजेतृभ्यः पुरस्कारमददुः।

अस्मिन्नेव वर्षे एका अन्या 'अन्तर्विश्वविद्यालय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता' पुरुषाणां कृते समायोजिता। अस्यां सप्तविंशति विश्वविद्यालयानां छात्राः स्वं बलं प्रदर्शयामासुः। जनपदस्य आरक्षी अधीक्षकाः श्रीमन्तोऽशोककुमार महोदयाः उद्घाटनमकुर्वनम् मान्याः कुलाधिपतयोऽपि प्रतियोगितायामस्यां समागत्य छात्रोत्साहवर्धनकार्षुः।

शारीरिक शिक्षा विभागस्य निदेर्शकः डॉ. डागर महोदयाऽखिल भारतीय विश्वविद्यालयसंघेन अखिल भारतीयान्तर विश्वविद्यालय भारोत्तोलन तथा च शरीर सौष्ठव प्रतियोगितायाः पर्यवेक्षक पदेन सम्मानितः। गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालयस्य छात्राः विभिन्नासु प्रतियोगितासु भागं गृहीत्वा विजयं लभन्ते। डॉ. डागर महोदयः आन्ध्रप्रदेशे वारंगलस्य ककाटिया विश्वविद्यालयेऽखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय भारोत्तोलन, तथा च शरीर सौष्ठव प्रतियोगितायां विशिष्टातिथिरुपेण सादरं निमन्त्रितः सम्मानितश्च।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालयः

विदन्त्येव भवन्तो भवन्तः श्रीमन्तः यद् युगप्रवर्त्ततः महर्षि दयानन्दः अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दश्च न केवलं भारतवर्षे अपितु निखिलेऽपि विश्वे वैदिकशिक्षाप्रचाराय कृतसंकल्पा आसन्। नारी शिक्षा समुन्नत्यै एते महात्मानः यानि प्रयत्नान्यकुर्वन् तानि सदैव अमराणि स्थास्यन्ति। स्वामी श्रद्धानन्दस्य स्त्री-शिक्षा विषयकं संकल्पं पूरयितुं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयेन महिला महाविद्यालयस्य पृथक् स्थापना कृता। कुलाधिपति महोदयानां करकमलैरस्मिन्नेव वर्षे नूतनस्य भवनस्य शिलान्यासोऽभूत्। तत्र द्रुतगत्या भवननिर्माण कार्य प्रचलति। मन्ये आगामिनि वर्षे बालिकानाम् अध्ययनाध्यापन कार्य तत्रैव प्रचलिष्यति। अस्मिन् महाविद्यालये प्राच्यविद्या, मानविकी, विज्ञान संकायेषु संस्कृत, दर्शन, इतिहास, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, सूक्ष्मजीव विज्ञान, गणित, रसायन शास्त्र, पर्यावरण विज्ञान विषयाणां स्नातकोत्तरीयमध्यापनकार्य प्रचलति। अस्य महाविद्यालयस्य प्रभारीपदं डा. सूनृता विद्यालंकृता महोदया वहति। अस्या निर्देशने छात्राणां संख्या प्रतिवर्षमेधमाना अस्ति।

फरवरी मासे महाविद्यालये सांस्कृतिक-समारोहः श्रीमतां कुलाधिपति महोदयानामध्यक्षतायामभूत दिल्ली विधानसभायाः सदस्याः मान्याः राजेन्द्र गुप्ता महोदयाः मुख्यातिथिपदमलंकृतवन्तः। स्नातकोत्तर कक्षासु अध्ययनरताभिः। बालिकाभिः संस्कृत, हिन्दी, आंग्लभाषासु प्रस्तुतानि विविधानि रमणीयानि सांस्कृतिक कार्यक्रमाणि समुपस्थितैः दर्शकैः भृशं प्रशंसितानि।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालयः देहरादूनम्-

मान्याः अतिथयः। यथा हरिद्वार नगरे विश्वविद्यालयेऽस्मिन् विविधाः विषयाः पाठ्यन्ते तथैव देहरादून नगरे विश्वविद्यालयस्य द्वितीये परिसरे बालिकानाम् गुरुकुल महाविद्यालये स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षासु प्राचीनार्वाचीन विषयाणामध्ययनं प्रचलति। कम्प्यूटर विषये एम.सी.ए. पाठ्यक्रमोऽपि प्रवर्तने अस्य देशस्य बालिकाः ज्ञानदीक्षिताः भूत्वा धरणिमिमां ज्ञानालोकेनालोकितां कुर्यु रित्येव मनसि निधाय स्वनामधन्येनाचार्य रामदेवेन वृक्षोऽयं देहरादून नगरे समारोपितः। मान्या दमयन्ती महोदया सुदीर्धकालं संस्थायाः संचालनमकरोत्। सम्प्रति श्रीमती भगवती गुप्ता महाविद्यालयस्य प्राचार्यपदमनावहति। अस्मिन् पावनपरिसरे पुत्रिभिः प्रतिदिनं सायं प्रातः ब्रह्मयज्ञः,

देवयज्ञश्च क्रीयते। वर्षेऽस्मिन् छात्रावास भवनं निर्मितम्। यज्ञशालायाः निर्माणमपि सम्पन्नम।

गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालये न केवलमलंकार स्नातका अपितु विज्ञानस्नातका अपि वैदिक धर्म–दर्शन दीक्षिता भवेयुरिति विमृश्य विज्ञान कक्षासु धर्म–दर्शन संस्कृतिविषयः पाठ्यक्रमेऽनिवार्यत्वेन निर्धारितो वर्तते। कस्यापि संस्थानस्य विस्ताराय भवनानां महत्यावश्यकता भवति। अस्मिन्नेव वर्षे मानविकी संकायस्याथ च सूक्ष्मविज्ञान भवनस्य निर्मितिर्जाता। अत्रभवननिर्माण कार्यमविरतं प्रचलत्येव।

हे आर्यबान्धवाः। यथैव विश्वविद्यालये तथैव गुरुकुल विभागे वेद, दर्शन, साहित्यादि विषयैः सहाधुनिक कम्प्यूटर विज्ञानमप्यध्याप्यते। ब्रह्मचारिणां स्वास्थ्यलाभाय निःशुल्कं दुग्धं प्रदीयते। समये–समये आर्य समाजोत्सवाः सोत्साहं समायोज्यन्ते। यज्ञधूमेन मन्त्राणां सुमधुरेण ध्वनिना च वातावरणं सर्वदा सात्विकं भवति। अस्मिन् वर्षे सुविशाले क्षेत्रे वृक्षारोपणं कृत्वैकमुद्यानमपि निर्मितम्।

दिसम्बर मासस्य त्रिविंशतितमे दिवसेऽमर हुत्मात्मनां श्रद्धानन्दस्वामिनां स्मृतौ सुविशालः कार्यक्रमः समायोजितः। अनेके मूर्धाभिषिक्त आर्यनेतारोऽस्मिन् श्रद्धांजलिसमारोहे समायाताः। ब्रह्मचारिणां, शिक्षकाणामार्य नेतृणां, नर–नारीणां च सुविशालां शोभायात्रां दर्श–दर्श हरिद्वारस्थाः जना आनन्दपयोनिधौ निमग्नाः।

प्रियस्नातकाः! येषाँ शाश्वतजीवनमूल्यानां रक्षणाय, राष्ट्रियैकतायाः अखण्डतायाः, चरित्रस्य धार्मिकसद्भावस्य च परिरक्षणाय गुरुकुलीयशिक्षापद्धतिरुद्भाविता सञ्जीविता च, तानि जीवनमूल्यानि भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं प्रदास्यन्ति। यद्यपि नात्र संशयो विद्यते यद् वर्त्तमाने काले जटिलाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति। पर भवतामात्मविश्वासो गुरुजनानामाशीर्वादेन सह निश्चितं जीवनमुन्नेष्यति। युष्माकं जीवनं ससुखं कर्तुं परेशं महेशं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे ऽधिकारिणां शिक्षकानां कर्मचारिणां ब्रह्मचारिणामभिभावकानाञ्च सहयोग एव प्रशस्यते। कुलाधिपतिश्रीसूर्यदेवमहोदयानां, श्री महावीरसिंह परिद्रष्टृमहोदयानां निर्देशनेऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे गुरुकुल परम्परानुरागिणः–

नूनमद्यास्माकं सौभाग्योदयो जातो यदस्माकं मध्ये चेकगणराजस्य राजदूतपदमलंकुर्वाणाः, श्रीमन्तः ओदोलेन स्मेकल महोदयाः दीक्षान्तभाषणाय शोभन्ते। एषां सम्पूर्णजीवनं मानवीय मूल्याणां रक्षणाय समर्पितं विद्यते। भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीयशिक्षां प्रति निजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवताम् अपरिमितेन साहाय्येन विश्वविद्यालयस्य परिवृद्धिः प्रतिष्ठा च प्रवत्स्येते।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानाँ धन्यवादं व्याहरन् सकलजगज्जेगीयमानं विश्वनाथमभ्यर्थये–

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

डॉ. धर्मपालः

१३ अप्रैल १९९६ — कुलपतिः

दीक्षान्त भाषण

द्वारा

महामहिम डॉ. ओदोलेन स्मेकल

भारत में चेक गणराज्य के राजदूत

(दिनांक १३ अप्रैल १६६६ : स्थान–हरिद्वार)

श्री कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा महोदय, देवियों, सज्जनों और अन्तेवासियों,

अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस गौरवमयी तपस्थली में आकर मैं स्वयं को धन्य समझता हूँ। गुरुकुल कांगडी के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्तन कर स्वामी जी ने महात्मा गांधी के स्वाधीनता आन्दोलन का वैचारिक पक्ष मजबूत किया था। गुरूकुल के प्राध्यापकों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों ने स्वाधीनता, चरित्र निर्माण तथा संस्कृति की रक्षा के लिए जितना उद्योग किया, उतना शायद किसी अन्य विश्वविद्यालय ने ब्रिटिश राज के दौरान नहीं किया। ऐसी ऐतिहासिक संस्था के दीक्षान्त के लिए आपने मुझे आमन्त्रित किया, मैं आपका आभारी हूँ।

जैसा कि आप जानते हैं, मैं जिस देश का हूँ, वह भारत से दूर, अति दूर है। वह देश, चेक धरती, यूरोप के मध्य हृदय में स्थित है। फिर भी यहां आकर दीक्षान्त भाषण मैं हिन्दी में दे रहा हूँ। वैसे तो मेरी मातृभाषा चेक भाषा है किन्तु हिन्दी को अपनी दूसरी मातृभाषा मानता हूँ।

भारत मुझको बालकपन से आकर्षित करता रहा है क्योंकि यह अनेक संस्कृतियों का विशाल देश, उपमहाद्वीप है। भारत न केवल साहित्यिक उत्कर्ष और प्रसिद्ध कलाकृतियों के लिए विश्वविख्यात देश है अपितु इस देश की सभ्यता ने अनेक ध्यानयोग्य दार्शनिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक धारणाओं, मूल्यों से संसार भर की संस्कृतियों को भरपूर समृद्ध किया है।

हिन्दी भाषा को मैंने इसलिए चुन लिया तथा सीख लिया ताकि भारत की संस्कृति और साहित्यिक परम्पराओं से एक भारतीय भाषा के माध्यम से, अंग्रेजी के माध्यम से नहीं, परिचित हो जाऊँ। मैं हिन्दी को भारत की प्रतिनिधि वास्तविक राष्ट्रभाषा समझता हूँ।

चेक धरती के एक प्रकाण्ड विद्वान, शिक्षक और प्रतिभाशाली लेखक ने कहा है कि 'भाषा की जानकारी विदेशी संस्कृति के द्वार खोल देती है। अन्य देश की आत्मिक तथा बौद्धिक निधि से परिचय प्राप्त करने के लिए भाषा सदा प्रमुख भूमिका निभाती है, क्योंकि भाषा अपने देश और देशवासियों की अस्मिता का दर्पण है। वह न केवल देश की बोलती हुई आत्मा है परन्तु भाषा में देश के सारे गुणागुण तथा रागानुराग निहित, सम्मिलित हैं।'

उस चेक विद्वान का नाम है यान आमोस कोमेनियुस, जो मध्य युग से आज तक

"मानवजाति के आचार्य (गुरु)" कहलाते आए हैं।

यान आमोस कोमेनियुस आधुनिक शैक्षणिक सिद्धांतों के जनक माने जाते हैं। कोमेनियुस ने कहा कि सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से होनी चाहिए और कि शिक्षणालय मानव जाति की कर्मशाला है। समाज सुधारक के रूप में कोमेनियुस ने अपील की कि हिंसा और युद्ध का परित्याग किया जाए और कि विशुद्ध बन्धुत्व का सारा जीवन मानव गरिमा, सामाजिक न्याय, सहिष्णुता तथा प्रेम पर आधारित और निमित्त किया जाए।

यान आमोस कोमेनियुस की भाँति आधुनिक चेक गणराज्य के राष्ट्रपति वात्सलाव हावेल भी सच्चाई में जीवन बिताने और सत्य को अपना जीवन समर्पित करने का संदेश देते हैं।

आज शिक्षा किताबी ज्ञान के अर्जन का माध्यम बन गई है। आधुनिक ज्ञान, विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान के लिए देश तथा देश से बाहर भारतीय छात्र अत्यधिक परिश्रम कर रहे हैं पर उनका सारा प्रयत्न प्रगति की होड़ में अग्रणी बनने के लिए हो रहा है। भौतिक सुख साधनों की स्पृहा इतनी बढ़ गई है कि वे देश की मिट्टी से सम्बन्ध तोड़ कर ऊँचे पद, प्रतिष्ठा तथा धन कमाने के लिए विदेशों में पलायन कर रहे हैं। देश को जो लाभ उनसे होना चाहिए था, वह इस प्रवृत्ति के चलते नहीं हो पा रहा है। मेरी इच्छा है कि हम विदेशों में जाएं, ऊँची तकनीक प्राप्त करें ताकि लौट कर इस देश की जनता की सेवा करें जिससे देश की निरक्षरता, गरीबी, बेरोजगारी तथा जड़ता समाप्त हो। देश सर्वांग समृद्ध बने, वह पहले की तरह ज्ञान का उजाला संसार को दे तथा मानवीय मूल्यों की व्याख्या तथा स्थापना में अपना भरपूर योगदान करे। कभी इस देश के विचारक पृथ्वी के प्राणियों को अपने चरित्र की कसौटी सामने रखकर अनुकरण की प्रेरणा देते थे। 'स्वंस्वंचरित्रं शिक्षरेन्' का उद्घोष इस देश के अलावा कहीं और नहीं हुआ। ऋषिमुनियों की यह उज्जवल परम्परा आप विद्यार्थियों को आगे बढ़ानी है।

मुझे यह देखकर दुःख होता है कि हमारे जीवन में स्वाध्याय, स्वावलम्बन्, श्रम, परदुःखकातरता तथा समवेत होकर कार्य करने की प्रवृत्ति का ह्रास हुआ है। व्यक्ति केन्द्रित हमारे विकास की यात्रा अधूरी और असामाजिक है। शिक्षा तो सामाजिक विकास और उन्नति का साधन है। वह व्यक्ति को समाज के साथ स्व को पर के साथ जोड़ती है। विश्व जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण के विकसित हुए बिना आज हमारा रह सकना सम्भव नहीं। भौतिक तथा आध्यात्मिक समन्वय के आधार पर ही शिक्षा का भवन टिकना चाहिए था पर आज आर्थिक संसाधनों के दोहन के नाम पर विश्वविद्यालयों में धन कमाने की होड़ लगने लगी हैं व्यावहारिक पाठ्यक्रमों की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने इस होड़ को अंधा बना दिया हैं। मानव की बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के विकास और जागरण के स्थान पर अधिकाधिक जीवनोपयोगी संसाधनों को जुटाने की मानसिकता बढ़ने लगी है। शिक्षा के विश्व बन्धुत्ववादी दृष्टिकोण में यह एक बाधा हैं अतः मैं अपेक्षा करता हूँ कि शिक्षा में आत्मिक शक्ति के माधुर्य को विकसित करने का लक्ष्य होना चाहिए। शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आत्मिक विकास के अभाव में सांस्कृतिक व्यक्तित्व का निर्माण संभव नहीं है। सामाजिक न्याय, सुरक्षा तथा मानव जाति के उत्थान का संकल्प उसका आदर्श रहना चाहिए। अर्थकरी विद्याओं के साथ जीवन में संयम, सादगी और तप के लिए भी अभ्यास किया जाना चाहिए। छात्रावास में अभ्यस्त तप द्वारा ही मनुष्य सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करते हुए सुख दुःख, लाभ–हानि, जय पराजय, मान अपमान तथा

भूख प्यास आदि द्वन्द्वों को सहने की सामर्थ्य रख सकेगा। आचार्य और विद्यार्थी दोनों को ही समस्त मानवीय गुणों के उपार्जन के लिए संलग्न रहना चाहिए।

विश्वबन्धुत्व की दिशा में गुरुकुल कांगडी का विशेष योगदान रहा है। गुरुकुल के अनेक स्नातकों ने विदेशों में जाकर शिक्षा, धर्म, राजनीतिक तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशिष्ट मापदण्ड स्थापित किए हैं। पं. अमीचन्द्र विद्यालंकार ने फीजी में जाकर अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। वे वहां की संसद के सदस्य भी बने। पं. सत्यव्रत सिद्धातालंकार, आचार्य रामदेव, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार, पं. मदन मोहन, श्री विद्यासागर विद्यालंकार, पं. सत्यपाल सिद्धांतालंकार, पं. ईश्वर दत्त विद्यालंकार, श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार, श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार, श्री देवनाथ पं. ईश्वर दत्त विद्यालंकार, श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार, श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार, श्री देवनाथ विद्यालंकार, श्री रणधीर वेदालंकार, श्री अमृतपाल वेदालंकार, पं. श्याम सुन्दर स्नातक ने बर्मा, अफ्रीका, कीनिया, युगाण्डा, टांगानीका, सिंगापुर, मलाया, यूरोप में जाकर वैदिक सिद्धांतों और हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार किया। मोजाम्बीक में पं. रविशंकर सिद्धांतालंकार, पं. सुमन्तराय विद्यालंकार, पं. मतिमान विद्यालंकार ने और रोडेशिया में पं. हरिदेव वेदालंकार ने अध्यापन कार्य किया। दक्षिण अफ्रीका में श्री सुधीर कुमार विद्यालंकार, श्री अरुण कुमार विद्यालंकार, श्री हरिशंकर आयुर्वेदालंकार, पं. नरदेव वेदालंकार ने सराहनीय कार्य किया। इस समय भी अनेक स्नातक अमेरिका और यूरोप के देशों में गुरुकुल का नाम उज्ज्वल कर रहे हैं।

प्रिय स्नातकों,

आप चाहे विज्ञान के छात्र रहे हों, चाहे मानविकी के, अपने ज्ञान विज्ञान की अधुनातन शाखाओं में दक्षता प्राप्त की हो, चाहे आप प्राचीन विद्याओं का अभ्यास करते रहे हो। मेरा मानना है कि आपको भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का गहरा ज्ञान होना चाहिए। विश्व की सभ्यताओं का इतिहास जाने बिना आप अपने गौरवपूर्ण इतिहास की महत्ता नहीं समझ सकते। आज की शिक्षा में एक बड़ी कमी है, राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभाव। पुरातन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा स्वाधीनता आन्दोलन की बुनियादी धारणा से अपरिचित होने के कारण ही हम सर्वधर्मसमभाव, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा अनेकता में एकता के सिद्धांतों को नहीं समझ पा रहे हैं। देश के सामने धर्म, जाति, छुआछूत, गरीबी तथा अंधविश्वासों की चुनौतियां विकराल होकर खड़ी हैं। अतः आज इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लें कि यह देश किसी एक धर्म, विचार उपासना प्रणाली अथवा जीवन शैली के लिए नहीं बना। यहाँ बहुत भेद है फिर उन सब में जो अभेद है उसी का दर्शन शिक्षा का लक्ष्य है। हम समाज के व्यापक हित को सामने रखें और अपने लक्ष्य को सुदृढ़ बना ले तो हमारा सारा क्रियाकलाप ठीक हो जाएगा। शुद्ध लक्ष्य (Pure End) के लिये अशुद्ध साधन (Impurement) से काम नहीं लिया जा सकता। महात्मा गांधी ने बार–बार इसी बात पर जोर दिया है कि शुद्ध लक्ष्य के लिए शुद्ध साधन से ही काम लेना होगा।

मैं गुरुकुल (Residential school) का प्रशंसक रहा हूँ। स्वामी श्रद्धानन्द ने गांधी जी से पहले छुआछूत का कलंक मिटाने के लिए उद्योग किया था। कांग्रेस में इस आशय का प्रस्ताव भी स्वामी जी के कारण ही पारित हुआ। स्वामी जी सिद्धांत और व्यवहार में एक थे। उन्होंने पिछड़े, निर्धन, निरक्षर तथा दलित लोगों के जीवन के उत्थान के लिए कांग्रेस से भी अधिक

कुलाधिपति श्री सूर्यदेव

कार्य किया। मैं आपका आह्वान करता हूँ, आप लोग आगे आएं तथा छोटे–बड़े, धनी–निर्धन, पवित्र अपवित्र एवं सवर्ण असवर्ण के कृत्रिम तथा अमानवीय भेदों को तोड़कर एक स्वस्थ भारतीय समाज की संरचना का अभियान चलाएं। शरीर भी तभी चलता है जब उसका हर अंग दूसरे अंग का सहयोग करे। सामाजिक शरीर के सभी अंग यदि एक दूसरे के पूरक होकर सहयोग करेंगे तो देश सुरक्षित रहेगा, अन्यथा वह बालू की भीत की तरह बिखर जाएगा। मानव मात्र की एकता का सिद्धांत वैदिक है जो विचारक इस भारतीय आदर्श को समाज के लिए कल्याणकारी समझते हों उनका कर्तव्य है कि इसको लोकनायकों के सामने रखें तथा सार्वजनिक चरित्र द्वारा इस आदर्श को ढालने का उद्योग करें।

आचार्यगण,

ज्ञान और स्वाध्याय के साथ–साथ स्वावलम्बी होना भी बहुत जरूरी है। बिना स्वावलम्बन के स्वदेशी की बात ठीक से हृदयंगम नहीं कर सकते। इस देश में आर्थिक संसाधनों की कमी है। हम पूर्ण विकसित, आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ देशों की तरह, शोध और उच्चतर अध्ययन के क्षेत्र में उच्च उपलब्धियां केवल स्वावलम्बन, श्रम और तप द्वारा ही पा सकते हैं। यहाँ छात्रों में प्रतिभा, रचनात्मकता तथा मौलिकता की अपार शक्ति है, पर संसाधनों के अभाव में उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। हमारे अनुभवों का एक नया संसार उन्हीं के सत्यप्रयत्नों से उद्घाटित होना है। मेरा कहना है कि यहाँ भी हमें अपना लक्ष्य शुद्ध रखना चाहिए। धर्म तथा विज्ञान मिलजुल कर ही विश्व की रक्षा कर सकते हैं। रंग, सम्प्रदाय, वर्ण तथा भाषा भेद, शुद्ध चेतना पर कुहासे की पर्त चढ़ाते हैं, इस अंधेरे में हमें अपना लक्ष्य नहीं दिखाई देता। आज जब हम सीमित आर्थिक साधनों के रहते राष्ट्रीय उन्नति और सामाजिक विकास की बहुविध योजनाएं चला रहे हैं तब आपके सक्रिय सहयोग और निष्काम त्याग की महत्ता बढ़ जाती है। आपकी खोजों से शिवेतर क्षति अर्थात् अकल्याण की समाप्ति और जन कल्याण की उन्नति का लक्ष्य पूरा होना चाहिए। जब पूरे विश्व में शक्ति की अनियंत्रित होड़ बढ़ रही हो तथा छोटे विकासोन्मुख तथा अर्धविकसित देश अपनी आन्तरिक बाह्य समस्याओं में उलझे हों तब आपका दायित्व और भी बढ़ जाता है। यदि सत्य शिक्षा का प्रसार हो तो विश्व इस पागलपन और तनाव से मुक्त हो जाए। आज की शिक्षा और विशेषकर वैज्ञानिक शिक्षा का यह अत्यन्त दुर्बल पक्ष है।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

यदि तुम मानवमात्र को उसके सही परिप्रेक्ष्य में देखना चाहते हो, यदि समाज से शोषक और शोषित का भेद मिटाना चाहते हो, यदि देश को एकता के सूत्र में पिरोए रखना चाहते हो, यदि पृथ्वी पर सुख शान्ति, सर्वोदय और सामूहिक समृद्धि की कामना करते हो, यदि मनुष्य–मनुष्य तथा वर्ग–वर्ग में अनेकता हटाकर एकता लाना चाहते हो तथा पृथ्वी को स्वर्ग बनाना चाहते हो तो ऐसी व्यवस्था का निर्माण करो, जहाँ अभेद दर्शन का आधार हो। धर्म कर्तव्य के पालन में प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि उदार तथा तर्कसंगत हो। उसमें किसी ऐसी उपासना शैली तथा शिक्षा के लिए स्थान न हो जो मनुष्य को मनुष्य से लड़ाए, उनमें अलगाव पैदा करे तथा वर्ग संघर्ष के लिए प्रेरणा दे। दृढ़ तथा पवित्र चरित्र, स्वावलम्बन और जनकल्याण ही उसका लक्ष्य हो।

इन शब्दों के साथ मैं आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामना करता हूँ तथा आशा

करता हूँ कि स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने जो विचार दर्शन तथा जीवनशैली प्रदान की, उसका आप अनुपालन करें। भारतीय ऋषि–मुनियों की चिन्तन शैली को जीवन में उतारें तथा इस देश, समाज और अपने शिक्षणालय की महान परम्पराओं की रक्षा करें। आपको ऐसे संसार का निर्माण करना है जहाँ सब मिलकर कार्य करने तथा जीवन यापन करने में हर्ष का अनुभव करें ताकि मनुष्य का मनुष्य द्वारा किए जाने वाला शोषण और अन्याय समाप्त हो जाए। आपने यह आशीर्वचन सुना होगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।

इस भावना को मन, वाणी तथा शरीर से सार्थक करें। आपको हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो, यही मेरी प्रार्थना है।

वार्षिक विवरण (वेद–विभाग)

(१) स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल कांगडी की स्थापना के साथ ही वैदिक ग्रन्थों के पठन–पाठन की व्यवस्था की थी। अर्वाचीन और प्राचीन का संगम यहाँ दृष्टिगोचर होता है।

(२) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी ३१ जनवरी ९६ को दीर्घकालिक सेवा के बाद निवृत्त हो गये। वे वेद–विभाग में प्रोफेसर पद पर और आचार्य एवम् उपकुलपति पद पर अधिष्ठित थे।

(३) विशिष्ट व्याख्यान–

विभाग में दो विशिष्ट व्याख्यान हुए। डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय का "ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित धर्म" विषय पर और डॉ. अभेदानन्द भट्टाचार्य, प्राचार्य भगवानदास संस्कृत महाविधलाय, हरिद्वार का "उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म का स्वरूप" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुए।

(४) वैदिक संग्रहालय एवं प्रयोगशाला–

वेद विभाग में सभी छात्रों को संस्कार तथा यज्ञ सिखाने के लिए एक प्रयोगशाला की स्थापना की गयी है। षोडश संस्कार और पौर्णमास यज्ञ सिखाये जाते हैं। इसके लिए अंक निर्धारित कर दिये गये हैं। चारों वेद एक जिल्द में प्रयोगशाला में रखे गये हैं। वीडियो कैसेट द्वारा भी छात्रों को सिखाया जाता है। सभी छात्रों से संस्कारों की कॉपी बनवाई जाती है।

(५) बी.ए. और बी.एससी. में धर्म, दर्शन–

संस्कृति–बी.ए. और बी.एससी. के सभी छात्रों को वैदिक साहित्य का अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया हैं इसमें चारों वेदौं के चुने हुए मन्त्र, गीता, सत्यार्थप्रकाश उपनिषद्, दर्शन, वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय, सभी मत–मतान्तरों का सामान्य परिचय और आर्य समाज का परिचय आदि विषयों का समावेश किया गया है।

डॉ० दिनेश चन्द्र धर्ममार्तण्ड

(प्रवक्ता–वेद विभाग)

एम.ए., पी–एच.डी.

शोध–निर्देशन–

चार शोध–छात्र शोध कार्य कर रहे हैं।

कान्फ्रेन्स/सेमिनार– (१) 'अखिल भारतीय दर्शन परिषद्' के गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में १३–१५ अक्टूबर ९५ को आयोजित सम्मेलन/कान्फ्रेन्स में "निरुक्त की आत्मसम्बन्धी संकल्पना" विषय पर शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

(२) मार्च '९६ में संस्कृत, पालि, प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में 'वेदों की वेदार्थ प्रक्रियाएं' विषय पर आयोजित सेमिनार में 'निरुक्त के आलोक में वेदार्थ प्रक्रियाओं का परिचय' विषय पर शोध–पत्र वाचन किया।

(३) प्रौढ़ शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षण विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के समय–समय पर आयोजित कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया।

प्रकाशन–

सात शोध–पत्र/लेख प्रकाशित/प्रकाशनार्थ स्वीकृत।

"प्राचीन एवं अर्वाचीन वै.सा में भक्तितत्त्व" नामक प्रबन्ध विश्वविद्यालय के अनुदान से प्रकाशनार्थ प्रेस में प्रेषित।

"डॉ० रूपकिशोर शास्त्री"

"प्राध्यापक, वेद विभाग,"

"प्रधान गवेषक–वेद रिसर्च प्रोजेक्ट"

१. एम.ए. (वेद) को सफल अध्यापन तथा १०० प्रतिशत परीक्षा परिणाम।

२. बी.ए., बी.एससी. की कक्षाओं एवं समस्त विद्यार्थियों को सभ्य, चरित्रवान्, अनुशासनप्रिय एवं धर्म व कर्तव्यनिष्ठ बनाने हेतु "धर्म दर्शन संस्कृति" इस अनिवार्य विषय का सफलतम सञ्चालन एवं अध्यापन।

३. "जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण–एक अध्ययन" इस गम्भीर व विद्वतापूर्ण विषय पर शोधार्थी को शोध निर्देशन व उसे पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त।

४. सम्प्रति वैदिक साहित्य पर देश–विदेश के ५ शोधार्थियों को शोध निर्देशन जारी।

५. अब तक वैदिक साहित्य एवं अन्यान्य विषयों पर अंग्रेजी व हिन्दी में १० पुस्तकों का लेखन तथा उनमें से ६ प्रकाशित।

६. दिल्ली से प्रकाशित होने वाली एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित पत्रिका 'वेदोद्धारिणी' त्रैमासिक का सफल उप सम्पादन तथा हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में लेखों का प्रकाशन।

७. यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत तथा अनुदानित बृहद् शोध योजना के अन्तर्गत "वैदिक वाङ्मय–निर्वचन कोष" इस बृहद् ग्रन्थ पर चल रहा कार्य अन्तिम चरण में। अपना समस्त कार्य कम्प्यूटर पर करने में प्रवीणता।

८. वैदिक विषयों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों, सार्वजनिक स्थानों संगोष्ठियों में तथा आकाशवाणी पर व्याख्यान व वार्ताएं।

शिक्षासत्र 1995–96 में
संस्कृत विभाग का प्रगति विवरण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग संस्कृत वाङ्मय में निहित ज्ञान विज्ञान के प्रचार–प्रसार के महान लक्ष्य को प्राप्त करने में सदा अग्रणी रहा है।

इस शिक्षा सत्र में भारत के विभिन्न प्रान्तों तथा नेपाल के छात्र स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्यनरत हैं तथा अनेक छात्र–छात्राएं संस्कृत साहित्य के विभिन्न विषयों में शोधकार्यों में संलग्न हैं।

इस वर्ष संस्कृत विभाग में डॉ. रामकृष्ण शर्मा, पूर्व संस्कृत शिक्षा सलाहाकार, भारत सरकार का एक विशिष्ट व्याख्यान हुआ। दिनांक १४/२/९६ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य जगत् के विशिष्ट विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोतीय, दिल्ली का महर्षि के जीवनवृत्त पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुआ।

दिनांक ८/३/९६ को प्रो. मानसिंह जी डीन प्राच्य विद्या संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा डॉ. करुणेश शुक्ल संस्कृत विभागाध्यक्ष के तत्वावधान में विभाग की शोध समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

इस सत्र में विभाग के स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों ने मेरठ वि.वि. कुरुक्षेत्र वि.वि. द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार द्वारा आयोजित प्रश्नमंच में सुबोध शुक्ल ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। सहारनपुर में आयोजित राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में रामसिंह ने स्वर्णपदक तथा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए योगकुमार की उपाधि प्राप्त की।

प्राध्यापकों का प्रगति विवरण

डॉ. सामेदेव शतांशु–

इस शिक्षा सत्र में शैक्षणिक कार्य के अतिरिक्त विभागध्यक्ष का कार्य निर्वहन किया। मार्च १९९५ में स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान द्वारा आयोजित वैदिक वाङ्मय में विविध विज्ञान विषयक शोध गोष्ठी में अथर्ववेदीय चिकित्सा विज्ञान विषयक शोध पत्र पढ़ा। इसी संस्थान द्वारा जनवरी ९६ में आयोजित 'वैदिक शिक्षा व्यवस्था' विषयक शोधगोष्ठी में भाग लिया।

इस समय तीन शोध–छात्र इनके निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं तथा एक ने 'कालिदास साहित्य में योग विद्या' विषय पर लघुशोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री (प्रोफेसर)

शोध लेखन प्रकाशन–"वेद में ध्यान योग" शोध लेख प्रकाशित हुआ, "रीति सिद्धांत" तथा

"श्लेष परम्परा" नामक लेख प्रकाशित हो रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द शोध पीठ की शोध पत्रिका में "पर्यावरण समस्यायाः वैदिकं समाधानम्" लेख प्रकाशित हुआ।

शोध निर्देशन–

इस समय १० शोध छात्र इनके निर्देशन में विभिन्न विषयों पर शोधकार्य कर रहे हैं।

शोध गोष्ठी में आमन्त्रित–पटियाला विश्वविद्यालय पंजाब के डॉ. बलवीर सिंह शोध केन्द्र देहरादून में एक शोध गोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए तथा शोध लेख का वाचन किया।

विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित–

उच्च शिक्षा आयोग इलाहाबाद (उ.प्र.) में विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया। इसी प्रकार काशी विद्यापीठ वाराणसी में विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया। नैनीताल विश्वविद्यालय, हे.नं. ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, गोरखपुर विश्वविद्यालय आदि में शोध समिति तथा शिक्षा समिति में विशेषज्ञ का कार्य किया।

प्रशासनिक कार्य–

प्राच्य विद्या संकाय का ३० जून ६६ तक संकायाध्यक्ष पद पर कार्य किया। ३१ जनवरी ६६ से विश्वविद्यालय में आचार्य एवं उपकुलपति पद का कार्यभार ग्रहण किया हुआ है।

डॉ. महावीर अग्रवाल, वरिष्ठ रीडर

शैक्षिक योग्यता–एम.ए. (संस्कृत, वेद, हिन्दी) पी–एच.डी. व्याकरणाचार्य लब्ध स्वर्ण पदक।

शोध–निर्देशन–आपके निर्देशन में इस वर्ष ४ शोधछात्र पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। अब तक १० शोधछात्र पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

इस वर्ष ३ छात्रों ने लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये। अब तक २५ छात्र लघु शोध प्रबन्ध पूर्ण कर चुके हैं।

संप्रति–इनके निर्देशन में १० छात्र पीएच.डी. हेतु शोधकार्यरत हैं।

शोध संगोष्ठियां–

१. कानपुर विद्या मन्दिर महिला महाविद्यालय में आयोजित वेद–संगोष्ठी में 'वेदों में विज्ञान' विषय पर शोध–पत्र प्रस्तुत किया और समारोह की अध्यक्षता की।

२. मनोहर भाई पटेल कॉलेज साकोरठी (महाराष्ट्र) में नव. ६५ में आयोजित संगोष्ठी में 'मराठी साहित्य पर वैदिक प्रभाव' विषय पर मुख्य व्याख्यान दिया।

३. भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार में विद्वद् गोष्ठी में 'दर्शन और ज्ञान' विषय पर व्याख्यान दिया।

४. गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार के वार्षिकोत्सव पर संस्कृति सम्मेलनों "वैदिक संस्कृति का स्वरूप" विषय पर व्याख्यान दिया।

५. कलकत्ता, बम्बई, जालन्धर, कानपुर, आनन्द, अहमदाबाद, देवलाली, नागपुर, सहारनपुर, देहरादून, रुड़की आदि नगरों में आर्य सम्मेलनों और वेद, शिक्षा सम्मेलनों में वेद, उपनिषद, दर्शन आदि पर अनेक व्याख्यान दिये।

डॉ. ब्रह्मदेव विद्यालंकार–

संस्कृत विभाग के समुन्नत्यर्थ समायोजित समस्त कर्त्तव्य कार्यों का निर्वहन अत्यन्त

तन्मयता एवं प्रबलता से किया गया। विभागेतर विश्वविद्यालीय कार्यों की परिणति में भी यथाशक्ति योगदान दिया।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा १, २, ३ मार्च में आयोजित त्रिदिवसीय वैदिक संगोष्ठी में भाग लिया एवं 'वेदार्थ में महर्षि दयानन्द की उदात्त दृष्टि' विषय पर पत्र वाचन किया। १ मई से २८ मई १९९६ तक कुरुक्षेत्र वि.वि. में अरियण्टेशन कोर्स किया।

दर्शन विभाग

डॉ. त्रिलोक चन्द्र

पीएच.डी. अध्यक्ष दर्शन विभाग

इस सत्र में किये गये कार्य–

"१. ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप" नामक पुस्तक प्रकाशित की।

२. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित प्राच्य विद्या संकाय के सम्मेलन में वर्ण व्यवस्था पर शोध निबन्ध पढ़ा।

Dr. U.S. BIST

1. Attended a series of lectures of a Chinese Professor, Deptt. of Philosophy, University of Delhi.

2. Attended a National Seminar Deptt. of Philosohpy, University of Delhi.

3. Organised in the capacity of the local secretary, the 90th session of the Indian Philosophical congress.

4. Edited the "absract" of papers for the Indian Philosophical Congress.

5. Working for the publication of the papers published at the I.P.C.

6. Attended as a critique a National seminar on Agamic/Tantrik philosophy and Religion, B.H.U., Varanasi.

7. Elected President, Metaphysics & Epistemology Section.

डॉ. विजयपाल शास्त्री

रीडर दर्शन विभाग

शैक्षणिक गतिविध–

१. १४ अप्रैल ६६ से १७ अप्रैल ६६ तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित आगम शास्त्र पर संगोष्ठी में शोधपत्र वाचन किया। शीर्षक था–"शिवस्य जगत्कारणत्वम्"

२. २१ अप्रैल ६६ को डॉ. बलवीर सिंह शोध संस्थान देहरादून में योग पर आधारित सेमिनार में शोधपत्र पढ़ा। विषय था–विवेक दुःख का जनक है।

३. अक्टूबर ६५ में दर्शन विभाग में इन्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस का भव्य आयोजन किया। उसके प्रबन्ध में सहायता की।

४. १३ अप्रैल ६६ को दीक्षान्त समारोह में दो छात्रों (राकेश शर्मा और प्रमोद कुमार) ने पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

राकेश शर्मा की थीसिस का शीर्षक था–"गीता के हिन्दी भाष्यों का समीक्षात्मक अध्ययन।

प्रमोद कुमार के शोध प्रबन्ध का शीर्षक था–उद्धवगीता' एक दार्शनिक परिशीलन।

पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ज्ञान प्रसार के लिये शिक्षण संस्था में संग्रहालय की भूमिका के महत्व का सही–सही आकलन करते हुए महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) द्वारा गुरुकुल परिसर में गुरुकुल संग्रहालय की स्थापना सन् १६०७ में की गयी थी। तत्कालीन संग्रहालयों में गुरुकुल संग्रहालय शीघ्र अपना गरिमामय स्थान बनाने में सफल रहा। दुर्भाग्यवश सन् १६२४ की बाढ़ में गुरुकुल के साथ–साथ गुरुकुल संग्रहालय को भी भारी क्षति का सामना करना पड़ा।

स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर–प्रदेश के तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द जी द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के संग्रहालयों के विकास एवं सुधार सम्बन्धी सुझावों के लिए एक "संग्रहालय पुनर्गठन समिति" की स्थापना की गयी थी। समिति द्वारा हरिद्वार नगर में एक क्षेत्रीय संग्रहालय की आवश्यकता के सम्बन्ध में विशेष रूप से संस्तुति प्रस्तुत की गयी। समिति की संस्तुति के परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल के तत्कालीन मुख्य अधिष्ठाता एवं कुलपति पं इन्द्र विद्यावाचस्पति (स्वामी श्रद्धानन्द के अनुज पुत्र) ने पुनर्गठित संग्रहालय की स्थापना का निश्चय किया। परिणामतः १६४५ में संग्रहालय का पुनर्गठन किया गया तथा सन् १६५० में गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती के पावन पर्व पर वर्तमान परिसर में स्थित वेद मन्दिर के प्रथम तल पर गुरुकुल संग्रहालय का विधिवत् डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा उद्घाटन किया गया। प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्कालीन विभागध्यक्ष प्रो. हरिदत्त वेदालंकार संग्रहालयाध्यक्ष नियुक्त किये गये। तदुपरान्त सन् १६७२ में शिक्षा पटल की स्वीकृति के अनुसार यह संग्रहालय प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग का विधिवत अंग बना दिया गया तथा प्राध्यापक विभागाध्यक्ष डॉ. बी.सी. सिन्हा को पदेन निदेशक नियुक्त किया गया। सन् १६८२ से प्रारम्भ सत्र में संग्रहालय को विधिवत् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं शिक्षा मन्त्रालय द्वारा विश्वविद्यालय का एक अंग स्वीकार कर लिया गया।

संग्रहालय को इस सत्र १६६५–६६ में २६१ सिक्कों की प्राप्ति हुइं। कनाडा के पॉच सिक्के विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के व्याख्याता डॉ. श्रवण कुमार शर्मा द्वारा प्राप्त हुए। इसी वर्ष डॉ. एस.एल. सिंह डीन (विज्ञान संकाय) द्वारा पोलैण्ड के दो नोट भी प्राप्त हुए। इनके अतिरिक्त कोरिया से पधारे डॉ. तुकीमासा निकीमासा द्वारा मार्च १६६५ में तीन कोरिया के भी सिक्के प्राप्त हुए।

संग्रहालय में संग्रहीत सामग्री का पंजीकरण वर्गीकरण एवं सूचीकरण का कार्य भी किया गया है। फ्यूमीगेशन कार्य हेतू स्थापित प्रयोगशाला में भी कार्य चलता रहा। संग्रहालय संग्रह की लगभग ७७ पाण्डुलिपियों का रसायन उपचार किया जा चुका है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त विश्वविद्यालय बजट व्यवस्था के अतिरिक्त संग्रहालय को समय–समय पर विकास हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अनुदान देता रहा है। उत्तर प्रदेश शासन, राष्ट्रीय संग्रहालय एवं राष्ट्रीय अभिलेखागार से भी विकास के लिये अनुदान प्राप्त होता रहा है।

वर्तमान सत्र में उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के संग्रहालय पुस्तकालय की

अभिवृद्धि हेतु २०,०००/–रु० का अनुदान प्राप्त हुआ। प्राप्त अनुदान से पुस्तकें क्रय किये जाने की व्यवस्था की जा रही है।

संग्रहालय के अति विशिष्ट दर्शनार्थियों में माननीय शिवराज पाटिल अध्यक्ष, लोकसभा, नई दिल्ली एवं माननीय मदनलाल खुराना, मुख्यमंत्री, दिल्ली राज्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विशिष्ट दर्शकों की सूची में निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय है।

१–श्री अनुराग भटनागर, डायरेक्टर यूनिवर्सिटी, मानव संसाधन मन्त्रालय, नई दिल्ली।

२–श्री यशपाल सिंह, प्राचार्य, जे.एन. विद्यालय, राजकोट।

३– श्री रामाश्रय, मन्त्री, आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली।

४–श्री यू.कुटिल, बर्लिन, जर्मनी।

५–श्री सरदार सिंह, प्रधान आर्य समाज, ध्रुवपेट, हैदराबाद।

६–संयुक्त सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

७– डॉ. श्याम सिंह शशि, दिल्ली।

८–श्री नोतन कुमार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

९–ओक स्वास्तिका, इन्डोनेशिया।

१०–श्री राजेन्द्र गुप्ता, मन्त्री दिल्ली राज्य।

इस सत्र में १५ मई १९९५ तक संग्रहालय के निदेशक पद पर डॉ. काशमीर सिंह भिण्डर कार्यरत थे। १६ मई १९९५ से संत्रान्त तक डीन, प्राच्य विद्या संकाय प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री निदेशक पद पर कार्य करते रहे।

संग्रहालय के कार्यरत वर्तमान कर्मचारियों की उपलब्धियाँ

निदेशक–प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री

डीन, प्राच्य विद्या संकाय के दायित्व के निर्वहन के साथ–साथ आचार्य एवं उपकुलपति के दायित्वों को भी देख रहे हैं।

संग्रहपाल–सूर्यकान्त श्रीवास्तव

१–संग्रहालय के केन्द्रीय कक्ष में आद्य ऐतिहासिक कक्ष का नियोजन एवं प्रदर्शन कार्य सम्पन्न किया जिसका विधिवत् तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष मान्य शिवराज पाटिल द्वारा सम्पन्न किया गया।

२–इण्डियन आर्केलियोजीकल सोसायटी द्वारा "इमरजेन्स एण्ड डिफ्यूजन आफ फार्मिंग वेस्ड सोसायटी इन ईस्टर्न इण्डिया" पर आयोजित सेमिनार में भाग लिया तथ। "एग्रीकलचरल टूल आफ कॉपर होर्ड कल्चर" पर लेख प्रस्तुत किया।

३–पाण्डुलिपि अनुभाग की अपंजीकृत पाण्डुलिपियों का पंजीकरण कराया।

४–पाण्डुलिपियों का कैटलाग तैयार किया जिसका अन्तिम रूप से मिलान कार्य किया जा रहा है।

५–कला अनुभाग की पेन्टिंग्स के कैटलाग के लिये भी अध्ययन कार्य किया जा रहा है। संग्रह में उलब्ध बारहमास पर आधारित पेन्टिंग्स पर एक मानोग्राफ्स भी तैयार किया गया।

सहायक संग्रहपाल–डॉ. सुखबीर सिंह

१–संग्रहालय के दिन–प्रतिदिन के प्रशासनिक कार्यों में सहयोग दिया।

२–संग्रहालय में समय–समय पर आये दर्शकों और विशिष्ट महानुभावों को संग्रहालय का अवलोकन कराया गया।

३–संग्रहालय में संग्रहीत पुरातात्विक सामग्री का पंजीकरण, वर्गीकरण, सूचीकरण और लैबलिंग आदि कार्य किये गये।

४–प्रतिवर्ष की भांति मुख्य कार्यालय के निर्देश पर संग्रहालय के डैड स्टाफ का सत्यापन कार्य किया।

५–पाण्डुलिपि परिरक्षण परियोजना के अन्तर्गत स्थापित प्रयोगशाला में ७७ पाण्डुलिपियों का परिरक्षण पूरा किया।

संग्रहालय सहायक–डॉ. प्रभात कुमार

१–संग्रहालय कार्य में सहयोग किया।

२–प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन कार्य किया।

३–संग्रहालय पुस्तकालय का सत्यापन कार्य किया।

४–सामान्य एवं विशिष्ट दर्शकों को संग्रहालय का अवलोकन कराया।

कार्यालय लिपिक–श्री अरविन्द कुमार ने कार्यालय के दायित्वों के निर्वाहन के साथ–साथ संग्रहालय के दर्शकों को अवलोकन कराने में सहयोग प्रदान किया।

कार्यालय के अन्य कर्मचारियों रमेशचंद पाल, ओमप्रकाश, रामजीत, फूलसिंह के द्वारा संग्रहालय के रख–रखाव आदि में पूर्ण सहयोग उपलब्ध रहा।

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के विद्वान प्राध्यापकों द्वारा भारतीय इतिहास का लेखन भारतीय दृष्टिकोण को आधार मानकर प्रामाणिक संदर्भों से लिखा गया जिसके कारण विभाग की ख्याति चारों ओर स्थापित हुई। इस दिशा में आचार्य रामदेव, जयचन्द्र विद्यालंकार पं. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, (पूर्व कुलाधिपति, पूर्व विधान परिषद सदस्य, उ.प्र.) के अतिरिक्त पं. हरिदत्त वेदालंकार एवं डॉ. विनोद चन्द्र सिन्हा द्वारा लिखे गये ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

इसी परम्परा में विभाग के समस्त प्राध्यापक, अध्ययन, अध्यापन, लेखन तथा शोध आदि कार्य को पूरी तत्परता के साथ कर रहे हैं। इस सत्र में शोध कार्य हेतु आठ छात्रों ने अपने शोध विषय प्रस्तुत किए। शोध विषयों को स्वीकृत करने के लिए अधिकृत कमेटी आर.डी.सी. की मीटिंग फरवरी १९९९ में प्राच्य विद्या संकाय के अध्यक्ष कक्ष में सम्पन्न हुई।

कमेटी द्वारा निम्न छात्रों के शोध विषय विचारानन्तर स्वीकृत किये गये।

नाम	शोध विषय	निदेशक
१. **राजेश शुक्ला**	**प्राचीन भारतीय अन्तरजातीय सम्बन्धों में कुटनीति सम्बन्धों का योगदान एवं वर्तमान राजनीति के सन्दर्भ में इसकी उपादेयता**	**डॉ.श्यामनारायण सिंह**
२. **कु. मीनाक्षी परिहार**	**प्राचीन भारत एवं ईरान के सांस्कृतिक सम्बन्ध (प्रारम्भ से गुप्त काल)**	**डॉ. श्यामनरायण सिंह**
३. **श्री शिवनन्दन पांडेय**	**भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों के परिरक्षण में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का एक योगदान–एक अध्ययन**	**डॉ. श्यामनारायण सिंह**
४. अजय परमार	गढ़वाल हिमालय की कला	डॉ. काशमीर सिंह भिंडर
५. कु. सपना रानी	प्राचीन भारत में वैवाहिक पद्धति पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव	डा. काशमीर सिंह भिंडर
६. श्रीमती किरण पेशण	कल्हा दि ग्रेट हिस्टोरियन आफ कश्मीर	डॉ. काशमीर सिंह भिंडर
७. हरीश शर्मा	गुप्तकाल में नौकरशाही	डॉ. राकेश शर्मा
८. पदमा श्रीवास्तव	महाकाव्यों के काल में वर्णाश्रम व्यवस्था	डॉ. राकेश शर्मा

इनके अतिरिक्त गत वर्ष के दो शोधार्थियों यथा कु. सपना तथा अजय परमार के संशोधित

शोध विषय भी विचारान्तर स्वीकृत किये गये।

वर्तमान में डॉ. श्यामनारायण सिंह के निर्देशन में ४ छात्र, डॉ. काशमीर सिंह भिण्डर के निर्देशन में ५ छात्र और डॉ. राकेश शर्मा के निर्देशन में तीन छात्र शोध कार्य कर रहे हैं

इस वर्ष डॉ. राकेश शर्मा के निर्देशन में सम्पन्न श्रीमती सरोज सिंह, श्री ब्रिजेश कुमार और श्री दीपक घोष को अप्रैल १९९६ में दीक्षान्त समारोह पर पी–एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. शर्मा इस विभाग में शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विश्वविद्यालय में एन.सी.सी. कमान्डिंग अफसर भी हैं। जिनके निर्देशन में एन.सी.सी. विभाग लगातार प्रगति पर है। सम्प्रति डॉ० शर्मा प्राचीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता (वैदिक काल से गुप्त काल तक) विषय पर माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट के रूप में कार्य कर रहे हैं।

डॉ० श्यामनारायण सिंह के निर्देशन में श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता ने प्राचीन भारत में व्यापार एवं वाणिज्य (प्रारम्भ से ६०० ई. तक)–एक अध्ययन पूर्ण कर शोध प्रबन्ध मूल्यांकन हेतु अपना शोध कार्य कुलसचिव कार्यालय में प्रस्तुत कर दिया है। इसी वर्ष विभाग के दो छात्रों ने यथा श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित की National Examination Test "NET" की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र प्रवीण कुमार ने संघ लोक सवा आयोग, उ.प्र. लोक सेवा आयोग तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग की प्रारम्भिक परीक्षाएं उत्तीर्ण की।

इस वर्ष स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्ता कु. मीनाक्षी परिहार ने दीक्षान्त समारोह पर पंडित हरिदत्त वेदालंकार स्मृति स्वर्ण पदक प्राप्त किया। विभागीय छात्रों द्वारा इस वर्ष शैक्षणिक यात्रा के अन्तर्गत कलकत्ता, भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क आदि ऐतिहासिक महत्व के स्थलों का भ्रमण किया।

स्नातक स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा से सम्बन्धित पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान पाठ्यक्रम विधिवत रूप से चलाया जा रहा है।

विभागीय उत्तरदायित्वों का पूर्ण निर्वाह करते हुए विभाग के प्राध्यापक विश्वविद्यालय को प्रशासनिक क्षेत्र में भी सहयोग दे रहे हैं। इसमें प्रो. एस.एन. सिंह एवं डॉ० राकेश शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। डॉ. सिंह विभागीय उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त डीन प्राच्य विद्या संकाय तथा कुलसचिव के रूप में भी विश्वविद्यालय प्रशासन को सहयोग दे रहे हैं।

वार्षिक विवरण–95–96

योग शिक्षा विभाग

१. विभाग की स्थापना व इतिहास–

सन् १९८४ में चुतर्मासीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम से प्रारम्भ किया गया यह विभाग दिन–प्रतिदिन प्रगति पथ पर अग्रसर है। अब एक वर्षीय डिप्लोमा के साथ बी.ए. व एम.ए. कक्षाएँ विगत कई वर्षों से चल रही हैं। सत्र ९६–९७ से पीएच.डी. भी प्रारम्भ कर दी गई है।

योग विभाग ने स्थानीय जनता के साथ भी स्वयं को जोड़कर ख्याति प्राप्त की है। क्षेत्र के शिक्षित वर्ग ने विभाग के कार्य की सराहना की है। भविष्य में जन कल्याणार्थ योग व प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना का कार्य भी पूर्ण होने की सम्भाचना है।

२. विभाग की मौलिक छवि–

योगविभाग की स्थापना से विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ी है। विश्वविद्यालय में एम.ए. तथा पीएच.डी. अध्ययन हेतु भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोग यहाँ आ रहे हैं। एम.ए. की कक्षाएँ अभी तक अन्य विश्वविद्यालयों में नहीं हैं। उसी प्रकार पीएच.डी. के अध्ययन हेतु लोग आ रहे हैं। पाँच छात्रों ने पीएच.डी. हेतु पंजीकरण करा दिया है। योग चिकित्सा की प्राप्ति हेतु भी लोग आते हैं। बिभागाध्यक्ष डॉ. ईश्वर भारद्वाज को योग के क्षेत्र में अन्य विश्वविद्यालयों में विषय–विशेषज्ञ के रूप में बोर्ड आफ स्टडीज का सदस्य, परीक्षक, चयन–समिति का सदस्य, प्रतियोगिताओं में मुख्य निर्णायक के रूप में तथा कालेज सम्बद्धता समिति में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया जाता है। इसी से विभाग की उज्जवल छवि का परिचय प्राप्त होता है।

३. विभागीय क्रिया–कलाप–

(क) छात्र–संख्या– विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्र संख्या इस प्रकार रही–

डिप्लोमा	१०
बी.ए./अलंकार प्रथम वर्ष	४
बी.ए./अलंकार द्वितीय वर्ष	१०
बी.ए./अलंकार तृतीय वर्ष	८
एम.ए. प्रथम खण्ड	८
एम.ए. द्वितीय खण्ड	४

(ख) अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई जिसमें हमारी टीम ने भाग लिया तथा अच्छा प्रदर्शन किया।

(ग) उत्तर भारत योग कुमार प्रतियोगिता सहारनपुर में आयोजित की गई जिसमें एम.ए. द्वितीय खण्ड के छात्र रामसिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बी.ए. तृतीय खण्ड के छात्र संजय

कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

(घ) अखिल भारतीय योग प्रतियोगिता में छात्र रामसिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पूर्व छात्र श्री रामजीत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(ङ) छात्र सुरक्षित गोस्वामी ने लखनऊ दूरदर्शन पर योग विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

(च) विभागाध्यक्ष डा. ईश्वर भारद्वाज को 'केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली' द्वारा अपनी चयन समिति में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

(छ) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा योग प्रोन्नति योजना के अन्तर्गत योग केन्द्र हेतु दो प्रशिक्षक स्वीकृत किए गए हैं जिनके आने के पश्चात् योग केन्द्र के अन्तर्गत त्रैमासिक व एकवर्षीय पाठ्यक्रम, दैनिक अभ्यास, योग शिविर तथा योग चिकित्सा के कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाएँगे।

४. शिक्षकों का शोधकार्य, प्रकाशन कार्य, संगोष्ठियों में भागीदारी तथा अन्य उपलब्धियाँ–

डॉ. ईश्वर भारद्वाज

(प्रवक्ता, विभागाध्यक्ष)

शास्त्री, साहित्याचार्य, एम.ए. (हिन्दी, दर्शन)

एन.डी., योग डिप्लोमा, पीएच.डी.

१. शोधकार्य–

(क) मकरासन व गोमुखासन का दमा की चिकित्सा में योगदान

(ख) शवासन व नाड़ी शोधन प्राणायाम का उच्च रक्तचाप पर प्रभाव

(ग) कब्ज में तड़ागी मुद्रा का योगदान

(घ) गजकरणी व अम्लपित्त–प्रतिषेध

२. प्रकाशन कार्य–

(अ) पुस्तकें– १. औपनिषदिक अध्यात्मविज्ञान
२. उपनिषदों में संन्यासयोग
३. यौगिक चिकित्सा (प्रकाशनाधीन)

(ब) शोधपत्र– १. गुरुकुलपत्रिका–
२. प्रौढ़शिक्षा (दिल्ली) –१
३. देश–निर्देश – २
५. जयराम सन्देश– ३

३. संगोष्ठियों में भागीदारी–

(क) केन्द्रीय योग अनुसंधान संस्थान दिल्ली द्वारा अप्रैल, ९६ में आयोजित ओरियंटेशन कार्यक्रम में दो व्याख्यान योग विषय पर दिए।

(ख) प्रौढ़ शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित शिविरों में योग पर व्याख्यान।

(ग) मानव कल्याण केन्द्र देहरादून में योग पर व्याख्यान।

(घ) भारतीय दार्शनिक परिषद के गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित अधिवेशन

में भाग लिया।

४. रेड़ियो वार्ता–

१. आकाशवाणी दिल्ली के राष्ट्रीय चैनल पर 'योग व स्वास्थ्य' विषय पर वार्ता प्रसारित।

२. आकाशवाणी नजीबाबाद से 'योग एवं स्वास्थ्य' विषय पर दो वार्ता प्रसारित।

५. अन्यः

१. विश्वविद्यालय अतिथिगृह के प्रभारी का दायित्व निर्वाह किया।

२. विश्वविद्यालय परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य किया।

३. हिमाचल प्रदेश, सागर, पंजाब, लखनऊ, कानपुर, हिसार, महर्षि दयानन्द, गढ़वाल, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालयों तथा केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा परीक्षक के रूप में मंनोनीत।

४. हिमाचल प्रदेश, कानपुर, गढ़वाल व सागर विश्वविद्यालयों में 'बोर्ड आफ स्टडीज' का सदस्य मनोनीत।

५. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् (आइ.सी.सी.आर) नई दिल्ली द्वारा विषयविशेषज्ञ के रूप में चयन–समिति में मनोनीत।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

एम.ए., पीएच.डी.,

योग डिप्लोमा (प्रशिक्षक)

१. विभागीय दायित्व के अन्तर्गत डिप्लोमा व अलंकार/बी.ए. कक्षाओं को अध्यापन कराया।

२. भारतीय दार्शनकि कांग्रेस में भाग लिया।

३. विश्वविद्यालय अतिथिगृह के कार्य में सहयोग दिया।

४. अन्तर्विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता में टीम को लेकर कुरुक्षेत्र गये।

कुलपति डॉ. धर्मपाल

मानविकी संकाय

१७ जुलाई १६६६ को यज्ञोपरान्त सत्र प्रारम्भ हुआ। १५ मई १६६६ से सत्रावसान हुआ। शिक्षा सत्र में छात्रों की संख्या इस प्रकार रही।

नाम कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
बी.ए.	१२०	६३	२३
विद्यालंकार	१	३	२
एम.ए. हिन्दी	५	४	
एम.ए. अंग्रेजी	७	२	
एम.ए. मनोविज्ञान	१५	८	
हिन्दी पत्रकारिता (एक वर्षीय)	१५		

हिन्दी विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग गुरुकुल के स्थापना काल जितना पुराना है, पर यहां स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन सन् १६६३–६४ से प्रारम्भ हुआ। तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जनक आचार्य पद्मसिंह शर्मा तथा प्रख्यात हिन्दी वैयाकरणी आचार्य किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे हैं। अनेक देशी–विदेशी छात्र यहां अध्ययन कर आज उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं।

१६६५–६६ की अवधि में पठन–पाठन का कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। विभाग में विशिष्ठ विद्वानों के व्याख्यान हुए। इनमें नवभारत टाइम्स के सम्पादक श्री अच्युतानन्द मिश्र, प्रो. डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. महेन्द्र कुमार मुख्य है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. नरेश मिश्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ आदि विभिन्न कार्यो से विश्वविद्यालय में उपस्थित हुए।

हिन्दी पत्रकारिता के छात्र प्रशिक्षण–यात्रा पर दिल्ली इन्दौर भोपाल गए जहां उन्होंने प्रेस की कार्यविधि का अवलोकन किया। इस यात्रा के दौरान उन्हें पत्रकारिता से जुड़े विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान भी सुनने को मिले। पत्रकारिता के छात्रों ने ही प्रायोगिक समाचार पत्र 'शतपथ' का प्रकाशन किया। जिसका विमोचन १३ अप्रैल ६६ को चैक गणराज्य के राजदूत हिन्दी कवि एवं नाटकार डॉ. आदोनेल स्मेकल विद्यामार्तण्ड द्वारा हुआ।

केन्द्रिय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली से अहिन्दी भाषा नव लेखकों का एक सप्ताह का शिविर डॉ. भगवानदेव पाण्डेय के संयोजन में आयोजित हुआ। इसमें स्थानीय तथा बाह्य विद्वानों ने व्याख्यान एवं लेखकों ने अपनी–अपनी रचनाओं का वाचन किया। समारोह में केन्द्रिय निदेशालय के निदेशक डॉ. गंगाप्रसाद 'विमल' तकनीकी शब्दावली आयोग के निदेशक डॉ. घिल्डयाल, डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' तथा अलीगढ़ से डॉ. वेदप्रकाश स्थानीय विद्वानों में डॉ. नारायण शर्मा डीन मनविकी, प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री आचार्य एवं उपकुलपति तथा डॉ. धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि के विचारो से अहिन्दी भाषीनव लेखक प्रभावित लाभान्वित हुए।

अंग्रेजी विभाग

अंग्रेजी विभाग में विभागीय एवं व्यक्तिगत स्तर पर शैक्षिक गतिविधि और योगदान सन्तोषजनक ढंग से चला।

विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्नातक स्तर पर वोकेशनल इंग्लिश की शिक्षा एक वैकल्पिक पेपर के रूप में प्रारम्भ करने की अनुमति प्राप्त हुई। इस कार्य हेतु आयोग से वित्तीय सहायता भी प्राप्त हुई है। विभाग ने सम्बद्ध कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया है। उत्तरी भारत में केवल तीन विश्वविद्यालयों को ही यह कोर्स चलाने की अनुमति प्राप्त हुई है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का अंग्रेजी विभाग इनमें से एक है।

उपरोक्त कार्यक्रम के संचालन हेतु सी.आई.एफ.एल. हैदराबाद ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जिसमें विभाग से डॉ. श्रवण शर्मा प्रशिक्षण के लिए गये। इन्होंने तीन सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त किया। डॉ. श्रवण शर्मा की एक पुस्तक "एलियनेशन इन दी पोएट्री आफ मैथ्यू आर्नलड" प्रकाशित हुई। डॉ. शर्मा फैकल्टी एनरिचमेन्ट योजना के अन्तर्गत एक मास के लिए कैनेडा भी गए।

श्री सदाशिव भगत शोधार्थियों को पीएच.डी. डिग्री हेतु शोध कार्य में मार्गदर्शन करने में व्यस्त रहे।

डॉ. अम्बुज शर्मा ने भी शोधार्थियों को निर्देशन दिया और वैदिक ऋचाओं को संगीतबद्ध करने के कार्य में व्यस्त रहे।

डॉ. के.ए. अग्रवाल ने इन्डो एन्गलियन पोएट्री पर एक लेख तैयार किया और "वैदिक पथ" में प्रकाशन हेतु स्वीकृत हुआ। यह दो शोधार्थियों का पीएच.डी. डिग्री के लिए निर्देशन भी कर रहे हैं।

विभागाध्यक्ष डॉ. नारायण शर्मा ने दो शोध पत्र "सम आस्पैक्ट्स आफ श्री आरविन्दोज योग" और 'पोएटिक सैंसिविलिटि इन विक्टोरियन एज' लिखे। पहला पत्र पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के 'बी.एस. इन्स्टिच्यूट आफ कम्पैरेटिव रिलिजन' और दूसरा मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाले एक संकलन के लिए स्वीकार हुआ। डॉ. शर्मा के निर्देशन में शोध कार्य भी चल रहा है। इनको सत्र में गढ़वाल, मेरठ, कुमायूं एवं विक्रम विश्वविद्यालयों ने भिन्न--भिन्न कार्य हेतु आमन्त्रित किया।

मनोविज्ञान

सत्र–1995–96

सत्र १९९५–९६ से विभाग के एम.ए./एम.एस.सी. पाठ्यक्रम के लिये प्रवेश सीमा १५ कर दी गई है और इससे अधिक छात्रों को प्रवेश नहीं दिया गया। एम.ए./एम.एस.सी. तथा स्नातक स्तर पर लगभग १०० विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। पी.एम.आई.आर. में इस सत्र में ३४ छात्रों को प्रवेश दिया गया। इस पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष में ३० छात्रों ने प्रवेश लिया।

शोध समिति–

इस सत्र में हुई शोध समिति की बैठक में आठ विषय शोध के लिये स्वीकार किये गये। बैठक में विषय विशेषज्ञ के रूप में काशी विद्यापीठ के प्रो. जी.पी. ठाकुर तथा मेरठ विश्वविद्यालय के प्रो. एस.एन. राय ने भाग लिया। विभाग के सभी अध्यापक शोध कार्य करा रहे हैं।

इस वर्ष विभाग की एक छात्रा, जिसने पिछले वर्ष नैट परीक्षा पास की थी, उत्तर प्रदेश कमीशन द्वारा प्रवक्ता के पद के लिये चुनी गई और वह मेरठ विश्वविद्यालय के एक महिला महाविद्यालय में पढ़ा रही है। एक अन्य छात्र की इथोपिया में प्रवक्ता के पद पर नियुक्ति हुई। एक छात्र नैट परीक्षा पास करने के बाद पिलानी में प्रवक्ता के रूप में चुने गये।

विभाग में आयोजन के लिये दो गोष्ठियों की स्वीकृति प्रदान की गई। एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी डॉ. एस.के. श्रीवास्तव द्वारा प्रो. मिश्रा के निर्देशन में फरवरी १९९७ में आयोजित की जायेगी। दूसरी संगोष्ठी अक्टूबर/नवम्बर, १९९७ में प्रो. धमीजा द्वारा आयोजित की जायेगी।

पीएच.डी. उपाधि–

इस वर्ष श्रीमती सी.के. सिंह को प्रो. मिश्र के निर्देशन में किये गये कार्य पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

विभाग के शिक्षकों की शैक्षणिक गतिविधिया इस प्रकार है:–

प्रो. ओ.पी. मिश्र–

प्रो. ओ.पी. मिश्र को इस वर्ष माननीय कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा प्रारम्भ किये गये निर्देशन एवम् नियुक्ति केन्द्र का निदेशक नियुक्त किया गया। उनके निर्देशन में १० छात्र, छात्रायें पीएच.डी. उपाधि के लिये शोध कार्य कर रहे हैं। पी.एम.आई.आर. तथा एम.ए. के लगभग २० छात्रों ने उनके निर्देशन में प्रोजेक्ट का कार्य पूर्ण किया।

प्रो. ओ.पी. मिश्र मेरठ विश्वविद्यालय, गढ़वाल विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालय (विद्या पीठ) की शोध समितियों में विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे हैं। वे गढ़वाल विश्वविद्यालय की बोर्ड आफ स्टडीज में भी विशेषज्ञ के रूप में भाग ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त राजकीय लोक सेवा आयोग, तथा केन्द्रीय सेवा आयोग में परीक्षक तथा सलाहकार के रूप में कार्य करते हुए विश्वविद्यालय की गरिमा बढ़ा रहे हैं।

प्रो. एस.सी. धमीजा–

इस वर्ष प्रो. एस.सी. धमीजा को मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद के अतिरिक्त पी.एम. आई.आर. पाठ्यक्रम का निर्देशक भी नियुक्त किया गया। उनके निर्देशन में ५ छात्र, छात्रायें पीएच.डी. उपाधि के लिये कार्य कर रहे है। एम.ए. तथा पी.एम.आई.आर. के लगभग २० छात्र/छात्राओं ने उनके निर्देशन में प्रोजेक्ट का कार्य पूरा किया। प्रो. धमीजा का एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ, एक शोध पत्र प्रकाशन के लिये स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त एक शोधपत्र विचार के लिये विदेश भेजा गया है। उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, तथा एक परीक्षण इस सत्र में प्रकाशित हुआ है।

डॉ. एस.के. श्रीवास्तव–

डॉ. एस.के श्रीवास्तव द्वारा लिखित एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसके द्वारा उन्हें विश्वविद्यालय से वित्तीय सहायता प्रदान की गई। इस पुस्तक का विमोचन दीक्षांत समारोह में हुआ। उन्होंने अलीगढ़ में आयोजित एक कान्फ्रैन्स में भाग लिया और एक शोध पत्र पढ़ा। उनके तीन शोध पत्र प्रकाशित हुऐ तथा दो शोध पत्र प्रकाशित होने के लिये स्वीकार किये गये। एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण का मानकीकरण डॉ. श्रीवास्तव द्वारा किया गया। इण्डियन काउंसिल आफ सोशल सांइस रिसर्च द्वारा उन्हें एक प्रोजेक्ट के लिये वित्तीय सहायता स्वीकृत की गई है। वर्तमान में वे छात्रावास के अध्यक्ष का कार्यभार भी संभाले हुए हैं।

डॉ. सी.पी. खोखर–

डॉ. सी.पी. खोखर ने इस सत्र में बम्बई में आयोजित एक संगोष्ठी में एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। इसी सत्र में उनका एक शोध भी प्रकाशित हुआ। उन्होंने दिसम्बर ६५ में उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित रिफ्रैशर कोर्स में भी भाग लिया। डॉ. खोखर के साथ एक छात्र पीएच.डी. उपाधि के लिये कार्य कर रहा है, तथा एम.ए./पी.एम.आई.आर. के ८ छात्रों को उन्होंने प्रोजेक्ट कार्य पूर्ण करवाया।

प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग

प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग को विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पत्रांक ५-३२/६२(एन.एफ.ई--१) दिनांक ०२ सितम्बर १६६५ के माध्यम से रू० ७५,०००/- सत्र १६६५-६६ हेतु स्वीकृत किये गये। इस सत्र में निम्न लिखित कार्यक्रम संचालित किये गये।

१. जन-शिक्षण निलयम-५

२. सतत् शिक्षा कोर्स-५

३. जन संख्या शिक्षा क्लब-१

४. साक्षरता कार्यक्रम

१. जन-शिक्षण निलयम-

विभाग द्वारा पाँच जन-शिक्षण निलयम ग्राम जमालपुर (सीतापुर), गाड़ों वाली, अजीतपुर (कटारपुर), जगजीतपुर और सराय में संचालित किये जा रहे हैं। विभाग द्वारा इन निलयमों पर समाचार पत्र, पत्रिकायें फुटबाल, बालीबाल एवं कैरम बोर्ड निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं।

२. सतत् शिक्षा-

विभाग द्वारा इस कार्यक्रम के अन्तर्गगत सिलाई एवं पेन्टिंग में ६-६ माह के दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इसके अतिरिक्त १५-१५ दिन के सौन्दर्य एवं घरेलू बिजली उपकरणों तथा टेलिविजन की मरम्मत सम्बन्धी दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

एक दस दिवसीय कढ़ाई सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

३. जनसंख्या शिक्षा-

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता, एवं निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त जनसंख्या एवं स्वास्थ्य विषय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की गई।

४. साक्षरता कार्यक्रम-

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम कटारपुर, जगजीतपुर, सराय, सीतापुर, एवं गाड़ोवाली, में साक्षरता किटों का वितरण किया गया तथा ६५० निरक्षरों को साक्षर बनाया गया।

५. अन्य क्रिया-कलाप-

विभाग द्वारा भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ नई दिल्ली के सहयोग से "केन्द्रीय क्षेत्रीय सम्मेलन" का आयोजन दिनांक १६-१७, दिसम्बर, १६६५ में किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन माननीय परिदृष्टा न्यायाधीश महावीर सिंह, द्वारा किया गया सम्मेलन में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश एवं दिल्ली से ४० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

५- विभागीय अधिकारियों के कार्य-कलाप

डॉ. आर.डी. शर्मा

विभागाध्यक्ष डॉ. आर.डी. शर्मा द्वारा एम.ए. (उत्तरार्ध) योग को तृतीय पेपर 'शोध विधियां'

का शिक्षण–कार्य किया गया।

संगोष्ठी सम्मेलन में भागीदारी–

१. भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित गुरुकुल कांगड़ी विश्व–विद्यालय हरिद्वार में १६–१७ दिसम्बर, १६६५ में आगामी शताब्दी में उत्तर साक्षरता विषय पर केन्द्रीय क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

२. लखनऊ विश्व–विद्यालय द्वारा जीवन गुणवत्ता विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मार्च २३–२४ १६६६ को भाग लिया तथा लेख भी प्रस्तुत किया।

३. गुरुकुल कांगड़ी विश्व–विद्यालय द्वारा आयोजित भारतीय दार्शनिक कांग्रेस के ७० वे अधिवेशन में अक्टूबर १३:१५, १६६५ में भाग लिया तथा शोध पत्र भी दिया।

४. दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभागों के निदेशकों की बैठक में जून ६,१६६५ में भाग लिया।

५. लखनऊ विश्व–विद्यालय द्वारा आयोजित प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं विभागों के निदेशकों की बैठक में दिसम्बर ४,१६६५ को भाग लिया।

६. लखनऊ विश्व–विद्यालय द्वारा आयोजित प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभागों के निदेशकों की बैठक में मार्च २३, १६६६ को भाग लिया।

प्रकाशित लेख–

इन्फून्स ऑफ रिसेंट लाइफ एक्सपीरियेन्स आन मेंटल हैल्प स्कूल टीचर्स, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू वॉल्यूम थर्टी नम्बर टू जुलाई १६६५

डॉ. जे.एस. मलिक परि. अधि.

संगोष्ठी/सम्मेलन में भागीदारी–

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित गुरुकुल कांगड़ी विश्व–विद्यालय हरिद्वार में १६–१७ दिसम्बर १६६६ में आगामी शताब्दी में उत्तर साक्षरता विषय पर केन्द्रीय क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

विज्ञान संकाय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की अनुपम घरोहर के रूप में हैं। यह विश्वविद्यालय वर्तमान में वैदिक शिक्षाओं के साथ–साथ विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। संकाय के प्राध्यापकगण शिक्षण कार्य के साथ–साथ शोध कार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९४–९५ में संकाय का परीक्षा फल सराहनीय रहा। यह अत्यन्त हर्ष एवं प्रतिष्ठा का विषय है कि इस संकाय से बी.एससी. की उपाधि लेकर निकले छात्रों को भारत वर्ष के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

संकाय के प्राध्यापक शोध कार्य कर एवं करवा रहे हैं। शोध एवं अन्य शैक्षिणिक गतिविधियों के लिये संबंधित विभागों की आख्या अवलोकनीय है। यहां के शिक्षकों के शोध पत्र लगातार विदेशी एवं भारतीय पत्रिकाओं में छप चुके हैं और छप रहे हैं। संकाय की एक विशिष्टता यह है कि बी.एससी. में कम्प्यूटर विज्ञान को विषय विशेष के रूप में पढ़ाने का प्रबंध है। संकाय में उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। और छात्र संख्या निरन्तर बढ़ रही है। छात्रों की बढ़ती संख्या को देखते हुए इस वर्ष दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) के अन्तर्गत भी छात्रों को प्रवेश दिया गया। संकाय में प्रत्येक ग्रुप के मेघावी छात्रों को वरियता क्रम के अनुसार प्रति ग्रुप में ५–५ छात्रों को संकाय द्वारा छात्रवृति प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त जिन्दल ट्रस्ट नई दिल्ली से भी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गयी है। सत्र १९९५–९६ में प्रवेशानुसार छात्र संख्या निम्नवत रही–

कक्षा	ग्रुप	छात्र सं०
बी.एससी. प्रथम वर्ष	गणित	९५
बी.एससी. प्रथम वर्ष	कम्प्यूटर	६०
बी.एससी. द्वितीय वर्ष	गणित	१११
बी.एससी. द्वितीय वर्ष	कम्प्यूटर	५५
बी.एससी. द्वितीय वर्ष	मनोविज्ञान	११
बी.एससी. द्वितीय वर्ष	दर्शन	३
बी.एससी. तृतीय वर्ष	गणित	६२
बी.एससी. तृतीय वर्ष	कम्प्यूटर	५४
बी.एससी. तृतीय वर्ष	मनोविज्ञान	३५

बी.एससी. तृतीय वर्ष	दर्शन	३
एम.एससी. प्रथम वर्ष	भौतिकी	११
एम.एससी. द्वितीय वर्ष	भौतिकी	१०
एम.एससी. प्रथम वर्ष	रसायन	२०
एम.एससी. द्वितीय वर्ष	रसायन	१०
एम.एससी. प्रथम वर्ष	गणित	१०
एम.एससी. द्वितीय वर्ष	गणित	५
एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर		४०
एम.एससी. तृतीय सेमेस्टर		३३
एम.एससी. पंचम सेमेस्टर		३४

वार्षिक प्रगति विवरण 1995–96

जीव विज्ञान संकाय

जीव विज्ञान संकाय के प्राध्यापक महानुभाव शिक्षण कार्य के साथ–साथ शोध कार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९५–९६ में इस संकाय में बी.एससी. तृतीय वर्ष का परीक्षा फल अति उत्तम रहा है। यह अत्यन्त हर्ष एवं प्रतिष्ठा का विषय है कि इस संकाय से इस वर्ष बी.एससी. की उपाधि लेकर निकले अनेक छात्रों को भारतवर्ष के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

छात्रों को वरीयता क्रम के अनुसार संकाय द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है संकाय में आमन्त्रित व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया, और विभागीय सदस्यों को भी अन्य विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया गया।

सत्र १९९५–९६ के प्रवेशानुसार छात्र संख्या निम्न रही–

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी.एससी. प्रथम	बायो	४०
बी.एससी. प्रथम	ई. माइक्रो.	२६
बी.एससी. द्वितीय	बायो	५७
बी.एससी. तृतीय	बायो	५५
एम.एससी. प्रथम	माइक्रो.	१८
एम.एससी. द्वितीय	माइक्रो.	११
एम.एससी. प्रथम	पर्यावरण	१२

वार्षिक प्रगति विवरण सत्र 1995–96

गणित विभाग

बी.एससी. प्रथम वर्ष तथा एम.एससी. प्रथम वर्ष में नये छात्रों के प्रवेश लेने के बाद कक्षाएं प्रारम्भ हुई। छात्रों को अधिक से अधिक अध्ययन के लिए प्रेरित किया गया एवं छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों का भी निराकरण विभाग के शिक्षकों द्वारा किया गया।

विभाग द्वारा ३१ अगस्त १९९५ को "Vedic Geometry and its Relevance to Science and Technology" पर National Symposium का आयोजन हुआ जिसमें प्रोफेसर जी.एस. पान्डेय, सेवानिवृत अध्यक्ष, गणित अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन मुख्य अतिथि थे। इसमें प्रोफेसर वी.पी. सक्सेना, अध्यक्ष, गणित अध्ययनशाला जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने 'प्राचीन भारतीय गणित में ज्यामिति' विषय पर अति महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर श्याम लाल सिंह व डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा के सह निर्देशकत्व में आयोजित इस सिम्पोजियम में विभागीय शिक्षकों तथा अपने विश्वविद्यालय के प्रोफेसर भारत भूषण व डॉ. मनुदेव बन्धु के अतिरिक्त श्री विनोद मिश्र (लोगोंवाल–पंजाब), डॉ. महेश चन्द्र (पंत नगर), डॉ. सत्यनारायण पान्डेय (ऋषिकेश), डॉ. अशोक कुमार अग्रवाल (नजीबाबाद) आदि ने अपने भाषण दिये तथा शोध पत्र प्रस्तुत किये।

यह उल्लेखनीय है कि ३१ अगस्त १९९५ को ही प्रोफेसर विजय पाल सिंह, रीडर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय से सेवा निवृत हुए। इस अवसर पर उन्हें एवं प्रोफेसर जी.एस. पान्डेय व प्रोफेसर वी.पी. सक्सेना को विभाग द्वारा सम्मानित किया गया।

२६ फरवरी १९९६ को विभाग द्वारा "Applications of Mathematics in daily life" विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एम.सी. गुप्ता का लोकप्रिय व्याख्यान हुआ जिसकी छात्रों एवं अध्यापकों ने भूरि–भूरि प्रशंसा की।

विभाग द्वारा १४ मार्च १९९६ को कम्प्यूटर विभाग के सहयोग से "Mathematics and computers" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध प्रोफेसर डॉ. एस.पी. सिंह का व्याख्यान हुआ।

विभाग के शिक्षकों द्वारा सत्र ९५–९६ में किये गये कतिपय शैक्षणिक कार्यो का विवरण निम्नवत् है:

प्रो. श्याम लाल सिंह

१. सम्मान

१ (अ) रामानुज मैथमेटिकल सोसाइटी ने अपने १०वें कन्वेनशन (१९९५) में गणित के प्रति योगदान तथा सोसाइटी तथा गणित के प्रति की गयी सेवाओं के लिए प्रो. श्याम लाल सिंह

को सम्मानित किया।

१ (ब) विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया (वी.पी.आई.) ने अपनी सिल्वर जुबली कोनफरेन्स (१९९६) के अवसर पर परिषद् तथा गणित के प्रति विशिष्ट सेवाओं के लिए प्रो. श्याम लाल सिंह को सम्मानित किया।

२. विदेश यात्राएँ

२ (अ) आई.एन.एस.ए– एस.ए.एस एक्सचेंज कार्यक्रम के अर्न्तगत स्लोवाकिया की २–सप्ताह (सितम्बर १९९५) की यात्रा की तथा वहाँ वैदिक ज्यामिति एवं अन्य विषयों पर भाषण दिया।

२ (ब) सितम्बर – अक्टूबर १९९५ मूँ पोलेंड की २५ दिवसीय यात्रा की। इस अवधि में वहाँ के विभिन्न विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिए। इसी अवधि में प्रतिष्ठित पोलिश गणितज्ञ प्रो.जे. मतकोवस्की के साथ कुछ शोध पत्रों को पूर्ण किया।

३. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ कुछ शोध पत्र स्वीकृत हुए।

४. स्लोवाक अकादमी आफ साइंसेज कुछ पोलिश विश्वविद्यालयों, गणित–सांख्यिकी संस्थान देहरादून तथा कुछ भारतीय विश्वविद्यालयों में वैदिक ज्यामिति तथा प्राचीन भारतीय गणित पर व्याख्यान दिए।

डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा (विभागाध्यक्ष)

विभागीय कार्य सम्पन्न करवाने के अतिरिक्त विभाग द्वारा आयोजित नेशनल सिम्पोजियम में शोध पत्र प्रस्तुत किये। एक शोध पत्र नार्थ बंगाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित नेशनल सिम्पोजियम में पोस्टर प्रजेन्टेशन के लिए स्वीकृत किया गया।। इस शोध पत्र के 'नोर्थ बंगाल विश्वविद्यालय रिव्यु' शोध पत्रिका में भी प्रकाशित होने की संभावना है।

डॉ. विजयेन्द्र कुमार

विभाग द्वारा संचालित दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की अधिकांश युनिटें तैयार की। विभाग द्वारा आयोजित सिम्पोजिमय में भाग लिया। कुछ शोध पत्र भी प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

डॉ. महीपाल सिंह

विभाग द्वारा आयोजित सिम्पोजियम में भाग लिया। एक शोध पत्र हैदरावाद में आयोजित कोनफरेन्स में प्रस्तुत किया। कुछ अन्य शोध पत्र भी प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुए।

डॉ. हरबंश लाल गुलाटी

दूरस्थ शिक्षा प्रोग्राम के लिए युनिटें तैयार की। विभाग द्वारा आयोजित सिम्पोजियम में भाग लिया।

डॉ. रमेश चन्द

दूरस्थ शिक्षा प्रोग्राम की युनिटें तैयार की। विभाग में आयोजित नेशनल सिम्पोजियम में शोध प्रस्तुत किया। कुछ शोध पत्र प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुए।

श्री विवेक गोयल

दूरस्थ शिक्षा प्रोग्राम की कुछ युनिटें तैयार की। विभाग द्वारा आयोजित नेशनल सिम्पोजियम में शोध पत्र प्रस्तुत किया। एक शोध पत्र, गणित विभाग, युनिवर्सिटी आफ नोर्थ बंगाल द्वारा आयोजित सिम्पोजियम में पोस्टर प्रजेन्टेशन के लिए स्वीकृत किया गया। डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा के निर्देशन में पीएच.डी. के लिए पंजीकृत है।

श्री राकेश कुमार गुप्ता

दूरस्थ शिक्षा प्रोग्राम की युनिटें तैयार की। अन्य विभागीय शैक्षिक गतिविधियों में भाग लिया।

वार्षिक विवरण–1995–96

भौतिकी विभाग गु.कां.वि.

भौतिकी विभाग में बी.एससी., एम.एससी, कक्षाओं के लिए अध्यापन तथा शोधकार्य के लिये प्राविधान है।

एम.एससी. कक्षाओं में Applied Electronics के दो Special Paper हैं:–

(a) Digital Electronics.

(b) Microprocesser Theory and Application.

चक्रीय क्रम में १ जुलाई १९९५ से डॉ. राजेन्द्र कुमार, रीडर, भौतिकी विभाग में अध्यक्ष पद का कार्य कर रहे हैं।

अब तक विभाग में तीन प्रयोगशालायें थी, इस सत्र में एक अतिरिक्त प्रयोगशाला का निर्माण हुआ,

विभाग में शोधकार्य के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय एवं रुड़की विश्वविद्यालय से भी सहयोग प्राप्त हो रहा है।

इस सत्र में शोध की बैठक डॉ. राजेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में दिनांक १२–१२–१९९५ को सम्पन्न हुई जिसमें ०५ (पांच) शोधार्थियों को पंजीकरण हेतु स्वीकृति प्रदान की गयी।

इस सत्र में विभाग के शिक्षकों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये जिनका विवरण इस प्रकार है:

(१) डॉ. बी.पी. शुक्ल–	National Seminar on Scientific, Technical and Engineering . Knowledge in Sanskrit Literature (11-13 oct, 1995) Modern Rashtriya Sanskrit Sansthan N. Delhi.	Mayavad & physics
(२) डॉ. पी.पी. पाठक–	National space. Science Symposium Osmania University Hydrabad (6-10 Feb, 1996)	Faster growth model of streamer change for higher frequency Radiation

इस सत्र में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत भौतिकी विषय में बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की कक्षायें प्रारम्भ की गयी।

भौतिक विभाग में एम–एससी. कक्षाओं में सामान्य पाठ्यक्रम के अतिरिक्त "वैदिक भौतिकी" का पाठ्यक्रम भी चल रहा है। इस प्रकार का पाठ्यक्रम सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यलाय द्वारा प्रारम्भ किया गया है। वैदिक भौतिकी के क्षेत्र में शोध कार्य भी प्रगति पर है।

रसायन विज्ञान विभाग

सामान्य विवरण

गत ५ वर्षों में रसायन विभाग में छात्र संख्या २०० से बढ़कर लगभग ५५० हो चुकी है। एम.एससी. में छात्र संख्या कुल ४० हो गयी है। कुल ८ शोध छात्र विभाग में कार्यरत है। वर्ष १९९५–९६ में उपरोक्त प्रगति को देखते हुए प्रशासन द्वारा विभागीय ग्रान्ट बढ़ाई गयी।

विभाग में चल रहा एम.एससी. कोर्स एक आधुनिक व रोजगारोन्मुख कार्यक्रम है जिसका स्पेशियलाइजेशन "कामर्शियल मेथड्स आफ कैमिकल एनेलिसिस" में है। इसमें छात्रों को अत्याधुनिक उपकरणों व तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे उन्हें रोजगार के अवसर सुलभ हो जाते हैं।

रसायन विभाग

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (महिला शिक्षा संभाग, गु.कां. वि.) की स्थापना

कुलपति जी के निर्देशानुसार डॉ. आर.डी. कौशिक की अध्यक्षता में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में रसायान विभाग की स्थापना वर्ष १९९५–९६ में ही की गई। लैब निर्माण व आधुनिकतम उपकरणों से उसे सुसज्जित किया गया। इस विभाग में भी एम.एससी. (कामर्शियल मैथड्स आफ कैमिकल एनेलिसिस) एक रोजगारोन्मुख कार्यक्रम, क्षेत्रीय मांग को देखते हुए चलाया गया है। इस पाठ्यक्रम में १३ छात्राओं को प्रवेश दिया गया है। इस समय एम.एससी. द्वितीय वर्ष की प्रयोगशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

वर्ष १९९५–९६ में शोध उपाधि समिति व पाठ्यक्रम समिति की बैठक की गई। विभागीय बी.एससी. व एम.एससी पाठ्यक्रमों में संशोधन किया गया। आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा प्रयोगात्मक परीक्षायें यथा समय कराई गई, जिसके फलस्वरूप विशेषकर एम.एससी. (रसायन) का सत्र नियमित कर दिया गया।

विभागीय पुस्तकालय

रसायन विभाग के पुस्तकालय में कुल ५२८ पुस्तकें हैं जिनका उपयोग एम.एससी. व शोध छात्रों के अतिरिक्त शिक्षकों द्वारा भी किया जाता है। वर्ष १९९५–९६ में डॉ. श्री कृष्ण विभागीय पुस्तकालय के इन्चार्ज रहे। विभागीय पुस्तकालय कक्ष का निर्माण अभी विचाराधीन है।

डॉ. आर.डी. कौशिक

१. डॉ. कौशिक के निर्देशन में दो एम.एससी. छात्रों ने डिसर्टेशन कार्यपूर्ण किया। अभी दो अन्य छात्र डिसर्टेशन कार्य कर रहे हैं।

२. शोध छात्र निर्देशनः ४ शोध छात्र अपनी पी–एच.डी. की उपाधि हेतु कार्यरत हैं।

३. शोध परियोजनाः यू.जी.सी. शोध परियोजना "Kineties and mechanism of periodate oxidation of compounds of physiological importance" स्वीकृत हुआ। इस पर कार्य चल रहा है।

४. शोध पत्रः एक शोध पत्र प्रकाशनार्थ भेजा गया।

५. डॉ. कौशिक ने संयोजक बोर्ड आफ स्टडीज, संयोजक शोध उपाधि समिति, विभागाधक्ष, सदस्य बी.एससी. प्रवेश समिति व संयोजक एम.एससी. प्रवेश समिति के रूप में १९९५–९६ में कार्य किया।

डॉ. आर.के. पालीवाल

१. डॉ. पालीवाल के निर्देशन में दो एम.एससी. छात्रों ने अपना डिसर्टेशन कार्य पूर्ण किया। दो अन्य छात्रों का कार्य प्रगति पर है।

२. परीक्षा उड़न दस्ते के सदस्य के रूप में कार्य किया।

३. विश्वविद्यलय की अनुशासन समिति में प्रोक्टर का कार्य किया।

डॉ. ए.के. इन्द्रायण

१. डॉ. इन्द्रायण के निर्देशन में दो एम.एससी. छात्रों ने डिसर्टेशन कार्य पूर्ण किया व दो अन्य का कार्य प्रगति पर है।

२. एक शोध छात्र ने पीएच.डी. थीसिस प्रस्तुत की व एक अन्य शोध छात्रा कार्य कर रही है।

३. यू.जी.सी. शोध परियोजना का कार्य पूर्ण किया।

४. आकाशवाणी नजीबाबाद से सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का संचालन, व विश्वविद्यलाय में स्वतन्त्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों का संचालन किया।

५. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह पर एक निबन्ध प्रतियोगिता, साइंस क्विज, पोस्टर व कार्टून प्रदर्शनी का संयोजन किया।

६. प्रकाशन कार्य

डॉ. इन्द्रायण की पुस्तक "Fundamentals in chemistry" का तृतीय संस्करण प्रकाशित हुआ निम्न शोध पत्र प्रकाशनार्थ/प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुए।

(i) "Silver (II) Bipyridyl complex-Development as a Redox titrant," R.K. Shukla & A.K. Indrayan, Asian Journal of chemistry 7 (645) 1995.

(ii) Spectrophotometric Studies on silver (II)- Pyrazine Complex", Annual Conference of India council of Chemistry Bombay Abs I0-39, p-59 (1995).

डॉ. कौशल कुमार

1. M.Sc. Chemistry के दो छात्रों ने अपने–अपने डिसर्टेशन कार्य डॉ. कौशल कुमार के निर्देशन में पूरे किये व अन्य छात्र कार्यरत हैं।

2. शोध पत्रः IV International Congress on Traditional Asian Medicines, टोक्यो जापान में पढ़े गये शोध पत्र "Chemistry of Traditional Recepies used in Hepatic disorders" का The Eastern Institute, Tokyo, Japan के जनरल "TOHO" में प्रकाशन हुआ।

3. दो छात्र Ph.D. हेतु शोध कार्यरत हैं।

4. १४ फरवरी ९६ को जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यलाय नई दिल्ली में "NEHRU WOULD NEVER HAVE APPROVED THE ONGOING ECONOMIC REFORMS" विषय पर आयोजित Inter University Trophy debate में गु.कां.वि.वि. के प्रतिनिधित्व हेतु छात्रों का मार्गदर्शन किया।
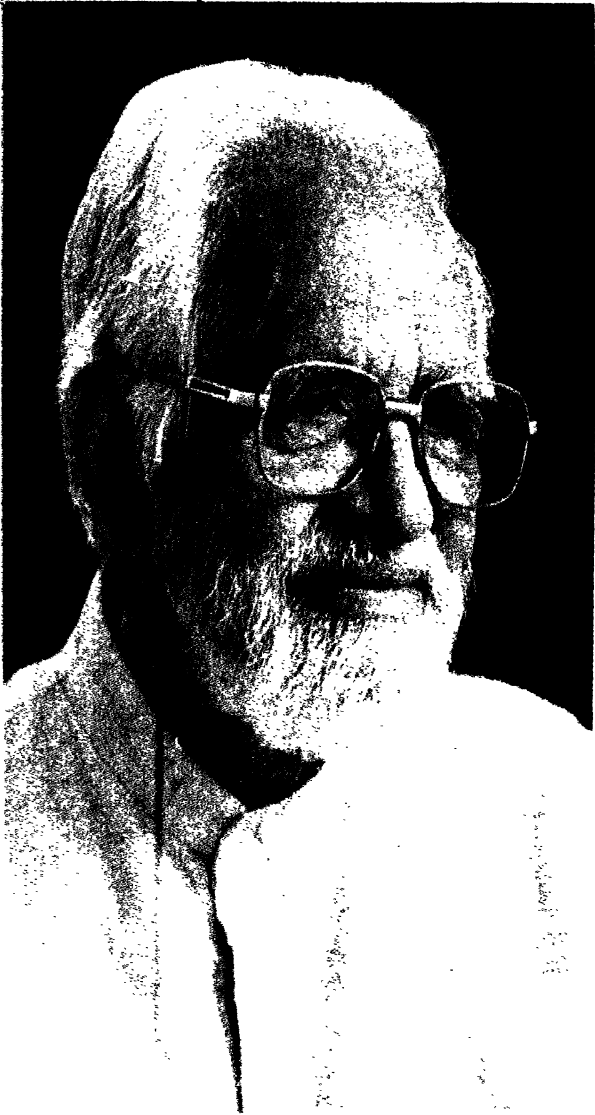
'हिन्दी की विभूति'', उ.प्र हिन्दी संस्थान द्वारा भारत भारती सम्मान से सद्य.
सम्मानित विश्वविद्यालय के यशस्वी शिष्ट परिषद् सदस्य प्रो विजयेन्द्र स्नातक

शोभा यात्रा में शामिल छात्र

डॉ. रणधीर सिंह

डॉ. सिंह ने सन् १९९४ में अमरीका में स्थित केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के लॉस ऐजेल्स में रिसर्च एसोसियेट के पद का आमन्त्रण स्वीकार किया। उनहोंने वहां बायो कैमिस्ट्री विभाग में लगभग दो वर्ष तक रिसर्च कार्य किया तथा वहां की विकसित टेक्नोलॉजी में ट्रेनिंग ली। जिसका लाभ आने वाले समय में हमारे छात्रों को होगा। डॉ. सिंह ने अपना शोध कार्य प्रकाशित होने के लिए अमरीका के Journal में भेजा है। अब डॉ. सिंह ने रसायन विज्ञान विभाग में Join करके विभाग के विकास में अपना समय प्रदान करना शुरू कर दिया है। इससे विभाग के विकास में और भी प्रगति होगी।

शोध छात्र निर्देशन–

एक शोध छात्र अपनी शोध उपाधि हेतु कार्यरत है।

शोध परियोजना–

यू.जी.सी. शोध परियोजना Synthetic Kinetic and Electrochemical studies of Macro cyclic complexes, एक रिसर्च एसोसिएट सहित स्वीकृत हुआ। जिसके कार्यान्वयन के लिए यू.जी.सी. से पत्राचार जारी है।

डॉ. श्री कृष्ण–

१. दो एमएस.सी. छात्रों ने डॉ. श्री कृष्ण के निर्देशन में डिसर्टेशन का कार्य किया। दो अन्य छात्र उक्त उद्देश्य से कार्यरत हैं।

२. विभागीय पुस्तकालय इंचार्ज के रूप में कार्य किया।

३. विभागीय सामग्री क्रय करने आदि में सहयोग किया।

जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग

वार्षिक विवरण–1995–96

अपने स्थापना काल सन् १९६१ से लेकर अब तक जन्तु विज्ञान विभाग ने उन्नति के अनेक सोपान पार किये हैं। सन १९८४ में यू.जी.सी. द्वारा जन्तु (एवं वनस्पति विज्ञान) विभाग दोनों को संयुक्त रूप से एम.एस.सी. माइक्रो बायोलोजी दी गई। तब से लगातार इस विभाग द्वारा माइक्रोबाइयोलॉजी (एम.एससी.) कक्षाओं को पढ़ाया जा रहा है एवं निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। विभाग की नीतियों के कारण माइक्रोबायोलॉजी के छात्रों को लघुशोध प्रबन्ध लगातार कराये जाते रहे हैं। इस विभाग में किये गये लघुशोध प्रबन्ध के कारण यहाँ के छात्र देश–विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों में उच्च पदों पर आसीन हैं। तथा क्लीनिकल माइक्रोबायोलोजी के कारण बहुत से छात्र स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत अपनी–अपनी पैथोलोजी एवं माइक्रोबायोलो!जी लैब चला रहे हैं व सम्मानित रूप से धनोपार्जन कर रहे हैं।

छात्रों की पुरजोर मांग है कि एम.एस.सी कक्षाओं में इस विभाग द्वारा क्लीनिकल एवं पैथोलोजिकल माइक्रोबायोलोजी भी प्रारम्भ की जाय। सत्र ९५–९६ में विभाग की प्रगति विशेषरूप से उल्लेखनीय है। इस सत्र में विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा लगभग ४० लाख रूपये का अनुदान एम.एस.सी. इनवायरनमैंटल साईन्स कोर्स एवं कम्प्यूटर एप्लीकेशन कोर्स हेतु स्वीकृत हुआ, यह बात हमारे लिऐ गौरव की है कि यू.जी.सी. ने कुछ चुनिंदा विश्वविद्यालयों/विभागों में से हमारे विभाग का भी चयन उक्त कोर्स हेतु किया, इसका श्रेय वर्तमान कुलपति डा० धर्मपाल, प्रो. बी.डी. जोशी वर्तमान डीन एवं विभागाध्यक्ष तथा डॉ. ए.के. चोपड़ा को जाता है जिनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप उक्त दोनों कोर्स विभाग को स्वीकृत हुए, हैं। इसी सत्र से M.Sc. Environmental Science Course का शुभारम्भ हो चुका है, साढ़े पांत्र लाख रुपये की प्रथम किस्त भी यू.जी.सी. द्वारा रिलीज की जा चुकी है जिस अनुदान से उक्त कोर्स हेतु अत्याधुनिक उपकरण क्रय किये जा चुके हैं, भवन निर्माण हेतु प्रक्रिया प्रगति पर है, कम्प्यूटर एप्लीकेशन कोर्स हेतु ६.१५ लाख रुपये की राशि प्राप्त हो चुकी है। M.Sc. Enviromental Science Course के छात्रों को विशेष रूप से लाभान्वित करने हेतु देश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों से विषय विशेषज्ञों द्वारा नवीनतम जानकारी विभिन्न व्याख्यानों द्वारा प्रदान की गई, जिन विद्वानों द्वारा व्याख्यान दिये गये उनके नाम हैं: चाइल्ड लाइफ इन्सटीट्यूट, देहरादून से डॉ. सुशान्त चौधरी एवं डॉ. सुगातौ, दिल्ली वि.वि. से प्रो. आर.एन. सक्सेना, जम्मू वि.वि. से प्रो. एम.के. ज्योति एवं डॉ. कुलदीप शर्मा, मगध वि.वि. बोधगया से प्रो. वी.एन. पान्डेय, एम.डी., वि.वि. रोहतक से प्रो. के. वी. शास्त्री एवं प्रो. रविप्रकाश, अवध विश्वविद्यालय से डॉ. जी.सी. पान्डे, पंजाब वि.वि. चण्डीगढ़ से डॉ. शर्मा, इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ फारेस्ट मैनेजमेंट, भोपाल से प्रो. मलकानिया, गढ़वाल वि.वि. से प्रो. हरस्वरूप सक्सेना व डॉ. जी.एस. रजवार।

एम.एससी. इनवायरनमेंटल कोर्स हेतु यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत पदों पर निम्न दो शिक्षकों

का चयन भी वि.वि. द्वारा इसी सत्र में कर दिया गया है।

१. रीडर डॉ. दिनेश भट्ट

२. प्रवक्ता डॉ. पी.सी. जोशी

माह अक्टूबर में विभाग ने "इन्डियन एकेडमी आफ इन्वायरनमेंटल साइंसेज" के सहयोग से "पर्यावरण परिवर्तन का जैविक विविधता पर प्रभाव" नामक विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें देश के करीब २५ वैज्ञानिकों ने भाग लिया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के अवसर पर कुलपति डॉ. धर्मपाल (मुख्य अतिथि), जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मल्होत्रा (विशिष्ट अतिथि) प्रो. वी.डी. जोशी (कन्वीनर) सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा अपने ही प्रयास से एक शोध पत्रिका "Himalayan Journal of Environment & Zoology" का नियमित प्रकाशन विगत ६ वर्षों से लगातार हो रहा है जिसकी शिक्षा जगत में ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर बढ़ती जा रही है।

इसके अलावा विभाग में विभिन्न शोध परियोजनाओं पर कार्य प्रगति पर है और बी.एससी. (साधारण), बी.एससी. (आर्नस, जूलौजी), एम.एससी. (माइक्रो बायलोजी), एम.एससी. (पर्यावरण विज्ञान) की कक्षाएं सुचारू रूप से चल रही हैं।

विभागीय प्राध्यापकों द्वारा इस सत्र में किये कुछ विशिष्ट क्रियाकलाप निम्न प्रकार हैं:-

(१) डॉ. वी.डी. जोशी-प्रोफेसरः

प्रो. जोशी माइक्रोबायलोजी विषय के कोर्डिनेटर हैं। इनके निदेशन में विषय प्रगति पर है और छात्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुल का यश फैला रहे हैं। निम्न दो छात्रों ने इनके सुपरविजन में अपना लघु शोध प्रबन्ध का कार्य पूर्ण किया।

१. श्री कालिका प्रसाद कोठारी २. श्री पुनीत कुलश्रेष्ठ अन्य छात्रों (१) श्री अमित कौशिक एवम् (२) श्री अमित उपाध्याय का शोध कार्य प्रगति पर है।

During the academic/sessionof 1995-96, Prof. B.D. Joshi was in following of the activities, beside his routine duties of teaching in the faculty:

1. Prof. Joshi attended the following four congress held during the academic year:

(i) Zoological Society of India Congress, held at Durdwan University Burdawan, during September 1995 and deliv red one key Note address.

(ii) Thirteenth National Congress of Society of Bioscienceas of India, held at Meerut University in December 1995.

(iii) Attended Indian National Science Congress Association's 92 Convention, held at Punjabi University, Patiala and delivered an invited Guest Lecture on the Status of Eco-biology of river Ganga bhagirathi in Garhwal Himalayas, in the first week of January 1996.

(iv) Attended IV International Congress of Indian Institute of Ecology and Environment, and delivered one special lecture on the Vedic precepts of environment, in the third week of January 1996.

2. Professor Joshi acted as resource person for a five day National Workship, on Aqua Culture organised by the Dept. of Zoology, Punjab University, Chandigarh, in

September 1995 and delivered a special lecture on the Fish Deseases.

3. Delivered an invitee lecture to refresher course teachers in Zoology at the Dept. of Zoology, Kurukshetra University, Kurukshetra, in October 1995.

4. Professor Joshi was awarded Honorary Fellowship of the following organisations, in recognition of his contributions to the field of Zoology and Environmental Sciences:

(i) Zoological Society of India (F.Z.S.I.)

(ii) The Global open University, (Milan Italy)-(F.T.G.O.U.)

5. Prof. Joshi has been nominated as an expert member in the Governing Body of Prof. Henryk Skolimivasky Centre for Eco-philosophy by its Chancellor.

6. Prof. Joshi has been nominated in the academic council of I.I.E.E. Delhi.

7. Prof. Joshi has been apolinted as the founder Co-ordinator of distance Education Programm (D.E.P.) of G.K.V., from the academic session of 1995-96 a programme which he has seeded with grand success.

8. Prof. Joshi has also taken over a University Co-ordinator since Aug. 1995 of N.S.S., a programme which he established in this V.V. in 1982.

9. Prof. Joshi organised a National Seminar on the "Impact of Changing Environment of animal bio-diversity"- in Sept. 1995, and acted as its Director. The programme was sponsored by Directorate of Environment U.P., Lucknow.

10. Prof. Joshi organised a two days district level essay and paintings competetion and exhibition, in Sept, 1995 co-sponsored by Ind. Aca, Env. Science, Hardwar and Directorate of Environment, U.P., Lucknow.

11. Prof. Joshi continues to be:

(i) Editor in Chief of Himalayan Journal of Environment and Zoology.

(ii) President, Ind. Acad. Env. Sci., Hardwar

(iii) Chief Proctor, G.K.V. Hardwar.

(iv) Convenor flying Squad of G.K.V. Examinations

12. Prof. Joshi has participated in various meetings as an subject expert of the following organisations and Universities:

(i) U.G.C. Committee on Emarging areas in education-for environmental sciences.

(ii) Himalayan ecology, G.B.G.I.H.E.D., Almora.

(iii) B.O.S. and R.D.C. of Garhwal, University, Jiwaji university, Avadh University and Bhopal University.

13. Prof. Joshi acted as an expert member in various committees of Rajasthan Agricultural University, Bikaner, Jammu University Jammu, L.N.Mithila University, Darbhanga.

14. Prof. Joshi organised a district level essay competetion on Role of youth in Aids Prevention, under U.T.A., in G.K.V., during March 1996.

15. Two major research projects from U.G.C. and G.B.P.I.H.E.D. are currently in progress under the supervision of prof. Joshi.

16. Two students have been awarded (Sri V.P. Semwal and Sri R.K. Soni have been awarded Ph. D. degree under the guidance of prof. Joshi.

17. This year two students in Zoology and one student in Microbiology got their registration for ph.D. under the guidance of prof. Joshi.

18. Prof. Joshi published two research papers during the current academic year in two national journals.

डॉ. टी.आर. सेठ–रीडर–

डॉ. सेठ द्वारा विभागीय एवं वि.वि. क्रिया कलापों में सक्रिय योगदान दिया गया, आपने विज्ञान संकाय की वार्षिक परीक्षा में सहायक–परीक्षाध्यक्ष का कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डॉ. सेठ विभिन्न वि.वि. की परीक्षाओं में परीक्षक हैं।

डॉ. ए.के. चोपड़ा रीडर एवं विभागाध्यक्ष–

इस सत्र में डॉ. चोपडा ने विश्वविद्यालय एवं विभागीय प्रगति हेतु अनेक कार्य किये, उनके कुछ क्रिया–कलापों का ब्यौरा निम्नवत है:

Research papers/Scientific articles:

1. Chopra, A.K. & Singh, H.R. (1995). Diseases of coldwater fishes. Advances in Aquaculture, (In Print)

2. Srivastava, N., Nigam, S.C. Chopra, A.K. 1995. Changes in Aminotransferase Activity of Some Freshwater snails during Larval Trematode Infection. Revista Di Parassitologia (In Print)

3. Chopra, A.K. 1995. Rogoan Ke Safai Mein Shayak Kein Machliyan. March 24, Amar Ujala, p 4

4. Chopra. A.K. 1993. Seesa Vishabtata Vigyan Gasima Sindhu New Delhi, Val. 15.1.94

M.Sc. Dissertation Completed:

1. Antimicrobial Efficacy of Selected Dry Formulation Against Staphylococcus epidermidis - Mr. Deepal Vats

2. In vitro Antimicrobial Sensitivity of Different Antibiotics Against Escherichia Escherichia Coli, a common cause of Urinary Tract Infection-Mr. Ashwani Kumar

Ph. D Dissertation Completed:

'A Study on Epidemiology and Pathology of Parasitic Diseases of Human Beings at Hardwar- Mr. Ravi Kant

Other Activities:

(i) An Executive-editor of Him. J. Env. Zoolo. Since 1987

(ii) As Programme Coordinator of NSS upto Sepember, 1996

डॉ. दिनेश भट्ट रीडर–

(१) डॉ. भट्ट ने Environment and Bird नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया एवं निम्न तीन शोध पत्र प्रस्तुत किये:

(i) Some Aspects of the Territorial Behaviour of the Magpie-Robin

(ii) Preliminary obserrations on calls & songs in Magpie-Robin

(iii) Nest site selection and Nesting in spotted mubia in urbanised habitat

(२) "पर्यावरण परिवर्तन का जैविक विविधता पर प्रभाव" नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी ने निम्न शोध पत्र प्रस्तुत किया।

(i) Diversity in Nesting behaviour in a Tropical avain species.

(3) Ph. D. Work: तीन शोध–कर्ताओं (1) Ms. Myera Shah, (ii) Mr. R.C. Sharma & (iii) Mr Anil Kumar का शोध कार्य डॉ. भट्ट के सुपरविजन से प्रगति पर है।

(4) Project: Sociobiology of Some Avain species नामक विषय पर U.G.C. प्रोजेक्ट स्वीकृत है जिस पर शोध कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।

(5) Editing Work: Managing Editor "Himalayan Journal of Environment & Zoology.

(6) M.Sc. Dissertation: Mr. Amit Singh ने डा०भट्ट के सुपरविजन में अपना लघुशोध प्रबंध पूर्ण किया व छात्र सुबोध कुमार का कार्य प्रगति पर है।

डॉ. डी.आर. खन्ना: प्रवक्ता:

डॉ. खन्ना ने विभागीय एवं विश्वविद्यालय के क्रिया कलापों में अपना सक्रिय योगदान दिया।

(१) विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "Impact of Changing Environment on Animal Bioliversity" के संचालन में सक्रिय योगदान दिया व शोध–पत्र वाचन किया।

(2) N.S.S. के नियमित क्रिया–कलापों में छात्रों का मार्ग निर्देशन किया व दस दिवसीय विशेष शिविर का सफल आयोजन किया।

(३) एम.एससी. लघु शोध प्रबंध दो छात्रों द्वारा निम्न विषयों पर डॉ. खन्ना के सुपरविजन में जमा किये गये।

(i) रविन्द्र वैश्य- Physico-Chemical & Microbial Study of Sevage Waten of a Treatment Plant at Jagjeetpur Hardwar.

(ii) उमेश कुमार: Compartive Microbial sutdy of Different Ponds at Hardwar.

वार्षिक प्रगति विवरण 1995–96

वनस्पति विज्ञान विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शैक्षणिक सत्र १९९५–९६ में विभाग में बी.एससी. एवं एम.एससी. माईक्रोबायोलॉजी कक्षाओं का अध्यापन कार्य सुचारू रूप से पूर्ण हुआ।

डॉ. पुरुषौत्तम कौशिक–

१. गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय अमृतसर में १४ एवं १५ मार्च १९९५, दो दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी "पर्यावरण एवं विकास" में भाग लिया और एक तकनीकी स्तर की अध्यक्षता की।

२. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में आयोजित दिनांक २५ मार्च से २७ मार्च १९९५ तक "डवलपमेण्टल बायोलॉजी" विषयक संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किया।

३. डॉ. कौशिक ने "एकेडेमी आफ प्लान्ट साइन्सेज" डी.ए.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर में राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी स्तर में नाट लेक्चर दिया।

डॉ. जी.पी. गुप्ता–

विभाग में अध्ययन कार्य में अतिरिक्त योगदान किया।

Professor D.K. Maheshwari

Acting as Dean, student welfare.

Convenor, Ved-Vigyan Sammelan, on the eve of 96th Annual function of Gurukul Kangri University.

Acted as UGC expert to visit Delhi University during UGC-JRF and Lecturership eligibility examination.

Invited to deliver leeture in Vedic Sammelan organised by Delhi Sanskrit Academy, Delhi.

Invited to deliver leeture during Silver Jubilee Celebrations of Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi.

Elected member, Editiorial board, Journal of Indian Botanical Society.

Included in International Leaders in Achievement, International Biographical 1996, Cambridge UK.

Conferred Gold record of achievement 1996, by American Biographical Institute.

Nominated member, New York Academyof Sciences, New York, USA.

Selected and participated in INSA Bilateral exchnage programme for Germany.

Invited as Viciting Professor, Department of Mircobiology, University of Ulm, Germany.

Expert faculty member, Rohilkhand University, Breilly and subject expert in board of studies, Microbiology subject at H.S. Gour University, Sagar, M.D.S. University

Ajmer while in Biological Science subject, at R.D. University, Jabalpur.

Delivered invited leturecs in 'Refresher Courses' at R.D. University, Jabalpur, H.S. University, Sagar.

Member, Haryana Council of Science and Technology, Chandigarh.

Invited as expert to set up Biotechnology Centre at M.P. Council of Science and echnology, Bhopal.

Research Project (in hand): 03

(A) Bioconversion residus into Microbial biomass protein by some Lignocellulytic Fuegi and possibilit of Involunment of Nitrogar Fixing microogranism, funded by University Grant Commission, New Delhi.

(B) Biopesticidal control of certain tropical diseases associated with oil seed crops, sponsored by Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi.

(C) Occurrence, identification and screening of aquatic macrophytes for energy generation and through biomass production of some fuel wood species in substandard soil funded by Council of Science and Technology, Lucknow (U.P.).

Project submitted:

1. Microbial Technology in the Biofertilizer of certain medicinal plents for financial assistance from Department of Science & Technology, Minsitry of Science and Technology, New Delhi.

2. Strengthening of Botanical gardens at Department of Botany, Gurukul Kangri University, Hardwar-249 404 for financial assistance from Ministry of Environmental & Forest, New Delhi.

Publications:

1. Bradyrhizobium japonicum growth, characteristrics, nobule formation, leghaemoglobin synthesis, and nitrogenase activity in Glycine max var. JS-72-44. Jour ind bot soc 74A 159-163 (1995).

2. Effect of storage temperature on biofertilizer preparation for tree legume. Jour Ind Bot Soc (1996) (IN PRESS).

3. The influence of nitrogen sources on cellulase biosynthesis in Trichoderma pilueifera. Mycological Research (Communicated).

4. Bioconversion of paper mill slugde by mixed cultivation of Trichoderma pseudokoningii and Aspergillus niger. Journal of Basic Microbiology (Communicated).

5. Influence of inoculation and nitrogen fertilizer on nitrogenase activity and nodule fromation in soybeas. NZ Journal of Agricultural Research (communicated).

Dr. Navneet-Lecturer

1. He has been admitted as a Fello of the Indian Botanical Society (F.B.S.) at the Annual Meeting held on 19th of October, 1995 for contributions in Microbiology.

2. A paper entitled, "Chemical cantrol of Phytophthora from India" published in platinum Jubilee Valuma of Indian Botanical Society, 74 (A): 115-126, 1995.

3. A paper entitled, "Effect of fungicides Dithane M-45 and Ridomil on the phylloylane microflora of potato "has been accepted for publication in Journal of

Indian Botanical Society, Vol. 75,1995.

4. A dissertation entitled. "Studies on the role of microflora of Woodfordia fruticosa Kurz. In the preparation of Ashwagandharishta " has been submitted by Mr. Anshuman under guidance and supervision.

5. A research project entitled, " Studies on the antimicrobial properties of Vedic Yogya" has been submitted to Department of Science & Technology for finacial assistance.

6. Member of selection committee of Volley ball team, Gurukul Kangri University, Hardwar.

7. Member of organising committee to celebrate the National Science Day held on 28/2/96.

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा के विस्तार के लिए विगत आठ वर्षों से निरन्तर प्रयास कर रहा है।

विभाग को सत्र ६४–६५ की उपलब्धियों का विवरण निम्न प्रकार है:

१. नये पाठ्यक्रमों का समावेश–

सुदूर शिक्षा के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर कम्प्यूटर पाठ्य क्रम लागू किया गया तथा यह प्रयोग अन्ततः सफल रहा।

२. शोध पत्रों का प्रकाशन–

डॉ. विनोद कुमार–

(i) लेखक डॉ. विनोद कुमार (सह लेखक एम.पी. सिंह एवं पी.के. यादव)

An Efficient Algorithm for Multiprocessor Schiduting with Dynomic Re- assignment IEEE Trans. Software Engineering (Communicated)

(ii) लेखक डॉ. विनोद कुमार (सहलेखक एम.पी. सिंह एवं पी.के. यादव)

"A Fast Algorithm for allocating Tasks in distributed Processing systems", Proceeding of the 30th Annual Convention of Computer Society of India, held at Hyderabad from Nov. 9-12, 1995, pp. 347-358.

(iii) लेखक डॉ. विनोद कुमार

"Vedic Geometry and its Impact on Modern Computer Technology", Presented at the National Symposium on Vedic Geometry and its relevence to Science and Technology, Organized by Deptt. of Mathematics, G.K.V. Hardwar, Aug. 31,1995.

(iv) लेखक डॉ. विनोद कुमार

"Vedic Geometry and Its influence on the Topological Design of Computer Communication Networks", Presented in the above symposium on Vedic Geometry.

(v) लेखक डॉ. विनोद कुमार

"An efficient algorithm for allocating task to processor in a ditributed system", Proceddings of the National Systems Conference held at P.S.G. College of Technology, Coimbatore, Tamil Nadu, India, Dec. 14-16, 1995.

(सहलेखक एम.पी. सिंह, पी.के. यादव)

(vi) लेखक डॉ. विनोद कुमार

"Deciding Link Priorities in the Design of a Computer Communication Network for Terminal Reliability optimization" Sixth National Seminar on Theoritical Computer Science, to be held at Banaspathali Vidyapith, Rajasthan, Aug. 5-8, 1996.

३. शोध सम्मेलनों में सभागिता–

डॉ० विनोद कुमार ने निम्न सम्मेलनों में भाग लिया

(i) कम्प्यूटर सोसाइटी आफ इण्डिया द्वारा हैदाराबाद में आयोजित तीसवाँ कन्वेन्शन (नवम्बर ८–१२, १६६५)

(ii) सिस्टम सोसाइटी ऑफ इण्डिया द्वारा कोयम्बटूर में आयोजित उन्नीसवाँ शोध सम्मेलन (दिसम्बर १४–१६, १९९९)

४. पीएच.डी. के लिए शोध कार्य–

डॉ. विनोद कुमार के निर्देशन में श्री प्रदीप कुमार ने निम्न विषय पर अपना शोध–प्रबन्ध पूरा किया–

"A study of Mathematical Programming and its Application task Allocation in Distributed Processing Systems".

(सह निर्देशक–डॉ. एम.पी. सिंह)

दो अन्य छात्र भी अरुण कुमार एवं श्री अवनीश कुमार पी–एच.डी. के लिए शोध कार्य हेतु पंजीकृत हैं।

५. विभागीय सदस्यों द्वारा व्याख्यान

१. डॉ. विनोद कुमार ने निम्न व्याख्यान दिये

(ii) मनोविज्ञान विभाग द्वारा संचालित "डिप्लोमा इन पर्शनल मैनेजमेंट एण्ड इन्डस्ट्रियल रिलेशन्स" पाठ्यक्रम में २० सैद्धान्तिक एवं २१ प्रायोगिक व्याख्यान दिए।

(ii) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में व्याख्यान हेतु आमन्त्रित हैं।

२. श्री सुनील कुमार ने डी.पी.एम.आई.आर. के छात्रों की सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कक्षाएं ली।

३. श्री राजीव कुमार ने हिन्दी विभाग के पत्रकारिता के छात्रों को ८ व्याख्यान दिये।

६. आमन्त्रित व्याख्यानों का आयोजन

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग को इस मद में वि.वि. अनुदान आयोग द्वारा एक लाख रुपये (प्रतिवर्ष) की स्वीकृत प्रदान की गई है। वर्तमान सत्र में निम्न विषय विशेषज्ञ आमन्त्रित किये गये–

	विशेषज्ञ	विषय
१.	डॉ. सुधीर कैकर डायरेक्टर, कम्प्यूटर केन्द्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली	C-Programming
२.	डॉ. आर.के. गुप्ता गणित विभाग रुड़की विश्वविद्यलाय	Software of Engineering
३.	श्री विरेन्द्र कुमार गुप्ता कनखल, हरिद्वार	Principal of Accounting
४.	डॉ. आर.के. अग्रवाल पी.एल.एम.एस. पी.जी. कालेज ऋषिकेश	Financial Managment
५.	श्री आदित्य गौतम मानविकी संकाय, गु.कां.वि. हरिद्वार	Managerial Economics

६.	डॉ. एस.पी. शर्मा गणित विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय	(i) Discrete Mathematics
७.	डॉ. आर.सी. जोशी कप्यूटर इंजी. विभाग रुड़की विश्वविद्यालय	Artificial Intelligence
८.	डॉ. बानी सिंह गणित विभाग रुड़की विश्वविद्यालय	Computer Grophics
९.	श्री आशीष सिन्हा बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान	Operating system
१०.	डॉ० एस.पी. सिंह मैमोनियल वि.वि. कनाडा	Application of fixed point in computer
११.	डॉ. जे.एस. तोमर गणित विभाग,रुड़की विश्वविद्यालय	Numerical Analysis

७. शैक्षणिक निकायों में सक्रियता

डॉ. विनोद कुमार निम्न शैक्षणिक निकायों के सदस्य हैं तथा विभिन्न विश्वविद्यलायों की शिक्षा समितियों में वाह्य विशेषज्ञ मनोनीत हैं–

(i) सिस्टम सोसाइटी आफ इण्डिया के आजीवन सदस्य

(ii) रामानुजन सोसाइटी आफ इण्डिया के सदस्य

(iii) कम्प्यूटर सोसाइटी आफ इण्डिया के सदस्य

इसके अतिरिक्त डॉ. विनोद कुमार विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ व एच.एन.बी० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य हैं।

८. विभागीय पुस्तकालय का विस्तारण'

श्री सुनील कुमार (प्रवक्ता) के निर्देशन में विभागीय पुस्तकालय, जो पिछले वर्ष स्थापित किया गया था, का विस्तारण हुआ। इस पुस्तकालय में अब लगभग एक हजार पुस्तकें कम्प्यूटर की विभिन्न विधाओं पर उपलब्ध हैं।

९. एम.सी.ए. प्रोजेक्ट व रोजगार सम्बन्धी कार्य

श्री कर्मजीत भाटिया (प्रवक्ता) ने एम.सी.ए. (तृतीय वर्ष) के छात्रों के विभिन्न कम्प्यूटर फर्मों, संस्थानों व कारखानों में प्रोजेक्ट व रोजगार सम्बन्धी कार्य का सफलतापूर्वक निष्पादन किया।

१०. ओरिएंटेशन कार्यक्रम में सहभागिता

श्री कर्मजीत भाटिया (प्रवक्ता) ने लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम में दिनांक ३.५.९६ से ३१.५.९६ तक भाग लिया।

कम्प्यूटर केन्द्र

गु.का.वि. हरिद्वार में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदान से १९८७ में की गई। केन्द्र में इस समय एम.सी.ए. त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.एससी. कम्प्यूटर एवं बी.ए. कम्प्यूटर पाठ्यक्रम की प्रायोगिक कक्षाएं जारी हैं। श्री दिनेश बिश्नोई (कम्प्यूटर केन्द्राध्यक्ष), श्री मनोज कुमार, श्री महेन्द्र सिंह असवाल, श्री द्विजेन्द्र पन्त, श्री शशिकान्त, श्री राजेन्द्र, ऋषि शर्मा, श्री राजीव गुप्ता तथा श्री पवनीश ने केन्द्र की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कम्प्यूटर केन्द्र विभाग की सत्र १९९५–९६ में उपलब्धियों का विवरण निम्न प्रकार है:

१. केन्द्र का आधुनिकीकरण: (क) कम्प्यूटर केन्द्र में क्रय किये गये लगभग २४ लाख रुपये के अत्याधुनिक कम्प्यूटर उपकरणों को स्थापित कर चालू कर दिया गया है। जिसमें तेइस ४८६ एस.एक्स. कम्प्यूटर तथा एक ४८६ डी.एक्स. २ कम्प्यूटर डोस नेटवर्क के लिए एवं विभिन्न प्रकार के आधुनिक प्रिंटर्स और स्कैनर शामिल हैं। इन उपकरणों में यूनिक्स एनवाएर्नमेंट की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ६४ बिट का एल्फा संयन्त्र भी शामिल है जो कि इस क्षेत्र का सबसे आधुनिक उपकरण है।

(ख) पुराने कम्प्यूटर उपकरणों के लिए पेरिफरल काड्र्स खरीदे गये हैं ताकि उन्हें भी नेटवर्क से जोड़ा जा सके।

(ग) मुख्य कार्यालय में कम्प्यूटर सैल बनाकर लैब का निर्माण किया जा रहा है ताकि मुख्य कार्यालय की कम्प्यूटर सम्बन्धी आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

२. शोध पत्रों का प्रकाशन: (क) श्री दिनेश बिश्नोई ने एस.एस.ए.टी.ए.सी./९६ में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यलाय में अपना शोधपत्र एन.एन.टी.ए.जी. बेस्ड मशीन टान्सलेशन सिस्टम फार कर्नल इग्लिंश सेन्टेन्सिज प्रकाशित करने के लिए भेजा।

(ख) श्री महेन्द्र सिंह असवाल ने गणित विभाग द्वारा आयोजित वैदिक ज्यामिती और आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक में इसी प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपना शोधपत्र कम्प्यूटर सम्प्रेषण नेटवर्क के प्रणाली विन्यास में वैदिक ज्यामिती की प्रासंगिकता प्रस्तुत किया।

(ग) श्री दिनेश बिश्नोई ने दक्षिण रेलवे द्वार हैदराबाद में नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग विषय पर आयोजित कार्यशाला में व्याख्यान दिया।

३. अन्य: (क) श्री मनोज कुमार शर्मा द्वारा पुस्तकालय का कम्प्यूटरीकरण कार्य प्रगति पर है। इस सम्बन्ध में सापटवेयर बना लिया गया है तथा आंकड़ों की प्रविष्टि का कार्य चल रहा है।

(ख) नये सत्र में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के लिए कम्प्यूटर के प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु योजना बनाई गई है।

(ग) केन्द्र में दूरस्थ शिक्षा विभाग एवं कार्मिक प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा में कम्प्यूटर शिक्षा की कक्षाओं का आयोजन किया गया।

पुस्तकालय विभाग

परिचय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय समस्त देश के शोध छात्रों का पावन मंदिर है। प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध साहित्य की दृष्टि से यह पुस्तकालय एक राष्ट्रीय महत्व का पुस्तकालय है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह–

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है।

संदर्भ संग्रह, पत्रिका संग्रह, आर्य साहित्य संग्रह, आयुर्वेद संग्रह, विभिन्न विषयों का हिन्दी संग्रह, विज्ञान संग्रह, अंग्रेजी साहित्य संग्रह, पं. इन्द्र जी संग्रह, दुर्लभ पुस्तक संग्रह, पाण्डुलिपि संग्रह, गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, प्रतियोगितात्मक संग्रह, शोध प्रबन्ध संग्रह, रूसी साहित्य संग्रह, आरक्षित पाठ्य पुस्तक संग्रह, उर्दू संग्रह, मराठी संग्रह, गुजराती संग्रह, गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक संग्रह, मानचित्र संग्रह, वेद मंत्र कैसेट संग्रह।

सदस्य सं.–

पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या में गत छह सात वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। वर्ष १९९१–९२ में पुस्तकालय संख्या–१०१५ थी तथा वर्ष १९९५–९६ में १९६१ है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है–

१.	स्नातकोत्तर छात्र	६२४
२.	स्नातक छात्र	८९३
३.	शिक्षक वर्ग	६३
४.	शिक्षकेत्तर वर्ग	५६
५.	विजिटिंग प्रोफेसर	१
६.	शोध छात्र	४४
७.	पी.जी. डिप्लोमा	७४
८.	बाह्य सदस्य	५
९.	योग/अंग्रेजी डिप्लोमा, विद्यालय वि., फार्मेसी, गुरुकुल इंटर सांइस	२०१
		कुल १९६१

पुस्तकालय का समय–

पुस्तकालय खुलने का समय प्रातः ९ बजे से सायं ५ बजे तक है। सत्रावसान में पुस्तकालय प्रातः ६.३० से १.३० तक खुला रहता है।

पुस्तकालय की विशिष्टताएं–

यह पुस्तकालय देश का एक मात्र ऐसा पुस्तकालय है जहाँ आर्य समाज की पुस्तकों का संग्रह एक पृथक वीथिका के रूप में किया हुआ है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा लिखित पुस्तकों का पृथक प्रकोष्ट पुस्तकालय में बनाया हुआ है। पुस्तकालय संदर्भ विभाग प्राच्य विद्याओं के सभी प्रमुख संदर्भों को समेटे हुए है।

विभागीय पुस्तकालय–

विश्वविद्यालय के छात्रों की सुविधा एवं उपयोग हेतु विभिन्न विभागों में विभागीय पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। इसके अन्तर्गत रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, हिन्दी पत्रकारिता, वेद, अंग्रेजी एवं कन्या महाविद्यालय आदि विभागों में विभागीय पुस्तकालय हैं। आलोच्य वर्ष। १९९५–९६ में १३९६ पुस्तकों को विभागीय पुस्तकालयों हेतु इश्यू किया गया।

पत्रिका विभाग–

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा आलोच्य वर्ष १९९५–९६ में २५४ पत्रिकाएं मंगवाई गई। जिनमें से ५८ पत्रिकाएं विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के विनिमय से प्राप्त हुई हैं। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विभिन्न विषयों की पत्रिकाओं को मंगाने में १,००,३८२.००रु० आलोच्य वर्ष में व्यय किया गया तथा २१० पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की गई।

संदर्भ विभाग–

संदर्भ विभाग में केवल शोध छात्र/छात्राओं एवं स्नातकोत्तर छात्र/छात्राओं को ही प्रवेश की अनुमति है। प्रतिदिन लगभग २५ से ३० छात्र संदर्भ विभाग का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों के शोध छात्र भी संदर्भ विभाग का उपयोग करते हैं।

अधिग्रहण विभाग–

आलोच्य वर्ष में २,८०,००० रु० की १५९६ नई पुस्तकें क्रय की गई। भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लगभग ३२,००० रु० मूल्य की ९१३ पुस्तकें भेंट स्वरूप प्राप्त हुई।

तकनीकी विभाग–

तकनीकी विभाग द्वारा आलोच्य वर्ष में ३५९० पुस्तकों को विषयानुसार वर्गीकृत तथा ३३३५ पुस्तकों को सूचीकृत किया गया तथा ७५० पुस्तकों एवं २१० पत्रिकाओं की बाइडिंग कराई गई।

पुस्तक आर्वतन विभाग–

पुस्तक आर्वतन विभाग द्वारा कुल २२७७४ पुस्तकें इश्यू की गई।

१३७९३ पुस्तकें वापस की गई।

विभागीय एवं अन्य खातों में ७७९१ पुस्तकें इश्यू की गई।

प्रलेखन विभाग–

विश्वविद्यालय पुस्तकाय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री को पाठकों की सुविधा हेतु पुस्तकालय द्वारा समय–समय पर सूचीबद्ध कर प्रकाशित किया जाता रहा है। इस के अन्तर्गत अब तक निम्न प्रकाशन प्रकाशित किये जा चुके हैं।

१–क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर–

आठ सौ पृष्ठों के इस ग्रन्थ में पुस्तकालय में उपलब्ध वैदिक तथा संस्कृत साहित्य से सम्बद्ध ८००० ग्रन्थों को सूचीबद्ध किया गया है।

२. शोध एवं प्रकाशन संदर्भ–

पुस्तकालय में उलब्ध स्नातकों एवं प्राध्यापकों के शोध एवं प्रकाशन कार्यों हेतु जानकारी दिये जाने वाले उक्त ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है।

३. शोध सारावली–

विश्वविद्यालय के शोध छात्रों द्वारा किये गये शोध कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी हेतु शोध प्रबन्धों के सारांशों का सम्मिलित रूप से प्रकाशन किया गया है।

४. कैटलाग आफ बुक्स इन इंग्लिस लैंग्वेज आन लिटरेचर इन लाइब्रेरी–

उक्त क्रम में आलोच्य वर्ष में पुस्तकालय के अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध साहित्य सम्बन्धी सभी पुस्तकों को एक सूचीबद्ध रूप में तैयार किया गया है। जिसमें ३५६८ पुस्तकों के सम्बन्ध में जानकारी पाठकों को हो सकेगी।

पुस्तकालय द्वारा १९९५–९६ में पुस्तकालय कर्मचारी श्री मिथलेश कुमार को कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु अहमदाबाद भेजा गया तथा पुस्तकालय में उपलब्ध शोध प्रबन्धों की सूची कम्प्यूटर डेटा बैंक से तैयार की जा रही है तथा यह प्रयास है कि पुस्तकालय के सम्पूर्ण साहित्य का एक डेटा बैंक बनाया जाये। इस संदर्भ में यू.जी.सी. एवं अन्य संस्थानों को प्रस्ताव भेजे गये हैं। पुस्तकालय को यू.जी.सी. के नेटवर्क से जोड़े जाने का प्रयास है।

श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र–

विश्वविद्यालय पुस्तकालय के अन्तर्गत श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र का कार्य भी चल रहा है जिसके निदेशक डॉ. विष्णुदत्त राकेश पूर्व संकायाध्यक्ष, गु.काँ.वि. हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष इस प्रकाशन केन्द्र के व्यवसाय प्रबन्धक का कार्य भी कर रहे हैं। आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय के प्रकाशनों से ६५००/–रु. की आमदनी हुई तथा ५२४६२/–रु. की पुस्तकें विनिमय में प्राप्त हुई। अब तक २,०३,६६३/–रु. की कुल बिक्री विश्वविद्यालय को इन प्रकाशनों से हुई है। अनुसंधान केन्द्र के प्रकाशन निम्न हैं–

१. क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर २. वैदिक साहित्य संस्कृति और समाज दर्शन ३. वेद का राष्ट्रीय गीत ४. वेद और उसकी वैज्ञानिकता ५. शोध सारावली ६. श्रुति पर्णा ७. स्वामी श्रद्धानन्द आलोच्य वर्ष १९९५–९६ में आचार्य रामदेव जी के ग्रन्थ भारत वर्ष का इतिहास भाग–१ एवं २ का पुनर्प्रकाशन किया गया।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना–

यह पुस्तकालय देश का पहला ऐसा पुस्तकालय है जहाँ निर्धन एवं मेधावी छात्रों को पुस्तकालय में आंशिक रोजगार देकर उन्हें उनकी शिक्षा दीक्षा के कार्य में सहायता प्रदान की जाती है। आलोच्य वर्ष १९९५–९६ में इस योजना के अन्तर्गत ४ छात्रों को नियुक्त किया गया था।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा–

विश्वविद्यालय पुस्तकालय में प्रतियोगिता परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्रों हेतु एक

शोभा यात्रा में शामिल छात्राएँ

हवन करते मुख्य अतिथि, कुलाधिपति एवं कुलपति

पृथक संग्रह स्थापित है जिसमें १५०० पुस्तकें हैं। प्रतियोगिता परीक्षा से सम्बद्ध १५ पत्रिकायें भी मंगवाई जा रही हैं।

फोटोस्टेट सेवा–

आलोच्य वर्ष में पुस्तकालय फोटोस्टेट मशीन द्वारा पाठकों एवं विभिन्न विभागों का ४६८७६.६० रु. का कार्य किया गया तथा १० अति दुर्लभ ग्रन्थों को फोटोस्टेट कर सुरक्षित किया गया।

विशिष्ट अतिथि–

वर्ष १९९५–९६ में जो विशिष्ट महानुभाव विश्वविद्यालय पुस्तकालय में आये उनका विवरण निम्न प्रकार है–

क्र.सं.	नाम	पता	दिनांक
१.	डॉ. शिवराज पाटिल	अध्यक्ष, लोकसभा	६.४.९५
२.	श्री मदनलाल खुराना	मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार	२.५.९५
३.	श्री अनुराग भटनागर	डायरेक्टर, मिनिस्ट्री आफ एच.आ.डी., नई दिल्ली	३०.५.९५
४.	डॉ. अप्रणनिदारिया एवं अन्य	हिन्दी निदेशालय	१२.६.९५
५.	श्री हरमेन्द्र सिंह वेदी	प्रो. एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग गुरुनानकदेव वि.वि. अमृतसर	२७.११.९५
६.	श्री नूतन कुमार	यू.जी.सी., दिल्ली	१९.१.९६
७.	श्री ओकास्वास्तिका	एम.एल.एत्र इन्डोनेशिया (प्रोफेसर एवं हिन्दू नेता)	६.२.९६
८.	श्री राजेन्द्र गुप्ता	एम.एल.ए. दिल्ली	१०.२.९६
९.	श्री प्रमोद मुकर्जी एवं अन्य	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	८.३.९६

विश्व पुस्तक मेला–

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में ए.आई.यू. द्वारा आयोजित विश्व पुस्तक मेले में विश्वविद्यलाय के श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी ३ से १ फरवरी–९६ को लगाई गई।

वर्ष १९९५–९६ में विषयानुसार क्रय पुस्तकों का विवरण निम्न प्रकार है–

GURUKUL KANGRI VISHWAVIDYALAYA, HARDWAR

DETAILS OF OPENING AND CLOSING BALANCE IN RESPECT OF BOOKS FOR THE YEAR 1996-97

NAME OF DEPTT	OPENING BALANCE NO OF BOOKS AS 1-4-95	COST OF BOOKS	NO OF BOOKS (PURCHASED DURING THE YEAR)	AMOUNT SPENT DURING THE YEAR	CLOSING BALANCE OF BOOKS	TOLAL VALUE OF BOOKS AS ON 31-3-96
Sanskrit	9440	2,51,476.90	13	1048.50	9453	2,52,525.40
Hindi	11786	4,25,338.79	16	1636.20	11802	4,26,974.99
Ved	7808	3,20,959.25	10	1135.00	7818	3,22,094.25
Psychology	3609	2,49,727.35	35	5575.80	3644	2,55,303.15
History	3685	1,93,254.60	25	2322.40	3710	1,95,577.00
Philosophy	3634	1,87,642.30	22	2448.20	2656	1,90,090.50
Yoga	47	04,544.10	9	1080.10	56	5,624.20
English	5214	2,19,516.35	23	3320.00	5237	2,22,836.35
Mathematics	3804	2,69,683.68	15	7035.00	3819	2,76,718.68
Chemistry	4053	2,16,316.78	35	2065.00	4088	2,18,381.78
Physics	3876	2,08,159.35	25	2200.00	3901	2,10,359.35
Zoology	3546	2,16,823.83	259	72493.00	3805	2,89,316.83
Botany	2836	2,12,461.20	14	7393.00	2850	2,19,854,20
Gen. Subject	48946	4,80,891.27	193	1043.00	49139	4,81,934.87
Journal	327	4,93,150.24	254	97342.00	581	5,90,492.24
Computer	1599	2,17,266.24	314	58053.00	1913	2,75,319.24
Kanya Gurukul	401	28,256.53	-	-	401	28,256.53
Himalaya Reasearch	5	1,137.00	-	-	5	1,137.00
DCA Computer	139	52,973.39	-	-	139	52,973.39
Economics	44	1,035.00	12	1043.60	56	2,078.60
Donation	2651	17,000.00	926	-	3577	17,700.00
Kanya Mahavidyalaya	335	22,221.00	415	75000.00	750	97,221.00
Pol. Science	26	1,687.50	15	1280.60	41	2,968.10
Management Psy.	215	25,854.35	250	27000.00	465	52,854.35
	1,17,026	43,18,077.00	28280	3,70,515.00	119906	46,88,592.00

पुस्तकालय, कार्यवृत्त वर्ष

1995–96 एक नजर

		वर्ष	वर्ष	वर्ष
		१९९३–९४	१९९४–९५	१९९५–९६
१.	पाठकों द्वारा पुस्तकालय उपयोग	२८,०००	२६,५००	३०,०००
२.	भेंट स्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	६३६	१,४०७	६१३
३.	नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	१,७०८	३,००८	१,५९६
४.	वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	२,७००	३,२६५	३,५६०
५.	सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	२,६३३	३,२५३	३,३३५
६.	पत्रिकाओं की संख्या	२२८	२३९	२५४
७.	सजिल्द पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की सं.	७,६०१	८,०५०	८,२६०
८.	पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	८८	१४९	२१०
९.	पुस्तकों की जिल्दबन्दी	१,४००	१,७२८	४४८
१०.	पुस्तकों का कुल संग्रह	१,१३,९२३	१,१८,३३८	१,२०,८४७
११.	सदस्य संख्या	१,४८२	१,६१६	१,६६१
१२.	पुस्तकों पर विलम्ब शुल्क	२५६०.००रु.	१३४० रु.	१,६०९ रु.
१३.	गुम पुस्तकों का मूल्य	३,७०७.१०रु.	२,६८२.४० रु.	५,२८३.१० रु.
१४.	विभागीय पुस्तकालय हेतु इश्यु पुस्तकें की संख्या	–	१,३४५	१,३९६
१५.	विनिमय में प्राप्त पुस्तकों/पत्रिकाओं	–	७७	५८+२००
१६.	प्रकाशन केन्द्र द्वारा पुस्तकों के विक्रय से प्राप्त राशि	–	६,०००.०० रु.	६,५००.०० रु.
१७.	फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित पुस्तकों की सं.	–	२३ पुस्तकें	१० पुस्तकें
१८.	फोटोस्टेट द्वारा विभिन्न विभागों का किया गया कार्य	–	४०,०००.०० रु.	४६,८७६.६० रु.
१९.	कुल इश्यु की गई पुस्तक संख्या	३३,७२१	३४,७३६	३१,९३१

राष्ट्रीय छात्र–सेना (एन.सी.सी)

उपक्रम 1/31 यू.पी.एन.सी.सी. कम्पनी

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आज देश की स्थिति को देखते हुए एन.सी.सी. के उद्‌देश्य "अनुशासन एवं एकता" की परम आवश्यकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति में विश्वविद्यालय का एन.सी.सी. विभाग प्रयासरत है। सत्र ६५–६६ में १/३१ यू.पी. एन.सी.सी. कम्पनी गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों से आये आवेदन–पत्र पर कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनेंट डॉ० राकेश शर्मा द्वारा, कमान अधिकारी ले. कर्नल जे.एस. पन्नु के आदेशानुसार श्रेष्ठ छात्रों का एन. सी.सी. 'कैडेट' के रूप में चयन कर तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया।

पूर्व की भांति इस सत्र में भी उपर्युक्त चयनित कैडेट्स को ३१ यू.पी. एन.सी.सी. बटालियान के कमान अधिकारी ले. कर्नल जे.एस. पन्नु, प्रशासनिक अधिकारी मेजर अरुण कृष्ण एवं कम्पनी कमान्डर लेफ्टिनेन्ट डॉ० राकेश शर्मा के निर्देशन में भारतीय थल सेना के प्रशिक्षित जूनियर कमीशन अधिकारियों एवं हवलदारों द्वारा बी.एच.ई.एल. सेक्टर–१ के परेड मैदान पर गहन प्रशिक्षण किया गया।

रक्षा मंत्रालय भारत सरकार से सम्बद्ध एन.सी.सी. मुख्यालय द्वारा एन.सी.सी. बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में यह शिविर देहरादून के कैन्टोनमैन्ट एरिया में लगाया। इस प्रशिक्षण शिविर में वि.वि. के ३६ कैडेट्स ने पूर्ण उत्साह से गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। उक्त शिविर में वि.वि. के कैडेट्स ने रेडक्रास सोसाइटी के लिये रक्तदान भी किया। इसी सत्र में मार्च माह में बटालियन स्तर पर 'राष्ट्रीय सद्भावना' के लिये एक साइकिल रैली हरिद्वार से पौन्टा साहिब (हिमाचल) निकाली जिसमें वि.वि. के कैडेट्स विशाल शर्मा ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त आर्मी अटैचमेंट कैम्प (सेना के साथ रहकर प्रशिक्षण) देहरादून में लगने वाले कैम्प में वि.वि. के ५ कैडेट्स ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गत वर्षों की भांति सत्र ६५–६६ का 'बी' एक 'सी' प्रमाण पत्रों का परिणाम भी उत्तम रहा। जिसमें 'सी' प्रमाण पत्र में उत्तीर्ण कैडेट्स का प्रतिशत लगभग ८० तथा बी. प्रमाण पत्र में यह प्रतिशत लगभग ८४ रहा। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष से एन.सी.सी. की 'सी' प्रमाण पत्र उत्तीर्ण होने वाले कैडेट्स को सेना में अफसर बनने के लिये सीधे साक्षात्कार के लिये आमन्त्रित किया जायेगा। कैडेट्स का सर्वप्रथम ग्रुप हैडक्वाटर, देहरादून तत्पश्चात डायरेक्टर हेडक्वाटर लखनऊ में पात्रता चयन कर उनमें से उपयुक्त कैडेट्स का सी.डी.एस. (कम्बाइन डिफेन्स सर्विस) के लिये साक्षात्कार होगा। उपर्युक्त साक्षात्कार में चयनित होने वाले कैडेट्स का सेना में सीधे से० लेफ्टिनेन्ट के पद पर चयन किया जायेगा। इस वर्ष की 'सी' एवं 'बी' प्रमाण–पत्रों में उत्तीर्ण कैडेट्स को गणगन्त्र दिवस २६ जनवरी के अवसर पर माननीय कुलपति डॉ. धर्मपाल द्वारा प्रमाण–पत्र वितरित किये गये।

विश्वविद्यालय छात्रवास

सत्र १९९३–९४ से छात्रावास अध्यक्ष का दायित्व डॉ. एस.के. श्रीवास्तव (मनोविज्ञान विभाग) को सौंपा गया है। विश्वविद्यालय छात्रावास में सभी संकायों के छात्रों को आवास व्यवस्था उपलब्ध करायी गयी है। छात्रावास में सीमित कमरों के कारण अधिकांश छात्रों को शहर में रहना पड़ता है। विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसलिए इस वर्ष कुछ और कमरों का निर्माण होने जा रहा है।

शारीरिक शिक्षा विभाग गु.का.वि.वि.हरिद्वार

वार्षिक–विवरण

गु.कां.वि. के शारीरिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत इस सत्र में उत्तर क्षेत्र अन्तर वि.वि. वालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें उत्तर क्षेत्र के २६ विश्ववविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री जे.सी. जैन (मैनेजिंग डायरेक्टर, टैक्सप्ला इण्डिया प्रा. लि.) ने ए.आई.यू. का ध्वज फहराकर किया तथा सभी टीमों के मार्च पास्ट की सलामी ली। इस प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली की टीम विजेता रही। श्री महेन्द्र कुमार मित्तल (कार्यपालक निदेशक बी.एच.ई.एल.) ने प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को पुरस्कार प्रदान किये तथा खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. जयदेव वेदालंकार ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिये आयोजकों तथा बाहर से आये अतिथियों का धन्यवाद व्यक्त किया। शहर पुलिस अधीक्षक श्री अशोक कुमार आई.पी.एस. ने प्रतियोगिता के बीच में पहुँच कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

प्रतियोगिता ८.११.६५ से १२.११.६५ तक चली। प्रतियोगिता में पंजाब विश्वविद्यालय ने द्वितीय तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष ए.आई.यू. दिल्ली द्वारा विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय अंतरविश्वविद्यालय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता (पुरुष) का दायित्व दिया। जिसका शारीरिक शिक्षा विभाग ने सफलतापूर्वक निर्वाह किया। इस प्रतियोगिता में २७ विश्वविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन शहर पुलिस अधीक्षक श्री अशोक कुमार आई.पी.एस. ने ए.आई.यू. का ध्वज फहराकर किया। उन्होंने सभी टीमों के मार्च पास्ट की सलामी ली तथा खिलाड़ियों को उत्तम प्रदर्शन के लिये शुभकामनाएँ भी दी। दिनांक २२.११.६५ को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव ने पधार कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया तथा सफल आयोजन के लिये आयोजकों तथा कुलपति जी को बधाई दी। प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप गुरुनानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर ने जीती। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त टीमों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. धर्मपाल ने पुरस्कार वितरित किये तथा खिलाड़ियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। प्रतियोगिता दिनांक २१.१२.६५ से २३.१२.६५ तक चली।

शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. आर.के.एस. डागर को अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ की ओर से अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय भारोत्तलन एवं शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता के पर्यवेक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गयी। यह प्रतियोगिता ककाटिया विश्वविद्यालय वारंगल (आन्ध्र प्रदेश) द्वारा आयोजित की गई। वि.वि. की फुटबाल, हाकी, कबड्डी, क्रिकेट, बास्केट बाल बाक्सिंग की टीमों ने उत्तर क्षेत्र तथा अखिल भारतीय अन्तर वि.वि. प्रतियोगिता में भाग लिया। वि.वि. की तरफ से प्रथम बार बाक्सिंग की टीम ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। लाइटवेट ग्रुप के जयवीर सिंह रावत ने क्वार्टर फाइनल खेलकर वि.वि. का नाम राष्ट्रीय स्तर पर ककाटिया वि.वि. वारंगल (आन्ध्र प्रदेश) में अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय भारोत्तोलन एवं शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता (पुरुष महिला) के उद्घाटन (४.२.६५) तथा समापन समारोह (७. २.६५) में विशिष्ठ अतिथि के रूप में आमंत्रित किया तथा सम्मानित किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

स्वतन्त्रता के पश्चात् छात्रों के लिये समाज–सेवा के कार्यों को विधिवत् सुधार लाने के साथ–साथ शिक्षित जनशक्ति की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिये समझा गया।

अतः २४ सितम्बर १६६६ को तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षामंत्री श्री वी.के.आर.वी. राव ने राष्ट्रीय सेवा योजना को ३७ विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ कराया। जिसका प्रत्यवचन "मुझको नहीं तुमको" द्वारा वैदिक सत्यता के ढंग से जीवन यापन करने की आवश्यकता का समर्थन करता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाई लगभग १/१४ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई थी जिसके प्रथम कार्यक्रम अधिकारी प्रो. बी.डी. जोशी रहे।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी छात्रों की श्रमशक्ति एवं सामूहिकता द्वारा सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हेतु अनेकानेक कार्य किये गये।

(i) २४ सितम्बर १६६५ को राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनायागया।

(ii) छात्रों द्वारा विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण किये गये।

(iii) एक दिवसीय कैम्प पांवधोई (ज्वालापुर), सीतापुर, लोधामण्डी हरिद्वार व कांगड़ी ग्राम में आयोजित किये गये जिनमें मुख्य रूप से निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं दवा–वितरण तथा रक्त–वर्ग परीक्षण किये गये।

(iv) दस दिवसीय विशेष वार्षिक–शिविर दिनांक ३०.१.६६ से ८.२.६६ तक कांगड़ी ग्राम में आयोजित किया गया, पथ निर्माण एवं नालियों की सफाई एवं सौक पिटों का निर्माण, सड़क की मरम्मत, विश्वविद्यालय के पुराने परिसर–भवन के आस–पास गंगा की ठोकरों में, खाली स्थानों में पत्थरों को डालकर उन्हें मजबूत किया गया।

सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण व स्वास्थ्य परीक्षण जैसे कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया गया।

स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा–शिविर का संचालन मेडिकल प्रेक्टीशनर एसोसिएशन के चिकित्सकों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

(५) उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त हर सप्ताह छात्र विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय सेवा एवं अपने व्यक्तित्व के निर्माण के कार्यों में संलग्न रहे हैं।

(६) एक सौ पचास छात्र निरक्षरों को साक्षर बनाने के कार्यों में प्रयासरत हैं।

(७) एड्स विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का जिला स्तरीय आयोजन किया गया।

(८) राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक प्रो. बी.डी. जोशी की प्रेरणा से व डॉ. देवराज खन्ना, कार्यक्रम अधिकारी के प्रयास से राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय देहरादून
संक्षिप्त परिचय

देहरादून स्थित कन्या गुरुकुल का विस्तार राजपुर रोड से लेकर सेवक आश्रम रोड तक है। जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय एवम् अन्य विभागों की अलग–अलग इमारते हैं। खेलने के लिए विशाल क्रीड़ा स्थल है और इसके अतिरिक्त हरे भरे वृक्षों से युक्त विशाल प्रांगण है। छात्राओं के निवास हेतु अलंकार एवं एम.सी.ए. की छात्राओं हेतु पृथक–पृथक छात्रावास हैं।

महाविद्यालय के विभिन्न विभागों की प्रगति का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

१. संस्कृत विभाग

संस्कृत कन्या गुरुकुल की मानी हुई विशेषता है इसके अन्तर्गत वैदिक साहित्य ऋग्वेद, अथर्ववेद, माण्डुक्योपनिषद, तैत्तरीयोपनिषद, बुद्धचरितम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, शुकनाशोपदेश, रघुवंश इत्यादि ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। अध्ययन में वर्तमान तुलनात्मक समीक्षात्मक पद्धति का भी ध्यान रखा जाता है। इसके अतिरिक्त समय–समय पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी संस्कृत भाषा के भाषण, सांकेतिक गान, सामूहिक गान भी होते रहते हैं।

अंग्रेजी विभाग

अंग्रेजी विभाग में गतवर्ष से एम.ए. कक्षाएं प्रारम्भ की गई। इस वर्ष कु. ज्योति शर्मा की अतिरिक्त नियुक्ति एम.ए. पढ़ाने हेतु की गई। विभाग में अलंकार पाठ्यक्रम के साथ–साथ एम. ए. का पाठ्यक्रम भी कराया गया।

हिन्दी विभाग

डॉ. रंजना राजदान ने १७, १८ फरवरी ९६ को राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा आयोजित साहित्यकार सम्मेलन ९६ में भाग लिया। इसका आयोजन चित्तौड़गढ़ में हुआ।

इतिहास विभाग

श्रीमती अलका गोयल ने इतिहास विभाग के पाठ्यक्रम के साथ भारतीय संस्कृति का भी अध्ययन किया।

संगीत विभाग

महाविद्यालय में होने वाले समस्त कार्यक्रमों में छात्राओं ने नृत्य एवम् संगीत का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कन्या गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रदेशों के नृत्य गीत एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सभी प्रदेशों की संस्कृति से अवगत कराया गया। नगर में होने वाले होली महोत्सव पर नगर प्रेक्षागृह में नृत्य, गीत, वन्दना, स्वागत गीत आदि गाकर छात्राओं ने महाविद्यालय के नाम को उज्जवल किया। देहरादून में जिला स्तर पर होने

वाले भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय गीत प्रतियोगिता में छात्राओं ने भाग लिया तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

चित्रकला विभाग

विद्यालंकार की छात्राओं को पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अल्पना, रंगोली का अभ्यास कराया गया।

कम्प्यूटर विभाग

कम्प्यूटर विभाग कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की विशिष्ट उपलब्धि है। माननीय कुलपति डॉ. धर्मपाल जी तथा कुल सचिव डॉ. जयदेव वेदालंकार ने इस द्वितीय परिसर को विकसित करने हेतु अनेक विभाग खोले। उनमें से एक कम्प्यूटर विभाग है। एम.सी.ए. का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम १९९३ में प्रारम्भ हुआ था। प्रथम बैच की छात्राएं अपना पाठ्यक्रम पूर्ण कर प्रोजेक्ट के लिए विभिन्न स्थानों पर गईं।

कम्प्यूटर विभाग निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। प्रयोगशाला को अधिक समृद्ध करने के लिए कम्प्यूटर, प्रिंटर्स, सी.वी.टी. आदि खरीदे गए।

कम्प्यूटर छात्राओं द्वारा कार्यक्रम– सत्र के प्रारम्भ में एम.सी.ए. की द्वितीय तथा तृतीय वर्ष की छात्राओं ने प्रथम वर्ष की छात्राओं के स्वागत हेतु मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

क्रीड़ा विभाग

कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने प्रतिवर्ष की भांति जिला स्तर के खेलों में भाग लिया जिसमें कबड्डी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। २ छात्राएं मण्डलीय एवम् प्रादेशिक स्तर पर चुनी गयी। जो पौड़ी तथा मेरठ खेलने के लिए गयी। वूमैन में भी कु. अमृता ने एथैलेटिक्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिला स्तरीय एथैलेटिक्स रैली का उद्घाटन एवम् समापन समारोह के लिए सामूहिक सांकेतिक गान का प्रदर्शन छात्राओं ने किया। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में समय--समय पर होने वाले कार्यक्रमों में पी.टी. आदि का भी आयोजन किया गया। इस वर्ष अलंकार की छात्राओं हेतु खेलों की सामग्री के अतिरिक्त एम. सी.ए. विभाग की छात्राओं के क्रीड़ा हेतु ११४८६/५ का टेबिल टेनिस, बैड मिण्टन, बालीबाल, कैरम बोर्ड आदि खेलों का सामान खरीदा गया।

पुस्तकालय विभाग

कन्या गुरुकुल के पास अपना एक बृहद पुस्तकालय है, जिसमें इस वर्ष ७०,०००/–रु. की पुस्तकें एम.सी.ए. विभाग के लिए क्रय की गयी। इसके अतिरिक्त विद्यालंकार विभाग हेतु समाचार पत्र व पत्रिकाएं तथा कम्प्यूटर विभाग हेतु कम्प्यूटर विषय सम्बन्धी विभिन्न पत्रिकाएं एवम् समाचार पत्र मंगवाये गये।

सरस्वती यात्रा

इस वर्ष विद्यालंकार की छात्राएं सरस्वती यात्रा पर काठमाण्डो गयीं।

परीक्षा परिणाम

विद्यालंकार तीनों खण्डों का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा।

छात्रावास

एम.सी.ए. की छात्राओं के लिए निर्मित नवीन छात्रावास, जिसका उद्घाटन पिछले सत्र में

तत्कालीन प्राचार्या, श्रीमती प्रतिभा शर्मा के कार्यकाल में माननीय कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी के कर कमलों द्वारा किया गया था, में छात्राओं की देखभाल के लिए उचित व्यवस्था की गई। गुरुकुल परम्परानुसार छात्रावास में नियमित सन्ध्या हवन की व्यवस्था की गई।

प्राचार्या श्रीमती प्रतिभा शर्मा की अस्वस्थता के कारण त्यागपत्र देने पर श्रीमती भगवती गुप्ता ने ८.५.६५ को प्राचार्या का पदभार ग्रहण किया।

अन्य उपलब्धियां

१. महाविद्यालय के प्रांगण को सुन्दर बनाने के लिए अनेक वृक्ष आरोपित किये गये।

२. छात्रावास की दीवार पर वैदिक मन्त्र लिखवाये गये।

३. १६६३ में तत्कालीन प्राचार्या श्रीमती प्रतिभा शर्मा द्वारा महाविद्यालय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बुक कराये गये दूरभाष की सुविधा इस वर्ष उपलब्ध हो गयी।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार

आर्य समाज सदैव से नारी शिक्षा का पक्षधर रहा है। ऐसा मानने वाले गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रचेतस अधिकारियों के हृदय में नारी शिक्षा को अभिवृद्ध करने का संकल्प जगा, जिसका प्रारम्भ १९९२–९३ में आनन्दमयी सेवा सदन भवन में हुआ। अगले वर्ष इसका परिवर्धित रूप मान्य कुलपति डॉ. धर्मपाल जी के आशीर्वाद से महिला विद्यालय में आरम्भ हुआ। तब से लेकर अब तक कन्या गुरुकुल हरिद्वार निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

इस वर्ष प्राच्य विद्या संकाय, मानविकी संकाय, विज्ञान संकाय व जीव विज्ञान संकाय से सम्बद्ध सभी विभागों में कन्याओं का प्रवेश हुआ। प्रत्येक विभाग में छात्राओं की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यहाँ छात्राओं को प्रवेश केवल योग्यता के आधार पर ही किया जाता है। इस वर्ष महत्वपूर्ण कार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा कन्या गुरुकुल महिला विद्यालय के लिए भूमि खरीद कर भवन निर्माण कराना है। विज्ञान प्रयोगशाला हेतु भवन लगभग तैयार हो चुका है।

जहाँ तक अध्यापक वर्ग की विशिष्ट उपलब्धियों का सम्बन्ध है, प्रायः सभी अध्यापिकाएं उच्च स्तरीय अध्ययन– अध्यापन में संलग्न हैं।

–डॉ० श्रीमती सूनृता विद्यालंकार, एम.ए., पीएच–डी.

– डॉ. श्रीमती बीना शर्मा, एम.ए., पीएच–डी.

–डॉ. श्रीमती वीनेश अग्रवाल, एम.ए., पीएच–डी.

इतिहास विभाग में–

–श्रीमती आभा असवाल, एम.ए.

–कु. दीपा गुप्ता, एम.ए., एम.फिल

–कु. मीनाक्षी, एम.ए.

दर्शन विभाग में

–श्रीमती नीरा खरे, एम.ए.

–श्रीमती सीता पन्त, एम.ए.

मानविकी संकाय के अन्तर्गत हिन्दी विभाग में

–डॉ. श्रीमती सुचित्रा मलिक, एम.ए., पीएच–डी.

–डॉ. श्रीमती मृदुला जोशी, एम.ए., पीएच–डी.

–डा. श्रीमती विनोद बाला, एम.ए., पीएच–डी.

इंग्लिश विभाग में

कु. मंजूषा शर्मा, एम.ए.

–श्रीमती कविता अग्रवाल, एम.ए.

–डा. श्रीमती शशि खन्ना, एम.ए., पीएच–डी.

मनोविज्ञान विभाग में

–डॉ. श्रीमती मंजू खोखर, एम.ए., पीएच–डी.

–डॉ. श्रीमती श्यामलता जुआल, एम.ए., पीएच–डी.

–कु. प्रभा मिश्र, एम.ए.

विज्ञान संकाय के अन्तर्गत गणित विभाग में

–श्रीमती बबिता शर्मा, एम.एसी.

–श्रीमती निधि हाण्डा, एम.एससी.

–कु. अल्पना सक्सेना, एम.एससी.

रसायन विभाग में

–डॉ. श्रीमती अंजलि गोयल, एम.एससी., पीएच–डी.

–कु. ममता शर्मा, एम.एससी.

जीव विज्ञान संकाय के अन्तर्गत पर्यावरण विभाग में

–डॉ. श्रीमती नमिता जोशी, एम.एससी., पीएच–डी.

–कु. ममता ग्रोवर, एम.एससी.

सूक्ष्म जीव विज्ञान में

–डॉ. श्रीमती मनीषा शर्मा, एम.एससी., पीएच–डी.

–डॉ. श्रीमती पदमा सिंह, एम.एससी., पीएच–डी.

गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. द्वारा संचालित कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में छात्राओं की सुविधा हेतू सभी विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों से युक्त एक पुस्तकालय भी है। कार्यालय में श्रीमती ममता गर्ग लिपिक, श्रीमती बाला देवी सेविका, श्रीमती लीला जोशी सेविका, साइकिल स्टैण्ट व श्रीमती पदमा देवी सफाई कर्मचारी भी कार्यरत हैं।

गु.कां.वि.वि. में २३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द दिवस पर होने वाले समारोह व शोभायात्रा में सभी प्राध्यापिकाओं ने भाग लिया व आगत महानुभावों का कन्या गुरुकुल प्रभारी डॉ. सुनृता विद्यालंकार जी ने व कुलाधिपति का महाविद्यालय की सभी शिक्षिकाओं की ओर से डॉ. बीना शर्मा ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

१० फरवरी को सुसंस्कृत प्रभारी डॉ. सुनृता विद्यालंकार जी के निर्देशन में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता गु.कां.वि.वि. के कुलाधिपति व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव जी व संचालन संस्कृत प्रवक्ता बीना शर्मा ने किया।

समारोह में मुख्य अतिथि लाला दीवान चन्द्र ट्रस्ट के महामंत्री व विधान सभा दिल्ली के सदस्य श्री राजेन्द्र गुप्ता जी व श्रीमती गुप्ता जी विशिष्ट अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री वेदव्रत आर्य, विद्या सभा के मंत्री डॉ. प्रकाशवीर शास्त्री जी, कन्या गु. देहरादून की प्राचार्या श्रीमती भगतवी गुप्ता जी, गु. कां. फार्मेसी के प्रबन्धक डॉ. राजकुमार रावत जी, गु.कां.वि.वि. के कुलपति डॉ. धर्मपाल जी, उपकुलपति प्रो. श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी, कुलसचिव डॉ. जयदेव विद्यालंकार जी, समस्त संकायाध्यक्ष व शिक्षकगण व संभ्रान्त नागरिक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की प्रभारी डॉ. सुनृता विद्यालंकार

ने आगत अतिथियों का पुष्प व गंगाजलि भेंट कर स्वागत किया।

२२ मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस पर गु.कां.वि.वि. में आयोजित कार्यक्रम में कन्या महाविद्यालय की सभी शिक्षिकाओं ने उल्लासपूर्वक भाग लिया व प्रभारी डॉ. सुनृता विद्यालंकार व संस्कृत प्रवक्ता डॉ. बीना शर्मा ने आर्य समाज व नारी शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त किये।

वित्त एवं लेखा

मास नवम्बर ९५ में विश्वविद्यालय का १९९५–९६ का संशोधित बजट वर्ष १९९६–९७ का अनुमानित बजट वित्त समिति की बैठक दिनांक ०३–११–९५ में प्रस्तुत किया गया। वित्त समिति ने निम्न प्रकार बजट स्वीकृत किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान ९५–९६	बजट अनुमान ९६–९७
०१. वेतन एवं भत्ते आदि	१,९२,१४,२३०	१,९६,१३,७८०
०२. अंशदायी भविष्यनिधि	७६,३००	८६,२६०
०३. अन्य व्यय	४३,३५,४५०	३७,७६,७५०
योग व्यय	२,३६,२५,९८०	२,३४,७६,७९०
आय (–)	३७,१०,३८०	३५,५८,७००
योग	१,९९,१५,६००	१,९९,१८,०९०

समीक्षाधीन वर्ष १९९५–९६ में वित्त समिति एवं कार्य परिषद द्वारा १,९९,१६,००० का अनुरक्षण अनुदान स्वीकृत किया गया था किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा १,८२,९१,००० का अनुदान ही दिया गया। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार है–

1995–96 में विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान का विवरण

अष्टम् पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निम्न अनुदान प्राप्त हुए–

०१. भवन निर्माण के लिए १,५०,०००.००

अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से–

०१.	अनएसाइण्ड ग्रान्ट	२,००,०००.००
०२.	प्रौढ़ शिक्षा	८२,७५७.००
०३.	कम्प्यूटर उपकरण	४,८०,०००.००
०४.	व्यवसायिक पाठ्यक्रम	६,५०,०००.००
०५.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतू	५,५०,०००.००
०६.	जन्तु विज्ञान में कम्प्यूटर हेतू	६,२५,०००.००

मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट

०१.	डॉ. रूपकिशोर शास्त्री	८०,०००.००
०२.	डॉ. बी.डी. शर्मा	२१,६००.००

भारत सरकार से प्राप्त

०१.	मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट–डॉ. डी.के. माहेश्वरी	११,००,०००.००

उत्तर प्रदेश सरकार

०१.	मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट–डॉ. डी.के. माहेश्वरी	७२,५००.००
	विश्वविद्यालय द्वारा दान प्राप्त करने पर यू.जी.सी. द्वारा प्रोत्साहन राशि	८७,५००.००

आय का विवरण

1995–96

क्र.सं.	आय का मद	धनराशि
(क)	**अनुदान का मद**	
	विश्वविद्यालय अनुदान अयोग से अनुरक्षण अनुदान	१,८२,६१,०००.००
	योग (क)	१,८२,६१,०००.००
(ख)	**शुल्क तथा अन्य स्त्रोतों से आय–**	
०१.	पंजीकरण शुल्क	३१,६३०.००
०२.	पीएच.डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	१५,३००.००
०३.	पीएच.डी. मासिक शुल्क	३०,४४०.००
०४.	परीक्षा शुल्क	६,६३,८७७.००
०५.	अंकपत्र शुल्क	२४,२६०.००
०६.	विलम्ब दण्ड एवं टूट–फूट	१,०६,६१४.००
०७.	माइग्रेशन शुल्क	६,७८०.००
०८.	प्रमाणपत्र शुल्क	१६,३६५.००
०९.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों का शुल्क	२,४४,१७७.००
०१०.	सेवा आवेदन	३०,२५०.००
०११.	शिक्षा शुल्क	१५,१३,३४५.००
०१२.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	३२,०८५.००
०१३.	भवन शुल्क	७१,२६५.००
०१४.	क्रीडा शुल्क	१,८३,२१०.००
०१५.	पुस्तकालय शुल्क	१,१६,१२५.००
०१६.	परिचय पत्र शुल्क	६,८६०.००
०१७.	एसोसिएशन शुल्क	१०,६००.००
०१८.	प्रयोगशाला शुल्क	१२,६२,५७०.००
०१९.	महंगाई शुल्क	७१,२६५.००
०२०.	पुस्तकालय शुल्क	३६,२७८.००
०२१.	विकास	६,५२,४००.००
०२२.	पड़ताल शुल्क	१,८४०.००
०२३.	पत्रिका शुल्क	३१,४१६.००
०२४.	अन्य आय	५,७३,५८०.००
०२५.	किराया प्रोफेसर क्वार्टर	३१,४२०.००

मुख्य अतिथि को विद्यामार्तण्ड की डिग्री प्रदान करते हुए कुलाधिपति एवं कुलपति

दीक्षान्त भाषण करते हुए मुख्य अतिथि डा. स्मेकल

०२६.	वाहन ऋण	८५,६६१.००
०२७.	छात्रावास	१,०८,७६०.००
०२८.	प्रो. फण्ड अंशदान	–
०२९.	श्रद्धानन्द प्रकाशन	१०,१८०.००
०३०.	निर्धनता शुल्क	६,४५५.००
०३१.	साइकिल स्टैण्ड शुल्क	५५,२५०.००
०३२.	संग्रहालय	–
०३३.	सुदूर शिक्षा	४,५६,०००.००
	योग (ख)	६७,९८,९४८.००
	सर्वयोग (क + ख)	२,५०,८९,९४८.००

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

सत्र 1995–96

क्र.सं.	व्यय का मद		धनराशि
(क)			
०१.	वेतन		१,६०,६४,८२२.००
०२.	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान		१,१४,६३६.००
०३.	ग्रेच्युटी		५,३६,४५४.००
०४.	पेंशन		८,६३,३०४.००
		योग (क)	१,७६,०६,५१६.००
(ख)			
०१.	विद्युत एवं जल		२,६२,२३५.००
०२.	टेलीफोन		५८,८०५.००
०३.	मार्ग व्यय		१,६६,२८०.००
०४.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी		५८,०२१.००
०५.	लेखन सामग्री व छपाई		१,८६.६०५.००
०६.	डाक एवं तार		१७,८५२.००
०७.	वाहन एवं पेट्रोल		२,११,७१३.००
०८.	विज्ञापन		१,३०,३६०.००
०९.	कानूनी		८५,०६३.००
०१०.	आतिथ्य व्यय		६७,२१२.००
०११.	आडिट व्यय		२६,३२५.००
०१२.	दीक्षान्त व्यय		५४,८२६.००
०१३.	लोन संरक्षण		२,६७४.००
०१४.	भवन मरम्मत		१४,२६,८१३.००
०१५.	आकस्मिक व्यय		१,६४३.००
०१६.	मिश्रित व्यय		१,३६,८६६.००
०१७.	उपकरण एवं मरम्मत		११,५५,०४६.००
०१८.	फर्नीचर एवं साज–सज्जा		२,८६,०१३.००
०१९.	सदस्यता अंशदान		३७,७६२.००
०२०.	परीक्षकों का पारिश्रमिक		२,६५,३४६.००
०२१.	मार्गव्यय परीक्षक		८६,४४१.००

०२२.	निरीक्षक व्यय	२६,१३३.००
०२३.	प्रश्न–पत्रों की छपाई	२,३३,४२३.००
०२४.	डाक–तार व्यय	१७,१८०.००
०२५.	कापियों का मूल्य	४४,०३०.००
०२६.	लेखन सामग्री	२२,५३७.००
०२७.	अन्य व्यय	१,२८३.००
०२८.	नियमावली तथा पाठ्य विधि छपाई	४६,६६५.००
०२६.	छात्रों की छात्र–वृत्ति	३०,७५०.००
०३०.	वागवर्धिनी सभा	२,६७२.००
०३१.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	११,६१६.००
०३२.	सरस्वती यात्रा	२६,१३१.००
०३३.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	५,८५३.००
०३४.	खेल–कूद एवं क्रीड़ा	१,७३,२५०.००
०३५.	सेमिनार	१,८४२.००
०३६.	रसायन प्रयोगशाला	२,६२,००२.००
०३७.	भौतिक प्रयोगशाला	५२,३५२.००
०३८.	जन्तु विज्ञान प्रयोगशाला	६६,८४६.००
०३६.	वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	१,०६,०८२.००
०४०.	गैस प्लान्ट	७,६१८.००
०४१.	भौतिक विज्ञान शोध पत्रिका	२७,५५१.००
०४२.	पुस्तकें	२,७६,६०८.००
०४३.	जिल्दबन्दी एवं पुस्तक सुरक्षा	८,४६८.००
०४४.	कैटेलोग एवं काड्‌र्स	१८,६७८.००
०४५.	पत्रिकाओं की छपाई	१८,६२२.००
०४६.	ग्रीन हाऊस	५,०००.००
०४७.	निर्धन छात्र कोष	१,२००.००
०४८.	समाचार पत्र–पत्रिकाएं	१,०८,२५६.००
०४६.	पढ़ते हुए कमाओ	५,८८०.००
०५०.	वाहन हेतु ऋण	५३,६४६.००
०५१.	वेद प्रयोगशाला	४,०२८.००
०५२.	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	११,२२०.००
०५३.	योग	१०,०४८.००
०५४.	गणित विभाग	५,२२१.००
०५५.	श्रद्धानन्द प्रकाशन	१३,२१६.००
०५६.	एन.सी.सी.	७००.००
०५७.	कम्प्यूटर रख–रखाव	८०,२१५.००

०५८.	अंग्रेजी लैब	५,०५०.००
०५६.	हिन्दी पत्रकारिता	१६,८८६.००
०६०.	कम्प्यूटर स्टेशनरी	१७,४६८.००
०६१.	पुस्तकालय बीमा	६,०१०.००
०६२.	सुदूर शिक्षा	३,८२,८६८.००
०६३.	कैमिकल व्यय	१,७८,२७१.००

कुल आकस्मिक व्यय	७२,०२,८६०.००
कुल वेतन व्यय	१,७६,०६,५१६.००
कुल व्यय	२,४८,१२,४०६.००

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

कर्मचारियों की सूची

प्राध्यापकों की सूची

प्राच्य विद्या संकाय

१. वैदिक साहित्य

१. रिक्त, आचार्य/उपकुलपति
२. डॉ. मनुदव बन्धु, रीडर
३. डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, प्रवक्ता
४. डॉ. सत्यदेव निगमालंकार, प्रवक्ता

२. संस्कृत साहित्य

१. श्री वेद प्रकाश शास्त्री, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२. डॉ. महावीर अग्रवाल, रीडर
३. डॉ. सोमदेव शतांशु, रीडर
४. डॉ. रामप्रकाश, रीडर
५. डॉ. ब्रह्मदेव प्रवक्ता

३. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व

१. डॉ. श्यामनारायण सिंह, प्रोफेसर
२. डॉ. काशमीर सिंह, रीडर
३. डॉ. राकेश कुमार शर्मा, प्रवक्ता

४. दर्शनशास्त्र

१. डॉ. विजयपाल शास्त्री, रीडर
२. डॉ. त्रिलोक चन्द्र, रीडर
३. डॉ. उमराव सिंह बिष्ट, प्रवक्ता

५. योग शिक्षा विभाग

१. डॉ. ईश्वर भारद्वाज, प्रवक्ता

६. शारीरिक शिक्षा विभाग

१. निदेशक डॉ० रामकुमार सिंह डागर

मानविकी संकाय

१. हिन्दी साहित्य

१. डॉ. विष्णु दत्त राकेश, प्रोफेसर

२. डॉ. सन्तराम वैश्य, रीडर
३. डॉ. ज्ञानचन्द्र रावल, रीडर
४. डॉ. भगवान देव पाण्डेय, रीडर
५. श्री कमलकान्त बुधकर, प्रवक्ता

२. अंग्रेजी साहित्य

१. डॉ० नारायण शर्मा, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२. श्री सदाशिव भगत, रीडर
३. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, प्रवक्ता
४. डॉ. अम्बुज कुमार शर्मा, प्रवक्ता
५. डॉ. कृष्ण अवतार अग्रवाल, प्रवक्ता

३. मनोविज्ञान

१. प्रो. ओमप्रकाश मिश्रा, प्रोफेसर
२. श्री सतीश चन्द्र धमीजा, रीडर
३. डॉ. सूर्य कुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता
४. डॉ. चन्द्रपाल खोखर, प्रवक्ता

४. प्रौढ़ शिक्षा

१. डॉ. आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक
२. डॉ. जे.एस. मलिक–परियोजना अधिकारी

विज्ञान संकाय

१. गणित

१ डॉ. एस.एल. सिंह, प्रोफेसर
२. डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा, रीडर
३. डॉ. विज्येन्द्र कुमार, रीडर
४. डॉ. महिपाल सिंह, रीडर
५. डॉ. हरवंश लाल गुलाटी, प्रवक्ता

२. रसायन विज्ञान

१. डॉ. कौशल कुमार, रीडर
२. डॉ. ए.के. इन्द्रायण, रीडर
३. डॉ. रामकुमार पालीवाल, रीडर
४. डॉ. आर.डी. कौशिक, रीडर
५. डॉ. रणधीर सिंह, प्रवक्ता
६. डॉ. श्रीकृष्ण, प्रवक्ता

३. भौतिक विज्ञान

१. डॉ. बुद्धप्रकाश शुक्ला, रीडर
२. श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर, रीडर

३. डॉ. राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, रीडर
४. डॉ. पी.पी. पाठक, प्रवक्ता
५. रिक्त

४. कम्प्यूटर साइंस शिक्षा विभाग

१. डॉ. विनोद कुमार शर्मा, रीडर
२. श्री कर्मजीत भाटिया, प्रवक्ता
३. श्री सुनील कुमार, प्रवक्ता

५. कम्प्यूटर केन्द्र

१. श्री दिनेश चन्द्र बिश्नोई, सिस्टम मैनेजर
२. श्री अचल कुमार गोयल, प्रोग्रामर
३. श्री महेन्द्र असवाल, आपरेटर
४. श्री मनोज कुमार, आपरेटर
५. श्री द्विजेन्द्र पन्त, आपरेटर
६. श्री वेदव्रत, तकनीकि सहायक

जीव विज्ञान संकाय

१. वनस्पति विज्ञान विभाग

१. डॉ. डी.के. माहेश्वरी, प्रोफेसर
२. डॉ. पुरुषोत्तम कौशिक, रीडर
३. डॉ. गंगाप्रसाद गुप्ता, प्रवक्ता
४. डॉ. नवनीत, प्रवक्ता

२. जन्तु विज्ञान विभाग

१. डॉ. बी.डी. जोशी, प्रोफेसर
२. डॉ. टी.आर. सेठ, रीडर
३. डॉ. ए.के. चौपड़ा, रीडर
४. डॉ. दिनेश चन्द्र भट्ट, प्रवक्ता
५. डॉ. देवराज खन्ना, प्रवक्ता

प्रशासन

डॉ. धर्मपाल — ***कुलपति***
डॉ. जयदेव वेदालंकार — ***कुलसचिव***
श्री जयसिंह गुप्ता — ***वित्त अधिकारी***

स्थापना अनुभाग

१. श्री आनन्द कुमार सिंह — अनुभाग अधिकारी

२. श्री करतार सिंह	सम्पदा अधिकारी
३. श्री वेदपाल सिंह	सुरक्षाधिकारी
४. श्री गन्धर्व सैन	उद्यान अधिकारी
५. श्री सत्येन्द्र पाल सिंह	सचिव, कुलपति
६. श्री कमलेश नैथानी	नि.स., कुलसचिव
७. श्री संजीव कुमार राजपूत	अवर अभियंता
८. श्री देवीप्रसाद	सहायक
६. श्री कैलाश चन्द्र वैष्णव	विद्युतकार
१०. हेमन्त कुमार	जूनियर असि. कम टाइपिस्ट
११. मदन गोपाल उपाध्याय	उपरोक्त
१२. कुमुद चन्द्र जोशी	उपरोक्त
१३. डॉ. दीपक घोष	उपरोक्त
१४. जगमोहन सिंह नेगी	दफ्तरी
१५. अशोक कुमार	कारपेन्टर
१६.चन्द्रभान	भृत्य
१७. महेश चन्द्र जोशी	भृत्य
१८. योगेन्द्र सिंह	भृत्य
१६. मदन मोहन सिंह	भृत्य
२०. घासीराम	भृत्य
२१. श्रीराम	ड्राईवर
२२. नकलीराम	ड्राईवर
२३. मांगेराम	भृत्य/ड्राईवर
२४. दिवान सिंह	कुक
२५. गिरीश चन्द्र जोशी	पलम्बर
२६. माता प्रसाद	चौकीदार
२७. रूल्हा सिंह	चौकीदार
२८. राम सिंह	चौकीदार
२६. जलसिंह	चौकीदार
३०. ईसम सिंह	चौकीदार
३१. भूरि सिंह	चौकीदार
३२. योगेन्द्र शर्मा	चौकीदार
३३. रामबहादुर	चौकीदार
३४. हिम्मत सिंह	चौकीदार
३५. रमेश चन्द्र	चौकीदार
३६. श्याम सिंह	चौकीदार
३७. श्री चन्द्र कुमार मल	चौकीदार
३८. राम प्रसाद राय	चौकीदार

३६. हरिराम — माली
४०. श्यामलाल — माली
४१. बृजपाल — माली
४२. घिराऊ — माली
४३. बाबूलाल — माली
४४. गुरुप्रसाद — माली
४५. राम अजोर — माली
४६. बालेश्वर — सफाई कर्मचारी

लेखा अनुभाग

१. नन्द गोपाल आनन्द	अनुभाग अधिकारी, लेखा
२. रामनरेश शर्मा	सहायक
३. मोल्हड़ सिंह	जू.असि.कम–टाइपिस्ट
४. राजकिशोर शर्मा	"
५. अशोक डे	"
६. नन्द किशोर	"
७. वीर सिंह	"
८. बलबीर सिंह	भृतय
६. राम कृष्ण	भृतय
१०. रमाशंकर	फिक्स वेतन पर

शिक्षा परीक्षा अनुभाग

१. श्री सूर्य प्रकाश	अनुभाग अधिकारी
२. " महेन्द्र सिंह नेगी	सहायक
३. " प्रेम चन्द्र जुयाल	सहायक
४. " कालूराम त्यागी	जू.असि.कम–टाइपिस्ट
५. " डॉ. प्रदीप कुमार जोशी (जन सम्पर्क अधिकारी)	
६. " महावीर सिंह यादव	"
७. " बालकृष्ण शुक्ला	"
८. " वीरेन्द्र सिंह असवाल	"
६. " रामस्वरूप	जू.असि.–कम–टाइपिस्ट
१०. " महानन्द	भृत्य
११. " हरपाल	"
१२. " कमल सिंह पुण्डीर	"

प्राच्य विद्या संकाय

१. श्री राजपाल सिंह	जू. असि. कम टाइपिस्ट
२. " राजेश कुमार	भृत्य

३. महेन्द्र कुमार	भृत्य
४. देवेन्द्र कुमार	माली

मानविकी संकाय

१. श्री गिरीशचन्द्र सुन्दरियाल	निजि सहायक, कुलपति
२. " लालनर सिंह नारायण	प्रयोशाला सहायक
३. " सुभाष चन्द्र	जू. असि. कम टाइपिस्ट
४. " शिवकुमार	भृत्य
५. " राजेन्द्र कुमार	भृत्य
६. " मानसिंह	चौकीदार
७. " सन्तोष कुमार	फील्ड अटैंडेट
८. " बलजीत सिंह	सफाई कर्मचारी

विज्ञान महाविद्यालय

१. श्री यशपाल सिंह राणा	सहायक
२. " धर्मवीर सिंह	जू.असि. कम टाइपिस्ट
३. " हंसराज जोशी	"
४. " प्रमोद कुमार	लेब टेक्निशियन
५. " शशीभूषण	"
६. " ठकरा सिंह	प्रयोगशाला सहायक
७. " मानसिंह	गैसमेन
८. " जयपाल सिंह	लैब ब्वांय
६. " पुरुषोत्तम कुमार	"
१०. " रामदास	भृत्य
११. " रायसिंह	"
१२. " राजपाल सिंह	"
१३. विनोद कुमार	सफाई कर्मचारी

वनस्पति विज्ञान

१. श्री रूद्रमणि	प्रयोगशाला सहायक
२. " चन्द्रप्रकाश	"
३. " विजयपाल सिंह	लैब अटैन्डैन्ट
४. " वीरेन्द्र सिंह	माली
५. " रामसुमंत	माली

जन्तु विज्ञान

१. श्री कृष्ण कुमार शर्मा	जू. असि. कम टाइपिस्ट
२. " हरिश चन्द्र	प्रयोगशाला सहायक
३. " रजत सिन्हा	स्टोर कीपर
४. " प्रीतम लाल	भृत्य

५. " शशीकान्त धीमान	भृत्य

पुस्तकालय

१. डॉ. जगदीश विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष
२. " गुलजार सिंह चौहान	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
३. श्री उपेन्द्र कुमार झा	प्रोफेशनल सहायक
४. " ललित किशोर	सेमी प्रोफेशनल सहायक
५. " मिथलेश कुमार	सेमी प्रोफेशनल सहायक
६. " कौस्तुभ चन्द्र पाण्डेय	सेमी प्रोफेशनल सहायक
७. " अनिल कुमार धीमान	सेमी प्रोफेशनल सहाथक
८. " सोमपाल सिंह	सहायक
६. " जगपाल सिंह	जू.असि. कम टाइपिस्ट
१०. " मदनपाल सिंह	"
११. " जयप्रकाश	बुक बाइन्डर
१२. " गोबिन्द सिंह	बुक बाइन्डर
१३. " घनश्याम सिंह	भृत्य
१४. " बृजमोहन	भृत्य
१५. " कुलभूषण	भृत्य
१६. " रामपद राय	भृत्य
१७. लाल कुमार कश्यप	लेखक/फिक्स वेतन पर

संग्रहालय

१. श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	संग्रहपाल
२. " डॉ. सुखबीर सिंह	सहायक क्यूरेटर
३. " डॉ. प्रभात कुमार सेंगर	संग्रहालय सहायक
४. " अरविन्द कुमार	लिपिक (फिक्स वेतन पर)
५. " रमेशचन्द्र पाल	फिल्ड अटैन्डैंट
६. " ओमप्रकाश	फिल्ड अटैन्डेंट
७. " रामजीत	माली
८. " फूल सिंह	सफाई कर्मचारी

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

१. श्रीमती प्रतिभा शर्मा	वरिष्ठ प्रवक्ता
२. " भगवती गुप्ता	प्राचार्या
३. " मीरादास गुप्ता	वरिष्ठ प्रवक्ता
४. " सरोज नौटियाल	वरिष्ठ प्रवक्ता
५. " रंजना राजदान	प्रवक्ता
६. " हेमलता	प्रवक्ता
७. " निपुर	प्रवक्ता

८. " सुदेश खन्ना	पुस्तकालयाध्यक्ष
६. " बलबीर कौर	पी.टी.आई.
१०. " भागेश्वरी	स्टोर कीपर
११. श्री ओम प्रकाश नवानी	जू. असि. कम टाइपिस्ट
१२. श्रीमती महेश्वरी	सेविका
१३. " बिमला देवी	सफाई कर्मचारी
१४. श्री मुन्नालाल	माली
१५. " सूरत सिंह राणा	भृत्य
१६. " वीर बहादुर	चौकीदार

महिला शिक्षा संकाय, सतीकुण्ड, हरिद्वार

१. डॉ. सुनृता विद्यालंकार	प्रभारी / प्रवक्ता
२. श्रीमती ममता गर्ग	लिपिक / पुस्तकालयाध्यक्ष
३. श्रीमती बाला देवी	सेविका

दीक्षान्त समारोह, 1996

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
कन्या गुरुकुल हाथरस							
१	४६०	६२०६२७	कु० आशा	श्री घनश्याम दास	विद्यालंकार	हिन्दी, दर्शन अंग्रेजी, भा०सं०	प्रथम
२	४६१	६२०६३२	" गीतांजलि	" गोपी सिंह	"	"	प्रथम
३	४६२	६१०३२०	" ललिता	" रामनिवास	"	"	द्वितीय
४	४६३	६२०६३०	" प्रेमलता	" हरपालसिंह	"	"	द्वितीय
५	४६४	६२०६३१	" ऋतु	" आशाराम	"	"	द्वितीय
६	४६५	६२०६२८	" रेखा	" श्रीनिवास	"	"	प्रथम
७	४६६	६१०३२४	" सुभद्रा	" ओमप्रकाश	"	"	द्वितीय
८	४६७	६२०६२६	सपना	" रमेशचन्द वर्मा	"	"	द्वितीय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय							
९	४६८	६२०४२४	ब्रिजेन्द्र कुमार यादव	श्री ओमप्रकाश यादव	"	हिन्दी मनोज्ञान	द्वितीय
१०	४६९	६१००२१	मुकेश कुमार	" दयानन्द मलिक	"	हिन्दी, योग	द्वितीय
११	४७०	६२०१४४	ओम प्रकाश	" मदन मोहन	"	हिन्दी, दर्शन	प्रथम
१२	४७१	६२०४२५	प्रदीप कुमार	" रामदयाल	"	हिन्दी इतिहास	द्वितीय
१३	४७२	६१०४४०	रामनरेश श्रोत्रिय	" बादशाह शर्मा	"	मनोविज्ञान, योग	द्वितीय
कन्या गुरुकुल देहरादून							
१४	४७७	६२०४४८	कु० महिमा	श्री नागेश्वर वर्मा	विद्यालंकार	वै.लौ.अंग्रेजी,भा०स०, हिन्दी, इति.	प्रथम

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१५	४७८	६२०४४६	" मीनल लूथरा	बसन्तराज लूथरा	"	हिन्दी,संगीत वादन	प्रथम
१६	४७६	६२०४५१	" ऋतु	" कृष्णलाल जोली	"	हिन्दी, चित्रकला	प्रथम
१७	४८०	६२०४५०	" सोनिया	" मोहनलाल	"	हिन्दी, संगीत गायन	प्रथम
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय वेदालंकार							
१	१४३३	६२०६२३	दीनदयाल	" जी० कृष्णा	वेदालंकार	वेद,संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी, इतिहास	प्रथम
२	४७३	६१०४३७	धर्मपाल नारा	" देवीसिंह नारा	"	योग	प्रथम
३	४७५	६१०४०४	कल्पेन्द्र कुमार	" दयानिधि	"	मनोविज्ञान	प्रथम
४	१४३४	६२०६२४	सत्यदेव राठी	" हरवीरसिंह	"	इतिहास	प्रथम
५	१६१३	६२०४२३	ब्रह्मदेव	" मुनिदेव शर्मा	"	हिन्दी	द्वितीय
बी०एस–सी० कम्प्यूटर ग्रुप १६६६							
१	१२२४	६२०३४४	आलोक अग्रवाल	श्री कृष्णअवतार अग्रवाल	बी०एस–सी०	कम्प्यूटर,भौतिकी गणित	प्रथम
२	१२२५	६२०३४५	अमित गोयल	" सुरेन्द्र कुमार गोयल	"	"	प्रथम
३	१२२६	६२०४६०	अमित गुप्ता	" ए०सी० गुप्ता	"	"	द्वितीय
४	१२२७	६२०३४७	अमित माथुर	" विपिन बिहारी माथुर	"	"	प्रथम
५	१२२८	६२०३४८	आनन्द भूषण	" वेदप्रकाश शर्मा	"	"	द्वितीय
६	१२२६	६२०४५६	अंकुर पाण्डेय	" ज्ञानेन्द्र पाण्डेय	"	"	प्रथम
७	१२३०	६२०३४६	अंशुल साराभाई	" जे०पी० साराभाई	"	"	प्रथम
८	१२३१	६२०३५०	अनुज कुमार	" नरेन्द्र सिंह विश्नोई	"	"	द्वितीय
६	१२३२	६२०३५१	अरुण आहूजा	" जगदीश कुमार आहूजा	"	"	प्रथम
१०	१२३३	६२०३५२	अरविन्द कुमार अग्रवाल	" श्यामलाल अग्रवाल	"	"	प्रथम

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
११ १२३४	६१००५४	अरविन्द्र रावत	" दौलत सिंह रावत	"	"	द्वितीय
१२ १२३५	६२०३५३	अशोक कुमार	" प्रेमचन्द जुयाल	"	"	प्रथम
१३ १२३६	६२०३५४	अशोक कुमार सिंह	" एस.आर. सिंह	"	"	प्रथम
१४ १२३७	६२०३५५	आशुतोष शर्मा	" नन्द किशोर शर्मा	"	"	प्रथम
१५ १२३८	६२०३५६	अविनाश आनन्द	" नन्दगोपाल आनन्द	"	"	प्रथम
१६ १२३९	६२०३५८	ब्रजवीर सिंह	" मीरसिंह	"	"	प्रथम
१७ १२४०	६२०३५९	दीपक क्वात्रा	" जे.सी. क्वात्रा	"	"	प्रथम
१८ १२४१	६२०३६०	दीपेन्द्र किशोर पाण्डेय	" आर.के. पाण्डेय	"	"	द्वितीय
१९ १२४२	६२०३६१	धनेश कुमार शर्मा	" लक्ष्मीनारायण शर्मा	"	"	प्रथम
२० १२४३	६२०३६२	धीरेन्द्र कुमार सिंह	" एच.एन. सिंह	"	"	द्वितीय
२१ १२४४	६२०३६३	गगनकुमार ग्रोवर	" गुलशन कुमार ग्रोवर	"	"	प्रथम
२२ १२४५	६२०३६४	गौतम रावत	" सहदेव सिंह रावत	"	"	प्रथम
२३ १२४६	६२०३६५	जसपाल सिंह	" कर्मसिंह	"	"	द्वितीय
२४ १२४७	६२०३६६	जितेन्द्र उपाध्याय	" मथुरादत्त उपाध्याय	"	"	प्रथम
२५ १२४८	६२०३६८	कुशलदीप	" विश्वेश चन्द्र	"	"	प्रथम
२६ १२४९	६२०३६९	ललित किशोर	" हरीश चन्द्र अरोड़ा	"	"	प्रथम
२७ १२५०	६२०३७२	मनोज कुमार गोयल	" नरेन्द्रमल गोयल	"	"	प्रथम
२८ १२५१	६२०३७३	मनोज कुमार जोशी	" प्रमोदचन्द्र जोशी	"	"	प्रथम
२९ १२५२	६२०३७१	मनोज कुमार वर्मा	" एच.एस. वर्मा	"	"	प्रथम
३० १२५३	६२०३७४	मयंक	" राजेन्द्र कुमार	"	"	प्रथम

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
३१	१२५४	६२०००६	मौ० महताब बेग	" श्री इदरीश बेग	बी.एससी.३	गणित, भौतिक, कम्प्यूटर	प्रथम
३२	१२५५	६२०३७५	मुकेश जैन	" प्रद्युम्न कुमार जैन	"	"	प्रथम
३३	१२५६	६२०३७६	मुकुल अग्रवाल	" धन किशोर मेहता	"	"	प्रथम
३४	१२५७	६२०३७९	नितिन गुप्ता	" आर.के. गुप्ता	"	"	द्वितीय
३५	१२५८	६२०४५८	पंकज बडोनी	" सी.बी. बडोनी	"	"	द्वितीय
३६	१२५९	६२०३८०	पंकज गौड	" राधेश्याम गौड	"	"	प्रथम
३७	१२६०	६२०३८१	पप्पू कुमार विक्रबाल	" जयपाल सिंह	"	"	द्वितीय
३८	१२६१	६२०३८२	प्रशान्त त्यागी	" रणबीर सिंह	"	"	प्रथम
३९	१२६२	६१०२३६	राजीव सिंह	" इन्द्राज सिंह	"	"	प्रथम
४०	१२६३	६२०३८६	राजेश खन्ना	" लवकुमार खन्ना	"	"	प्रथम
४१	१२६४	६२०३८५	रितेष क्षेत्री	" रामसिंह क्षेत्री	"	"	प्रथम
४२	१२६५	६२०३८७	रितेष कुमार सेमवाल	" हरिप्रसाद सेमवाल	"	"	प्रथम
४३	१२६६	६२०३८८	रोहित सिन्हा	" एच.एम. सिन्हा	"	"	द्वितीय
४४	१२६७	६२०३६०	सचिन जैन	" हरिश चन्द्र जैन	"	"	प्रथम
४५	१२६८	६२०३६१	सचिन कुमार गम्भीर	" मोहन लाल गम्भीर	"	"	द्वितीय
४६	१२६९	६२०३६३	सन्दीप मेहता	" भूपेन्द्र कुमार मेहता	"	"	प्रथम
४७	१२७०	६२००१९	सत्यजीत करकरा	" बलविन्द कृष्ण करकरा	"	"	द्वितीय
४८	१२७१	६२०३६५	सत्येन्द्र सिंह	" जयपाल सिंह	"	"	तृतीय
४९	१२७२	६२०३६६	सुबोध कुमार	" रमेश चन्द	"	"	प्रथम
५०	१२७३	६२०३६७	सुरेन्द्र सिंह चौहान	" के.एस. चौहान	"	"	प्रथम

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
५१ १२७४	६२०३६८	तरुण गौतम	" एस.एन. गौतम	"	"	प्रथम
५२ १२७५	६२०००८	तरुण मक्कड़	" रामनाथ मक्कड़	"	"	द्वितीय
५३ १२७६	६२०३६६	विजय कुमार	" बाबूलाल गुप्ता	"	"	प्रथम
५४ १२७७	६२०४००	विकास कर्णवाल	" रक्षपाल सिंह	"	"	प्रथम
५५ १२७८	६२०४०३	विनय वत्स	" विष्णु चन्द	"	"	तृतीय
५६ १२७६	६२००७३	विनीत सचदेवा	" टी.डी. सचदेवा	"	"	द्वितीय
५७ १२८०	६२०४०५	योगेश गम्भीर	" पी.डी. गम्भीर	"	"	प्रथम
५८ १२८१	६२०४०४	यशवन्त चौहान	" सुन्दरसिंह चौहान	"	"	प्रथम
बी.एससी. तृतीय गणित						
१ १२८२	६२०३३७	अभय नाथ	श्री धीरेन्द्रनाथ	बी.एससी. ३	गणित, भौतिक, रसायन	द्वितीय
२ १२८३	६२०१३६	अभिनव कसंल	एच.के. कसंल	"	"	द्वितीय
३ १२८४	६२०३३०	आर्दश	एस.के. कौशिक	"		प्रथम
४ १२८५	६२०१४६	अजय कुमार आहूजा	बंशीलाल आहूजा	"		द्वितीय
५ १२८६	६२०१४७	अजय कुमार कुन्तेल	लीलाधर सिंह	"		प्रथम
६ १२८७	६२०१४८	आकाशदीप	हरिनाथ	"		प्रथम
७ १२८८	६२०१५२	अमित कुमार श्रीवास्तव	एस.के. श्रीवास्तव	"		द्वितीय
८ १२८६	६२०१५५	आनन्द वर्धन	प्रेमचन्द शास्त्री	"		प्रथम
६ १२६०	६२०१५६	अनन्त कुमार	राधेश्याम	"		द्वितीय
१० १२६१	६२०१५७	अनिल अवस्थी	बी.पी. अवस्थी			प्रथम
११ १२६२	६२०१५८	अनिलचन्द शर्मा	गोविन्द प्रसाद			द्वितीय

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१२	१२६३	६२०१६०	अनुज गोयल	रामनिवास गोयल	"	"	द्वितीय
१३	१२६४	६२०१६१	अनुज कर्णवाल	बृजमोहन कर्णवाल	"	"	द्वितीय
१४	१२६५	६२०३३२	अनुज शर्मा	एच. शर्मा	"	"	द्वितीय
१५	१२६६	६२०१६३	अर्जुनसिंह	इच्छाराम	"	"	द्वितीय
१६	१२६७	६२०१६४	अरुण कुमार	राजेन्द्र शर्मा	"	"	द्वितीय
१७	१२६८	६२०१११	अश्वनी कुमार	वेदसिंह	"	"	द्वितीय
१८	१२६६	६२०१७०	अश्वनी कुमार सिंह	महेन्द्र प्रतातसिंह	"	"	द्वितीय
१६	१३००	६२०१७२	अतुल कुमार पंकज	भगवानसिंह	"	"	द्वितीय
२०	१३०१	६२०१६६	अतुल कुमार शर्मा	रविदत्त शर्मा	"	"	द्वितीय
२१	१३०२	६१००६०	बृजेश कुमार वर्मा	रामजी प्रसाद	"	"	द्वितीय
२२	१३०३	६२०१७६	दीपक अग्रवाल	रतनलाल गंगल	"	"	द्वितीय
२३	१३०४	६२०१७७	दीपक कुमार त्यागी	देवशर्मा त्यागी	"	"	द्वितीय
२४	१३०५	६२०१७८	देवेन्द्र कुमार	हरिश्चन्द्र	"	"	द्वितीय
२५	१३०६	६२०१८०	धीरज कुमार शर्मा	एस.के. शर्मा	"	"	प्रथम
२६	१३०७	६२०१८२	दुष्यन्त कुमार	रुद्रमणी	"	"	प्रथम
२७	१३०८	६२०१८५	गिरीश कालरा	आई.सी. कालरा	"	"	प्रथम
२८	१३०६	६२०१८६	गोविन्द सिंह रावत	हीरासिंह रावत	"	"	प्रथम
२६	१३१०	६२०१८६	हरीशचन्द्र	कैलाश प्रसाद	"	"	द्वितीय
३०	१३११	६२०१६०	हरीशचन्द्र जोशी	नन्दकिशोर जोशी	"	"	प्रथम
३१	१३१२	६१००६६	हेमन्त कुमार	" मनोहर लाल	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
३२	१३१३	६२०१६५	जयप्रकाश वर्मा	" एल.आर. वर्मा	"	"	द्वितीय
३३	१३१४	६२०१६६	जसवीर सिंह	" राजेन्द्र सिंह	"	"	द्वितीय
३४	१३१५	६२०१६७	कमलकान्त शर्मा	" रविशंकर शर्मा	"	"	द्वितीय
३५	१३१६	६२०१६८	कमल कुमार वर्मा	" अमरलाल	"	"	द्वितीय
३६	१३१७	६२०२०२	महक सिंह	" हरपाल सिंह	"	"	प्रथम
३७	१३१८	६२०२०४	मनीष अरोड़ा	" भूषणराज अरोड़ा	"	"	द्वितीय
३८	१३१९	६२०२०५	मनीष कुमार	" रामसिंह चौहान	"	"	प्रथम
३९	१३२०	६२०२०६	मनोज कुमार	" बालेश्वर सिंह	"	"	द्वितीय
४०	१३२१	६२०२०७	मनोज कुमार गुप्ता	" टी.एम.पी. गुप्ता	"	"	द्वितीय
४१	१३२२	६२०२०८	मनोज शर्मा	" के.सी. शर्मा	"	"	द्वितीय
४२	१३२३	६२०२१४	मनोज कुमार अलखानिया	" शिवनारायण अलखानिया	"	"	द्वितीय
४३	१३२४	६२०४६४	मुकेश कुमार गुप्ता	" गौतम प्रसाद गुप्ता	"	"	प्रथम
४४	१३२५	६२०२१८	नवीन भाटिया	" आई.जे. भाटिया	"	"	द्वितीय
४५	१३२६	६२०२१९	नवीन सिंघल	" ओमप्रकाश सिंघल	"	"	द्वितीय
४६	१३२७	६२०२२२	नीरज कुमार	" श्याम सुन्दर	"	"	द्वितीय
४७	१३२८	६२०२२१	नीरज कुमार	" साधूराम	"	"	प्रथम
४८	१३२९	६२०२२३	नीरज कुमार झा	" चन्द्रेश्वर झा	"	"	प्रथम
४९	१३३०	६२०२२६	नितिन वर्मा	" आर.के. वर्मा	"	"	द्वितीय
५०	१३३१	६२०२२९	पंकज कुमार	" ओमपाल सिंह	"	"	प्रथम
५१	१३३२	६२०२३०	पंकज कुमार	" रमेशचन्द्र	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
५२	१३३३	६२०२३१	पंकज कुमार मित्तल	" रामनरेश गुप्ता	"	"	प्रथम
५३	१३३४	६२०२३२	पंकज वर्मा	" एन.पी.एस. वर्मा	"	"	द्वितीय
५४	१३३५	६२०२३४	पवन कुमार चौधरी	" आर.पी.एस. वर्मा	"	"	द्वितीय
५५	१३३६	६१०११४	पवनीश कुमार शर्मा	" सुदर्शन कुमार शर्मा	"	"	द्वितीय
५६	१३३७	६१०२८०	पीयूष तिवारी	" एस.के. तिवारी	"	"	द्वितीय
५७	१३३८	६२०२३५	प्रफुल्ल कुमार शर्मा	" उमाकान्त शर्मा	"	"	प्रथम
५८	१३३९	६२०२३६	प्रशान्त माहेश्वरी	" जे.पी. माहेश्वरी	"	"	द्वितीय
५९	१३४०	६२०२३९	पुनीत अग्रवाल	" हरिराम अग्रवाल	"	"	प्रथम
६०	१३४१	६२०२४१	राजन वाजपेयी	" आर.वी. लाल वाजपेयी	"	"	द्वितीय
६१	१३४२	६२०२४२	राजीव जण्डवानी	" रामचन्द्र जण्डवानी	"	"	द्वितीय
६२	१३४३	६२०२४५	राजीव मिगलानी	" ओमप्रकाश मिगलानी	"	"	प्रथम
६३	१३४४	६२०३३९	रजनीश भल्ला	" जी.एस. भल्ला	"	"	प्रथम
६४	१३४५	६१००७४	राजबीर सिंह	" हरिराम	"	"	द्वितीय
६५	१३४६	६२०५१५	रविन्द्र गौड़	" ए.पी. गौड़	"	"	द्वितीय
६६	१३४७	६२०२५२	रविन्द्र कुमार चौहान	" अशोक कुमार चौहान	"	"	द्वितीय
६७	१३४८	६२०२५५	रितेष कुमार पालीवाल	" श्री प्रकाश पालीवाल	"	"	द्वितीय
६८	१३४९	६२०२५६	रोहित धीमान	" नरेश कुमार धीमाान	"	"	द्वितीय
६९	१३५०	६२०२५७	रोहित सक्सेना	" ब्रह्मप्रकाश सक्सेना	"	"	प्रथम
७०	१३५१	६२०२६०	संदीप अग्रवाल	" सुरेश चन्द्र अग्रवाल	"	"	प्रथम
७१	१३५२	६१००६६	संदेश	" के.पी. सिंह	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
७२ १३५३	६२०२६१	संजय कुमार	" बलजोर सिंह	"	"	द्वितीय
७३ १३५४	६२०२६५	संजीव कुमार	" बृजेश कुमार शर्मा	"	"	द्वितीय
७४ १३५५	६१०१५३	संजीव कुमार शाही	" श्यामविजय शाही	"	"	द्वितीय
७५ १३५६	६२०२६७	सतीश कुमार कश्यप	" श्याम सिंह	"	"	द्वितीय
७६ १३५७	६२०२६८	सौरभ त्यागी	" रामगोपाल त्यागी	"	"	द्वितीय
७७ १३५८	६२०२६६	शैलेन्द्र मित्तल	" आर.के. मित्तल	"	"	द्वितीय
७८ १३५६	६२०२७०	शलभ कपूर	" आर.के. कपूर	"	"	प्रथम
७६ १३६०	६२०२७३	शैलेन्द्र कौशिष	" वी.के. कौशिष	"	"	द्वितीय
८० १३६१	६१००११	श्रवण सिंह	" कंवर सिंह रावत	"	"	द्वितीय
८१ १३६२	६२०२७४	सिद्धार्थ	" एस.के. भटनागर	"	"	द्वितीय
८२ १३६३	६२०२७५	सुभाष चन्द्र बलोनी	" शिवप्रसाद बलोनी	"	"	द्वितीय
८३ १३६४	६१०२५२	सुधाशु अग्रवाल	" जगदीश चन्द्र अग्रवाल	"	"	द्वितीय
८४ १३६५	६२०२८१	सुधीर कुमार	" भूपाल सिंह	"	"	प्रथम
८५ १३६६	६१०३५१	सुनील ध्यानी	" एल.पी. ध्यानी	"	"	द्वितीय
८६ १३६७	६२०२८२	सुनील नेगी	" विजय	"	"	प्रथम
८७ १३६८	६२०२८३	सूरज पाल सिंह	" होबल सिंह	"	"	"द्वितीय
८८ १३६६	६१००७८	वेदप्रकाश मणि	" वशिष्ठ मणि	"	"	द्वितीय
८६ १३७०	६२०२८६	विजय गुप्ता	" शिव ओमं कुमार गुप्ता	"	"	"द्वितीय
६० १३७१	६२०२६२	विनय कुमार अग्रवाल	" एस.सी. अग्रवाल	"	"	द्वितीय
६१ १३७२	६१००८५	विपिन कुमार	" रघुवीर सिंह राषत	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
६२	१३७३	६२०३००	विशाल पन्त	" बी.सी. पन्त	"	"	द्वितीय
६३	१३७४	६००१८५	विश्वास कुमार	" धर्मवीर शर्मा	"	"	द्वितीय
६४	१८०६	६२०२०६	मनोज कुमार	" तिलक चन्द्र	"	"	द्वितीय
६५	१६१२	६१००६५	नरेश कुमार शर्मा	" बालकृष्ण शर्मा	"	"	द्वितीय

मनोविज्ञान ग्रुप

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
६६	१३७५	६२०४०८	कादिर हुसैन	श्री आई.एम. अंसारी	गणित, भौतिक, मनोविज्ञान		द्वितीय
६७	१३७६	६१०२१७	मनोज कुमार शर्मा	" एम.एल. शर्मा	"	"	प्रथम
६८	१३७७	६२०४११	प्रभाकर मिश्र	" सर्वजीत मिश्र	"	"	द्वितीय
६६	१३७८	६२०४१६	विनय कुमार शर्मा	" नरेन्द्रपाल शर्मा.	"	"	द्वितीय
१००	१३७६	६२०४१७	योगेश कुमार खण्डूजा	" रामगोपाल	"	"	प्रथम

बी.एससी. तृतीय खण्ड बायो ग्रुप १६६५

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१	१३८०	६२००२८	आलोक कुमार	" विश्वनाथ प्रसाद खरे	"	रसा. वन. जन्तु	द्वितीय
२	१३८१	६२००२४	अजय कुमार शर्मा	" महेशानन्द	"	"	द्वितीय
३	१३८२	६२००२३	अजय कुमार चौहान	" हरपालसिंह चौहान	"	"	प्रथम
४	१३८३	६२००२७	अलंकार यादव	" आर.पी. सिंह	"	"	द्वितीय
५	१३८४	६२००३१	आदेशचन्द चौहान	" डालचन्द चौहान	"	"	द्वितीय
६	१३८५	६२००२६	अश्विनी चौहान	" सत्यपालसिंह चौहान	"	"	प्रथम
७	१३८६	६२०१२४	अजीतपाल सिंह	" बी.एस. सिरोही	"	"	द्वितीय
८	१३८७	६२००३३	चन्द्रशेखर	" बिरमसिंह	"	"	द्वितीय
६	१३८८	६१०२३१	देवेन्द्र कुमार शर्मा	" भोजराज शर्मा	"	"	प्रथम

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१० १३८६	६२०४३७	देवेन्द्र दत्त	" तारादत्त	"	"	द्वितीय
११ १३९०	६२००३५	दर्पण शर्मा	" शिवनारायण शर्मा	"	"	प्रथम
१२ १३९१	६२००३७	धर्मदेव भारद्वाज	" राजाराम भारद्वाज	"	"	प्रथम
१३ १३९२	६२००३४	धीरजसिंह राणा	" गुलाबसिंह राणा	"	"	प्रथम
१४ १३९३	६२००४०	गगनदीप क्वात्रा	" हरीश कुमार क्वात्रा	"	"	प्रथम
१५ १३९४	६२००४१	हिमांशु वशिष्ठ	" श्रीकृष्ण	"	"	प्रथम
१६ १३९५	६२००४४	जगदीश कुमार	" रुद्र कुमार	"	"	द्वितीय
१७ १३९६	६२००४३	जनार्दन शर्मा	" पी.एन. शर्मा	"	"	द्वितीय
१८ १३९७	६२००४५	कमल किशोर	" जनेश्वर प्रसाद सिंघल	"	"	प्रथम
१९ १३९८	६२००४६	मनोज कुमार	" जगदीश प्रसाद	"	"	द्वितीय
२० १३९९	६२०५१४	मनोज कुमार सिंह	" महेन्द्रसिंह	"	"	द्वितीय
२१ १४००	६२००५०	मनोजकुमार गंगवार	" दीनदयाल गंगवार	"	"	द्वितीय
२२ १४०१	६१०१९९	मनीष जैन	" वी.के. जैन	"	"	द्वितीय
२३ १४०२	६२००५८	मनीष सिंह	" आर.पी. सिंह	"	"	प्रथम
२४ १४०३	६२००२०	नितिन	" मूलचन्द गुप्ता	"	"	प्रथम
२५ १४०४	६२०१२५	प्रवीण कुमार मुण्डेपी	" केशवानन्द मुण्डेपी	"	"	द्वितीय
२६ १४०५	६१०२३८	पंकज कुमार सैनी	" वीरसिंह सैनी	"	"	द्वितीय
२७ १४०६	६२००६७	पुष्पेन्द्र कुमार	" राजेन्द्र कुमार	"	"	प्रथम
२८ १४०७	६२०१०८	राजेश कुमार शर्मा	" बी.बी. शर्मा	"	"	द्वितीय
२९ १४०८	६१०१२५	राजेन्द्र कुमार	" चन्द्रशेखर	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
३० १४०६	६२०१२२	रोमेश कुमार शर्मा	" रामप्रताप शर्मा	"	"	द्वितीय
३१ १४१०	६२००६६	राजीव सैनी	" काबुलसिंह	"	"	द्वितीय
३२ १४११	६२००५५	शैलेन्द्र बहुगुणा	" सतीशचन्द्र बहुगुणा	"	"	द्वितीय
३३ १४१२	६२००६१	शशांक पालीवाल	" शिवकुमार पालीवाल	"	"	द्वितीय
३४ १४१३	ˊ२०१२१	शैलेन्द्र भारती	" जी.डी. भारती	"	"	प्रथम
३५ ०''१४	६२००७२	सचिन जैतली	" गोपीनाथ जैतली	"	"	द्वितीय
३६ १४१५	६२००७०	सन्दीप कुमार	" चन्द्रगोपाल वर्मा	"	"	द्वितीय
३७ १४१६	२००७१	संजय कुमार	" मुन्शीराम	"	"	द्वितीय
३८ १४ ा७	६२००२२	संजय कुमार सिंह	" रामसिंह	"	"	द्वितीय
३९ १४१८	६२००५६	संजीव कुमार शर्मा	" पवन कुमार शर्मा	"	"	प्रथम
४० १४१९	६२००६६	संजीव कुमार	" रमेशलाल चुग	"	"	प्रथम
४१ १४२०	६,२००७५	सुभाषचन्द	" हरमलसिंह	"	"	द्वितीय
४२ ',४२१	६२००७४	सुधीर कुमार	" हरपालसिंह	"	"	द्वितीय
४३ १४२२	६२००५३	सुधीर कुमार	" रतीराम	"	"	द्वितीय
४४ १४२३	६२००६३	सुशील कुमार	" रामपाल सिंह	"	"	द्वितीय
४५ १४२४	६२००५४	सुनील चतुर्वेदी	" हीरालाल चतुर्वेदी	"	"	प्रथम
४६ १४२५	६१००२६३	योगेश कुमार	" जगदीश प्रसाद	"	"	द्वितीय
४७ १४२६	६२००७६	विजय कुमार शर्मा	" जयप्रकाश शर्मा	"	"	द्वितीय
४८ १४२७	६०००६७	करणसिंह	" रघुवीर सिंह	"	"	द्वितीय
४९ १४२८	६२००३६	धीरज कुमार शर्मा	" रमाकान्त शर्मा	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
५० १४२६	६१०१६५	विजय कुमार आहूजा	" सेवाराम	"	"	द्वितीय
५१ १४३१	६००१०५	हरेन्द्र प्रताप सिंह	" रामसिंह	"	"	द्वितीय

एम.ए.

क्र.सं.अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१ १६६१	६३०४११	जसवन्त राय	" चौ० जीवन दास	एम.ए.	वैदिक साहित्य	प्रथम
२ १६६२	६३०४८७	राजबहादुर	" मेड़ालाल	"	"	प्रथम
३ १६६३	६३०५४७	शिव प्रसाद शर्मा	" धर्मप्रसाद शर्मा	"	"	प्रथम
४ १६६४	६००२१३	सदानन्द	" मगन बिहारी	"	"	प्रथम
५ १६६५	८६०१६२	नरेश कुमार	" रघुवीर सिंह	"	"	प्रथम
६ १४३८	६३०४४०	विरेन्द्र कुमार	" सुख दयाल	"	"	प्रथम
१ १६६७	६३०६०२	ब्रह्मचारी शिवनन्दन प्रसाद	" जगदीश मेहतो	"	दर्शनशास्त्र	द्वितीय
२ १६६८	६३०५६८	कु. मीनाक्षी	" कृष्णचंद	"	"	द्वितीय
३ १६६६	६३०६४६	रीना घोष	" कालीपद घोष	"	"	द्वितीय
४ १६७०	६३०५६७	रेनु	" अभय देव	"	"	प्रथम
५ १६७१	६३०६२५	सीता पन्त	" पूरनचंद पन्त	"	"	द्वितीय
१ १६७३	६३०५१६	रामजीत	" छोटन	"	योग	प्रथम
२ १६७४	६३०१७३	पूर्वेन्द्र	" उदय सिंह	"	"	द्वितीय
३ १६७५	६०००० ६	सुरक्षित कुमार गोस्वामी	" नरेन्द्र गोस्वामी	"	"	प्रथम
४ १६७६	६३०००३	संजीव सिंह रावत	" लाखन सिंह रावत	"	"	प्रथम
१ १६७७	६०००६८	अमित गोयल	" सुरेश चंद गोयल	"	प्रा.भा. इति. संस्कृति एवं पुरातत्व	द्वितीय

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
२	१६७८	६३०६१५	हरीश कुमार	" जगदीश प्रसाद शर्मा	"	"	द्वितीय
३	१६८०	६३०६६७	संदीप वर्मा	" चन्द्रमोहन वर्मा	"	"	प्रथम
४	१६८१	६२०५५२	विनय कुमार भटनागर	" बालस्वरूप भटनागर	"	"	द्वितीय
५	१६८२	६३०५५७	कु. मुदिता चौधरी	" आत्मा शरण सक्सेना	"	"	प्रथम
६	१६८३	६३०६२०	मीनाक्षी देवी	" बलराम सिंह परिहार	"	"	प्रथम
७	१६८४	६३०४८१	पम्मी कौशिक	" हरिमोहन कौशिक	"	"	द्वितीय
८	१८०५	६३०६२४	पूजा शर्मा	" महेन्द्र प्रताप शर्मा	"	"	प्रथम
६	१६८५	६३०६६४	किरण पेशन	" गिरधारी लाल पेशन	"	"	प्रथम
१०	१६८६	६३०४६८	पद्मा श्रीवास्तव	" आर.एन. लाल श्रीवास्तव	"	"	प्रथम
१	१६८७	६००३०४	विद्युत कुमार जाना	" गुरु प्रसाद जाना	"	संस्कृत साहित्य	प्रथम
२	१६८८	६३०४१४	गोरधनराम विश्नोई	" जगरूपराम विश्नोई	"	"	प्रथम
३	१६८६	६४०६७०	जितेन्द्र कुमार	" कपूर सिंह	"	"	प्रथम
४	१६६१	६३०४१३	विनोद कुमार	" देवीदत्त जोशी	"	"	प्रथम
५	१६६२	६३०६०३	वेदप्रकाश	" श्योदान सिंह	"	"	प्रथम
६	१६६३	६३०५६३	कु. अनुराधा शर्मा	" सुरेन्द्र कुमार शर्मा	"	"	प्रथम
७	१६६४	६३०५१८	मनीषा शर्मा	" गंगा प्रसाद शर्मा	"	"	प्रथम
८	१६६५	६३०५१७	पोमिला	" वेगराज सिंह	"	"	प्रथम
६	१६६६	६२०४३१	संतोष रावत	" स्वरूप सिंह रावत	"	"	प्रथम
१०	१६६७	६३०५१६	शिखा	" शिवनारायण	"	"	प्रथम
११	१६६८	६२०३०८	कान्ता रानी	" स्वरूप सिंह	"	"	प्रथम

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१२	१६६६	६१०३६७	कविता आर्या	" शिवचरण	"	"	द्वितीय
१३	१७००	६००३१०	कमलेश आर्या	" होतीलाल आर्य	"	"	प्रथम
१४	१७०१	६३०६५३	महिमा	" हरवीर सिंह	"	"	प्रथम
१५	१७०२	६३०५०४	मधुलिका	" नरेन्द्र कुमार	"	"	द्वितीय
१६	१७०३	६३०५६२	निर्मला	" राधाकृष्ण	"	"	प्रथम
१७	१७०४	६२०१३२	निर्मला देवी	" राजेन्द्र सिंह	"	"	द्वितीय
१८	१७०७	६१०४१३	उर्मिला	" हरकेराम	"	"	द्वितीय
१९	१७०८	६२०५७७	यशोदा आर्या	" गोविन्दसिंह	"	"	द्वितीय
२०	१७०९	६३०५४२	दिनेश प्रसाद पाण्डेय	" रामभज पाण्डेय	"	"	प्रथम
२१	१७१०	६३०५४५	नरेश कुमार वत्स	" कश्मीरी लाल शर्मा	"	"	प्रथम
२२	१७११	६३०५०२	रामचन्द्र	" भातूराम	"	"	प्रथम
२३	१७१२	६३०४७४	रवीन्द्र कुमार	" रामशरण	"	"	द्वितीय
२४	१७१३	६००३०३	राजकिशोर	" गोविन्द प्रसाद	"	"	प्रथम
२५	१७१४	६२०५१३	राधाकृष्ण	" रामदयाल	"	"	प्रथम
२६	१४६४	६२०४२६	अश्विनी कुमारी	" विजयपाल सिंह	"	"	द्वितीय
२७	१५०७	६२०५४६	राजबाला	" रणधीर सिंह	"	"	प्रथम
२८	१५१४	६२०३२९	शशिबाला शर्मा	" लक्ष्मण दत्त शर्मा	"	"	प्रथम
१	१७१६	६३०४६३	राजेन्द्र प्रसाद	" तोताराम गेरौला	"	हिन्दी साहित्य	द्वितीय
२	१७१७	६२०६१९	संजीव कुमार वर्मा	" इलमचंद वर्मा	"	"	द्वितीय
३	१७१९	६३०३६५	सतीश कुमार	" कर्ण सिंह	"	"	द्वितीय

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
४	१७२०	६२०६३६	संजय वर्मा	" चन्द्रमनोहर वर्मा	"	"	प्रथम
५	१७२१	६२०३२६	श्रीनिवास	" लक्ष्मीदत्त	"	"	द्वितीय
६	१७२२	६३०५५४	कु. अंजना शर्मा	" चन्द्रभान शर्मा	"	"	द्वितीय
७	१७२३	६३०३६७	बिन्दु शर्मा	" गंगा प्रसाद शर्मा	"	"	द्वितीय
८	१७२४	६३०५५१	जितुल तिवारी	" जयगोविन्द तिवारी	"	"	द्वितीय
९	१७२५	६३०५५३	ममता खाती	" श्यामसिंह खाती	"	"	द्वितीय
१०	१७२६	६३०५५२	मंजू शर्मा	" बालकृष्ण शर्मा	"	"	द्वितीय
११	१७२८	६३०६२६	प्रीति	" हृदयनाथ मिश्र	"	"	द्वितीय
१२	१७२९	६३०५५०	पुष्पा कुमारी	" मोहनसिंह	"	"	प्रथम
१३	१७३०	६३०४६६	रेनु शर्मा	" सीताराम शर्मा	"		द्वितीय
१४	१७३१	६३०५७१	ऋतु नागर	" श्यामलाल नागर	"	"	द्वितीय
१५	१७३२	६३०५७२	रमा	" विजयपाल सिंह	"	"	द्वितीय
१६	१७३३	६३०५७०	शशि	" जनेश्वरनाथ	"	"	द्वितीय
१७	१७३४	६३०३७१	शिवानी	" भारत भूषण	"	"	प्रथम
१८	१७३५	६३०५६७	शिखा सिंह	" रणधीर सिंह	"	"	प्रथम
१९	१७३६	६३०६०६	सुषमा धीमान	" आशाराम धीमान	"	"	द्वितीय
२०	१७३७	६३०४८२	विनोद	" ठकरासिंह	"	"	द्वितीय
२१	१७३८	६३०४१७	अन्नो जोशी	" गोवर्धन जोशी	"	"	द्वितीय
२२	१७४०	६२०५५६	कल्पना अग्निहोत्री	" बृजकिशोर अग्निहोत्री	"	"	द्वितीय
२३	१७४१	६३०६५४	माधवी लता काला	" सुरेन्द्र दत्त काला	"	"	द्वितीय

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
२४	१७४३	६३०४६७	प्रभा	" शशिभूषण	"	"	द्वितीय
२५	१७४५	६२०३२१	सुरेखा	" जगमेर सिंह बालियान	"	"	द्वितीय
२६	१५७०	६२००६८	कु. रेखा रानी	" रामकुमार शर्मा	"	"	द्वितीय
२७	१७४७	६३०६०१	प्रभात चन्द्र रमोला	" मालचन्द्र रमोला	"	"	द्वितीय
२८	१७४८	६१०४१८	राकेश चन्द्र	" महेशचन्द	"	"	द्वितीय
२६	१७५०	६३०४६६	त्रिलोचन भट्ट	" देवदत्त	"	"	द्वितीय
३०	१७६१	६२०३०६	पवित्रा	" बाबूराम	"	"	प्रथम
१	१७५२	६००३१६	निर्देश कुमार शर्मा	" रमेशचन्द शर्मा	"	अंग्रेजी साहित्य	द्वितीय
२	१७५३	६३०४८६	प्रेमानन्द नायक	" भूषण नायक	"	"	द्वितीय
३	१७५४	६३०४७५	प्रमोद कुमार	" पुन्नामल	"	"	द्वितीय
४	१७५७	६३०६१७	कु. अर्चना माटा	" एस.एम. माटा	"	"	प्रथम
५	१७५६	६३०६१३	" बबीता गौड़	" महानन्द गौड़	"	"	द्वितीय
६	१७६०	६३०५६५	" हरप्रीत वालिया	" अजीत सिंह	"	"	तृतीय
७	१७६१	६३०६३१	" कुमुदनी	" हरीशंकर	"	"	प्रथम
८	१७६२	६३०५५६	" मीनाक्षी कश्यप	" आनन्दस्वरूप कश्यप	"	"	प्रथम
६	१७६४	६३०६४६	" नविता	" कैलाश चन्द्र शर्मा	"	"	द्वितीय
१०	१७६५	६३०६०४	" प्रीति शर्मा	" महेशचन्द्र शर्मा	"	"	तृतीय
११	१७६८	६३०४७१	" ऋतु शर्मा	" एस.एस: शर्मा	"	"	प्रथम
१२	१७६६	६३०४६६	" रूपा रानी	" भीमदत्त	"	"	द्वितीय
१३	१७७०	६३०४७६	" रजनी चौहान	" कुशलपालसिंह चौहान	"	"	द्वितीय

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१४	१७७१	६३०६१६	" शालिनी कंवर	" बी.एस. कंवर	"	"	द्वितीय
१५	१७७२	६३०५७३	" शिवानी	" विनोद कुमार बंसल	"	"	द्वितीय
१६	१७७३	६३०६१८	" स्मिता सिन्हा	" एच.पी. सिन्हा	"	"	द्वितीय
१७	१७७४	६३०५४४	" सुधा शुक्ला	" शंकर दयाल शुक्ला	"	"	द्वितीय
१८	१७७५	६२०५३१	" संध्या	" राधाकृष्ण	"	"	द्वितीय
१९	१७७७	६३०४६५	श्रीमती सारिका गर्ग	" रामनरेश	"	"	द्वितीय
२०	१७७८	६३०५५५	कु. तारा थापा	" लाल बहादुर थापा	"	"	द्वितीय
२१	१७८१	६१०३६६	" नीलम	" रामपाल सिंह	"	"	द्वितीय
२२	१७८३	६२०१०२	" प्रवीन गोयल	" जगदीश शरण गोयल	"	"	द्वितीय
२३	१७८७	६३०६०५	" शैलजा जैन	" सी.एम. जैन	"	"	प्रथम
२४	१७८८	६२०६००	" वन्दना मंशारामानी	" मधुसूदन मंशारामानी	"	"	प्रथम
२५	१७८९	६३०६६५	" ममता चौहान	" कोमल सिंह चौहान	"	"	द्वितीय
२६	१७९०	६३०५४३	सुरेन्द्र सिंह	" मोहन सिंह	"	"	प्रथम
एम.एससी.							
१	१८३२	८९०१७०	आलोक कुमार	" जोगेन्द्र लाल जग्गी	एम.एससी.—गणित		प्रथम
२	१८३३	६२०६१२	कु. एकता अग्रवाल	" महेन्द्र कुमार	"	"	प्रथम
३	१८३४	६२०४६४	" गीता	" हरिनारायण	"	"	प्रथम
४	१८३५	६२०५५८	" मंजू विज	" एम.एल. विज	"	"	प्रथम
५	१८३६	६३०४७६	" राखी अरोड़ा	" जे.एल. अरोड़ा	"	"	प्रथम
१	१८५४	६२०५१८	अमकचम नाबा सिंह	"अमकचमथाबल जाओसिंह	"	भौतिकी	द्वितीय

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
२	१८५६	६०००३२	हरपाल सिंह	" बलवन्त सिंह	"	"	प्रथम
३	१८५७	६२०६३६	कैशाम ऐशो कुमार सिंह	" कैशाम काली सिंह	"	"	प्रथम
४	१८५८	६३०५७५	नित्यानन्द वशिष्ठ	" दिलाराम वशिष्ठ	"	"	प्रथम
५	१८६०	६२०६५०	सुनील कुमार धंजल	" नन्दलाल धंजल	"	"	द्वितीय
६	१८६१	६३०५७६	संजीव कुमार	" बृजलाल	"	"	प्रथम
७	१८६२	६२०५०६	कु. मंजू माटा	" भगवानदास माटा	"	"	प्रथम
८	१८६३	६१०४६८	राजू गौतम	" बी.डी. गौतम	"	"	प्रथम
६	१८६५	८७००५१	संजीव मनु	" रामाश्रय मिश्र	"	"	प्रथम
१०	१८५२	६२०५८०	राजीव कुमार	" के.एस. सिंह	"	"	प्रथम
१	१८७७	६३०४६०	अतुल वर्मा	" गोपाल सिंह वर्मा	"	रसायन शास्त्र	प्रथम
२	१८७८	६००१३६	अमित शर्मा	" एस.के. शर्मा	"	"	प्रथम
३	१८७६	६०००७६	दिनेश कुमार गोयल	" सुरेश चन्द गोयल	"	"	प्रथम
४	१८८०	६००१११	जितेन्द्र कुमार शर्मा	" महीपाल शर्मा	"	"	"
५	१८८१	६३०५६८	कुंवर संजीव सिंह	" गिरीश कुमार राणा	"	"	"
६	१८८२	६३०४६२	मुनीष कुमार	" भूप सिंह	"	"	"
७	१८८३	६३०६३२	राज किशोर	" मिट्ठूराम	"	"	"
८	१८८४	६३०४६१	संजय कुमार	" जगबीर सिंह	"	"	"
६	१८८५	६००१३७	विनीत कौशिक	" बृजमोहन कौशिक	"	"	"
१०	१८८६	६०००४६	विजय कुमार कश्यप	" रमेश चन्द	"	"	"
११	१८८७	६२०५००	कु. महिमा शर्मा	" आर.के. शर्मा	"	"	"

क्र.सं.	अनु०	पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१	१८६८	६००११२	अंशुमान शर्मा	" आनन्द प्रकाश शर्मा	"	माइक्रो बायोलॉजी	"
२	१८६६	६०००५८	अश्विनी कुमार	" ओ.पी. वैद	"	"	"
३	१६००	६०००७३	अमित सिंह	" श्याम नारायण सिंह	"	"	"
४	१६०२	६००२८०	दीपक वत्स	" बिशनदयाल शर्मा	"	"	"
५	१६०३	६००११३	जसवन्त सिंह राठौर	" हरपाल सिंह राठौर	"	"	"
६	१६०४	६०००७२	कालिका प्रसाद कोठारी	" हेमचन्द्र कोठारी	"	"	"
७	१६०६	६००११५	पुनीत कुलश्रेष्ठ	" वी.पी. कुलश्रेष्ठ	"	"	"
८	१६०७	६३०३८४	रविन्द्र वैश्य	" ध्रुव चन्द्र वैश्य	"	"	"
६	१६०८	८६०२०६	रोशनलाल	" रूद्रमणि	"	"	"
१०	१६०१	६३०३८३	आनन्द भारती	" दयाराम भारती	"	"	द्वितीय
११	१६०५	६०००६२	कुलजीत सिंह	" हरजीत सिंह	"	"	"
१	१०७४	८८०११६	रंजन	" नरेन्द्र पाल सिंह वर्मा	"	"	प्रथम
१	१७६२	६३०६३६	कु. अंजलि अग्रवाल	" वी.के. अग्रवाल	"	मनोविज्ञान	द्वितीय
२	१७६३	६३०५६४	अंजलि बाटला	" एस.एन. बाटला	एम.ए.	"	प्रथम
३	१७६४	६३०६२७	हेमा जोशी	" हरिदत्त जोशी	एम.एससी.	"	"
४	१७६५	६३०५६१	कविता जैन	" अमरपाल जैन	"	"	द्वितीय
५	१७६६	६२०४८८	मीनाक्षी बेनीवाल	" सुरेन्द्र सिंह बेनीवाल	"	"	"
६	१७६७	६३०६२१	मोनिका शाही	" के.के. शाही	एम.ए.	"	"
७	१७६८	६३०६२२	नरिन्द्र कौर	" कुलवन्त सिंह	"	"	"
८	१७६६	६३०४७३	निधि माथुर	" महेशचन्द माथुर	एम.एससी.	"	"

क्र.सं.अनु०		पंजी. सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
६	१८०१	६३०४६६	संगीता त्यागी	" डी.पी. त्यागी	"	"	"
१०	१८०२	६३०६२८	वन्दना शर्मा	" नरेन्द्र कुमार शर्मा	"	"	प्रथम
११	१८०३	६३०६३८	विनीता राय	" एस. राय	"	"	द्वितीय
१२	१८१४	६३०६३७	सीमा गोयल	" साधूराम गोयल	"	"	"
१३	१८०४	८८०१३१	राकेश चन्द जुयाल	" भगवती प्रसाद जुयाल	"	"	प्रथम
१	२०२७	६००२३१	अमित कुमार	" श्रीचन्द	स्नातकोत्तर	हिन्दी पत्रकारिता में डिप्लोमा	द्वितीय
२	२०२८	६४०७२०	बाल कृष्ण त्रिपाठी	" देव प्रताप त्रिपाठी	"	"	"
३	२०२६	६४०७१८	दीपक नोटियाल	" ब्रह्मानन्द नोटियाल	"	"	"
४	२०३०		श्रवण कुमार झा	" शिवशंकर झा	"	"	प्रथम
५	२०३१	६४०७१६	विवेक कुमार शर्मा	" गोविन्द प्रसाद शर्मा	"	"	द्वितीय
६	२०३२	६२०६३८	विनीत कुमार	" कृष्ण कुमार वशिष्ठ	"	"	प्रथम

क्र.सं.	पं.संख्या	विभाग	नाम व पिता का नाम	निर्देशक	शोध विषय
१०	६२००७	हिन्दी साहित्य	राजकुमार पुत्र दर्शन कुमार	डॉ. ज्ञानचन्द्र रावल	साठोत्तरी हिन्दी प्रबन्ध काव्यों में आधुनिक भाव बोधा
११	६००१६	हिन्दी साहित्य	विजय कुमार मल्होत्रा पुत्र प्राणनाथ	डॉ. विष्णु दत्त राकेश	हिन्दी/अंग्रेजी और अंग्रेजी/हिन्दी का कोषीय अन्तरण: अभिकलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
१२	८८०२५४	दर्शनशास्त्र	प्रमोद कुमार पुत्र प्रेमराज सिंह	डॉ. विजयपाल शास्त्री	उद्धवगीता—एक दार्शनिक परिशीलन
१३	६२०२५	दर्शनशास्त्र	राकेश शर्मा पुत्र गंगा प्रसाद शर्मा	डॉ. विजयपाल शास्त्री	संत ज्ञानेश्वर, बालगंगाधर तिलक और विनोबा भावे के गीता—भाष्यों का तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन
१४	८४००६६	प्रा.भा. इतिहास	दीपक घोष पुत्र एन.सी. घोष	डॉ. राकेश शर्मा	गुप्तकाल का कलात्मक वैभव
१५	८७००६५	प्रा.भा. इतिहास	बृजेश कुमार सिंह पुत्र जगदीश सिंह चन्देल	डॉ. राकेश शर्मा	गुप्तकाल में धार्मिक जीवन
१६	६२०३०	प्रा.भा. इतिहास	श्रीमती सरोज चौधरी पुत्री लहरी सिंह	डॉ. राकेश शर्मा	प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था एक विवेचनात्मक अध्ययन (वैदिक काल से गुप्त काल तक)
१७	६२००६	मनोविज्ञान	श्रीमती चरनजीत कौर सिंह पुत्री जे.एस. सेठी	प्रो. ओ.पी. मिश्रा	THE EFFECT OF HOME ENVIRON MENT AND SES ON THE SELF-CONCEPT AND ACADEMIC ACHIEVEMENT OF ADOLESCENT
१८	६१००६	मनोविज्ञान	रणधीर सिंह पुत्र जोरावर सिंह	डॉ० एस.के. श्रीवास्तव	ATTITUDE OF WORKERS TO WARDS MANAGEMENT AND

क्र.सं.	पं.संख्या	विभाग	नाम व पिता का नाम	निर्देशक	शोध विषय
					THEIR PERSONALITY CHARAC TERISTICS, WORK ADJUSTMENT AND ACHIEVEMENT MOTIVATION
१६	६२००१	माइक्रोबायोलॉजी	अजय खण्डेलवाल पुत्र एस.एन. खण्डेलवाल	डॉ० डी.के. माहेश्वरी	INVESTIGATION ON GROWTH OF TREE LEGUMES IN DEGRADED LAND AMENDED WITH PHIZOBIUM AND EICHHORNIA RESIDUE.
२०	६३००१	जूलोजी	विनोद प्रकाश सेमवाल पुत्र पीताम्बर दत्त सेमवाल	डॉ. बी.डी. जोशी	HYDRO BIOLOGICAL STUDIES OF RIVER GANGA AT VIRBHADRA (RISHIKESH) IN RELATION TO I.D.P.L. DRAIN
२१	६०००४	जूलोजी आर.सी. सोनी	राजेश कुमार सोनी पुत्र	डॉ. बी.डी. जोशी	HAEMATOLOGICAL STUDIES ON THE BLOOD OF THE BLUE ROCK PIGEON COLUMBA LIVIA GMELIN
२२	६२०१३	गणित	प्रदीप कुमार यादव पुत्र हरिराम	डॉ. विनोद कुमार	A STUDY OF MATHEMATICAL PRO GRAMMING AND ITS APPLICA TION TO TASK ALLOCATION IN DISTRIBUTED PROCESSING SYS TEMS
२३	८८०१४८	अंग्रेजी	रूक्मणि शर्मा पुत्री अतर सेन	डॉ. श्रवण कुमार	A STUDY OF THE POETRY OF

क्र.स.	पं.संख्या	विभाग	नाम व पिता का नाम	निर्देशक	शोध विषय
					KEATS IN THE LIFE OF RASA THEORY
१	६१००६	वैदिक साहित्य	सत्यवीर सिंह पुत्र श्रीराम सिंह	डॉ. भारतभूषण	ऋग्वेदिक सूर्य, सविता एवं पूषा देवों का अध्ययन (महर्षि दयानन्द–भाष्य के परिप्रेक्ष्य में)
२	६२०१६	वैदिक साहित्य	हीरा सिंह पुत्र निहाल सिंह	डॉ. रूपकिशोर शास्त्री	जैमिनियोपनिषद ब्राह्मण–समीक्षात्मक विवेचन
३	८६०१४०	संस्कृत साहित्य	मीना पुत्री सूरजभान	डॉ. रामप्रकाश शर्मा	पाणिनीय तन्त्रे ध्वनि तत्वम्
४	६००२४५	संस्कृत साहित्य	कु. सुषमा पुत्री किशन सिंह	डॉ. रामप्रकाश शर्मा	"उत्तर रामचरित एवं कुन्दमाला का तुलनात्मक अध्ययन
५	८५००१४	संस्कृत साहित्य	अंजू रानी पुत्री इन्द्रसिंह वर्मा	डॉ. महावीर अग्रवाल	महाभारत के शान्ति–पर्व में वर्णित राजधर्म का समीक्षात्मक अनुशीलन
६	८८०१६३	संस्कृत साहित्य	विद्यानिधि पुत्र रामस्वरूप मंडल	डॉ. महावीर अग्रवाल	पी.सी. देवस्य विरचित क्रिस्तुभागवतम् एक विवेचनात्मक परिशीलन
७	६००२६३	संस्कृत साहित्य	निर्मला देवी पुत्री हरि सिंह	डॉ. महावीर अग्रवाल	महाकवि डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी विरचित "सीता चरित्रम्" महाकाव्य का समीक्षात्मक अनुशीलन
८	६२०३१	संस्कृत साहित्य	वेदप्रिय आर्य पुत्र द्वारिकानाथ	डॉ. महावीर अग्रवाल	निरुक्त के दैवत काण्ड में व्याख्यात मंत्रों का समीक्षात्मक अनुशीलन
९	६१००७	हिन्दी साहित्य	गुलजार सिंह पुत्र वीरपाल सिंह	डॉ. सन्तराम वैश्य	आचार्य किशोरीदास वाजपेयी प्रणीत तरंगिणी में परम्परा और युग बोध

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
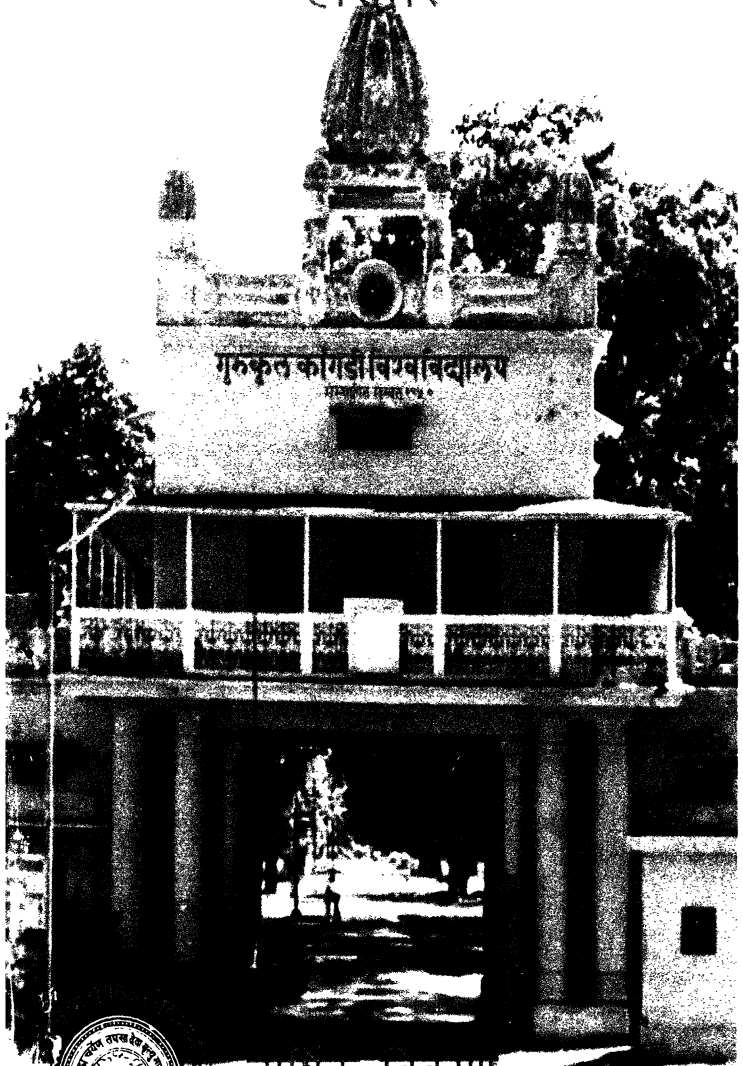
वार्षिक विवरण

1996-97

ओ३म्

वार्षिक विवरण

१९६६–६७

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा
न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह
विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	श्री सूर्यदेव
कुलपति	डॉ. धर्मपाल
आचार्य (उपकुलपति)	प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री
कोषाध्यक्ष	श्री हरवंशलाल शर्मा
कुलसचिव	प्रो. श्याम नारायण सिंह
डीन, प्राच्य विद्या संकाय	प्रो. श्याम नारायण सिंह,
डीन, मानविकी संकाय	प्रो. नारायण शर्मा
डीन, विज्ञान संकाय	प्रो. एस.एल. सिंह (डॉ. वीरेन्द्र अरोड़ा)
डीन, जीव विज्ञान संकाय	प्रो. डी.के. माहेश्वरी
डीन, छात्र कल्याण	प्रो. डी.के. माहेश्वरी
वित्त अधिकारी	श्री जयसिंह गुप्त।
पुस्तकालयाध्यक्ष	डॉ. जगदीश प्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक-मण्डल

विषय–सूची

आमुख

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के ९७ वर्ष पूरे कर रहा है। भारत में पुनर्जागरण और निर्माण की मशाल जलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के समानान्तर भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्त्तन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के रूप में किया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अध्यापन अनुसन्धान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी प्रशंसा महात्मा गाँधी, दीनबन्धु एण्ड्रूज, पण्डित मदनमोहन मालवीय, मान्य गोखले, महाकवि रविन्द्रनाथ, नरेन्द्र देव, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद तथा इन्दिरा गाँधी जैसे लोकनायक मनीषियों ने की है। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद विज्ञान, वैदिक ज्ञान, प्राच्य विद्या और मानविकी के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

विश्वविद्यालय में कुलपति जी के आमन्त्रण पर इस वर्ष संस्कृत विभाग में पद्मश्री प्रो० वी. वेंकटाचलम ने अपना विशिष्ट व्याख्यान दिया।

हिन्दी विभाग में श्री बालकवि वैरागी, डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी तथा श्री शंखधर कुल्हड़ आदि पधारे। दर्शन विभाग में आयोजित सेमिनार में भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ. प्रहलादाचार्य, डॉ. डी.के. मुखोपाध्याय आदि पधारे।

इस वर्ष के दीक्षान्तोत्सव पर विश्वविद्यालय में रूस के हिन्दी विद्वान् डॉ. ओलेग उलत्सिफेरोव अध्यक्ष भारतीय भाषा विभाग, अंतर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान, मास्को ने दीक्षान्त भाषण पढ़ा।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग ने अपने प्रसार कार्यक्रम के अंतर्गत समीपस्थ ग्रामों में शिक्षा, घरेलू उपकरणों के प्रयोग, जनसंख्या पर रोक तथा स्वरोजगारों की सूचना आदि कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया।

विश्वविद्यालय के अनेक विद्वान प्राध्यापक विदेशों में विशिष्ट व्याख्यानों के लिये आमन्त्रित किये गये।

सत्र १९९६–९७ से एम.बी.ए. की कक्षाएं सुचारू रूप से प्रारम्भ हुईं। भारत सरकार की नवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत शिक्षा की विकास योजनाओं के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित विज़िटिंग कमेटी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में १९ अप्रैल– २२ अप्रैल १९९७ में पधारी। कमेटी के सदस्यों ने हरिद्वार स्थित विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर तथा अंगभूत महाविद्यालय देहरादून का निरीक्षण किया।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन–प्रकाशन तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों तथा शोध समितियों में भाग लेकर अपने पद की गौरववृद्धि की। कुछ शिक्षकों को प्रोन्नति मिली। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति विवरण में अलग–अलग इन विद्वानों के निजी क्रिया–कलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रो. श्यामनारायण सिंह
कुलसचिव

❖❖❖

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संक्षिप्त इतिहास

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पुण्यसलिला गंगा के पावन तट पर कांगड़ी नामक ग्राम में ४ मार्च १९०२ को राष्ट्र निर्माण की एक ऐसी सुदृढ़ आधारशिला रखी थी, जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के भव्य प्रासाद की प्रथम सोपान बनी। कौन जानता था कि देश के स्वर्णिम भविष्य का स्वप्न लिए हुए एक कर्मयोगी द्वारा जो नन्हा–सा पौधा गुरुकुल के रूप में लगाया जा रहा है वह वटवृक्ष का रूप धारण कर सम्पूर्ण समाज को छाया प्रदान करेगा और जिसके मीठे, रसीले फलों का आस्वादन कर देशवासी कृतकृत्य होंगे।

पराधीनता के कालखण्डों में लार्ड मैकाले द्वारा भारत में चलाई गई शिक्षा पद्धति राष्ट्र के स्वाभिमान और गौरव को नष्ट कर रही थी। देशभक्त, चरित्रवान, विद्वान युवकों के स्थान पर केवल बाबू बनाने का अंग्रेजों का षडयन्त्र अपना प्रभाव दिखाने लगा था, ऐसे समय में महान शिक्षा शास्त्री स्वामी श्रद्धानन्द ने प्राचीन और अर्वाचीन विषयों की शिक्षा के साथ–साथ ब्रह्मचारियों में चरित्रबल और राष्ट्र प्रेम की भावना प्रसारित करने के लिए इस पवित्र संस्था का शुभारम्भ किया था। स्वामी जी के मन में इस प्रकार के उत्कृष्ट भाव को उत्पन्न करने में महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा विषयक वैदिक विचार मूल मंत्र रूप में कार्य कर रहे थे। स्वामी श्रद्धानन्द पुनः इस देश में ब्रह्मचर्य पर आधारित प्राचीन गुरु शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना चाहते थे।

गुरुकुल की स्थापना के कुछ वर्ष बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ जिसमें सभी विषय मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से पढ़ाये जाते थे। यहां तक कि विज्ञान के विषय भी हिन्दी में पढ़ाये जाने लगे। इस संस्था में कार्यरत् सुयोग्य उपाध्यायों ने रसायन, भौतिकी, वनस्पति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों पर हिन्दी भाषा में उत्तमोत्तम पाठ्य पुस्तकों की रचना की।

प्रथम दीक्षान्त समारोह में ब्रह्मचारी हरिशचन्द्र एवं इन्द्र (दोनों स्वागी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए थे। यह गुरुकुल अपने शैशवकाल से ही देश का आकर्षण केन्द्र बना रहा। इसकी लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती रही। देश विदेश के शीर्षस्थ शिक्षा शास्त्री राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, स्वातन्त्र्य योद्धा देशभक्त यहां बड़ी श्रद्धा भावना से आते रहे। विदेशी आगन्तुकों में सी.एफ.ए. एण्ड्रयूज ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी वेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मेक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था मानती थी। जब संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन ने गुरुकुल को अपनी आंखों से देखा, तब उनका यह भ्रम दूर हुआ। वे गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। यह गुरुकुल कभी राजद्रोही न था, किन्तु जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा की, त्याग की एवं समर्पण की आवश्यकता हुई, तब गुरुकुल सब से आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद जल–विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ किए गये सत्याग्रह संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी
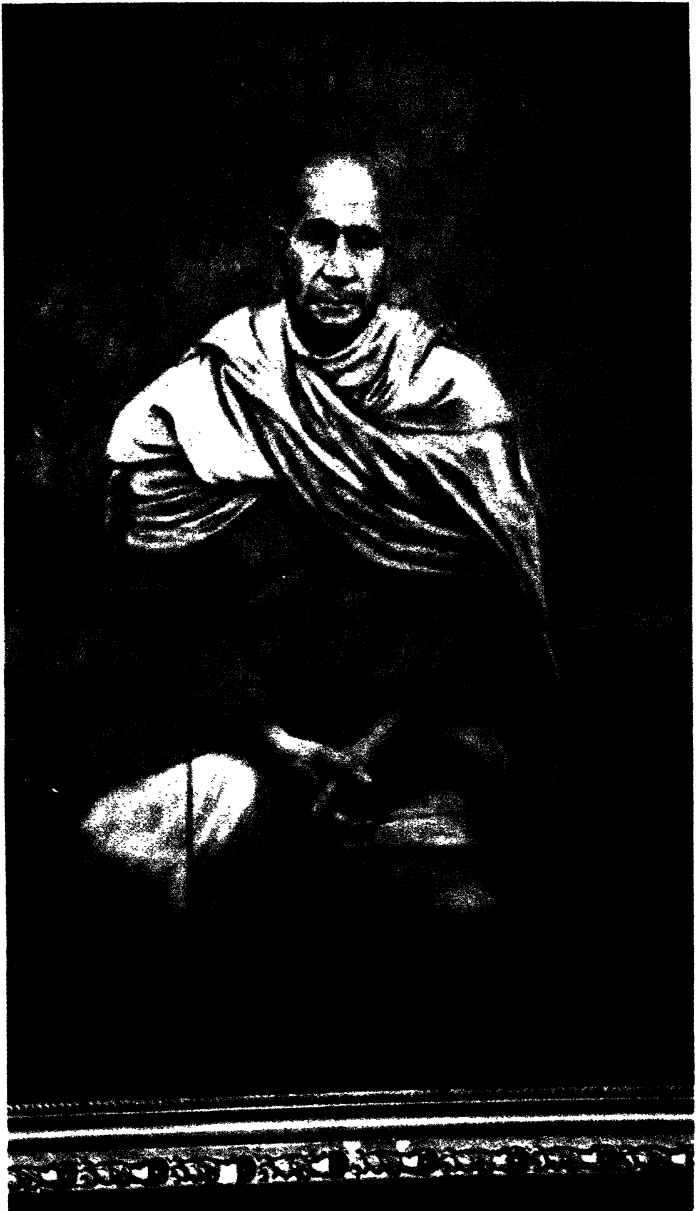
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी

परिद्रष्टा जस्टिस महावीर सिंह

करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इस भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

इस गुरुकुल से प्रेरणा पाकर उत्तर–प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान आदि राज्यों में अनेक गुरुकुलों की स्थापना हुई।

सन् १९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल के बहुत से भवन नष्ट हो गये। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल ऐसे स्थान पर स्थापित किया जाये जहां इस प्रकार का पुनः भय न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर ज्वालापुर के समीप, गंगनहर के किनारे हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

सन् १९२६ में रजत जयन्ती समारोह में भारत के विभिन्न राज्यों से लगभग पचास हजार अतिथि पधारे। इनमें महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, डॉ० मुंजे, साधु वासवानी आदि उल्लेखनीय हैं।

१९३०–३२ में आचार्य रामदेव जी, जो उस समय गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता थे, ने अपने प्रयासों से नैरोबी से १० लाख रुपये लाकर गुरुकुल की वर्तमान स्वरूप में पुनः स्थापना की।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद पं० विश्वम्भर नाथ, आचार्य रामदेव जी, पं० चमूपति जी, पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति आदि मुख्याधिष्ठाता के रूप में गुरुकुल का संचालन करते रहे।

मार्च १९५० में गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति जी ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहर लाल नेहरू गुरुकुल में पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बनें। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। गुरुकुल ने एक नये जीवन में पदार्पण किया। आचार्य प्रियव्रत जी, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, डॉ० सत्यकेतू विद्यालंकार, श्री बलभद्र कुमार हूजा, श्री आर०सी० शर्मा, डॉ० सुभाष विद्यालंकार आदि शिक्षा शास्त्री क्रमशः कुलपति पद पर शोभायमान होकर इस विश्वविद्यालय का विकास करते रहे।

गुरुकुल को स्थापित हुए ९७ वर्ष हो गए हैं। १ जुलाई १९९३ से डॉ० धर्मपाल जी कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता के रूप में विश्वविद्यालय के बहुआयामी विकास में अहर्निश संलग्न है। इन चार वर्षों में भवनों के निर्माण को देखकर आश्चर्य होता है। हरिद्वार–रुड़की बाईपास मार्ग पर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का भव्य भवन माननीय कुलपति जी की भावनाओं का ज्वलन्त प्रतीक है। चार वर्ष की अवधि में एक ओर भवन निर्माण का कीर्तिमान बना तो दूसरी ओर नए–नए आधुनिक पाठ्यक्रमों के साथ नारी शिक्षा के क्षेत्र में उच्चतम शिक्षा के द्वार भी खुले। वैदिक साहित्य, दर्शन, संस्कृत साहित्य, योग, प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, अंग्रेजी,

मनोविज्ञान के साथ–साथ गणित, रसायनशास्त्र, भौतिकी, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, पर्यावरण एवं कम्प्यूटर तथा प्रबन्धन की उच्च शिक्षा की उत्तम व्यवस्था इस विश्वविद्यालय की विकास यात्रा के साक्षी रहे।

डॉ० धर्मपाल जी, कुलपति के निर्देशन में इस समय विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों की संरचना इस प्रकार है–

विद्यालय विभाग– प्रथम कक्षा से १२वीं कक्षा तक यहां छात्र आवासीय व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा के साथ–साथ उत्तम संस्कार ग्रहण करते हैं। १०वीं कक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी तथा १२वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याविनोद का प्रमाण–पत्र दिया जाता है।

प्राच्य विद्या संकाय– इस संकाय में सुयोग्य उपाध्यायों के मार्ग दर्शन में वेद, संस्कृत, दर्शन, योग, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विषयों में एम०ए० और पी.एच.डी. हेतु अध्यापन एवं शोध कार्य की व्यवस्था है। त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर वेदालंकार की उपाधि दी जाती है।

मानविकी संकाय– इस संकाय में हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान विषयों में सुयोग्य उपाध्यायों के मार्गदर्शन में एम०ए० तथा पी.एच.डी. हेतु छात्र अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य करते हैं। त्रिवर्षीय स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की उपाधि दी जाती है। इसके साथ ही अलंकार (बी.ए.) का पाठ्यक्रम भी चल रहा है।

विज्ञान, जीव विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संकाय–इसमें त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर बी.एस.सी. की उपाधि प्रदान की जाती है। गणित, रसायनशास्त्र, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान, जन्तु–विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान एवं कम्प्यूटर में एम.ए., एम.एस.सी., एम.सी.ए. एवं पी. एच.डी. हेतु अध्ययन अध्यापन की तथा शोधकार्य की उत्तम व्यवस्था कुशल उपाध्यायों के मार्ग दर्शन में चलती है। आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में वैदिक विज्ञान का समन्वय इस संकाय की विशेषता है।

प्रबन्धन संकाय– यह संकाय १६६६–६७ सत्र की विशेष उपलब्धि है। मान्य कुलपति जी के प्रयास से इस नवीन संकाय ने उत्तम स्वरूप प्राप्त कर लिया है। आधुनिक प्रबन्धन व्यवस्था के साथ–साथ वैदिक प्रबन्धन का पाठ्यक्रम में समावेश करना एक नई बात है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार– विश्वविद्यालय के मान्य अधिकारियों की प्रेरणा से बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु कन्या गुरुकुल महाविद्यालय जो कि कुछ वर्ष किराये के भवन में चल रहा था, अब अपने भवन में आ गया है। प्रायः सभी विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के साथ पी.एच.डी. हेतु शोध कार्य की उत्तम व्यवस्था है। बालिकाओं की संख्या और उत्साह को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कन्या गुरुकुल महाविद्यालय शीघ्र की भव्य एवं प्रेरक रूप धारण करेगा।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लेने के बाद इसका पर्याप्त विस्तार हुआ है। अलंकार (बी.ए.) के साथ–साथ अनेक विषयों में एम. ए. तथा एम.सी.ए. पाठ्यक्रम सुचारू रूप से चल रहे हैं। छात्रावास का निर्माण हो चुका है। भवन निर्माण निरन्तर चल रहा है।

विशाल पुस्तकालय– किसी भी शिक्षण संस्था के प्राण पुस्तकालय में रहते हैं। इस दृष्टि से गुरुकुल कांगड़ी का बृहत पुस्तकालय उत्तर भारत के अध्येताओं का आकर्षण केन्द्र बना हुआ है। इसमें विविध विषयों की एक लाख पच्चीस हजार से अधिक पुस्तकें हैं। इनमें अनेक दुर्लभ ग्रन्थ हैं। भारत के कोने–कोने से शोधार्थी इस पुस्तकालय में आकर अपनी जिज्ञासा शान्त करते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी– यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण का बहुत बड़ा केन्द्र है। देश–विदेश में इस फार्मेसी की औषधियों की गुणवत्ता प्रसिद्ध है। फार्मेसी से प्राप्त आय को ब्रह्मचारियों और जन कल्याण पर खर्च किया जाता है।

यह विश्वविद्यालय सम्पूर्ण देश में अपनी अलग पहचान रखता है। विश्वविद्यालय कुलाधिपति माननीय श्री सूर्यदेव जी, परिद्रष्टा माननीय श्री महावीर सिंह जी, कुलपति श्रीमान डॉ० धर्मपाल जी तथा शिष्ट परिषद्, कार्यपरिषद् एवं शिक्षा पटल के सदस्यों के सुयोग्य मार्गदर्शन में उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि तपः पूत स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह संस्थान आगे भी निरन्तर प्रगति करता रहेगा।

प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री
आचार्य (उप–कुलपति)

कुलपति प्रतिवेदनम्

पूज्याः संन्यासिनः, मुख्यातिथयः, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धसंस्थाने, भारतीयभाषा विभागस्य अध्यक्ष पदे प्रतिष्ठिताः सम्मान्याः डॉ० आलेग जी, उलत्सिफेरोव महाभागाः कुलाधिपदमलङ्कुर्वाणाः मान्याः श्रीसूर्यदेवमहाभागाः, परिद्रष्टारः न्यायमूर्त्तयः श्रीमहावीरसिंह महोदयाः, सम्मान्याः आर्यनेतारः, मञ्चस्थाः विद्वांसः, विश्वविद्यालये विद्यादानरताः उपाध्यायाः, नवस्नातकाः, दीक्षान्तसमारोहे समुपस्थिताः भ्रातरः भगिन्यश्च!

अद्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य सप्तनवतितमे दीक्षान्तसमारोहे समागतानां सभ्यानां महानुभावानां हार्दिकं स्वागतमभिनन्दनं च व्याहरन्तो वयम् अमन्दमानन्दमनुभवामः।

हे प्रियस्नातकाः!

अमरहुतात्माना स्वनामधन्येन स्वामिश्रद्धानन्देन सप्तनवतिवर्षेभ्यः प्राग् भगवत्याः भागीरथ्याः पवित्रे कुले गुरुकुलमिदं स्थापितम्। अस्मादेव गुरुकुलाद् विद्यानां पारदृश्वानः, देशप्रेमपरिपूरितान्तःकरणाः, वेदमूर्त्तयः,, कवयः, दार्शनिकाः, लेखकाः, लब्धकीर्त्तयः पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, स्वामी समर्पणानन्द, आचार्य अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, डॉ० सत्यकेतु, पं० चन्द्रगुप्त, डॉ० रामनाथ वेदालंकार प्रभृतयः स्नातकाः गुरुकुलस्य कीर्तिं सर्वासु दिक्षु प्रसारयामासुः। सम्प्रत्यपि नैके यशस्विनः स्नातकाः गुरुकुलस्यास्य कीर्तिकौमुदीं प्रख्यापयन्ति। अस्माकं प्रत्ययोऽस्ति द्रढीयान् यन्नवाः स्नातका अपि इत उपाधिं गृहीत्वा राष्ट्रस्य विविधेषु क्षेत्रेषु दक्षतां प्रकटयन्तः अस्य विश्वविद्यालयस्य गौरवं संवर्धयिष्यन्ति।

हे आर्यबान्धवाः!

विश्वविद्यालयोऽयं प्रतिदिनं प्रगतिपथमारोहति गुरुकुलस्य प्राचीनपरम्परानुसारं प्रत्यहं प्रातःकाले विश्वविद्यालये आचार्य वेदप्रकाशशास्त्रिणां निर्देशने यज्ञः प्रसरति। प्रगतेः संक्षिप्तं वृत्तं भवतां कर्णगोचरी भवतु इति विमृश्य समासेनोदीर्यते। साम्प्रतमस्मिन् विश्वविद्यालये पञ्च संकायाः प्रवर्धमानास्सन्ति। ते च प्राच्यविद्या, मानविकी, विज्ञान, जीवविज्ञान, प्रबन्धनसंकाय रूपेणविद्यादीपप्रज्वालने सततं क्रियाशीलाः सन्ति। एकैकस्य संकायस्य विभागानां विवरणं प्रस्तूयते।

प्राच्यविद्यासंकायः

अस्मिन् संकाये वैदिकसाहित्य, संस्कृतसाहित्य, दर्शन प्राचीनभारतीयेतिहास, योग विभागाः सन्ति एकञ्च श्रद्धानन्दशोधसंस्थानम् वर्तते। साम्प्रतं प्रो० एस०एन०सिंह महोदयाः संकायाध्यक्षपदे कार्यरताः सन्ति।

वेद विभागः—

अस्मिन् विभागे डॉ० मनुदेवोबन्धुः, डॉ० रूपकिशोर शास्त्री, डां० दिनेशचन्द्रः, डॉ० सत्यदेव – एते चत्वार उपाध्यायाः सन्ति। डॉ० मनुदेवः अध्यक्षपदभारं वहति। वेद विभागे

देहली विश्वविद्यालये रीडर पदभाजां डॉ० महावीर मीमांसकानामथ च डॉ० सत्यव्रत राजेश महोदयानां व्याख्यानानि आयोजितानि। डॉ० रूपकिशोरः, डॉ० दिनेशचन्द्रः, डॉ० सत्यदेवः त्रयोऽपि देहल्यां पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे भागं गृहीतवन्तः डॉ० रूपकिशोरः बंगलौरनगरे समायोजिते विश्वसंस्कृतसम्मेलने भागं गृहीतवान्। वैदिकप्रयोगशालायाः कार्य डॉ० मनुदेवः, डॉ० सत्यदेवश्च सम्पादयतः। डॉ० दिनेशचन्द्रः, डॉ० सत्यदेवश्च उभावपि अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलने शोधपत्रे अपठताम्।

संस्कृतसाहित्यविभागः–

विभागोऽयं संस्कृतसाहित्येविद्यमानस्य ज्ञानविज्ञानस्य प्रचारे–प्रसारे च संलग्नः विश्वविद्यालयस्य गौरवं प्रख्यापयति। साम्प्रतमस्मिन विभागे प्रो. वेद प्रकाश शास्त्रिणः प्रोफेसर पदे प्रतिष्ठिताः सन्ति, एते आचार्य (उपकुलपति) पदस्य गौरवप्रख्यापने सफलाः सन्ति। एतेषां निर्देशने अधुनापर्यन्तं विंशाति छात्राःपी–एच.डी. उपाधिवन्तोऽभवन्। देशस्य विभिन्नेषु विश्वविद्यालयेषु विशेषज्ञरूपेण शास्त्रिणः सादरं निमन्त्र्यन्ते। देहली संस्कृत अकादम्याः समायोजिते त्रिदिवसीय संस्कृतसम्मेलने प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणः शोधपत्रवाचनमकार्षुः।

रीडर पदे कार्यरतस्य डॉ० महावीरस्य निर्देशने त्रयोदश छात्राः शोधोपाधिं प्रापवन्तः। अस्मिन् समारोहे तिस्रः छात्रा उपाधिं लभन्ते। एते कानपुर विश्वविद्यालये शोध–पाठ्यक्रम समित्योः विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रिताः। एते दशम विश्वसंस्कृतसम्मेलने, बैंगलोरनगरे, अथ च अखिलभारतीय संस्कृतसम्मेलने देहली नगरे शोधपत्रे प्रस्तुतवन्तः। प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणः तथा च डॉ० महावीरस्य निर्देशने अनेके छात्राः शोधकार्यनिरताः सन्ति। रीडरपदे कार्यरताः डॉ० सोमदेव शतांशु महोदयाः सम्प्रति अध्यक्षपदभारं वहन्ति। एतेषां निर्देशने अनेके छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। महानुभावोऽयं शोधसम्मेलनेषु शोधपत्र वाचनमकरोत्। रीडरपदभाजः डॉ० रामप्रकाश शर्मणः निर्देशे अनेकैः छात्रैः पी.–एच.डी. उपाधयः प्राप्ताः, साम्प्रतमपि कार्यरताः सन्ति। डॉ० ब्रह्मदेवः पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे भागं गृहीतवान्। विभागेन समायोजिते संस्कृतदिवसोत्सवे दिल्लीसंस्कृत अकादम्याः सचिवपदे प्रतिष्ठिताः डॉ० श्रीकृष्ण सेमवाल महोदयाः मुख्यातिथय आसन्। अनेनैव विभागेन अखिल भारतीय त्रिभाषा–भाषण प्रतियोगिता आयोजिता। पूज्याः ऋषि केशवानन्द महाभागाः मुख्यातिथिपदमलञ्चक्रुः। डॉ० महावीरस्य निर्देशने शोधकार्यरताभ्यां विनयकुमार विद्यालंकार, बृहस्पतिमिश्राभ्यां विश्वविद्यालयानुदानायोगस्य शोधछात्रवृत्तिः प्राप्यते। विभागेन पद्मश्रीविभूषितानां स्वनामधन्यानां प्रो० वी०वेंकटाचल महोदयानां व्याख्यानमपि आयोजितम्।

दर्शन विभागः–

विभागे डॉ० जयदेव वेदालंकार महोदयाः प्रोफेसर पदेविराजन्ते। डॉ० त्रिलोकचन्दमहोदयाः रीडरपदे सन्तः अध्यक्षपदभारमपि वहन्ति। डॉ० विजयपाल शास्त्रिणः रीडरपदे, डॉ० यू०एस० बिष्ट महोदयः वरिष्ठ प्राध्यापक पदे, डॉ० सोहनपाल आर्यश्च प्राध्यापक पदे कार्यरताः सन्ति। डॉ० जयदेव वेदालंकारानां संयोजकत्वे फरवरी मासे एका त्रिदिवसीया राष्ट्रीय संगोष्ठी "व्याप्तिस्वरूपं तदग्रहोपायाश्च" इति विषयमधिकृत्य संपन्ना। अस्यां संगमिन्यां देशस्य प्रतिष्ठिताः डॉ० प्रह्लादाचार्य, प्रो० पी०के० मुखोपाध्याय, डॉ० एस०आर० भट्ट, डॉ० के०सी० दास प्रभृतयः

दार्शनिकाः समुपस्थिताः। डॉ० अशोक बोहरा महोदयाः मुख्यातिथयः आसन्। विभागे अनेके छात्राः अनुसन्धानकार्ये संलग्नाःसन्ति। डॉ० विजयपालशास्त्रिणः काशी हिन्दू विश्वविद्यालये डॉ० यू०एस०' बिष्ट विश्वदर्शनसम्मेलने, डॉ० त्रिलोकचन्दश्च शान्तिनिकेतने शोधपत्राणि प्रस्तुतवन्तः।

प्राचीनभारतीयेतिहास विभागः—

कुलसचिव पदे, प्राच्यविद्यासंकायाध्यक्षपदे च प्रतिष्ठिताः डॉ० श्यामनारायणसिंह महोदयाः इतिहास विभागस्य अध्यक्षपदभारमावहन्ति। एतेषां निर्देशने शोध—कार्यसमाप्य अस्मिन्नेव विभागे प्राध्यापकपदे कार्यरतः देवेन्द्रकुमार गुप्ता शोधोपाधिं प्राप्नोति। अस्य विभागस्य वरिष्ठ प्राध्यापक पदे स्थितस्य डॉ० राकेश शर्मणः निर्देशने एन०सी०सी० कार्यं प्रचलित। एका लघुशोधपरियोजना प्रगतिपथाधिरूढा वर्तते। अस्मिन् सत्रे इतिहासमर्मज्ञाः कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालस्य पूर्वसंकायाध्यक्षाः प्रो० उदयवीरसिंह महोदयाः अतिथि—आचार्य पदमलंकुर्वन्ति। प्रो० एस०एन०सिंह, डॉ० कश्मीरसिंह, डॉ० राकेश शर्मणश्च निर्देशने बहवो छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। डॉ० प्रभातकुमार, डॉ० देवेन्द्रकुमार गुप्ता उभावपि वर्षेऽस्मिन् विभागे प्रवक्तृ पदे नियुक्तौ।

योगविभागः—

डॉ० ईश्वर भारद्वाजस्य आध्यक्ष्ये विभागः प्रगतिं करोति। निखिलेऽपि भारते गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालयेनैव योगविषये स्नातकोत्तरोपाधिः प्रदीयते। डॉ० भारद्वाजस्य निर्देशने चत्वारः छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति। विभागे डॉ० महावीर मीमांसकानां स्वामीरामदेवस्य च योगविषये विशिष्टानि व्याख्यानानि आयोजितानि। अस्य विभागस्य छात्राः अन्तर्विश्वविद्यालय—योगप्रतियोगितासु विजयवन्तो भवन्ति। डॉ० भारद्वाजस्य योगावार्त्ताः आकाशवाण्याः प्रसारिताः। एते दिल्लीस्थ केन्द्रीय योग संस्थाने पुनश्चर्यापाठ्यक्रमे भागं गृहीतवन्तः। विश्वविद्यालयानुदान आयोगस्य योगप्रोन्नतियोजनायां श्री योगेश्वरदत्तः श्री सुरक्षितश्च कार्यरतौ स्तः।

श्रद्धानन्दशोध संस्थानम्:—

डॉ० भारतभूषण विद्यालंकार महोदयानां निर्देशने संस्थानमिदं शोध ग्रन्थानां प्रकाशनं करोति। डॉ० भारतभूषणमहोदयैः एका बृहद् शोधपरियोजना विश्वविद्यालयानुदान आयोगं प्रति प्रेषिता। प्रो० रणजीत सिंह महोदय प्रणीतस्य स्वामिश्रद्धानन्दचरिताख्यस्य ग्रन्थस्य तथा च आचार्य रामदेव विरचितस्य ''भारतवर्ष का इतिहास' ग्रन्थस्य प्रकाशनं शोधसंस्थानेन कृतम्।

शारीरिक शिक्षाविभागः—

छात्राणां शारीरिक, मानसिक वृद्धयर्थं विश्वविद्यालये शारीरिक शिक्षा विभागः डॉ० रामकुमार सिंह डागर महोदयस्य निर्देशने प्रशंसनीयं कार्यं करोति। अत्रत्याः छात्राः अनेकासु राष्ट्रीय प्रतियोगितासु भागं गृहीतवन्तः। कबड्डी, बाक्सिंग योगक्रीड़ा प्रतियोगितासु गुरुकुलस्य छात्राः विजयमलभन्त। क्रीड़ाविभागाध्यक्षाःडॉ० डागर महोदयाः गुरुनानकदेव विश्वविद्यालये, विविधासु प्रतियोगितासु च विश्वविद्यालयनुदानयोगेन पर्यवेक्षकरूपेण प्रेषिताः।

आगामनि सत्रे विभागेऽस्मिन् त्रिवर्षीय बी०पी०एड० पाठ्यक्रमः प्रारभ्यते।

मानविकी संकायः

मानविकी संकाये हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रौढ़–शिक्षा चत्वारो विभागाः वर्तन्ते। डॉ० नारायण शर्माणोऽस्य संकायाध्यक्षपदे प्रतिष्ठिताः सन्ति।

हिन्दीविभागः–

डॉ० विष्णुदत्त राकेशः प्रोफेसर पदे, डॉ० ज्ञानचन्द रावलः विभागाध्यक्षपदे, डॉ० सन्तरामवैश्यः, डॉ० भगवान्देव पाण्डेय महोदयौ रीडरपदे कार्यरताः सन्ति। श्री कमलकान्त बुधकरश्च प्राध्यापकरूपे हिन्दीपत्रकारितायाः संवर्धने बद्धादरो वर्तते। विश्वविद्यालये ऽद्यावधि विविधेषु दीक्षान्त समारोहेषु मनीषिभिः प्रदत्तानां दीक्षान्त भाषणाना सम्पादनं श्रीमद्भिः डॉ० विष्णुदत्त राकेश महोदयैः 'दीक्षालोक' नाम्ना कृतं यस्येदानीं लोकार्पणं क्रियते। एतेषां निर्देशने बहुभिः छात्रैः शोधोपाधयः प्राप्ताः। डॉ० सन्तराम, डॉ० ज्ञानचन्द, डॉ० भगवानदेव महोदयानां निर्देशने अनेके छात्राः शोधकार्यरताः सन्ति। डॉ० सन्तराम वैश्येन कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालये समायोजिते हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे व्याख्यानं प्रदत्तम्। अमृतसरस्थ गुरूनानकदेव विश्वविद्यालस्य हिन्दीविभागे, चित्रकूटधाम्नि राष्ट्रीय रामायाण मेलावसरेच विचाराः प्रस्तुताः।

आंग्लभाषा विभागः –

सम्प्रति विभागे पञ्च उपाध्यायाः विराजन्ते। प्रोफेसरपदभाजां डॉ० नारायण शर्मणां निर्देशकत्वे एको छात्रः पी–एच.डी. उपाधिं स्वीकरोति। एते इलाहाबाद, मेरठ, कुमायूं आदि विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञत्वेन सादरं निमन्त्रिताः। अरविन्द साहित्यमधिकृत्य भवद्भिः प्रशंसनीयं कार्य क्रियते।

विभागाध्यक्षाः श्री सदाशिव भगत महोदयाः विभागस्य स्थापनाकालत एव सेवारताः सन्ति। एषां प्रयासेन भाषा प्रयोगशालयाः स्थापना संजाता। श्री भगत महोदयस्य निर्देशने अनेके छात्राः पी–एच.डी. उपाधिवन्तः समभवन्।

डॉ० श्रवणकुमार शर्मणः निर्देशने एकेन छात्रेण शोधोपाधिः प्राप्यते। डॉ० शर्मा जम्मू–विश्वविद्यालये शोधसंगोष्ठ्यां शोधपत्रं प्रस्तुतवान्। डॉ० अम्बुज शर्मणः निर्देशने त्रयो छात्राः शोधकार्य कुर्वन्ति। डॉ० कृष्णावतार अग्रवालः 'शेक्सपीयर इन माडर्न टाइम्स' विषये शोधकार्यरतोऽस्ति। असौ प्रयागविश्वविद्यालये तथा च हैदराबाद नगरे पुनश्चर्या पाठ्यक्रमे भागं गृहीतवान्।

मनोविज्ञान विभाग :–

विभागेऽस्ति पञ्च उपाध्यायाः अध्यापनकर्मणि, शोध निर्देशने च कृतसंकल्पाः सन्ति। प्रो० ओ०पी० मिश्राणां निर्देशने १० छात्राः शोधोपाधिं प्राप्तवन्तः। विभागाध्यक्षानां श्री एस०सी० धमीजा महोदयानां निर्देशने एकः छात्रः अस्मिन् समारोहे पी–एच.डी. उपाधिना अलंक्रियते। एतेषां शोधपत्रमेकं तन्मय भट्टाचार्यस्य सहलेखने आस्ट्रेलियास्थ अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेसे स्वीकृतम्। धमीजा महोदयस्य त्रीणि पुस्तकानि मनोविज्ञानविषये प्रकाशितानि सन्ति। विभागे रीडरपदभाजा डॉ० एस०के० श्रीवास्तवेन द्वयोः शोधपरियोजनयोः कार्यं क्रियते। द्वाभ्यां छात्राभ्यां शोधोपाधिः प्राप्ता।

अनेन विभागेन एका त्रिदिवसीया अन्तर्राष्ट्रीय शोधसंगोष्ठी बृहद्रूपेणायोजिता। न केवलं

भारतदेशीयाः अपितु विदेशीयाः मनोविज्ञानविद्वांस' समायाताः प्रो० पेस्टोंजी, प्रो० कलियप्पन, प्रो० एम०सी० जोशी प्रो० ए०के० सेन प्रभृतयः विद्वत्तल्लजाः सम्मेलनमिदं सनाथितवन्तः। डॉ० एस०के० श्रीवास्तवः संयोजकस्य गुरुतरं दायित्वम् उवाह। सर्वेषां वैज्ञानिकसत्राणां संचालनं श्री एस०सी० धमीजा महोदयैः कृतम्। प्रवक्तृपदे कार्यरतस्य डा० सी०पी० खोखरस्य निर्देशने छात्राः शोधकार्यं कुर्वन्ति।

प्रौढ़ शिक्षा विभागः—

विभागेऽस्मिन् डॉ० आर०डी० शर्मा अध्यक्षपदभारं वहति। डॉ० जशवीर सिंह मलिकः सहायकरूपेण कार्यं करोति। जने—जने साक्षरतायाः प्रचाराय प्रसाराय विभागोऽयं कृतसंकल्पो वर्तते।

अस्मिन् वर्षे इण्डियन सोसाइटी फार कम्यूनिटी एजूकेशन संस्थायाः सहाय्येन सप्तम राष्ट्रीय सम्मेलनमत्र समायोजितम्। विभागेन सतत् शिक्षातर्गन्तानि पञ्च व्यावसायिक प्रशिक्षणानि समायोजितानि। मानवानिकी संकाये स्नातक कक्षासु समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, कम्प्यूटर, विज्ञान विषया अपि पाठ्यन्ते।

विज्ञानसंकायः

गणित सांख्यिकी विभागः—

डॉ० वीरेन्द्र अरोड़ा महोदयो गणितसांख्यिकी विभागस्य विज्ञानसंकायस्य च अध्यक्षपदम् अलंकरोति। अधुना डॉ० एस०एल० सिंह महोदयः आमन्त्रित आचार्यरूपेण दारूलसलाम विश्वविद्यालये अध्यापयति। डॉ० अरोड़ामहोदयः 'इण्टरनेशनल बायोग्राफिकल सेन्टर' अनुष्ठानेन पञ्चनवतिषण्णवतिवर्षस्य कृते वर्षस्य अन्तर्राष्ट्रीय पुरुषत्वेन सम्मानितः।

विभागे सत्रेऽस्मिन् बी०एस०सी० कक्षासु सांख्यिकी विषयः पृथक् विषयत्वेन पाठ्यक्रमे समायोजितः। डॉ० अरोड़ा, डॉ० महीपाल सिंह, डॉ० हरवंसलाल गुलाटी, एभिः प्राध्यापकैः संगणकविभागेन समायोजितायां कार्यशालायां भागो गृहीतः। डॉ० विजयेन्द्रकुमार शर्मा शोधकार्येषु संलग्नः।

रसायनविज्ञानविभागः—

डॉ० आर०डी० कौशिकः सम्प्रति अध्यक्षपदे प्रतिष्ठतोऽस्ति। अस्मिन् विभागे डॉ० आर०के० पालीवाल, डॉ० इन्द्रायण, डॉ० कौशल कुमार, डॉ० आर०डी० कौशिक, डॉ० रणधीर सिंह, डॉ० श्रीकृष्ण महोदयाना निर्देशने उच्चस्तरीयमध्यनं शोध कार्यं च प्रचलति। डॉ० आर०डी० कौशिक, डा० इन्द्रायण महोदययोः निर्देशने छात्राभ्यां पी.एच.डी. उपाधिः प्राप्तः। एतौ प्राध्यापकौ एकैकस्यां शोधपरियोजनायामपि संलग्नौ स्तः। डॉ० आर०डी० सिंह महोदयेन एका शोधपरियोजना पूर्ति नीता। अस्य विभागास्य अनेके शोधलेखाः अन्ताराष्ट्रीयशोधपत्रिकासु प्रकाशिताः।

विभागीय उपाध्यायानां निर्देशने अनेके छात्राः शोधनिरताः वर्तन्ते। अस्य विभागस्य छात्राः गोआ विश्वविद्यालयं डोनापोलास्थानस्थं ओशनोग्राफी इन्स्टीट्यूट (समुद्रविज्ञानसंस्थान) प्रति यात्रार्थं गताः।

भौतिकी विभागः—

अद्यत्वे डॉ० राजेन्द्रकुमार महोदयस्य आध्यक्ष्ये विभागोऽयं प्रगतिपथमारोहति। विभागेऽस्मिन्

कुलाधिपति श्री सूर्यदेव

कुलपति डॉ० धर्मपाल

श्री हरीशचन्द्रग्रोवर, डॉ० बुद्धप्रकाश शुक्लः, डॉ० राजेन्द्र कुमार एते महानुभावाः रीडरपदे कार्यरताः। डॉ० पी०पी० पाठको वरिष्ठ प्रवक्तृपदे प्रतिष्ठितः। अस्मिन् विभागे अष्टौ छात्राः गवेषणाकार्यं कुर्वन्ति।

डॉ० पाठकमहोदयस्य एकः शोधलेखों ऽन्ताराष्ट्रीयशोधपत्रे प्रकाशनार्थं स्वीकृतः। विभागे सी.एस.आर. संस्थानस्य पूर्वनिर्देशकस्य डॉ० एस०के० जोशी महोदयस्य विशिष्टव्याख्यानं समायोजितम्।

कम्प्यूटर विभागः–

अस्मिन् विश्वविद्यालये कम्प्यूटर विषयस्य उच्चस्तरीयमध्ययनं गवेषणाकार्यं डॉ० विनोदकुमार शर्मणोऽध्यक्षत्वे सुचारुतया प्रचरति। डॉ० विनोदकुमार शर्मणः डॉ०कर्मजीत भाटिया, श्री सुनीलकुमार, श्री वेदव्रत, श्री द्विजेन्द्रपन्त – एषां महानुभावानाञ्च अनेके शोधलेखाः राष्ट्रीयान्ताराष्ट्रीयपत्रिकासु प्रकाश्यं गताः। डॉ० शर्मणो निर्देशने एकश्छात्रः पी–एच.डी. उपाधिम् प्राप्तवान्। डॉ० शर्मा रानीदुर्गावती विश्वविद्यालये अनेकानि व्याख्यानानि प्रदत्तवान्।

अस्मिन् विभागे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोगः अस्य संस्थानस्य सहयोगेन डॉ० विनोदशर्मणः संयोजकत्वे 'कम्प्यूटर की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग' इत्यस्मिन् विषये एका पञ्चदिवसीया शोधगोष्ठी समायोजिता। अस्यां पञ्च पञ्चाशत् विद्वांसः सम्मिलिताः।

अस्मिन् विभागे रूड़की विश्वविद्यालयस्य डॉ० पी०एस० अग्रवाल, डॉ० एस०पी० शर्मा, डॉ० के०के० श्रीवास्तव महाभागानां महर्षि दयानन्दविश्वविद्यालयस्य पूर्वकुलपतेः ओ०पी० चौधरी महोदयस्य, उपकुलपतेः डॉ० एल०एन० दहियामहोदयस्य गढ़वाल विश्वविद्यालयस्य डॉ० आर०के० शर्मणश्च व्याख्यानानि समायोजितानि।

अस्मिन् वर्षे विभागीयपुस्तकालयस्य प्रयोगशालायाश्च विस्तारो विकासश्च विहितः।

कम्प्यूटरकेन्द्रम्ः–

विश्वविद्यालये सुसमृद्धं कम्प्यूटरकेन्द्रमपि वर्तते। डॉ० विनोदकुमारशर्मणोऽध्यक्षे श्री अचलगोयल, श्री महेन्द्र सिंह असवाल, श्री मनोज कुमार, श्री शशिकान्त शर्मा इमे महानुभावाः कार्यरताः।

मुख्यकार्यालयस्य सुव्यवस्थार्थं पृथक्त्वेन एकः कम्प्यूटर अनुभागः संस्थापितः। अस्य विभागस्य प्राध्यापकैः सहयोगिभिश्च अनेके लेखाः विविधसम्मेलनेषु प्रस्तुताः।

जीवविज्ञानसंकायः

अस्मिन् सत्रे डॉ० आर०सी० दूबे विभागे रीडरपदे नियुक्तः। जर्मनवास्तव्यस्य प्रोफेसर काये महोदयस्य विभागे विशिष्टं व्याख्यानमायोजितम्। बायोटैक्नोलोजी इत्यस्मिन् विषये एका राष्ट्रीया संगोष्ठी समायोजिता। एकोनविंशतितमा इण्डियन बोटेनिकल सोसाइटी इत्याख्या गोष्ठी चापि समायोजिता। अस्मिन् विभागे विविधविषयेषु पञ्चविंशतिलक्षात्मिकाः तिस्रः शोधयोजनाः लक्ष्याप्राप्त्युन्मुखाः सन्ति।

विभागीय प्राध्यापकानामनेके लेखाः राष्ट्रीयान्ताराष्ट्रीयपत्रिकासु प्रकाशिताः। डॉ०

पुरुषोत्तमकौशिक, डॉ० आर०सी० दूबे महोदयानाम् एकैकं पुस्तक प्रकाशितम्। समेऽपि प्राध्यापकाः राष्ट्रीयसंगोष्ठीषु शोधपत्राणि प्रस्तुतवन्तः विभागाध्यक्षस्य प्रो० माहेश्वरी महोदयस्य नाम विश्वविद्यालयानुदानायोगेन रूसदेशस्ययात्रार्थं प्रस्तावितम्।

जन्तु विज्ञान–पर्यावरणविज्ञान विभागः–

एतद्विभागीयाः प्राध्यापकाः विभागं विश्वविद्यालयञ्चोन्नेतुं सदा यत्नवन्तो वर्त्तन्ते। प्रो० बी०डी० जोशी महोदयः तिस्रशोधयोजनाः, डॉ० दिनेश भट्ट, डॉ० पी०सी० जोशी महाभागश्च एकैक्यं शोधयोजनां सुपरिचालयन्ति। विभागस्य प्राध्यापकैः Himalayan Journal of Environment and Zoology नाम्नी शोधपत्रिका प्रकाशिताः। अस्य विभागस्य त्रयस्त्रिंशत् शोधलेखाः प्रकाशिताः। विविधशोधगोष्ठीषु चास्य विभागस्य प्राध्यापकाः भागं गृहीतवन्तः।

अस्मिन् विभागे अनेकेषां भारतीयवैदेशिक विदुषाम् व्याख्यानानि समायोजितानि।

सप्त छात्रा अत्र शोधकार्यं कुर्वन्ति, चत्वारश्छात्राः पी०एच०डी० उपाधिम् अधिगतवन्तः। विभागस्य अनेके प्राध्यापकाः नैकाः अन्ताराष्ट्रिय पत्रिकाः सम्पादयन्ति। बी०डी० जोशी, डॉ० डी०आर० जोशी, डॉ० डी०आर० खन्ना – प्राध्यापकाभ्यां राष्ट्रीयसेवायोजनायाः कार्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते।

प्रबन्धन संकायः

विश्वविद्यालयोऽयमनुदिनं प्रबन्धनशिक्षाक्षेत्रे अग्रेसरति। डॉ० एस०सी० धमीजा संकायस्य अध्यक्षो वर्त्तते।

अस्मिन् संकायेऽस्मिन् सत्रे एम०बी०ए० पाठ्यक्रम प्रारब्धः। डॉ० वी०के० सिंह, डॉ० वी०के० साहनी प्रवक्तृपदे नियुक्तौ। अस्मिन् सत्रे भिवानीस्थ प्रोफेसर एस०के० शर्मा दिल्लीवास्तव्य श्री संजय सेठी प्रभृतीनां विदुषां प्रबन्धविषयकं विशिष्टम् व्याख्यानम् आयोजितम्। छात्राणा व्यावहारिकज्ञानार्थं हरिद्वार–ऋषिकेश–दिल्ली– मुम्बई–मैसूर–बंगलौर–बंगलौर प्रभृति नगरेषु स्थितानि अनेकानि व्यापारिकौद्योगिकप्रतिष्ठानानि प्रदर्शितानि। विभागे विविधाः प्रतियोगिताः परिचर्याः वादविवादाः व्यापारिकक्रीड़ाश्च आयोजिताः।

पुस्तकालयः–

अस्माकम् पुस्तकालयः दुर्लभप्राच्यविद्याग्रन्थानां पावनं कोषागारम्। अस्मिन् पुस्कालये विविध विषयाणाम् एकलक्ष पंचविंशति परिमितानि पुस्तकानि शोभन्ते। विश्वविद्यालयस्य श्रद्धानन्दप्रकाशन केन्द्रेण प्रतिवर्षं ग्रन्थाः प्रकाश्यन्ते। अस्मिन् वर्षे 'दीक्षालोकः' प्रकाश्यते।

अस्मिन् वर्षे पुस्तकालयावलोकनार्थं श्री साहिब सिंह वर्मा, मुख्यमंत्री दिल्ली सर्वकारः तथा च स्मेकल ओदोलेन, राजदूतः चैक गणराज्यस्य प्रभृतयः नेतारो विद्वांसश्च समायाताः।

पुरातत्व संग्रहालयः–

विभागोऽयं सततमुन्नतिशीलः। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थानां वीथिरेका निर्मिता। पाण्डुलिपीनां संरक्षण योजनायां ६५ पाण्डुलिपीनां परिरक्षणं विहितम्। विश्वविद्यालयानुदान आयोग सहाय्येन संग्रहालय भवने चतुर्णां कक्षाणां निर्माणं संजातम्।

श्री साहिब सिंह वर्मा मुख्यमंत्री दिल्ली सर्वकारः, डॉ० के०पी० नौटियाल कुलपतिः गढ़वाल विश्वविद्यालयः, डॉ० महेन्द्र सोढ़ा कुलपतिचरः लखनऊ विश्वविद्यालय तथा चार्न्येअनेके महानुभावाः संग्रहालयम् अमुं प्रेक्ष्य प्राशंसन्।

समुपस्थिताः अतिथयः!

नारीशिक्षामुन्नेतुं विश्वविद्यालयेनानेन देहरादून नगरे सुदीर्घकालात् कन्या गुरुकुलं सञ्चाल्यते, तत्र संस्कृत, वेद, हिन्दी, आंग्लभाषा, संगीत, इतिहासादि विषयैः सह कम्प्यूटर विषयस्यापि उच्चशिक्षा प्रदीयते।

हरिद्वार नगरे बालिकानामुच्चशिक्षाप्राप्तयेन काचित् समुचिता व्यवस्था आसीत्। अस्माभिरभावोऽयमपाकर्तुं कन्या गुरुकुलमहाविद्यालयः प्रारब्धः। बालिकाः प्रबन्धविषये एम०बी०ए० उपाधि प्राप्तये अध्ययनरताः सन्ति। श्री सुरेखा राणा, सुश्री बिन्दु अरोड़ा प्रवक्तृपदे नियुक्ते। डॉ० सुनृता महोदयायाः निर्देशने महाविद्यालयोऽयं सततमुन्नतिपथमारोहति। तत्रसुयोग्याः, कर्मशीलाः प्राध्यापिकाः मनसा अध्यापयन्ति। कन्यागुरुकुलमहाविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवे प्राध्यापिकानां मार्गदर्शने सांस्कृतिककार्यक्रमाः छात्राभिः प्रदर्शिताः। आसां कृते सुविशालस्य भवनस्य निर्माणं क्रियते।

प्रेयांसः स्नातकाः!

स्वामिश्रद्धानन्देन येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां परिरक्षणाय, राष्ट्रीयैकतायाः अखण्डताया चरित्रस्य धार्मिकसद्भावस्य च विकासाय गुरुकुलशिक्षापद्धतिरियं समुद्भाविता, तानि जीवनमूल्यानि, ते च आदर्शाः भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदमुन्नतिं साफल्यञ्च प्रदास्यन्ति। यद्यपि वर्तमान समाजे विषमाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति, परं गुरुजनानामाशीर्वादेन सह भवतामात्मविश्वासो निश्चितं जीवनमुन्नेष्यति युष्माकं सर्वेषां कल्याणाय, सर्वविधमाङ्गल्याय च परेशं प्रार्थये मुन्नेष्यति।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां, शिक्षकानां, कर्मचारिणां, ब्रह्मचारिणाम् अभिभावकानाञ्च सहयोग एवं प्रशस्यते। कुलाधिपति श्री सूर्यदेव महोदयानां, परिद्रष्टा श्री महावीर सिंह महोदयानां च निर्देशने ऽसौ विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारोहति।

हे महाजनाः सज्जनाः!

सौभाग्यमिदमस्माकं यद् साहित्यकोविदाः अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संस्थाने भारतीय भाषा विभागस्य अध्यक्षाः डॉ० आलेग जी उल्त्सिफेरो व महोदयाः दीक्षान्त भाषणायात्र विराजन्ते।–भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीय शिक्षा प्रतिनिजानुरागः प्रकटितः। गुरुकुलमध्ये भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनो वयं धन्याः। भवतामाशीर्वचोभिः विश्वविद्यालयः नूनं प्रतिष्ठां प्राप्स्यतीति विश्वसीमः।

अन्ते चाहं समुपस्थितानां सर्वेषां महानुभावानां धन्यवादान् व्यावहरन् सकल जगज्जेगीयमानं परमेशमभ्यर्थये –

भद्रं भद्रं न आभर इष्मूर्ज शतक्रतो।

१३ अप्रैल, १९९७
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वारम्।

डॉ० धर्मपालः
कुलपतिः

दीक्षान्त अभिभाषण

कुलाधिपति महोदय, परिद्रष्टा महोदय, कुलपति जी, आचार्यगण, अन्तेवासियों, देवियों तथा सज्जनों,

अमर हुतात्मा वीतराग संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित राष्ट्रीय शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के इस पवित्र प्रांगण में उपस्थित होकर मुझे परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह संस्था विद्या और तप की स्थली रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के तप ने और ब्रह्मचारियों की देशभक्ति ने महात्मा गांधी को इस तपःस्थली की ओर आकृष्ट करके उनके मन में आशा और विश्वास का भाव उत्पन्न किया था। यह वही पावन भूमि है, जहाँ हमारे देश के सर्वमान्य नेताओं ने समय-समय पर पदार्पण करके स्वयं को गौरवान्वित किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के संरक्षण में जो आचार्यगण अपने अन्तेवासियों को राष्ट्रभक्ति के गीत सुनाया करते थे, वे स्वयं उसी उत्तरीय वस्त्र को धारण करते थे, जिसका ताना और बाना देशभक्ति, स्वाधीनता, स्वावलम्बन, सच्चरित्रता, निश्छलता तथा निर्भीकता के धागों से बुना जाता था। यह वही संस्था है जिसके ब्रह्मचारी गंगा तट पर बैठकर गंगा की उठती हुई तरंगों में देशभक्ति के गीतों की तान को खोजा करते थे। इस संस्था के इतिहास को पढ़कर जैसा विदित होता है कि यहां शिक्षा का उद्‌देश्य केवल जीविकोपार्जन के लिए न होकर मानव के सर्वांगीण विकास के लिए था। शिक्षा वही है जो मानव को सही जींवन का दर्शन देकर उसे उन्नति की ओर अग्रसर करे। नैतिक आदर्श, मानव मूल्य, सद्‌भाव, राष्ट्रीयता, विश्वबन्धुत्व, हठ और दुराग्रह का परित्याग सिखाने वाली विद्या ही शिक्षा का रूप है।

उपस्थित सज्जनो!

मुझे बताया गया था कि गुरुकुल कांगड़ी जिन आदर्शों को सामने रखकर खोला गया था, वे वैदिक आदर्श हैं जिनमें संकीर्णता का लेश भी नहीं है। वहाँ न साम्प्रदायिकता है, न संकीर्णता है, न कोई वाद पनपा है, न स्वार्थपरता है, न निरंकुशता है, वहाँ तो केवल सच्ची मानवता है, परमार्थ की भावना है, विश्वबन्धुत्व का उद्‌घोष है तथा समूचे विश्व को मित्र दृष्टि से देखने का आदर्श है। वेदों में मानव को उन्नत होने के लिए भौतिक एवं आत्मिक दोनों ही सम्पत्तियों से भरपूर होने का उपदेश है। इसलिए शिक्षा का उद्‌देश्य मानव की आन्तरिक तथा बाह्य शक्तियों का विकास करना है। आज मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में प्राचीन एवं नवीन विषयों के अध्ययन-अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। भारतीय संस्कृति के परिचायक एवं पोषक प्राच्य विद्या संकाय में वेद, संस्कृत, दर्शन, योग, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग कार्य कर रहे हैं। मांनविकी संकाय में हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि नवीन विषयों के अध्यापन की व्यवस्था है। इसी प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए विज्ञान संकाय तथा जीव विज्ञान संकाय में गणित शास्त्र, रसायन शास्त्र, भौतिकी तथा कम्प्यूटर विज्ञान, जन्तु विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, सूक्ष्मजीव विज्ञान की व्यवस्था है। आधुनिक आवश्यकता का अनुभव करते हुए यहाँ प्रबन्धन संकाय की व्यवस्था भी हो चुकी है। महिला शिक्षा को उन्नत करने के लिए यहाँ प्राचीन एवं नवीन तथा विज्ञान विषयों के अध्यापन की व्यवस्था कर दी गयी है। यह जानकर मुझे हर्ष हो रहा है कि यहाँ विज्ञान के छात्रों के लिए धर्म, दर्शन एवं संस्कृति की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से दी जाती है।

आदरणीय सज्जनों!

यह जानकर मुझे प्रसन्नता है कि गुरुकुल काँगड़ी के स्नातकों ने यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके विद्यास्नातक तथा व्रतस्नातक के रूप में दीक्षित होकर देश–विदेश में जाकर जो कार्य किया है, वह प्रशंसनीय है। अपने हृदय में विश्वबन्धुत्व का भाव संजोकर कार्य करने वाले स्नातकों ने विदेशों में भी शिक्षा, धर्म, राजनीति तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशिष्ट मानदण्ड स्थापित किए हैं। पं० अमीचन्द विद्यालंकार ने फिजी में जाकर अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। वे वहाँ संसद के सदस्य भी बने। आचार्य रामदेव, पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० मदन मोहन, श्री विद्यासागर विद्यालंकार, पं० सत्यपाल सिद्धान्तालंकार, पं० ईश्वर दत्त विद्यालंकार, श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार, श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार, श्री देवनाथ विद्यालंकार, श्री रणधीर वेदालंकार, श्री अमृतपाल वेदालंकार, पं० श्यामसुन्दर स्नातक ने बर्मा, अफ्रीका, कीनिया, युगान्डा, टांगानीका, सिंगापुर, मलाया, यूरोप में जाकर वैदिक सिद्धान्तों एवं हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार किया। मोजाम्बिक में पं० रविशंकर सिद्धान्तालंकार, पं० सुमन्तराय विद्यालंकार, पं० मतिमान विद्यालंकार ने तथा रोडेशिया में पं० हरिदेव वेदालंकार ने अध्यापन कार्य किया। दक्षिण अफ्रीका में सुधीर कुमार विद्यालंकार, श्री अरूण कुमार विद्यालंकार, श्री हरिशंकर आयुर्वेदालंकार, पं० नरदेव वेदालंकार ने सराहनीय कार्य किया। इस समय भी अनेक स्नातक अमेरिका और यूरोप के देशों में गुरुकुल का नाम उज्जवल कर रहे हैं। अपने देश में रहते हुए जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन देशहित, वेदप्रचार तथा अनुपम ग्रन्थों के लेखन में समर्पित कर दिया उनमें पं० अमरनाथ विद्यालंकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार, पं० क्षितिश वेदालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

समाचार पत्रों से मुझे ज्ञात हुआ है कि इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर के सात सम्मेलनों का आयोजन किया गया है जिनमें विश्वविद्यालय को पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। प्रौढ़ शिक्षा में, सूक्ष्म जीव विज्ञान में, दर्शनशास्त्र में तथा विश्वविद्यालय प्रशासक संघ के संरक्षण में यहाँ होने वाले सम्मेलनों में बाहर से पधारे हुए विद्वान प्रभावित हुए जिनमें मैं भी हूँ।

सभी ने अनुभव किया कि यह एक राष्ट्रीय शिक्षण संस्था है जिसका भारत के विश्वविद्यालयों में देश की भाषा, रक्षा, पारस्परिक सम्बन्ध तथा देशप्रेम की दिशा में विशेष स्थान है।

उपस्थित सज्जनों!

भारतवर्ष ने जिसकी तपस्या, विद्वता, सहृदयता, अनुरागिता, विश्वजनीनता तथा सद्भावना के बल पर विश्व गुरु के पद को प्राप्त किया था वे इस देश के महर्षि, मुनि, योगी और आचार्य ही थे। यहाँ का आचार्य अपने हृदय में ब्रह्मचारी के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करता था, जिस प्रकार माता के गर्भ में स्थित शिशु माता की आंखों से देखता है उसके कानों से सुनता है, उसकी रसना से खाता है, उसके चिन्तन से सोचता है, उसी प्रकार आचार्य के द्वारा निर्देशित होकर उसका अन्तेवासी आचार्य की आज्ञानुसार सुनता है, पढ़ता है, देखता है, क्रीड़ा करता है, सोता है, जागता है और जीवन का विकास करता है। आचार्य अपने छात्र को इस प्रकार बनाता है कि वह विद्या के क्षेत्र में, राष्ट्रीयता के क्षेत्र में, सामाजिकता के क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र, ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में, देशान्तर के संबंधों के क्षेत्र में, लेखन कला में, वाक्कला में पूर्ण निष्णात होकर अपनी रूचि के अनुसार कर्तव्य का पालन करता हुआ प्रगति पथ पर अग्रसर होता है। देश के अभ्युत्थान में आचार्य की भूमिका बलवत्तर होती है क्योंकि आचार्य केवल किताबी ज्ञान से ही छात्र को विकसित नहीं करता वह तो आचार एवं सदाचार की शिक्षा देकर छात्र का निर्माण करता है।

सज्जनों!

आप अवश्य जानते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से मानव शिक्षा के उन मूलभूत सिद्धांतों की ओर संकेत किया है जो शिक्षा जगत के प्राणभूत हैं। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने गुरुवर महर्षि दयानन्द के अनुसार ही देश में गुरुकुल पद्धति का पुनरुद्धार करके महान कार्य किया। आज हमारा देश शिक्षण की दिशा में पुरुषों एवं महिलाओं के लिए समान रूप से सभी साधन जुटाने में लगा है, नारी शिक्षा की अनिवार्यता के विषय में महर्षि दयानन्द स्मरणीय हैं। स्वामी जी ने अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, स्वराज्य की भावना को जगाकर पाखण्डों का खण्डन करके सम्पूर्ण मानवजाति को उन्नति करने के अधिकार की बात कही है। आज आपके देश में अनेक विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य चल रहा है, चिकित्सा के क्षेत्र में तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी शिक्षण संस्थानों की कमी नहीं है तथापि अभी और आवश्यकता का अनुभव हो रहा है। आज अच्छे से अच्छे इंजीनियर तैयार हो रहे हैं, डाक्टर प्रतिवर्ष शिक्षित होकर कार्य में लगे हैं, तकनीकी विद्या के पारंगत विद्वान आज उपलब्ध हो रहे हैं परंतु भारत और संसार के सभी देशों का एक पक्ष अभी निर्बल हो रहा है, वह है नैतिकता का पक्ष। इसका एक मात्र कारण मैं समझता हूं कि अध्यापकों ने शिक्षा को अधिकतर किताबी ज्ञान तक सीमित कर लिया है, जबकि शिक्षा का सम्बध मानवीय शुद्ध व्यवहार के साथ जुड़ा हुआ है। आज पारस्परिक सौहार्द की भावना, स्वाध्याय की प्रवृत्ति, स्वावलम्बन की भावना, पुरुषार्थ की तत्परता, दूसरे के संकट को दूर करने की भावना तथा एक साथ चलने की प्रवृत्ति का प्रायः ह्रास होता जा रहा है। आज का मानव लगता है केवल स्वयं में केन्द्रित होकर ही विकास का स्वप्न साकार करना चाहता है। वह अपनी उन्नति को उन्नति मानता है, अपने सुख को बढ़ाने में ही उसकी शक्ति का अपचय होता है। उसका अपने पड़ोसी के प्रति, अपने समाज के प्रति, दीनों और अनाथों के प्रति, जो साक्षर नहीं है उनके प्रति, जो मार्ग से भटक गए हैं उनके प्रति तथा जो निर्धनता के कारण वस्त्र तथा भोजन भी यथोचित प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं उनके प्रति क्या नैतिक दायित्व है, इस विषय में उसका चिन्तन शून्य है, उसकी वाणी मौन है तथा पैरों की गति अवरूद्ध है।

मैं रूस देश से आया हूं जो वर्ष में सात महीने हिमाच्छादित होता है जिसके कारण हमारे छात्रों के सामने कम प्रलोभन है। रूस में पांच सौ से अधिक विश्वविद्यालय हैं जिनमें बीस लाख से अधिक विद्यार्थी हैं। मैं भाषा का अध्यापक हूं, हिन्दी भाषा का।

मानव के जीवन में भाषा का अनुपम महत्व है। भाषा न होती तो हम एक दूसरे को कैसे समझ सकते? आज की दुनिया में हजारों भाषाएं हैं और प्रत्येक भाषा में भिन्न–भिन्न जातियों की स्नेह और सुख की आशा, मैत्री और शांति की इच्छा, बच्चों और बड़ों से प्यार का स्वर गूंजता है। इन भाषाओं में टाल्स्टाय के युद्ध और शांति की पुकार झनझनाती है, दोस्ताएव्स्की का गरीबों का रूस कराहता है, पुश्किन की मधुर कविताएं अमर प्रेम के गीत गाती हैं। इनमें प्रेमचन्द की निर्मला का करुण जीवन रुदन करता है, अश्क के पंजाब की हंसमुखता तथा जिंदादिली चहचहाती है, जयशंकर प्रसाद की मधुलिका की देशभक्ति और आत्मबलिदान चिल्लाता है, वृन्दावनलाल वर्मा की झांसी की रानी का 'हर हर महादेव' का गगनभेदी नाद गरजता है।

मेरे लिए यह बड़ी गौरव की बात है कि रूस देश में भी अनेक हिन्दी भाषी हैं। अभी तक ये लोग हिन्दी में उपन्यास या कहानियां नहीं लिखते किन्तु वे दूसरे क्षेत्रों में हिन्दी की सेवा करते हैं। सर्वप्रथम यह हिन्दी भाषा तथा इसके साहित्य का प्रचार है। हिन्दी से रूसी में प्रायः सब प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों की कृतियों का अनुवाद किया गया है जिनमें प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, राहुल सांस्कृत्यायन, सुमित्रानन्दन पंत, निराला, अज्ञेय, उपेन्द्रनाथ अश्क, कृशन चंदर,

यशपाल, वृन्दावन लाल वर्मा, अमृतलाल नागर, जैनेन्द्र कुमार और रांगेय राघव के नाम विशेषकर उल्लेखनीय है। इस बात का श्रीगणेश श्री बारान्निकोव द्वारा अनूदित 'रामायण' ने किया था।

अनुवाद के अतिरिक्त हमारे यहां हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन का काम किया जा रहा है। केवल मास्को में पांच ऐसे संस्थान हैं जिनमें हिन्दी पढ़ायी जाती है। इनमें शोधकार्य भी हो रहा है। हमारे हिन्दीवेत्ताओं ने केवल हिन्दी में ही इस भाषा के पांच व्याकरण लिखे हैं जिनमें श्री दीम्शित्स द्वारा रचित सात सौ पृष्ठों वाला 'हिन्दी व्याकरण' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कोशकार्य में भी काफी बड़ा काम हो रहा है। हिन्दी–रूसी और रूसी–हिन्दी बारह शब्दकोशों का संकलन हुआ है जिनमें दो खंडों का हिन्दी–रूसी शब्दकोश विशेषकर उल्लेखनीय है। इनमें दो खण्डों वाला रूसी हिन्दी शब्दकोश भी संकलित किया है पर रूस देश में हुए परिवर्तन के कारण उसका प्रकाशन लंबी दराज में रखा गया है।

हिन्दी को पढ़ाने के लिए हमने नौ पाठ्य पुस्तकों को लिखा है। एक के लिए तीन रूसी विद्वानों को उन्नीस सौ उनहत्तर में इंडो–सोवियत मैत्री का नेहरू पुरस्कार दिया गया था। मगर हम पुरस्कारों के लिए काम नहीं करते। हिन्दी भाषा हम हिन्दीवेत्ताओं की जिन्दगी हो गयी है। यह हमारा भाग्य है कि भारत इसका विधाता है।

एक अन्य बात है कि जिसका आज उल्लेख करना अत्यावश्यक है। पचास वर्ष हुए इसी तेरह अप्रैल को हमारे दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए थे। अब हम इन संबंधों की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं। आशा है कि हम ऐसी अनेक जयंतियां आने वाले दशकों में मनायेंगे।

प्रिय नव स्नातको!

आज आप लोग गुरुकुल के पवित्र प्रांगण में विद्या निष्णात होकर दीक्षित हो रहे हैं। ये सारा देश आप लोगों से कुछ विशेष अपेक्षा करता हुआ आपकी ओर निहार रहा है। आपके जीवन को इस देश की परम्परा ने पाला है, आपकी शिक्षा में गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी के जीवन दर्शन का समावेश है, राष्ट्रीयता की भावना के गीतों को आपने जीवन में उतारा है। आप उस अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद के पुत्र हो जो निर्भीक संन्यासी थे, आपने उस महर्षि दयानंद का जीवन चरित्र पढ़ा है, जो युगों युगों में एक अद्भुत क्रांति के अग्रदूत थे। प्रकृति के उस सुरम्य वातावरण में आपकी शिक्षा हुई है जहां प्रातःकाल वेद मन्त्रों की ऋचाओं का गान होता है। जहां प्रतिदिन यज्ञ की सुगन्ध वातावरण को मोहक बनाती है। आपको वे विचार दिए गये हैं जिनमें विनय, नम्रता, शालीनता, गुरुभक्ति सच्चरित्रता, उदारता और देश प्रेम का निवास रहता है।

आज भारत के सामने अनेक चुनौतियां हैं। आप नव स्नातकों को इन चुनौतियों का सामना करना है। आपके सामने अनेक प्रकार की बाधाएं आएंगी, अनेक प्रलोभन आपको दिए जाएंगे, समय–समय पर अनेक यातानाएं भी आपको दी जा सकती हैं, किन्तु आपको सबका सामना करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहना है। हमारा आशीर्वाद शुभकामनाएं आपके साथ हैं। आपका मार्ग प्रशस्त हो, आपकी विद्या बलवती हो, आपका भविष्य उज्जवल हो, देश के विभिन्न प्रकार के तामस को दूर करने में आपकी विद्या प्रकाश स्तम्भ का कार्य करे। अन्त में मैं समस्त कुलवासियों के प्रति अपनी सद्भावना व्यक्त करता हूँ।

।। ओउम् शान्ति, शान्ति, शान्ति ।।

प्राच्य विद्या संकाय

विश्वविद्यालय में प्राच्य विद्याओं की उच्च शिक्षा के लिए प्राच्य विद्या संकाय स्थापित है। इस संकाय में वेद, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, योग और शारीरिक शिक्षा विभाग है। इसमें श्रद्धानन्द शोध संस्थान भी विविध प्रकाशनों में सक्रिय है। इतिहास मर्मज्ञ प्रो० एस०एन० सिंह संकाय प्रमुख के पद पर कार्यरत हैं।

इस संकाय को यह सौभाग्य प्राप्त है कि संकाय प्रमुख प्रो० एस०एन० सिंह एवं संस्कृत विभाग में प्रो० आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री विश्वविद्यालय के क्रमशः कुलसचिव और आचार्य (उपकुलपति) नामक दो प्रतिष्ठित पदों पर भी आसीन हैं। इसके पूर्व दर्शन विभाग के प्रो० डॉ० जयदेव वेदालंकार भी संकाय प्रमुख के अतिरिक्त कुलसचिव पद को सुशोभित कर चुके हैं।

इस संकाय में कई शोध परियोजनाएं भी चल रही हैं और अनेक स्वीकृत्यर्थ विचाराधीन हैं। इस सत्र में संकाय के कई प्राध्यापकों ने निम्नलिखितः–

१–विश्व संस्कृत सम्मेलन बंगलौर।

२–अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, दिल्ली।

३–विश्व दर्शन सम्मेलन, पुणे।

४–दर्शन सम्मेलन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

५–दर्शन सम्मेलन, शान्ति निकेतन, कलकत्ता।

६–त्रिदिवसीय दर्शन राष्ट्रीय संगोष्ठी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार आदि अनेक सम्मेलनों में भाग लिया और अपने शोध पत्र वाचन से शिक्षा जगत में सम्मान प्राप्त किया, जो निश्चित ही विश्वविद्यालय की श्रेष्ठ उपलब्धि है।

इस सत्र में कई प्राध्यापकों ने रिफ्रेसर कोर्स भी सम्पन्न किया। विश्वविद्यालय प्रशासकों की राष्ट्रीय संगोष्ठी भी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई, जिसका संयोजन संकाय के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ० जयदेव वेदालंकार ने किया, यह भी इस संकाय के लिए सौभाग्य की बात है। संकाय की जिन अनेकों विद्वानों ने अपने व्याख्यानों से शोभा बढ़ायी उनमें पद्मश्री प्रो० वी० वेंकटाचलम का नाम प्रमुख है। इनके अतिरिक्त प्रो० महावीर मीमांसक व स्वामी रामदेव जी ने योग में व्याख्यान दिए।

यह गौरव की बात है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व संकायाध्यक्ष और प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ० उदयवीर सिंह संकाय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में अतिथि आचार्य पद की शोभा बढ़ा रहे हैं। संकाय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योग प्रोन्नति योजना में भी प्राध्यापक कार्यरत हैं।

संकाय ने इस सत्र में कई प्रतियोगिताओं और सम्मेलनों का भी आयोजन किया। अनेकों छात्रों ने जिन कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया और विजय प्राप्त की उनका नाम इस प्रकार है–

१–अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता, कुरुक्षेत्र, विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

२–अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता ग्वालियर।
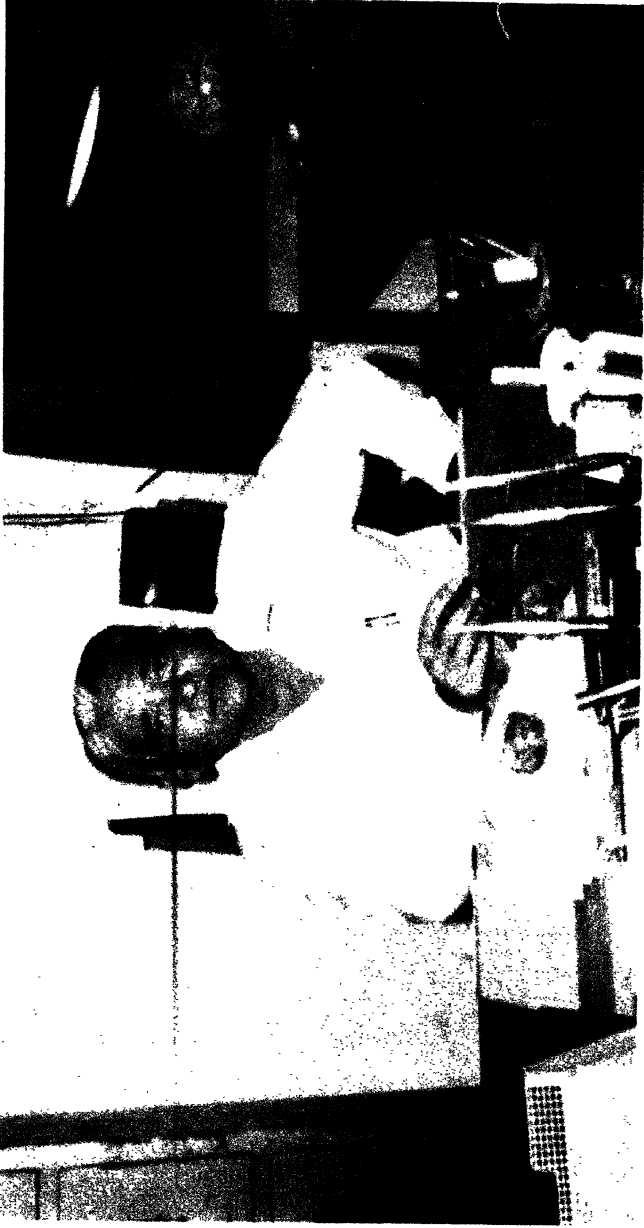
कुलसचिव डॉ० श्याम नारायण सिंह

दीक्षान्त स्थल की ओर जाते नव स्नातक

३–अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय बाक्सिंग चैम्पियनशिप, जयनारायण व्यास वि०वि०, जोधपुर।

४–उत्तरक्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता, नोनी, सोलन (हिमाचल प्रदेश)।

५–जे०बी०जी० हॉकी कप नगीना (बिजनौर)

६–अन्तर्महाविद्यालय एवं अन्तर्विश्वविद्यालय क्षेत्रीय मुखिया जी मैमोरियल बालीबाल प्रतियोगिता, रुड़की।

संकाय के कतिपय छात्र अनुसंधान कार्य के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा (आई.आर.एफ.) भी प्राप्त कर रहे हैं। इस संकाय के वेदालंकार प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्ड के छात्र जो पूर्ववर्ती परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं उनमें से पांच छात्रों को मेरिट के आधार पर ५०० रुपये मासिक छात्रवृत्ति भी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाती है।

संकाय के कई विभागों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को स्वर्णपदक तथा विशेष योग्यता प्रमाण पत्र भी दिए जाते हैं।

इस सत्र में संकायान्तर्गत श्रद्धानन्द शोध संस्थान से आचार्य रामदेव विरचित 'भारतवर्ष का इतिहास' और प्रो० रणजीत सिंह प्रणीत 'स्वामी श्रद्धानन्दचरित' नामक दो महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन भी हुआ। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से इस सत्र में संकाय के प्राध्यापक डा० दिनेशचन्द शास्त्री का शोध ग्रन्थ प्राचीन एवं अर्वाचीन वैदिक साहित्य में भक्तितत्व' भी प्रकाशित हुआ, जिसकी अनेकों पत्र–पत्रिकाओं में समीक्षा छपी और भूरी–भूरी प्रशंसा की गयी।

वेद विभाग

(१) वेद विभाग ने १६ जुलाई ६६ को सत्रारम्भ में प्रातःकालीन दैनिक यज्ञ का शुभारम्भ किया। यह दैनिक सम्पूर्ण वर्ष अबाधगति से चलता रहा। इसमें यज्ञोपरान्त वैदिक विनय नामक पुस्तक से एक एक मन्त्र का पाठ भी किया जाता रहा है।

(२) स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर २३ दिसम्बर ६७ को कुलभूमि से हरिद्वार तक निकलने वाली शोभायात्रा में वेद विभाग की ओर से एक दर्शनीय झांकी निकाली गयी।

(३) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर कुलपति जी के आदेशानुसार ५१ कुण्डीय यज्ञों का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें संयोजक वेद विभाग के प्रवक्ता डॉ० सत्यदेव निगमालंकार रहे तथा अभ्यागत जनों ने इसमें सोत्साह भाग लिया।

(४) वेद विभाग की ओर से प्राच्य विद्या संकाय में डॉ० महावीर मीमांसक, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ० सत्यव्रत राजेश, भूतपूर्व वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्री छैल बिहारी गोयल आर्य, हाथरस (अलीगढ़), श्री प्रियव्रत दास, उड़ीसा आदि वैदिक विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान कराये गये।

प्राध्यापकों के व्यक्तिगत कार्य–

डॉ० मनुदेव बन्धु अध्यक्ष–(क) ६ जनवरी से १० जनवरी ६७ तक कम्प्यूटर विज्ञान विभाग, गु.कां.वि. हरिद्वार द्वारा *'कम्प्यूटर की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग'* विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में सक्रिय भाग लिया।

(ख) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर वेद सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में 'वेद आधुनिक सन्दर्भ में' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया।

(ग) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद सम्मेलन में 'वेदाध्ययन की अनिवार्यता विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया।

(घ) पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा २३–२४ मई ६७ को देहरादून में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया और पत्रवाचन किया।

(ङ) 'विश्वज्योति' नामक त्रैमासिक शोधपत्रिका में 'योग की अनिवार्यता' विषय पर शोध लेख छपा।

(च) 'विश्वज्योति' नामक २ मासिक शोधपत्रिका में 'जनतन्त्र का मूलस्रोत वेद' विषय पर शोधलेख छपा।

(छ) १ मई १६६७ को आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री के निर्देशन में सस्कृत विभाग के अन्तर्गत द्वितीय शोध सम्पन्न किया।

(ज) इनके निर्देशन में पांच छात्र वैदिक वा मय की विशिख्य शाखाओं और सूक्ष्म विषयों को लेकर शोधकार्य कर रहे हैं।

डॉ० रूपकिशोर शास्त्री–प्रवक्ता–(१) श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(२) 'वैदिक निर्वचन कोष' नामक वृहदयोजना पर कार्य चल रहा है। डॉ० अशोक कुमार शर्मा और विनोद कुमार जोशी इसके सहयोगी हैं।

(३) गुरुकुल कांगड़ी के वेदसम्मेलन का संयोजन किया।

(४) वर्ष ६६–६७ में ब्राह्मण ग्रन्थों पर एक पी.एच.डी. कराई।

(५) वर्तमान में शास्त्रीजी के निर्देशन में वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों के गम्भीर विषयों पर देश विदेश के ५ पी.एच.डी. शोधार्थी कार्यरत।

(६) जनवरी ६७ में आयोजित 'दशम विश्व संस्कृत सम्मेलन' में सक्रिय भाग एवं विषय प्रस्तुति।

(७) उ०प्र० सरकार की संस्तुति पर डॉ० शास्त्री जी के कृतित्व व्यक्तित्व से प्रभावित होकर राज्यपाल श्री रोमेश भंडारी द्वारा 'उ०प्र० संस्कृत संस्थान' के लिए तीन वर्ष के कार्यकाल हेतु सदस्य मनोनीत कर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के लिए यश, गौरव एवं प्रतिष्ठा प्रदान की।

डा० दिनेशचन्द्र शास्त्री

शोध निर्देशन—चार शोधार्थियों को विभिन्न वैदिक विषयों पर सफलतापूर्वक पी–एच.डी. उपाधि के लिए निर्देशन में रहे हैं। एक शोधार्थी छात्रा ने पी–एच.डी. के लिए "अथर्ववेद के १८वें काण्ड पर सायण एवं क्षेमकरणदास त्रिवेदी के भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध की रूपरेखा (Synopsis) जमा की है।

संगोष्ठियों में भागीदारी—(१) दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा २७.२.६७ से ०१.३.६७ तक आयोजित त्रिदिवसीय 'अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन' में 'वैदिक धनुर्वेद विज्ञानम्' विषय पर संस्कृत में शोधपत्र वाचन किया।

(२) जनवरी ६७ में जाटवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता में समायोजित 'अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन' के लिए 'वैदिक सुता' और 'आचार्य रामनाथ कृतं समावेदभाष्यम्' नामक शोध पत्रों का सारांश प्रेषित किया।

(३) प्रौढ़ शिक्षा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के समय–समय पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया।

प्रकाशन कार्य— (क) पुस्तकें—

(१) प्राचीन एवं अर्वाचीन वैदिक साहित्य में भक्तितत्व (प्रकाशित)
(२) श्रुतिपन्थाः (अप्रकाशित)
(३) पाश्चात्य वेदमनीषी (अप्रकाशित)

(ख) शोधपत्र एवं लेख—

(१) वैदिक समाजवाद और कार्लमार्क्स प्रतिपादित समाजवादः एक तुलनात्मक सभी सान्दृष्टि—परोपकारिणी सभा, अजमेर की वेदगोष्ठी के लिए प्रेषित।
(२) वैदिक कवीनां काव्यविषयकं चिन्तनम्— ०६–२६ जनवरी १६६७ तक श्रीलाल बहादुर शास्त्री रा.सं०वि. पीठ, नई दिल्ली में 'वेद वेदाङ्ग' विषय पर समायोजित रिफ्रेशर कोर्स (पुनश्चर्या पाठ्यक्रम) में प्रस्तुत।
(३) महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव—स्वस्तिपन्था
(४) यह नेताजी के सपनों का भारत नहीं है—स्वस्तिपन्था

शोध–प्रायोजना— वैदिक वाङ्मय में उपलब्ध उपमाओं का व्याख्यात्मक कोश बनाने के लिए वि.वि.अ.आयोग, नई दिल्ली को एक बृहद् शोध प्रायोजन Major research project) प्रस्तुत की।

डॉ. सत्यदेव निगमालंकार प्रवक्ता— (क) श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(ख) दिल्ली संस्कृत अकादमी में राष्ट्रीय सम्मेलन में 'वैदिक पर्यावरण विज्ञानम्' विषय पर शोधपत्र वाचन किया।

संस्कृत विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान विज्ञान का प्रचार–प्रसार कर विश्वविद्यालय की गरिमामयी परम्परा को अक्षुण्ण रखने में सतत् कटिबद्ध है। यहां से शिक्षित दीक्षित स्नातक संस्कृत एवं संस्कृति के प्रसार में विभिन्न अनुष्ठानों में संलग्न हैं।

इस सत्र में शैक्षणिक कार्य के अतिरिक्त संस्कृत विभाग द्वारा 'संस्कृत दिवस' सोल्लास मनाया गया। जिसमें श्री श्रीकृष्ण सेमवाल, सचिव संस्कृत अकादमी, दिल्ली का विशिष्ट व्याख्यान हुआ तथा छात्रों के संस्कृत गीत्त आदि कार्यक्रम हुए।

फरवरी मास में संस्कृत विभाग के तत्वाधान में त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। संस्कृत विभाग के तत्वाधान में ही 'महर्षि दयानन्द जन्म दिवस' समारोह आयोजित हुआ। ऋषि केशवानन्द जी, अध्यक्ष, निर्धन निकेतन ने मुख्य अतिथि पद को अलंकृत किया।

विभाग के छात्र श्री चन्द्रशेखर प्रभु एवं भानुप्रताप ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालयीन भाषण प्रतियोगिता में प्रथम एवं तृतीय स्थान प्राप्त कर सर्वाधिक अंक प्राप्त किया तथा 'चलवैजयन्ती' से विश्वविद्यालय की कीर्ति में वृद्धि की। उक्त विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रश्नमंच कार्यक्रम में भी छात्रों ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

मार्च में विभाग की शोध समिति की बैठक भी सम्पन्न हुई। अप्रैल मास में कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार) के सम्माननीय कुलपति पद्मश्री डॉ० वी. वेंकटाचलम् जी का संस्कृत भाषा के महत्व एवं संवर्द्धन विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुआ। विभाग में श्री बृहस्पति एवं श्री विनय कुमार एन.ई.टी. परीक्षा उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से छात्रवृत्ति प्राप्त कर शोध कार्य में संलग्न हैं।

प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री–प्रोफेसर आचार्य (उप–कुलपति)

शोध निर्देशनः–इनके निर्देशन में इस वर्ष चार शोध छात्रों को पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त हुई। दो शोध छात्रों की मौखिकी परीक्षा सम्पन्न हो चुकी है। सात शोध छात्र इनके निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं।

संगोष्ठी में भाग ग्रहणः– विश्वविद्यालय में सम्पन्न सभी सम्मेलनों में भाग लिया। निर्धन निकेतन में अक्टूबर ९६ में सम्पन्न शोध गोष्ठी में भाग लिया तथा शोध पत्र का वाचन किया। दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली में २७–२८ फरवरी तथा १ मार्च में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन में भाग लिया तथा शोध पत्र का वाचन किया।

विशेषज्ञ के रूप में:–गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर, काशी विद्यापीठ बनारस, कुमायूं विश्वविद्यालय नैनीताल, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणासी तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय में विशेषज्ञ रहे।

वैदिक प्रचारः–आर्य जगत के शैक्षणिक संस्थानों तथा धार्मिक संस्थानों में लगभग ५० विषयों पर विविध व्याख्यान दिए।

डॉ० सोमदेव शतांशु

इस सत्र में डॉ० सोमदेव शतांशु ने शैक्षणिक कार्यों के अतिरिक्त विभागाध्यक्ष का भी कार्य किया। एक छात्र ने 'शंकराचार्यस्य योगशास्त्रऽवेदानम्' विषय में लघु शोध प्रस्तुत किया। इस समय पांच छात्र विभिन्न विषयों पर शोधकार्य कर रहे हैं।

इस सत्र में स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रभात आश्रम द्वारा आयोजित दो शोध गोष्ठियों में भाग लिया तथा शोधपत्र प्रस्तुत किये।

गुरुकुल विज्ञान आश्रम, पाली राजस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में भाग लियां, त्रैमासिक शोध पत्र पावमानी के सहसम्पादक का कार्य किया।

डॉ० महावीर अग्रवाल, रीडर

शोध निर्देशन– अब तक १३ छात्र शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं। ७ शोध छात्र पी.एच. डी. शोध कार्य हेतु पंजीकृत हैं। दो शोध छात्र श्री विनय कुमार विद्यालंकार तथा श्री बृहस्पति मिश्र, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कनिष्ठ शोध छात्रवृत्ति प्राप्त कर रहे हैं।

लगभग २५ छात्रों ने एम.ए. उत्तरार्ध में लघु शोध प्रबंध लिखे हैं। कानपुर विश्वविद्यालय में आर.डी.सी. तथा बोर्ड ऑफ स्टडीज में विषय विशेषज्ञ के रूप में कुलपति जी द्वारा नामित।

दशम् विश्व संस्कृत सम्मेलन में (३ जून से ८ जून ९७) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए शोध पत्र 'वैदिक दण्ड व्यवस्था' प्रस्तुत किया। संस्कृत अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय त्रिदिवसीय संस्कृत सम्मेलन में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किया।

महर्षि दयानन्द वि.वि., रोहतक, मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ, कानपुर विश्वविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय आदि के पी.एच.डी. के शोध प्रबंधों का मूल्यांकन किया।

चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठ से 'वैदिक संहिताओं में अर्थव्यवस्था' विषयक शोध प्रबन्ध पर २० मई को दीक्षान्त समारोह में उ०प्र० के राज्यपाल श्री रोमेश भंडारी ने आपको डी. लिट् की उपाधि से अलंकृत किया।

अनेक संस्थानों में वेद, दर्शन, उपनिषद्, साहित्य आदि विषयों पर आयोजित सम्मेलनों में विशिष्ट व्याख्यान दिये।

डॉ० ब्रह्मदेव प्रवक्ता–संस्कृत

१ मई १९९६ से २८ मई १९९६ तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित प्रत्यग्र विधान पाठ्य कार्यक्रम (Qrientation Course) में भाग लिया। ६ जनवरी ९७ से २६ जनवरी ९७ तक श्रीलाल बहादुर शास्त्रीय राष्ट्रीय विद्यापीठ, दिल्ली में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course) सुचारूरूपेण सम्पादित किया।

जनवरी ९७ में हुये अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलनार्थ सदस्यता ग्रहण की एवं 'शेषशक्ति विमर्श' नाम शोध–पत्र–वाचनार्थ प्रेषित किया गया।

विद्यार्थियों को इतर–विश्वविद्यालयों में होने वाली प्रतियोगिताओं हेतु सज्जित कर भेजा, जहाँ से प्रथम, द्वितीय आदि पुरस्कार छात्रों ने प्राप्त किये।

इस सत्र में दो लघु शोध–प्रबन्ध तैयार करवाये, जिसमें एक स्वामी दयानन्द जी के राजनैतिक चिन्तन की उदात्तता को प्रदर्शित करता है एवं दूसरा रघुवंश–कालीन नैतिक आदर्शों पर प्रकाश डालता है।

❖❖❖

दर्शनशास्त्र विभाग

फरवरी ६७ में दर्शनविभाग में 'व्याप्तिः तदग्रहोपायश्च' पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके संयोजक डॉ० जयदेव वेदालंकार थे। इसमें डॉ० प्रहलादाचार्य, डॉ० पी०के० मुखोपाध्याय आदि अनेक विद्वानों ने भाग लिया। डॉ० अशोक वोहरा इसमें मुख्य अतिथि थे।

डॉ० त्रिलोक चन्द ने शाँतिनिकेतन में अखिल भारतीय दर्शन सम्मेलन में अपना शोध निबन्ध प्रस्तुत किया। डॉ० विजयपाल शास्त्री ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई दर्शन संगोष्ठी में शोध निबन्ध प्रस्तुत किया। इस सत्र में नौ शोधार्थियों का पी.एच.डी. के लिए पंजीकरण किया गया। विभाग निरन्तर प्रगति की ओर है।

डॉ० यू०एस० बिष्ट ने २४ से ३० नवम्बर १९९६ तक महाराष्ट्र इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी द्वारा दर्शन, विज्ञान एवं धर्म विषय पर आयोजित 'विश्व दर्शन सम्मेलन' में ज्ञानमीमांसा एवं तत्त्वमीमांसा विभाग की अध्यक्षता की। डॉ० बिष्ट ने भारतीय दार्शनिक अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित १० दिवसीय कार्यशाला (पाण्डिचेरी), बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के धर्म–दर्शन विभाग द्वारा आयोजित 'आगमिक दर्शन' तथा लखनऊ में आई.सी.पी.आर. द्वारा आयोजित गांधी एवं महर्षिरमण तथा एम.एम.एच. कालेज गाजियाबाद के दर्शन विभाग द्वारा आयोजित 'लिबर्टी एण्ड फ्रीडम' विषयों पर निबंध पढ़े।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग (प्राच्य विद्या संकाय) की स्थापना का श्रेय वैसे तो पं० हरिदत्त वेदालंकार को जाता है, परन्तु इसकी नींव में आचार्य रामदेव, पं० जयचन्द्र वेदालंकार, पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार जैसे प्रसिद्ध इतिहासविदों का हाथ है। स्थापना के पश्चात् डा० विनोद सिन्हा के योगदान को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

वर्तमान में विभाग के समस्त प्राध्यापक अध्ययन, अध्यापन सर्वेक्षण, लेखन, उत्खनन, अनुसंधान आदि कार्यों को निष्ठापूर्वक कर रहे हैं।

इस सत्र में भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुरातत्वविद् प्रो० उदयवीर सिंह पूर्व संकायाध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय नवम्बर ९६ से मई ९७ छह माह के लिये विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में पधारे। इस सत्र में होने वाली आर.डी.सी. एवं बोर्ड आफ स्टडीज की बैठकों में प्रो० सिंह के विद्वतापूर्ण सुझावों का विभाग को उल्लेखनीय सहयोग मिला है।

इस सत्र में विभाग में कुछ नवीन शोध विषय स्वीकृत किये गये। वर्तमान में विभाग के निम्न शोधार्थियों का कार्य प्रगति की ओर अग्रसर है–

नाम	शोध विषय	निदेशक
(१) राजेश शुक्ला	प्राचीन भारतीय अंतर्जातीय सम्बंधों में कूटनीति सम्बंधों का योगदान एवं वर्तमान सन्दर्भ में इसकी उपादेयता।	डॉ० श्यामनारायण सिंह
(२) कु० मीनाक्षी परिहार	प्राचीन भारत एवं ईरान के सांस्कृतिक सम्बन्ध (प्रारंभ से गुप्तकाल तक)	डॉ० श्यामनरायण सिंह
(३) शिवनन्दन पाण्डेय	भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों के परीक्षण में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का योगदान–एक अध्ययन।	डॉ० श्यामनारायण सिंह
(४) प्रदीप कुमार	बौद्ध साहित्य में वर्णित आर्थिक जीवन (एक विवेचनात्मक अध्ययन, सातवीं शताब्दी ई० तक)	डॉ० श्यामनारायण सिंह
(५) अजय परमार	गढ़वाल हिमालय की कला	डॉ०काश्मीरसिंह भिण्डर
(६) कुमारी सपना रानी	प्राचीन भारत में वैवाहिक पद्धति पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव।	डॉ०काश्मीरसिंह भिण्डर
(७) श्रीमती किरण पेशन	कल्हण,दि ग्रेट हिस्टोरियन आफ काश्मीर	डॉ०काश्मीरसिंह भिण्डर
(८) हरिश शर्मा	गुप्तकाल में नौकरशाही	डॉ० राकेश शर्मा

नाम	शोध विषय	निदेशक
(६) श्रीमती पदमाश्रीवास्तव	महाकाव्यों में वर्णाश्रम व्यवस्था	डॉ० राकेश शमो
(१०) कौसर रजा	उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० राकेश शर्मा
(११) मदनगोपाल उपाध्याय	शूद्रों की परिवर्तनशील सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति का विवेचन (वैदिक काल से गुप्तकाल तक)	डॉ० राकेश शर्मा
(१२) कु० तनुजा गुप्ता	विष्णु पुराण में वर्णित भारतीय संस्कृति	डॉ० राकेश शर्मा

वर्तमान सत्र में अप्रैल १९९७ के दीक्षान्त समारोह पर डॉ० श्यामनारायण सिंह के निर्देशन में श्री देवेन्द्र गुप्ता को पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी। वर्तमान में डॉ० श्याम नारायण सिंह प्राच्य विद्या संकाय के संकायाध्यक्ष के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के कुल सचिव का गुरुतर कार्यभार भी सम्भाल रहे हैं। विभागीय पुरातत्व संग्रहालय को भी डॉ० श्याम नारायण का कुशल नेतृत्व संग्रहालय निदेशक के रूप में प्राप्त है।

डॉ० काश्मीर सिंह के निर्देशन में तीन शोधार्थी अपना शोधकार्य कर रहे हैं। डॉ० सिंह के निर्देशन में आभा भण्डारी का शोध प्रबंध जमा हो गया है। डॉ० राकेश शर्मा के निर्देशन में पांच शोधार्थी अपना शोधकार्य कर रहे हैं। डॉ० शर्मा प्राचीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता विषय पर माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट के रूप में कार्य कर रहे हैं। डॉ० शर्मा वि०वि० के एन.सी. सी. विभाग के कमान्डिंग आफिसर भी हैं। साथ ही विश्वविद्यालय की अनुशासन समिति में प्रोक्टर के रूप में डॉ० शर्मा कार्यरत हैं।

नवनियुक्त प्रवक्ता डॉ० सेंगर एवं डॉ० गुप्ता ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा आयोजित मई ९७ में १५ दिन का चैतडू जि० कांगड़ा हिमाचल में उत्खनन का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। डॉ० देवेन्द्र गुप्ता ने भोगीलाल जैन इन्स्टीट्यूट में भाषा एवं लिपि में विज्ञान में मई–जून में आयोजित होने वाले चार माह के प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया।

इस सत्र में प्रो० उदयवीर सिंह के अतिरिक्त जिन इतिहासविदों का विभाग को अनेक गतिविधियों में सहयोग प्राप्त हुआ वे निम्न हैं– प्रो० पुरुषोत्तम सिंह, प्रो. एवं अध्यक्ष बनारस हिन्दू वि०वि०, प्रो० आर०एन० मिश्र, जीवानी वि०वि०, प्रो० विजय बहादुर राव, गोरखपुर वि०वि०, डॉ० बी०एम० खण्डूरी, अध्यक्ष गढ़वाल वि०, डॉ० के०पी० सिंह, प्राचार्य संजय गांधी स्नातकोत्तर कालेज, सुल्तानपुर। इस वर्ष स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त प्रदीप कुमार को दीक्षान्त समारोह पर पं० हरिदत्त वेदालंकार स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

इस सत्र में स्वतंत्रता की ५०वीं वर्षगांठ के अवसर पर आर्य समाज, मथुरा द्वारा

दीक्षान्त भाषण देते हुए डॉ० उलत्सिफेरोव

मुख्य अतिथि को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए कुलाधिपति एव कुलपति

पुरातत्व संग्रहालय,

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित यह पुरातत्व संग्रहालय गत वर्षों की भांति इस समय भी विकास की ओर अग्रसर है। यह संग्रहालय अपने समृद्ध बहुउद्देशित विविध संकलन की दृष्टि से क्षेत्रीय संग्रहालय की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वर्तमान में संग्रहालय वीथिकाओं में निम्नलिखित वस्तुयें जनसामान्य एवं विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए प्रदर्शित हैं। सिन्धु सभ्यता संग्रह, ताम्रनिधि सभ्यता संग्रह, मृदभाण्ड संग्रह, मृण्मूर्तिकला संग्रह, प्रस्तर मूर्तिकला संग्रह, अष्ट धातु प्रतिमा संग्रह, मुद्रासंग्रह, चित्रकला संग्रह, पाण्डुलिपि संग्रह, अस्त्र–शस्त्र संग्रह, स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष, हिमालय दर्शन चित्रावीथिका संग्रह, पंडित नेहरू संग्रह और विविध वस्तुओं का संग्रह भी है, जिनका उपयोग विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए एक उचित माध्याम के रूप में किया जाता रहा है।

संग्रहालय को इस सत्र (१९९६–९७) में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिये गये अनुदान से संग्रहालय पुस्तकालय के लिये २०,०००/– की पुस्तकें क्रय की गईं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त विश्वविद्यालय बजट व्यवस्था से प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की वीथिका को एक नया रूप देने के लिए १९,१०० रुपये के चार शोकेस बनवाये गये। संग्रहालय को समय–समय पर विकास हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और राष्ट्रीय अभिलेखागार से भी अनुदान प्राप्त होता रहा है।

संग्रहालय में संग्रहीत पाण्डुलिपियों के रसायन उपचार के लिये एक लघु प्रयोगशाला भी स्थापित की गयी है। वर्तमान में संग्रहालय की पाण्डुलिपियों का उपचार किया जा रहा है। पाण्डुलिपि संरक्षण के लिये न्यूनतम व्यय पर यह सुविधा अन्य विभागों एवं संस्थाओं को प्रदान करने की भी योजना है। वर्तमान सत्र में पाण्डुलिपि परीक्षण परियोजना के अन्तर्गत ६५ पाण्डुलिपियों का परीक्षण किया गया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी इस संग्रहालय की महत्ता को देखते हुए और इसे गरिमा प्रदान करते हुए व्यवसाय से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत 'संग्रहालय विज्ञान एवं पुरातत्व विज्ञान' विषय पर स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की स्वीकृति सत्र १९९४–९५ में प्राप्त हो गई। इसी आधार पर विभाग में स्नातक स्तर का यह पाठयक्रम चलाया जा रहा है। यह विषय स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान दोनों संकायों के छात्रों के लिये सुलभ है। इस विषय की अध्यापन से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध कराने में डा. यू.बी. सिंह (विजिटिंग प्रोफेसर) का सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

विभाग की विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त अनुदान से संग्रहालय भवन के द्वितीय तल पर चार कमरों का निर्माण कार्य पूर्ण होने जा रहा है।

इस सत्र में संग्रहालय में आये दर्शकों की संख्या ४९३० रही। समय–समय पर संग्रहालय में जो विशिष्ट महानुभाव आये, उनका विवरण निम्न प्रकार है–

१– श्री साहिब सिंह वर्मा, मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार

२– श्री बलविन्द्र सिह, स्पेशल सैक्रेटरी, उत्तर प्रदेश सरकार

३– श्री एन. काजून, यू.एस.ए.

४– डा. एल. बोरड़स, रोमानिया

५– डॉ. के.पी. नोटियाल, कुलपति, गढवाल विश्वविद्यालय

६– प्रो. जे.के. गुप्ता, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

७– श्री एस.एस. सन्धू, जिला मजिस्ट्रेट, हरिद्वार

८– श्री देवनारायण शुभधन, हालैण्ड

९– श्री महेन्द्र सोढ़ा, विजिटिंग कमेटी के चेयरमैन एवं पूर्व कुलपति इन्दौर तथा लखनऊ विश्वविद्यालय

१०– श्री राकेश खुराना, समकुलपति, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय

११–प्रो. उमानाथ मिश्र, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणासी

१२–प्रो. कमलाकर मिश्र, अध्यक्ष, दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणासी

१३–प्रो. रमानाथ मिश्र, आचार्य एवं अध्यक्ष, प्रा.भा.ई. संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग जीयाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

इस सत्र में १ जुलाई ६६ तक संग्रहालय के निदेशक का कार्यभार प्राच्य विद्या संकाय के डीन, प्रोफेसर वेदप्रकाश शास्त्री के पास था। २ जुलाई ६६ से निदेशक पद का दायित्व अध्यक्ष, प्रा.भा.ई.सं. एवं पुरातत्व विभाग तथा प्राच्य विद्या संकाय के डीन डा. एस.एन. सिंह के पास है।

संग्रहालय के कार्यरत वर्तमान कर्मचारियों की उपलब्धियाँ

निदेशक– डॉ. एस.एन.सिंह, डीन प्राच्य विद्या संकाय एवं कुलसचिव के दायित्व का निर्वाहन भी कर रहे हैं।

क्यूरेटर–सूर्यकान्त श्रीवास्तव

१–संग्रहालय में समय–समय पर आये विशिष्ट महानुभावों को संग्रहालय का अवलोकन कराया गया।

२–संग्रहालय के केन्द्रीय कक्ष में चित्रकला वीथिका का नियोजन एवं प्रदर्शन कार्य सम्पन्न किया।

सहायक क्यूरेटर– डॉ. सुखबीर सिंह

१–संग्रहालय में समय–समय पर आये दर्शकों एवं विशिष्ट महानुभावों को संग्रहालय का अवलोकन कराया गया।

२–संग्रहालय में संग्रहीत पुरातात्विक सामग्री का पंजीकरण, वर्गीकरण, सूचीकरण और लैबलिंग आदि कार्य किये गये।

३–पाण्डुलिपि परीक्षण परियोजना के अंतर्गत स्थापित प्रयोगशाला में ६५ पाण्डुलिपियों का परीक्षण किया गया।

४–अलंकार प्रथम वर्ष के छात्रों का संग्रहालय विज्ञान और पुरातत्व विज्ञान के एक अन्तर का अध्यापन कार्य किया गया।

संग्रहालय सहायक– श्री अनिल कुमार सिंह

१–संग्रहालय में समय–समय पर आये दर्शकों और विशिष्ट महानुभावों को संग्रहालय का अवलोकन कराया गया।

२–संग्रहालय पुस्तकालय का कार्य किया।

३–प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग के स्नातकोत्तर कक्षा के एक अन्तर का अध्यापन कार्य किया।

कार्यालय लिपिक– श्री अरविन्द कुमार ने कार्यालय के दायित्वों के निर्वहण के साथ–साथ संग्रहालय के कार्यों में भी सहयोग किया।

योग–विभाग

१. विभाग की स्थापना व इतिहास–

सन् १९८४ में चतुर्मासीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम से विभाग की स्थापना हुई। निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहे योग विभाग में अब निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है–

(क) त्रैमासिक प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम

(ख) एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

(ग) त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि में ऐच्छिक विषय

(घ) एम०ए० योग

(ड) पी.एच.डी.

इसके अतिरिक्त जनसाधारण के लिए प्रतिदिन क्रियात्मक कक्षाएं तथा योग चिकित्सा की व्यवस्था है। स्थानीय जनता से स्वयं को जोड़कर विभाग ने ख्याति प्राप्त की है। विद्यालय के बच्चों में योग के प्रति रूचि उत्पन्न करने का कार्य भी विभाग द्वारा किया जा रहा है।

२. विभागीय मौलिक छवि–

योग के एम.ए. व पी.एच.डी. में अध्ययन हेतु भारत के विभिन्न प्रान्तों से छात्र यहाँ आ रहे हैं। योग चिकित्सा के लिए रोगी प्रतिदिन विभाग में आकर लाभ ले रहे हैं। विभागाध्यक्ष डा० ईश्वर भारद्वाज को विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा विषय विशेषज्ञ के रूप में बोर्ड आफ स्टडीज का सदस्य, चयन समिति का सदस्य, परीक्षक, प्रतियोगिताओं में मुख्य निर्णायक आदि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा योग शिविरों के आयोजन हेतु डॉ० भारद्वाज को बुलाया जाता है।

३. विभागीय क्रियाकलाप–

(क) छात्र संख्या– विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्र संख्या इस प्रकार रही–

१– त्रैमासिक पाठ्यक्रम	५
२– बी.ए./अलंकार प्रथम खण्ड	१७
३-- बी.ए./अलंकार द्वितीय खण्ड	२
४– बी.ए. अलंकार तृतीय खण्ड	६
५– एम.ए. प्रथम खण्ड	८
६– एम.ए. द्वितीय खण्ड	४
७– पी.एच.डी.	४

(ख) अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता में एम.ए. प्रथम खण्ड के छात्र तेज प्रसाद पोखेल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

(ग) उत्तर भारत योग कुमार प्रतियोगिता सहारनपुर में आयोजित हुई जिसमें प्रथम स्थान तेजप्रसाद पोखेल, एम.ए. प्रथम खण्ड, द्वितीय स्थान मनोज कुमार, एम.ए. द्वितीय

खण्ड तथा तृतीय स्थान प्रशांत कुमार, दशम कक्षा को प्राप्त हुआ।

(घ) विभागाध्यक्ष डॉ० ईश्वर भारद्वाज को केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसंधान अधिकारी हेतु चयन समिति में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

(ङ) योग प्रोन्नति योजना के अंतर्गत दो प्रशिक्षकों द्वारा भी कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् त्रैमासिक पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किया गया। दैनिक अभ्यास, योग चिकित्सा तथा योग शिविरों का आयोजन भी किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत बाल विकास शिक्षा सदन में ५ मई से १७ मई ९७ तक योग शिविर लगाया गया जिसमें ८० छात्रों ने भाग लिया।

(च) विभाग में डॉ० महावीर मीमांसक व स्वामी रामदेव जी के व्याख्यान कराये गये।

४. शिक्षकों का शोधकार्य, प्रकाशनकार्य, संगोष्ठियों में भागीदारी तथा अन्य उपलब्धियाँ–

(१) डॉ० ईश्वर भारद्वाज (प्रवक्ता, विभागाध्यक्ष)

१. शोधकार्य–

(क) मकरासन व गोमुखासन का दमा की चिकित्सा में योगदान

(ख) शवासन व नाड़ी शोधन प्राणायाम का उच्च रक्तचाप में प्रभाव।

(ग) कब्ज में ताजगी मुद्रा का योगदान

(घ) गजकरणी व अम्लपित्त प्रतिषेध

२. प्रकाशन कार्य–

(अ) पुस्तकें–
१. औपनिषदिक अध्यात्म विज्ञान
२. उपनिषदों में संन्यास योग
३. यौगिक चिकित्सा } शीघ्र प्रकाश्य
४. योग सन्दर्भिका } शीघ्र प्रकाश्य

(ब) शोधपत्र–
१. गुरुकुल पत्रिका–१२
२. प्रौ० शिक्षा (दिल्ली)–१
३. देशनिर्देश–२
४. जयराम सन्देश–३

३. संगोष्ठियों में भागीदारी–

(क) केन्द्रीय योग अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित ओरियंटेशन कार्यक्रम में भाग लिया।

(ख) मानव कल्याण केन्द्र, देहरादून में योग विषय पर व्याख्यान दिए।

(ग) विश्वविद्यालय में आयोजित दार्शनिक सेमीनार में भाग लिया।

(घ) विश्वविद्यालय में आयोजित सेमीनार 'विश्वविद्यालयों का निजीकरण' में भाग लिया।

(ङ) डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में योग विषय पर आयोजित सेमीनार में भाग लिया।

४. रेडियो वर्ग–

(क) आकाशवाणी नजीबाबाद केन्द्र में दो वार्ताएं प्रसारित।

(ख) आकाशवाणी दिल्ली के राष्ट्रीय चैनल से दो वार्ताएं प्रसारित।

५. अन्य–

(क) हिमाचल प्रदेश, सागर, पंजाब, लखनऊ, कानपुर, हिसार, महर्षि दयानन्द, गढ़वाल रूहेलखण्ड विश्वविद्यालयों तथा केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा परीक्षक के रूप में मनोनीत।

(ख) हिमाचल, कानपुर, गढ़वाल, सगर विश्वविद्यालयों की बोर्ड आफ स्टडीज में विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत।

(ग) भारतीय सांस्कृति समन्वय परिषद, नई दिल्ली तथा के०योग एवं प्रा० चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की चयन समितियों में विशेष विशेषज्ञ रूप में मनोनीत।

(घ) योग एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा प्रदान की। अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन नई दिल्ली में पत्रवाचन किया।

(२) डॉ० सुरेन्द्र कुमार (प्रशिक्षक)

एम.ए., पी.एच.डी., योग डिप्लोमा

१. विभागीय दायित्व का निर्वहण किया।

२. भारतीय दर्शन कांफ्रेंस में भाग लिया।

३. अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में टीम मैनेजर के रूप में गए।

४. योग एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा प्रदान की।

(३) योगेश्वर दत्त (प्रशिक्षक–योग प्रोन्नति योजना)

शास्त्री, योग डिप्लोमा

१. विभागीय दायित्व का निर्वहण किया।

२. भारतीय दर्शन कांफ्रेंस में भाग लिया।

३. योग चिकित्सा द्वारा रोगियों का उपचार।

(४) सुरक्षित गोस्वामी (प्रशिक्षक योग प्रोन्नति योजना)

एम.ए., योग डिप्लोमा

१. विभागीय दायित्व का निर्वहण किया।

२. भारतीय दर्शन कांफ्रेंस में भाग लिया।

३. रोगियों को योग व एक्यूप्रेशर चिकित्सा उपलब्ध करायी।

४. विद्यालय विभाग में योग प्रशिक्षण दिया।

५. आवश्यकताएँ–

१. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा भवन

२. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय के लिए उपकरण

३. अनुसंधान कार्य के लिए उपकरण

४. प्रयोगशाला का विकास

हिन्दी–विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग गुरुकुल के स्थापना काल से ही हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में अपना सतत् योगदान देता रहा है। गुरुकुल के हिन्दी विभाग ने स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी आंदोलन की अगुवाई करते हुए दक्षिण के अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा की जोत जलाई। गुरुकुल को विश्वविद्यालय स्तर की सन् ६३ में मान्यता मिलने पर इस विभाग ने हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में यशस्वी कार्य किए। आचार्य पद्मसिंह शर्मा, हिन्दी के पाणिनि कहे जाने वाले आचार्य किशोरीदास वाजपेयी इस विभाग के गौरव स्तंभ रहे हैं। फीजी, मारीशस, गुयाना सूरीनाम आदि देशों के छात्र यहाँ से अध्ययन कर हिन्दी भाषा और गुरुकुलीय विचारधारा का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

इधर १९९६–९७ की अवधि में पठन–पाठन का कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ। विभाग में हिन्दी जगत के यशस्वी विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किये गये। इनमें बाल कवि बैरागी, नई दिल्ली, प्रो० डॉ० महेन्द्र कुमार, दिल्ली वि०वि०, प्रो० महेन्द्र नाथ दूबे, आगरा, प्रो० डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया, अलीगढ़, प्रो० हरिशचन्द्र वर्मा एवं प्रो० नरेशचन्द्र मिश्र, महर्षिदयानन्द वि०वि० रोहतक, डॉ० उदयशंकर श्रीवास्तव, मुस्लिम वि०वि० अलीगढ़, प्रो० प्रेमकान्त टण्डन इलाहाबाद विश्वविद्यालय आदि विभिन्न कार्यों से विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में पधारे। विभाग के आचार्य डॉ० विष्णुदत्त राकेश ने विश्वविद्यालय के ९६ वर्षों के दीक्षान्त भाषणों तथा प्रमुख सारस्वत व्याख्यानों का संकलन–सम्पादन 'दीक्षालोक' नाम से किया। दीक्षान्त समारोह में इसका लोकार्पण किया गया।

हिन्दी पत्रकारिता के छात्र प्रशिक्षण यात्रा पर इन्दौर, भोपाल गये, जहाँ उन्होंने प्रेस की कार्यविधि का अवलोकन किया। इस यात्रा के दौरान उन्हें पत्रकारिता से जुड़े विद्वानों के व्याख्यान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। विभाग के 'प्रशिक्षु पत्रकारों से विशिष्ट व्यक्तियों के साक्षात्कारों' को भी कमलकान्त बुधकर ने 'बातें मुलाकातें' के रूप में सम्पादित किया है। 'बातें मुलाकातें' हिन्दी की साक्षात्कार विद्या की अनुपम कृति है जो पाठकों के हाथों में है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की उपलब्धियों को दृष्टि में रखते हुए अहिन्दी भाषी नवलेखकों का २३ जून ९७ से एक सप्ताह का शिविर आयोजित कर रहा है।

डॉ० सन्तराम वैश्य रीडर

हिन्दी विभाग, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर द्वारा आयोजित, 'कबीर हमारे समकालीन' विषयक दो दिवसीय (२९ फरवरी १ मार्च ९६) राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित 'हिन्दी रिफ्रेशर कोर्स' में 'रिसोर्स पर्सन' के रूप में दिनांक २४.२.९७ को व्याख्यान दिया।

हिन्दी विभाग, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर द्वारा आयोजित 'पुनर्जागरण और भारतीय साहित्य', विषयक दो दिवसीय (२१–२२ फरवरी ९७) राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

राष्ट्रीय रामायण मेला, चित्रकूट धाम के २४वें समारोह (७ मार्च से ११ मार्च १९९७) की साहित्यिक संगोष्ठियों में प्रमुख वक्ता के रूप में भाग लिया।

एस०एम०जे०एन० कालेज की पत्रिका 'अभिव्यक्ति' में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की दृष्टि और उसका मूल्यांकन तथा 'गुरुकुल पत्रिका' में 'हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा' शीर्षक लेख प्रकाशित हुए।

इनके निर्देशन में शोध करने वाले दो छात्रों को इस वर्ष पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई।

❖❖❖

Department of English Studies

During the current session 1996-97 a research scholar under Prof N. sharma's supervision has submitted his Ph. D. thesis which has been finally approved, and another Ph. D thesis completed and submitted for evaluation. Prof. N. Sharma is also the Dean, Faculty of Humanities and was the head of the department upto March 1997.

Prof. Sharma has visited a number of universities in the country as an expert on the subject. The universities of Meerut, Kumaon and Allahabad invited him for important academic work. His learned article entitled Meditation in Sri Aurobindo's Yoga was published in the journal of the Panjabi University, Patiala, and at present he is working on the literary and philosophical aspects of Sri Aurobindo's works.

Mr. S.S. Bhagat, the present Head of the English Dept., has produced a couple of successful Ph. D. candidate in the subject. At present three scholars for Ph.D. degree are working under him. Apart from guiding Ph.D. students in the Dept. he has been also acting as an external guide to the research scholars in outside universities.

Under Dr. Sharwan K. Sharma's able supervision this year a candidate was awarded Ph.D. degree on the thesis entitled Time in the poetry of Matthew Arnold. At present four research scholars are engaged in working under him. He has also guided a number of M.A. Final students towards the completion of their dissertation as an optinal subject. This year he attended XII International IACS conference organized by the University of Jammu where he presented a paper entitled USE OF LANDSCAPE IN THE MODERN CANADIAN POETRY.

At present three research scholars are working under Dr. Ambuj Sharma for their Ph.D. Degree. The research work of all the three scholars are in good progress and nearing completion.

Dr. Krishna Avatar Agrawal, a lecturer in the Dept., has been guiding a couple of students for their Ph. D. Degree. He has attended refresher courses this year at the University of Allahabad and CIEFL, Hyderabad.

He presented this year a research paper entitled CONSCIOUSNESS IN THE PLAYS OF ASIF CURRIMBHOY at the annual conference of IASCL at the Allahabad University. He also presented a learned article entitled PHILOSOPHICAL REMEDIES OF CURRENT PROBLEMS IN MODERN INDIA at the Indian Philosophical Congress held at Gurukul Kangri University, Hardwar.

His two research papers have also been published in two different issues of the GURUKUL PATRIKA of the Gurukul Kangri Vishwavidyalay.

मनोविज्ञान विभाग

सत्र १९९६–९७ में मनोविज्ञान विभाग के अन्तर्गत लगभग १०० छात्रों ने स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर प्रवेश लिया है। स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रों की संख्या अधिकतम १५ कर दी गयी है।

शोध समितिः–

इस सत्र में हुई शोध समिति की बैठक में छह विषय शोध के लिए स्वीकार किए गये। बैठक में विषय विशेषज्ञ के रूप में मेरठ विश्वविद्यालय के प्रो० एस०एन० राय तथा काशी विद्यापीठ, वाराणसी के प्रो० जी०पी० ठाकुर ने भाग लिया। विभाग के सभी प्राध्यापक शोध कार्य करा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी–

इस वर्ष के अन्तर्गत एक अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का आयोजन फरवरी, १९९७ में किया गया। कांफ्रेंस का विषय डवलपिंग हयूमन रिलेशन्स एण्ड एथनिक अण्डरस्टैंडिंग' था। इस त्रिदिवसीय कांफ्रेंस का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी ने किया तथा देश–विदेश से आए सभी अतिथियों का स्वागत विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने किया। विदेश से आने वाले प्रतिनिधि दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, रशिया, स्लोवेनिया एवं अमेरिका से थे। लगभग कुल २४० प्रतिनिधियों ने देश–विदेश से भाग लिया। इस अवसर पर तीन मनोवैज्ञानिकों प्रो० दुर्गानन्द सिन्हा, प्रो० के०वी० कलियप्पन एवं प्रो० डी०एम० पेस्टनजी को सम्मानित भी किया गया। कांफ्रेंस प्रोसीडिंग का विमोचन दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि के द्वारा किया गया।

पी०एच०डी० उपाधि–

प्रो० ओ०पी० मिश्र के निर्देशन में श्री तन्मय भट्टाचार्य तथा प्रो० एस०सी० धमीजा के निर्देशन में श्री बालकृष्ण पाल को पी०एच०डी० की उपाधि प्रदान की गयी। विभाग के शिक्षकों की शैक्षणिक गतिविधियां इस प्रकार हैं–

प्रो० ओ०पी० मिश्र–

प्रो० ओ०पी० मिश्र मेरठ विश्वविद्यालय, गढ़वाल विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालय (विद्यापीठ) की शोध समितियों में विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने गढ़वाल विश्वविद्यालय की बोर्ड आफ स्टडीज में भी विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया है। इसके अतिरिक्त राजकीय लोक सेवा आयोग तथा केन्द्रीय लोक सेवा आयोग में परीक्षक के रूप में कार्य किया।

प्रो० एस०सी० धमीजा–

इस वर्ष प्रो० एस०सी० धमीजा को मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद के अतिरिक्त प्रबन्धन
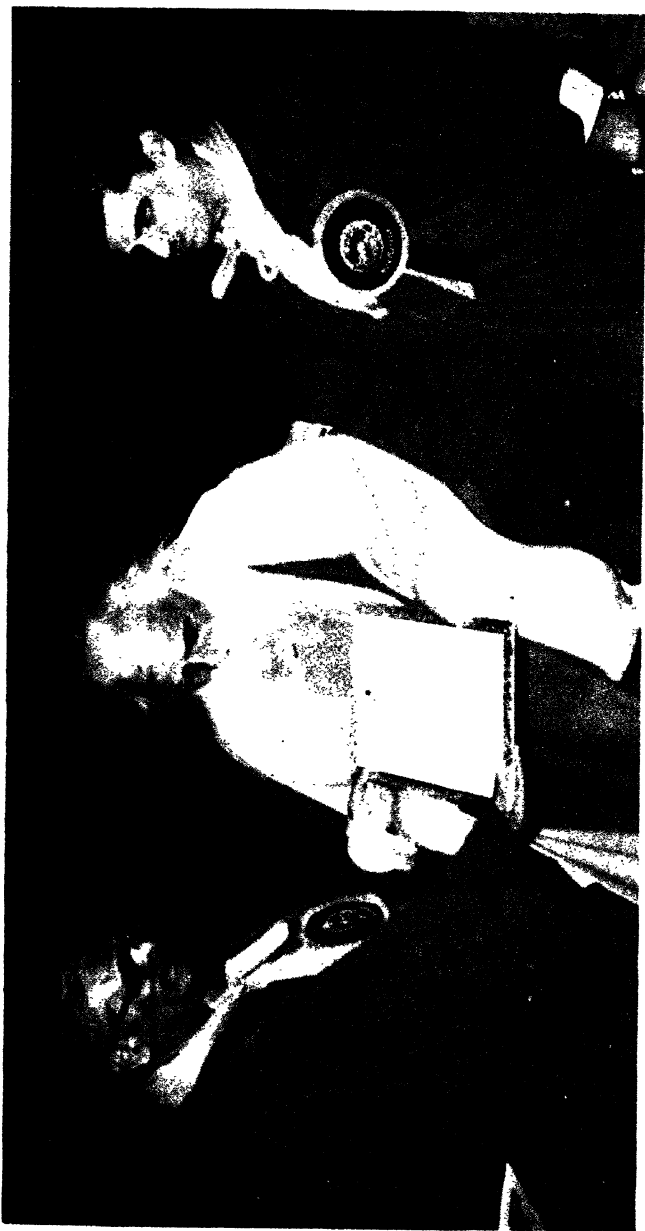
स्वामी दीक्षानन्द जी को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुंए कुलाधिपति एव कुलपति मंचस्थ अधिकारीगण

मचरथ अधिकारीगण

संकाय का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनके निर्देशन में ५ छात्र–छात्रायें पी.एच.डी. उपाधि के लिए कार्य कर रहे हैं। एम०ए० तथा पी०एम०आई०आर० के लगभग २० छात्र–छात्राओं ने उनके निर्देशन में प्रोजेक्ट का कार्य पूरा किया। प्रो० एस०सी० धमीजा के दो शोध–पत्र प्रकाशित हुए, एक पत्र प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त एक शोध–पत्र प्रकाशित होने के लिए विदेश भेजा गया है। उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

डा० एस०के० श्रीवास्तव–

डॉ० एस०के० श्रीवास्तव के तीन शोध–पत्र प्रकाशित हुए तथा दो शोध–पत्र प्रकाशित होने के लिए स्वीकार किये गये। एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण का मानकीकरण डॉ० श्रीवास्तव द्वारा किया गया। इण्डियन काउंसिल आफ सोशल साइंस रिसर्च एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उन्हें दो प्रोजेक्ट पर कार्य करने के लिए वित्तीय सहायता स्वीकृत की गयी है। वर्तमान में छात्रावास के अध्यक्ष का कार्यभार भी संभाले हुए हैं।

डॉ० सी०पी० खोखर–

डॉ० सी०पी० खोखर के साथ एक छात्र पी०एच०डी० उपाधि के लिए कार्य कर रहा है तथा एम०ए० की एक छात्रा का उन्होंने लघु शोध कार्य पूर्ण कराया।

प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग

प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग को विश्व–विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पत्रांक ५.३२/६२ (एन.एफ.ई.१) दिनांक ६ जुलाई १६६६ के माध्यम से रु. १,१८,००० तथा पत्रांक एफ. ६–६८/६२ (एन.एफ.ई.१) दिनांक ६ सितम्बर १६६६ के माध्यम से रु. ४,६६५/– सत्र १६६६–६७ हेतु स्वीकृत किये गये।

१. जन–शिक्षण निलयम––५

२. सतत् शिक्षा कोर्स–५

३. जनसंख्या शिक्षा क्लब–१

४. साक्षरता कार्यक्रम

१. जन शिक्षण निलयम– विभाग द्वारा पाँच जन–शिक्षण निलयम ग्राम जमालपुर, सीतापुर, गाड़ोवाली, अजीतपुर (कटारपुर), जगजीतपुर एवं सराय में संचालित किये गये। विभाग द्वारा इन निलयमों पर समाचार पत्र, पत्रिकायें, फुटबाल, बॉलीबाल एवं कैरम बोर्ड उपलब्ध कराये गये।

२. सतत् शिक्षा– विभाग द्वारा इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सिलाई एवं सौन्दर्यकरण में ६–६ माह के दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इसके अतिरिक्त १५–१५ दिन के पेंटिंग, घरेलू बिजली उपकरणों की मरम्मत तथा धूम्ररहित चूल्हा सम्बन्धी तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

३. जनसंख्या शिक्षा– इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग द्वारा सिलाई एवं सौन्दर्य प्रशिक्षणार्थियों के बीच ग्राम जगजीतपुर में वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जनसंख्या एवं विकास विषय पर विश्व–विद्यालय एवं स्थानीय महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की प्रतियोगिता की गयी।

४. साक्षरता कार्यक्रम– इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम सराय, सीतापुर, गाड़ोवाली, जगजीतपुर एवं कटारपुर में ६०० निरक्षरों को साक्षर बनाया गया।

५. अन्य क्रिया कलाप– विभाग द्वारा इण्डियन सोसाइटी फॉर कम्युनिटी एजूकेशन के सहयोग से सातवें राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक १८–२० नवम्बर, १६६६ में किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व रक्षा राज्यमंत्री प्रो० शेर सिंह द्वारा किया गया। इस सम्मेलन का समापन राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो० जे०एस० राजपूत द्वारा किया गया। सम्मेलन में लगभग १०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

६. प्रकाशन– जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या एवं साक्षरता पुस्तक का प्रकाशन किया गया।

विभागीय अधिकारियों के कार्य कलाप

डॉ० आर०डी० शर्मा

विभागाध्यक्ष डॉ० आर०डी० शर्मा ने एम०ए० (उत्तरार्ध) योग में तृतीय पेपर शोध विधियों का शिक्षण कार्य किया।

संगोष्ठी/सम्मेलन में भागीदारी

१. इण्डियन सोसायटी फार कम्युनिटी एजूकेशन के सातवें राष्ट्रीय सम्मेलन में १८–२० नवम्बर, १९९९ में 'सामुदायिक विकास के लिए सामुदायिक शिक्षा' विषय पर आयोजित किया।

२. लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभागों के निदेशकों की बैठक में १०, ११ सितम्बर १९९९ को भाग लिया।

३. लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभागों के निदेशकों की बैठक में मार्च २७, १९९७ को भाग लिया।

विषय विशेषज्ञ

१. हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अनौपचारिक शिक्षा संकाय में विशेष विशेषज्ञ के रूप में नामित किया गया।

२. हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में कॉमर्स संकाय में 'परा मनोवैज्ञानिक' संबंधी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पोषित परियोजना में सलाहकार के रूप में कार्य किया।

शोध परियोजना– हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के कॉमर्स संकाय में 'प्रबन्ध सम्बन्धी' भारतीय समाज विज्ञान परिषद, नई दिल्ली द्वारा पोषित परियोजना में सह–अन्वेषक के रूप में कार्य किया।

अन्य

१. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नवीं पंचवर्षीय योजना के लिए बी०एड० संबंधी प्रस्ताव तैयार किया।

२. विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केन्द्र हेतु नवीं पंचवर्षीय योजना के लिये प्रस्ताव तैयार किया।

३. अनौपचारिक शिक्षा संकाय का प्रस्ताव नवीं पंचवर्षीय योजना हेतु तैयार किया गया।

डॉ० जे०एस० मलिक परियोजना अधिकारी

१. इण्डियन सोसाइटी फॉर कम्युनिटी एजूकेशन एवं विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में १८–२० नवम्बर १९९९ को भाग लिया।

२. भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा आयोजित संगोष्ठी में ८ व ९ मार्च १९९७ को भाग लिया।

प्रकाशित शोध लेख– वैदिक वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार। गुरुकुल पत्रिका।

प्रबन्धन संकाय

कुलपति डॉ० धर्मपाल के अथक प्रयासों के फलस्वरूप तीन वर्ष पूर्व कार्मिक प्रबन्ध में स्नाकोत्तर डिप्लोमा प्रारम्भ किया गया था। इसी क्रम में ए०आई०सी०टी०ई० एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वीकृति प्राप्त होने से पृथक से प्रबन्धन संकाय की स्थापना की गई तथा प्रबन्धन संकाय के अन्तर्गत एम०बी०ए० पाठ्यक्रम दिसम्बर १९९६ सें प्रारम्भ किया गया। इस पाठयक्रम के लिए लगभग ४०० छात्र एवं छात्राओं ने प्रवेश परीक्षा में भाग लिया, जिनमें से समूह वार्ता एवं साक्षात्कार के पश्चात् ६०ँ छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। ३ दिसम्बर १९९६ से यज्ञ करने के पश्चात कुलपति जी ने पाठयक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। संकायाध्यक्ष के रूप में प्रो० एस०सी० धमीजा, विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान को प्रबन्धन संकाय का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया।

अध्यापन कार्य के अतिरिक्त संकाय ने छात्र–छात्राओं के ज्ञानवर्धन के लिए इण्डस्ट्रीयल टूर, गेस्ट लेक्चर्स, रिपोर्ट प्रसेन्टेशन, ग्रुप डिस्कशन, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, बिजनेस क्विज, बिजनेस गेम्स आदि के भी आयोजन किये गये। संकाय के अंतर्गत निम्न शोध पत्र प्रकाशित/प्रस्तुत किये गये–

(1) 'Changing human values and social conflicts'

(2) 'Ethnic Strife and neuroticism in Kashmiri Migrants'

By S.C. Dhamija

in International conference at G.K. University, Hardwar.

Managerial Effectiveness* published in guest of Bharteeya Shikshan, August 1996.

By S.P. Singh

Effective Communication at International Conference on 'Developing Human Relations and Ethnic Understanding' Gurukul Kangri University, Hardwar.

By Anurag Sing

*Stress Management' in IInd Asian & 33rd IAAP International Conference held at Gurukul Kangri University, Hardwar.

By Dr. Vivek Sahni and Dr. V.K. Singh

आलोच्य वर्ष के अन्तर्गत निम्न विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित किये गये–

Dr. V.K Singh delivered an expert lecture on "Performance Appraisal" at TIT, Bhiwani (Haryana).

Mr Sanjay Sethi, HFCl, New Delhi delivered expert lectures on 7 Ps' of marketing.

Prof. S.K. Sharma, Head, Txtile Institute for Technology (TIT),

Bhiwani delivered expert lectures on Human Resource Management-An overview.

Sh. Balveer Talwar, Manager, BHEL, Hardwar delivered expert lectures on T.Q.M.

Mr Sanjay Chopra, Deputy Director, IAS Academy, Mussourrie delivered a lecture on "Practical aspect of Administration in Management".

Mr Mukesh Khanna (Actor & Industrialist) and Ved Khanna (Industrialist), Shree Ram Textiles, Mumbay delivered lectures on "Enterprenial Development."

जनवरी, १९९७ में कार्मिक प्रबन्ध के छात्रों के लाभार्थ एक शिक्षण भ्रमण डॉ० विवेक साहनी एवं डॉ० विनोद कुमार सिंह के निर्देशन में ग्रिन्डवैल नार्टन लि०, बैंगलौर, ए०के० इण्डस्ट्रीज, मुम्बई, श्रीराम क्लॉथ मिल्स, मुम्बई एवं आर्य मिल्क डेरी, भिवानी के लिए आयोजित किया गया। अप्रैल १९९७ में एम०बी०ए० एवं पी०एम०आई०आर० के छात्रों एवं छात्राओं को आई.ए.एस. एकेडमी मसूरी, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ विजुअली हैण्डीकैप्ड देहरादून तथा चीनी मिल, डोईवाला का भ्रमण कराया गया।

विभागीय पुस्तकालय के अन्तर्गत प्रबंध विशेषज्ञ विषयों पर लगभग १३०० पुस्तकें उपलब्ध हैं तथा अनेक संबंधित पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं।

संकाय के अन्तर्गत दृश्य–श्रवण उपकरण भी क्रय किये गये हैं तथा अनेक विषयों पर विशेषज्ञ व्याख्यान कैसेट उपलब्ध हैं। इन ऑडियों विजुअल इक्वीपमेन्टस का प्रयोग छात्रों एवं छात्राओं के लाभार्थ किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली की रिव्यू समिति ने अप्रैल १९९७ में संकाय का निरीक्षण किया। समिति के सुझाव पर प्रबंधन संकाय के अन्तर्गत निम्न पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं ए०आई०सी०टी०ई० की स्वीकृति हेतु भेजे गये हैं।

1. Management of Information Technology (MIT).
2. Master of Tourism and Hotel Management (MTHM).
3. Master of Business Economics (MBE).
4. Master of Personnel Management & Industrial Relations (MPMIR).
5. Master of Business Finance (MBF).
6. Three one year Post Graduate Diploma in:-

(a) Sales and Marketing Management (PGDSMM)
(b) Production and Operation Management (PGDPOM)
(c) Financial management (PGDFM).

विज्ञान संकाय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर के रूप में है। यह विश्वविद्यालय वर्तमान में वैदिक शिक्षाओं के साथ–साथ विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। संकाय के प्राध्यापकगण शिक्षण कार्य के साथ–साथ शोध कार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९५–९६ में संकाय का परीक्षाफल सराहनीय रहा। यह अत्यन्त हर्ष एवं प्रतिष्ठा का विषय है कि संकाय से बी०एस०सी० उपाधि लेकर निकले छात्रों को भारत के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

इस सत्र में विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर एस०एल० सिंह दारूल सलाम विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनके स्थान पर डॉ० वीरेन्द्र अरोड़ा संकायाध्यक्ष का कार्य कर रहे हैं।

संकाय के प्राध्यापक शोध कार्य करवा रहे हैं। शोध एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिये संबंधित विभागों की आख्या अवलोकनीय है। यहां के शिक्षकों के शोध पत्र लगातार विदेशी एवं भारतीय पत्रिकाओं में छप चुके हैं। संकाय की एक विशिष्टता यह है कि बी०एस०सी० में कम्प्यूटर विज्ञान को विषय विशेष के रूप में पढ़ाने का प्रबंध है। छात्रों की सुविधा के लिये इस वर्ष बी०एस०सी० में सांख्यिकी विषय में अध्ययन की सुविधा प्रदान की गई है। छात्र संख्या निरन्तर बढ़ रही है।

संकाय में प्रत्येक ग्रुप के वरीयता क्रम के अनुसार प्रति ग्रुप में ५–५ मेधावी छात्रों को संकाय द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त जिन्दल ट्रस्ट, आसफअली रोड, दिल्ली से भी विभिन्न कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। सत्र १९९६–९७ में छात्रों की संख्या निम्नवत रही–

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी०एस०सी० प्रथम खण्ड	गणित	८४
बी०एस०सी० प्रथम खण्ड	कम्प्यूटर	४०
बी०एस०सी० प्रथम खण्ड	सांख्यिकी	३५
बी०एस०सी० द्वितीय खण्ड	गणित	८५
बी०एस०सी० द्वितीय खण्ड	कम्प्यूटर	५१
बी०एस०सी० तृतीय वर्ष	गणित	१०८
बी०एस०सी० तृतीय वर्ष	कम्प्यूटर	५४
बी०एस०सी० तृतीय वर्ष	मनोविज्ञान	११
बी०एस०सी० तृतीय वर्ष	दर्शन	०२
एम०ए०सी० प्रथम वर्ष	गणित	०५
एम०एस०सी० द्वितीय वर्ष	गणित	०६
एम०एस०सी० प्रथम वर्ष	रसायन	१८
एम०एस०सी० द्वितीय वर्ष	रसायन	१८

एम०एस०सी० प्रथम वर्ष	भौतिकी	११
एम०एस०सी० द्वितीय वर्ष	भौतिकी	१०
एम०एस०सी० प्रथम वर्ष	ए०सी०ए०	४०
एम०एस०सी० द्वितीय वर्ष	ए०सी०ए०	४०
एम०एस०सी० तृतीय वर्ष	एम०सी०ए०	३०

संकाय कार्यालय

संकाय के जू०असि० कम टाइपिस्ट श्री यशपाल सिंह राणा प्रोन्नत होकर मुख्य कार्यालय में स्थानांतरित हो गये। श्री धर्मवीर सिंह जू० असि० ने कार्यालय के दायित्वों के साथ साथ एन०एस०एस० के कार्य में सहयोग दिया। श्री हंसराज जोशी, जू०असि० ने कार्यालय के दायित्वों के अतिरिक्त प्रवेश संबंधी कार्यों तथा प्राकृतिक एवं भौतिकी विज्ञान शोध पत्रिका में प्रबंधक के कार्यों का निर्वहन किया।

कार्यालय के अन्य कर्मचारियों श्री रामदास, श्री रायसिंह, श्री राजपाल सिंह, श्री विनोद कुमार ने संकाय से संबंधित कार्यों रख–रखाव आदि में पूर्ण सहयोग दिया।

जीव विज्ञान संकाय

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर के रूप में है। यह विश्वविद्यालय वर्तमान में वैदिक शिक्षाओं के साथ–साथ विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। बी.एस.सी. की उपाधि लेकर निकले छात्रों को भारतवर्ष के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

संबंधित विभागों में शोध एवं शैक्षणिक–गतिविधियों के लिए आख्या अवलोकनीय है। संकाय में मेधावी छात्रों को वरीयताक्रम के अनुसार छात्रवृति प्रदान की जाती है। सत्र १९९६–९७ में प्रवेशानुसार छात्र संख्या निम्नवत् रही:–

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष	बायो०	७३
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष	ई० माइक्रो०	२५
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष	बायो०	४३
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष	ई० माइक्रो०	२१
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष	बायो०	४०
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष	ई० माइक्रो०	१४
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष	मनो० वि०	२
एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	माइक्रो०	१८
एम.एस.सी. द्वितीय वर्ष	माइक्रो०	१७
एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	पर्यावरण	१२
एम.एस.सी. द्वितीय वर्ष	पर्यावरण	१३

पुण्य भूमि गुरुकुल कांगडी का विहंगम दृश्य
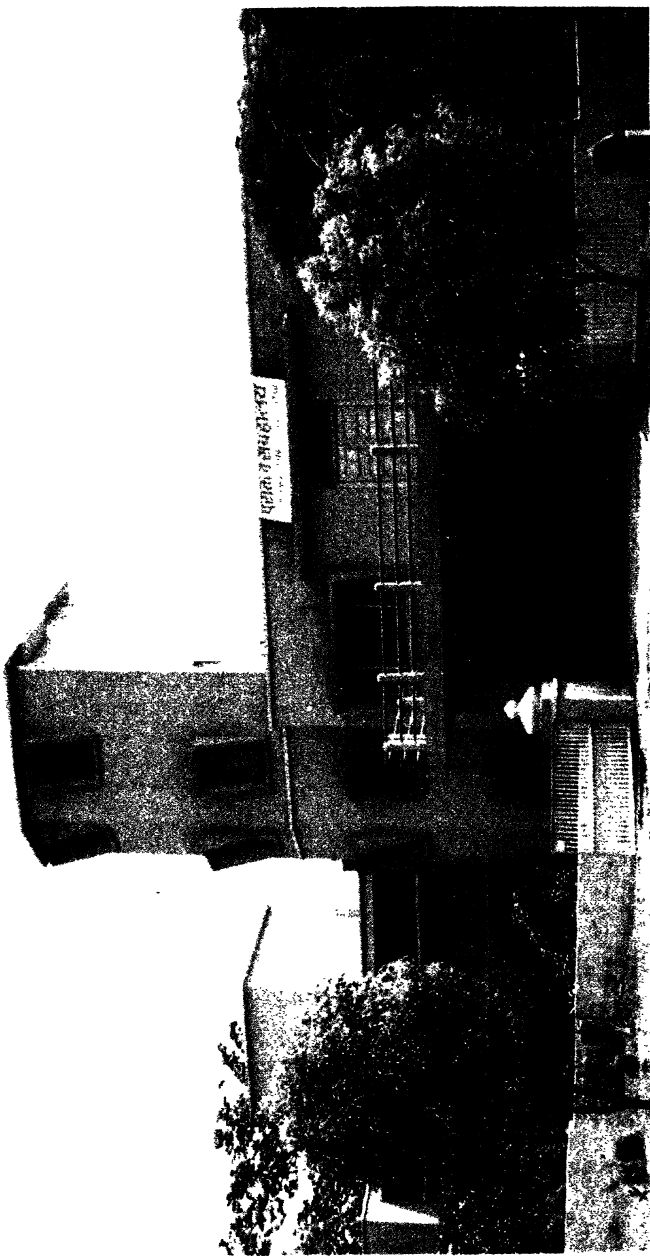
विश्व विद्यालय का पुरातत्त्व संग्रालय

(गणित व सांख्यिकी विभाग)

बी.एस.सी. प्रथम व एम.एस.सी. प्रथम वर्ष में नये छात्रों के प्रवेश के बाद कक्षायें प्रारम्भ हुईं। नये एवं पुराने छात्रों को अधिक से अधिक अध्ययन के लिये प्रेरित किया गया एवं छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों का भी निराकरण विभाग के शिक्षकों द्वारा किया गया।

इस सत्र से विभाग में बी.एस.सी. स्तर पर सांख्यिकी विषय प्रारम्भ किया गया तद्नुसार विभाग का नाम गणित एवं सांख्यिकी विभाग किया गया।

सत्र में विभाग के शिक्षकों ने कम्प्यूटर विभाग द्वारा आयोजित परिभाषिक शब्दावली कार्यशाला में सक्रिय भाग लिया।

३० अप्रैल १६६७ को विभाग के रीडर डॉ० हरबंस लाल गुलाटी ६० वर्ष की आयु प्राप्त होने पर विश्वविद्यालय से सेवा निवृत हुये। उन्हें विभाग द्वारा भावभीनी विदाई दी गयी तथा उन्हें सम्मानित किया गया।

इस सत्र में डॉ० राजेन्द्र कुमार शर्मा की विभाग में विधिवत् रूप से प्राध्यापक पद पर नियुक्ति हुई।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सप्ताह के अवसर पर विभाग के छात्रों द्वारा एक झांकी प्रस्तुत की गयी जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी। इसके लिये विभाग के समस्त शिक्षकों ने सहयोग दिया।

सत्र में समस्त शिक्षक अध्ययन कार्य के अतिरिक्त शोध कार्य में भी व्यस्त रहे जिनका विवरण निम्न है–

प्रो० श्याम लाल सिंह

इस सत्र में प्रो० श्याम लाल सिंह दारूल सलाम विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ० वीरेन्द्र अरोड़ा (विभागाध्यक्ष)

विभागीय कार्य सम्पन्न कराने के अतिरिक्त विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष का कार्य किया। इन्टरनेशनल बायोग्राफिकल सेन्टर, इंग्लैंड द्वारा इन्टरनेशनल मैन आफ दी ईयर से सम्मानित किया गया। वैदिक गणित में शोध पत्र प्रकाशन हेतु प्रेषित किये।

विश्वविद्यालय सेवायोजना एवं मंत्रणा केन्द्र के प्रमुख का कार्य कर रहे हैं। कम्प्यूटर विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ० विजयेन्द्र कुमार शर्मा

विभागीय शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विभाग के लिए सामान आदि क्रय करने का कार्य भी अन्य वर्षों की भांति किया। कुछ शोध पत्र भी प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

डॉ० महीपाल सिंह

विभागीय शिक्षण कार्य के अतिरिक्त शोध कार्य में भी संलग्न रहे। वनस्थली विद्यापीठ

राजस्थान में आयोजित कांफ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किया। कम्प्यूटर विभाग में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ० हरवंश लाल गुलाटी

विभागीय शिक्षण कार्य के अतिरिक्त परीक्षा कार्य में सहायक परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। कम्प्यूटर विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ० राजेन्द्र कुमार शर्मा

डॉ० शर्मा की नियुक्ति विभाग में २७ नवम्बर १९९६ को हुई। शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विभागीय अन्य कार्यों में भी इनका सहयोग सराहनीय है। डॉ० शर्मा शोध कार्यरत है।

भौतिकी विभाग

सत्र १९९६–९७ में बी.एस.सी. एवं एम.एस.सी. कक्षाओं का अध्यापन कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

विभाग में शोध छात्र विभिन्न अध्यापकों के निर्देशन में शोध कार्य में संलग्न हैं। इस सत्र में शोध समिति की बैठक हुई जिसमें डॉ० राजेन्द्र कुमार के निर्देशन में श्री पंकज लूथरा एवं श्रीमती सीमा राणा के शोध विषय स्वीकृत हुए।

इस सत्र में विभाग की खराब हो चुकी सम्पूर्ण विद्युत लाइन बदली गयी तथा कुछ बड़ी स्लैब डार्करूम में प्रयोग करने हेतु बनवायी गईं। कुलपति जी के निर्देशानुसार डॉ० राजेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार में भौतिकी विभाग की स्थापना इसी सत्र में की गई तथा वहां पर भी अध्यापन कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

दिसम्बर माह में पाठ्यक्रम समिति की बैठक हुई जिसमें बी.एस.सी. एवं एम.एस.सी. कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में संशोधन किया गया। भौतिकी विषय की सभी परीक्षाएं सुचारू रूप से सम्पन्न करायी गयी।

सी.एस.आई.आर. के पूर्व डायरेक्टर जनरल प्रो० एस०के० जोशी १५ जनवरी ९७ को विभाग में पधारे एवं 'New Materials Of Coming Decades' विषय पर एक बहु आयामी व्याख्यान दिया जिससे विज्ञान एवं जीव विज्ञान संकाय के अन्य अध्यापक एवं छात्र भी लाभान्वित हुये।

डॉ० पी०पी० पाठक का 'A Note on Raingush Phenomena' विषय पर एक शोध पत्र J.8 Natural and Physics Sciences, Vol. 9 में प्रकाशन हेतु स्वीकृत हुआ।

विभागीय अध्यापकों द्वारा विश्वविद्यालय से बाहर के कार्यों में भी हिस्सा लिया जिनमें निम्न प्रमुख हैं–

१. राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का संयोजन

२. राष्ट्रीय स्नातक भौतिकी परीक्षा एवं राष्ट्रीय मानक भौतिकी परीक्षा।

३. सर सी०वी० रमन मैमोरियल एनुअल साइन्स स्कालरशिप कान्टेस्ट १९९७

भौतिकी विभाग के पुस्तकालय में लगभग १५०० पुस्तकें हैं जिनका प्रयोग एम.एस.सी. के छात्र, शोध छात्र एवं शिक्षकों द्वारा किया जाता है।

भौतिकी विभाग में एम.एस.सी. कक्षाओं में वैदिक भौतिकी का पाठ्यक्रम भी पढ़ाया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि सत्र १९९७–९८ से स्नातकोत्तर स्तर पर 'Instrumentation, Design & Maintenance' विषयक का specialisation शुरू किया जा रहा है।

रसायन विज्ञान विभाग

सामान्य विवरणः– वर्ष १९९६–९७ में विभाग में कुल छात्र संख्या ५५० रही, जिसमें ३६ छात्र एम.एस.सी. (Commercial Methods of Chemical Analysis) में अध्ययनरत रहे।

विभागीय शोध समिति व पाठ्यक्रम समिति की बैठकें समय पर की गई। बी.एस.सी व एम.एस.सी. पाठ्यक्रमों का पुनर्निरीक्षण, संशोधन किया गया व स्नातकोत्तर स्तर पर कम्प्यूटर से संबंधित प्रश्नपत्र 'Computer Application in Chemistry' प्रारम्भ किया।

इस समय विभाग में कुल १० शोध छात्र कार्यरत हैं। इसी वर्ष में डॉ० आर०डी० कौशिक व डॉ० ए०के० इन्द्रायण के निर्देशन में क्रमशः एक–एक छात्र को पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की गयी।

विभाग में चल रहा एम.एस.सी. पाठ्यक्रम एक अत्याधुनिक व रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम है जिसमें प्रविष्ट छात्रों को आसानी से रोजगार उपलब्ध हो जाता है।

गत दो वर्षों से विभाग में निम्नांकित निर्माण कार्य हुआः– गैस प्लान्ट में प्लास्टर, बिजली की फिटिंग, भट्टी की मरम्मत व चबूतरा निर्माण, पाँच शोध सुविधायुक्त कक्षों की व्यवस्था, पुरानी व खराब हो चुकी पावर लाइन हटाकर नयी लाइन डलवाना व नये प्वाइन्टस लगवाना, खराब हो चुके इक्यूपमैंटस की मरम्मत, प्रयोगशालाओं के बाहर पक्का फर्श निर्माण, बी.एस.सी. (द्वितीय) प्रयोगशाला में २० अतिरिक्त शैल्फों का निर्माण, विभागीय कार्यालय कक्ष का निर्माण, बाथरूम की मरम्मत, अध्यक्ष कक्ष की व्यवस्था आदि।

इस समय एक उपकरण प्रयोगशाला का निर्माण कार्य तेजी से प्रगति पर है जिसके पूर्ण हो जाने के बाद विभाग में उपकरण आदि सुव्यवस्थित ढंग से कार्य कर सकेंगे।

आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा व प्रयोगात्मक परीक्षायें सुनिश्चित समय पर कुलपति जी द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार करायी गई जिसके फलस्वरूप एम.एस.सी. रसायन का सत्र पूर्ण रूपेण नियमित कर दिया गया।

विभाग में एक कम्प्यूटर व प्रिंटर क्रय किया गया जिससे एम.एस.सी. छात्रों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण में सुविधा होगी।

रसायन विभाग के पुस्तकालय में कुल ६९७ पुस्तकें हैं जिनका उपयोग एम.एस.सी. व शोध छात्रों के अतिरिक्त शिक्षकों द्वारा भी किया जाता है। वर्ष १९९६–९७ में डॉ० आर०डी० सिंह विभागीय पुस्तकालय के इंचार्ज रहे। विभागीय पुस्तकालय कक्ष का निर्माण अभी विचाराधीन है।

रसायन विभाग में २० सितम्बर १९९६ को स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश सिन्हा जी के बलिदान दिवस पर यज्ञ आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें कुलपति जी, आचार्य जी, डीन व अन्य शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त कर सिन्हा जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

गोआ विश्वविद्यालय व सामुद्रिक शोध संस्थान, डोना पोला के लिए सरस्वती यात्रा लेकर छात्रों के साथ डॉ० आर.डी. कौशिक व डॉ० रणधीर सिंह गये।

इस वर्ष विभागीय मेन्टेनेन्स ग्रान्ट में वृद्धि की गई व उपकरण आदि क्रय करने हेतु अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रशासन द्वारा उपलब्ध करायी गयी।

कुलपति जी के निर्देशानुसार डॉ० आर०डी० कौशिक की अध्यक्षता में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार में रसायन विभाग की स्थापना वर्ष १९९५–९६ में की गयी थी। इस वर्ष एम.एस.सी. (Commercial methods of Chemical Analysis) द्वितीय वर्ष हेतु उपकरण आदि क्रय किए गये व सुचारू रूप से पाठ्यक्रम चलाते हुए विश्वविद्यालय द्वारा घोषित कार्यक्रमानुसार एम०एस०सी० प्रथम व द्वितीय वर्ष की परीक्षायें ठीक समय पर सम्पन्न करायी गयी। इस समय विभाग में २३ छात्राएं एम०एस०सी० में व तीन शोध छात्राएं पी०एच०डी० उपाधि हेतु कार्यरत हैं।

विभागीय शिक्षकों का प्रगाते विवरण

डा० आर० डी० कौशिक, रीडर एवं विभागाध्यक्ष

१. डा० कौशिक के निर्देशन में कु० वन्या जैन को इस वर्ष पी०एच० डी० उपाधि प्राप्त हुई।

२. डा० कौशिक के निर्देशन में दो एम०एस०सी छात्रों ने डिसर्टेशन कार्य पूर्ण किया।

३. तीन अन्य शोध छात्र पी०एच०डी० उपाधि हेतु कार्यरत हैं।

४. यू० जी० सी० शोध परियोजना "Kinetics and mechanism of periodate oxidation of compounds of physiological importance" पर कार्य चल रहा है।

५. निम्नाँकित शोध पत्र कान्फ्रेंस में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ व इसे डा० आर०डी० कौशिक के निर्देशन में कार्यरत शोध छात्र श्री राजेश जोशी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

"Kinetics and Mechanism of periodate oxidation of N-N-dimethyle-P-toluidine in acetone water medium," R.D. Kaushik & Rajesh Joshi, proceeding of 15th conference of Indian council of Chemists (Aurangabad), P.P,-1, (1996) 100.

६. निम्नाँकित शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुऐ ।

(i) " Kinetics and mechenism of periodate oxidation of m-toluidine in acetone water medium", R.D. Kaushik & Rajesh Joshi, Asian Journal of Chemistry, 9 (3), (1997) 527 - 532.

(ii)"Periodate oxidation of aromatic amines-Kinetics and mechanism of oxidation of P-toluidine in acetone - water medium". R.D. Kaushik & Rajesh Joshi, Asian Journal of Chemistry, 9 (4), (1997) (Accepted for publication) (In press).

(iii) "Kinetics of periodate oxidation of aromatio amines-A comparision of effect of PH of exidation of some anilines, " R.D. Kaushik & Rajesh Joshi, Asian Journal of Chamistry, 9(4), (1997) (Accepted for pubication) (In Press)

(iv) " A new Kinetic spectrophotometric method based on periodote oxidation for determination of N-N, dimethyl -P- toluidine in acctone-water medium", R.D. Kaushik & Rajesh Joshi. Himalayan Journal of

Environment and Zoology, 10, (1996) (Accepted for publication) (In press).

(v) " Microgram determination of m-toluidine in water by Kinetic - spectro photometric method based on periodetc oxodation", R.D. Kaushik & Rajesh Joshi Journal of Environment and Pollution, 4, (1997) (Accepted for publication) (In press).

(vi) " An analysis of water being supplied to Gurukul Kangri University campus, Hardwar". R.D. Kaushik, Mamta sharma, Rajesh Joshi & G.P. Gupta Journal of Natural and physical sciences (19997) (communicated for publication)

८. डा० कौशिक ने संयोजक बोर्ड आफ स्टडीज; संयोजक, शोध उपाधि समिति; परीक्षाध्यक्ष विभागीय प्रयोगात्मक परीक्षा; संयोजक एम०एस० सी० प्रवेश समिति; सदस्य, बी०एस०सी० प्रवेश समिति; व संयोजक, ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान दिवस समारोह के रूप में १९९६–९७ में कार्य किया ।

डा० रामकुमार पालीवाल, रीडर रसायन विभाग

१. डा० पालीवाल के निर्देशन में दो एम०एस०सी० छात्रों ने अपना डिसर्टेशन कार्य पूर्ण किया। उन्होंने परीक्षा उडन दस्ते के सदस्य के रूप में तथा अनुशासन समिति में प्रोक्टर के रूप में कार्य किया।

२. विभागीय सामान्य क्रिया कलापों में अपना सहयोग प्रदान किया।

डा० ए० के० इन्द्रायण, रीडर रसायन विभाग

१. यू० जी० सी० शोध परियोजना "Isolation extraction and study of medicinally valued dye from some indigenous plant" पर कार्यरत हैं।

२. दो एम०एस०सी छात्रों ने डिसर्टेशन हेतु कार्य किया ।

३. एक छात्र श्री ऋषि कुमार शुक्ला को डा० इन्द्रायण के निर्देशन में पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त हुई। इस समय उनके निर्देशन में ४ अन्य शोध छात्र कार्यरत हैं।

४. औषध वनस्पतियों से सम्बन्धित एक वार्ता A.I.R.नजीबाबाद से प्रसारित हुई। विश्वविद्यालय के स्वतन्त्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस समारोहों का संयोजन किया।

५. U.S.A. से प्रकाशित होने वाले Marqui's world who's who में नाम व उपलब्धियों को सम्मिलित किया गया।

६. निम्न दो शोध पत्र कान्फ्रेंसों में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुए ।

(A) " Study of properties of the oil extracted from seeds of Melia composita" by Km. Priya and Dr. A.K. Indrayan. I.C.C. conference December 1996.

(B) " Isolation adn study of properties of ambrette seed oil " by A.K. Indrayan, Vimla Yadav, K.S. Singh, Indian Science Conference Jan. 1997.

७. निम्नाँकित शोध पत्र प्रकाशित हुए

(i) Spectrophotometric studies of [bis (pyrazine) silver (II)

peroxodisulphate] and kinetics and mechanism of oxidation of water by it in a quieous perchloric acid". by R.K. Shukala & A.K. Indrayan Indian J. Chem., 36 A, 53 (1997).

(ii) " Isolation and study of properties of Ambrette seed dil extracted by using different solvent", Dr. A.K. Indrayan, Vimla Yadav, M. Kumar and K.S. Singh, Indian drugs, 34, 105 (1997).

डा० कौशल कुमार, रीडर रसायन विभाग :

१. डा० कौशल कुमार के निर्देशन में दो एम०एस०सी० छात्रों ने डिसर्टेशन कार्य पूर्ण किया।

२. वर्तमान में डा० कौशल कुमार के निर्देशन में एक शोध छात्र कार्यरत है जिसका शोध विषय "Physico-chemical Biological & Chemical studies on a compound herbal preparation of A marmelos, O. sanctum and piper nigrum in traditional folklore cure of diabetes mellitus" है।

५. निम्नलिखित शोध पत्र प्रकाशनार्थ भेजे गये।

(i) A Physico-Chemical study of sewage treatment plant, Hardwar.

(ii) A Pharmacological appraieal of the folk medicinal usage of A marmelos, O. Sanetum and Piper nigrum.

(iii) Safety efficacy and follogability of tolk lore formulation of citrus medica, Cyprea moneta and salsola Kali.

६. विभागीय सामान्य क्रिया–कलापों में अपना सहयोग प्रदान किया।

डा० रणधीर सिंह, रीडर, रसायन विभाग

१. एक major शोध प्रोजेक्ट यू० जी० सी० भेजा जा रहा है व एक अन्य प्रोजेक्ट C.S.I.R. भेजा जा रहा है।

२. दो शोध छात्र पी.एच.डी० उपाधि हेतु डा० सिंह के निर्देशन में कार्यरत हैं।

३. निम्नाँकित शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए ।

(i) "Nickel (II) selective sansor based on heterogeneous membrane of macrocyclic compound," Sansor and actuators (Chemical) 9606 (1996).

(ii) " Synthesis and Characterization of macrocyclic complexes of Ni (II) Co (II) & Cu (II) Containing N_6 macrocyclic ligand," J. India Chem. Soc. 1996.

४. विभागीय समस्त सामान्य गतिविधियों में अपना सहयोग प्रदान किया।

डा० श्री कृष्ण, प्रवक्ता, रसायन विभाग

१. डा० श्री कृष्ण के निर्देशन में दो एम० एस० सी० छात्रों ने डिसर्टेशन कार्य पूर्ण किया।

२. विभांगीय सामान्य क्रिया–कलापों में अपना सहयोग प्रदान किया।

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग विगत नौ वर्षों से कम्प्यूटरीय शिक्षा के विस्तार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विभाग की सत्र ९६–९७ की उपलब्धियों का ब्यौरा निम्न है।

१. शोधपत्रों का प्रकाशन :

इस वर्ष विभिन्न राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं/सम्मेलनों में विभागीय सदस्यों द्वारा निम्नलिखित शोध पत्र प्रकाशित किये गये।

(i) Vinod Kumar, P.K. Yadav and K.J. Bhatia

"On the Design of Reduced Communication Cost Based Task Allocation Algorithm for Distributed Processing Systems", An international Conference on Software Engineering Div. II & Madras Chapter, Madras, January 23-25, 1997. (Accepted)

(ii) M.P. Singh, Vinod Kumar and Arun Kumar

" Performance Analysis of Two-Stage Job Scheduling Schemes for Large Parallel Systems", 32nd Annual Convention of Computer Society of India, Nov. 13-16, 1997, Ahmadabad. (Communicated)

(iii) Vinod Kumar, M.P. Singh and Arun Kumar

" Performance Evaluation of Parallel Processing Systems", Presented at the Fourth Annual Conference of Indian Society of Industrial & applied Mathemactics, Jamia Millia Islamia University, New Delhi, April 6-8. 1996.

(iv) Vinod Kumar, M.P. Singh and P.K. Yadav

" An Efficient Algorithm for Multiprocessor Scheduling with Dynamic Reassignment", Proceedings of the Sixth National Seminar on Theoretical Computer Science, Banasthali Vidyapth, Rajasthan, August 5-8, 1996, pp. 105-118.

(v) Soni and K.J. Bhatia

" Resource Allocation Using Goal Programming - Case Study", Proceedings of the 6th International conference on Computer in Agriculture held at Cancun, Mexico, June 1996.

(vi) विनोद कुमार, प्रदीप कुमार एवं सुधीर शर्मा

" वितरित अभिकलन तंत्र हेतु सामान्य कृत दक्ष कार्य नियतन विधि", कम्प्यूटर विज्ञान

विभाग गु० का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

(vii) विनोद कुमार एंव कर्मजीत भाटिया

"वितरित आंकड़ा संसाधन तंत्र में कार्य नियतन"

कंप्यूटर विज्ञान विभाग गु०का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

(viii) विनोद कुमार

"वितरित आंकड़ा संचय : संरचना एवं प्रबन्धन

कंप्यूटर विज्ञान विभाग गु०का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

(ix) सुनील कुमार

"आभासी वास्तविकता"

कंप्यूटर विज्ञान विभाग गु०का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

(x) वेदव्रत

"डॉस कमाण्ड का हिन्दीकरण"

कंप्यूटर विज्ञान विभाग गु०का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

(xi) द्विजेन्द्र पंत

"बहुमाध्यम तकनीक एवं उसके अवयव"

कंप्यूटर विज्ञान विभाग गु०का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

(xii) अनिल कुमार, राजीव वशिष्ट एवं भरतलाल गर्ग

"सूचना महामार्ग"

कंप्यूटर विज्ञान विभाग गु०का० वि० वि० हरिद्वार एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली द्वारा, ६–१० जनवरी, १९९७ में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला/संगोष्ठी विवरणिका।

२. लघु शोध प्रबन्धों का निर्देशन :

एम० सी० ए० के बारह छात्रों ने डा० विनोद कुमार के निर्देशन में, आठ छात्रों ने श्री कर्मजीत भाटिया के निर्देशन में तथा चौदह छात्रों ने सुनील कुमार के निर्देशन में अपने एक सत्रीय लघु शोध प्रबन्ध पूरे किये।

३. अन्य विभागों के कार्यों में सहयोग

(i) श्री कर्मजीत भाटिया ने सत्र १९९६–९७ की विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम के चयन हेतु चयन समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया।

(ii) डा० विनोद कुमार शर्मा ने प्रबन्धन संकाय, पर्यावरण विज्ञान विभाग, रसायन विज्ञान विभाग व कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की प्रयोगशालाओं के लिए क्रय किये जाने वाले कम्प्यूटर उपकरणों का विवरण तैयार करने व क्रय प्रक्रिया में विशेषज्ञ के रूप में सहयोग किया।

(iii) श्री वेदव्रत ने पर्यावरण विज्ञान विभाग, रसायन विज्ञान विभाग व प्रबंधन संकाय के लिए क्रय किये जाने वाले कम्प्यूटर उपकरणों की प्रतिस्थापना में इन विभागों का सहयोग किया।

(iv) श्री वेदव्रत ने कंप्यूटर केन्द्र में नोवेल नेटवर्क के प्रबन्धन में सराहनीय कार्य किया।

४. पी०एच०डी० हेतु शोध कार्य :

डा० विनोद कुमार के निर्देशन में एक छात्र श्री प्रदीप कुमार को पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त हो चुकी है तथा दो अन्य छात्र श्री अरुण कुमार एवं श्री अवनीश कुमार पी०एच०डी० के लिए शोध कार्य कर रहे हैं।

५. विभागीय सदस्यों द्वारा व्याख्यान :

डा० विनोद कुमार ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर में 'कम्प्यूटर सिस्टम परफारमेंस' विषय पर चार आमंत्रित व्याख्यान दिये तथा एल०एम०एस०पी० जी० कालिज ऋषिकेश में "Software project Development Issues, measures and precautions" में विषय पर दो आमंत्रित व्याख्यान दिये।

६. शोध सम्मेलनों में सहकारिता :

(i) डा० विनोद कुमार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा "Networking Management Education", विषय पर अप्रैल ६–१२, १९९७ तक आयोजित राष्ट्रीय शोध सम्मेलन में भाग लिया।

(ii) विभाग के सभी सदस्यों ने कम्प्यूटर केन्द्र, ग० का० वि० वि० में Digital Electronic Corporation, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पंच–दिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम में भाग लिया।

७. शोध सम्मेलनों/कार्यशालाओं का आयोजन :

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के सहयोग से दिनांक ६.१.९७ से १०.१.९७ तक "कम्प्यूटर की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एवं

अनुप्रयोग" विषय पर एक पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें देश के कोने–कोने से लगभग ५५ विद्वानों ने भाग लिया। इसमें डा० विनोद कुमार ने स्थानीय संयोजक के रूप में कार्य किया। इस कार्यशाला के आयोजन में विभाग के अन्य सदस्यों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया।

८. आमंत्रित व्याख्यानों का आयोजन :

इस सत्र में निम्न विषय विशेषज्ञों ने आमन्त्रित व्याख्यान दिये–

१. डा० जी०एस० अग्रवाल, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की
२. डा० एस०पी० शर्मा, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की
३. डा० के०के० श्रीवास्तव, रुड़की
४. ब्रिगेडियर ओ० पी० चौधरी, भूतपूर्व कुलपति, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
५. डा० एल० एन० दहिया, उपकुलपति, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
६. डा० आर० के० शर्मा, गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर

९. शैक्षणिक निकायों में सक्रियता :

डा० विनोद कुमार सिस्टम सोसाइटी आफ इण्डिया के आजीवन सदस्य हैं, तथा कम्प्यूटर सोसाइटी आफ इण्डिया के सदस्य व हरिद्वार चेप्टर के वाइस चेयरमेन है ।

१०. विभागीय प्रयोगशाला व पुस्तकालय का विस्तार :

इस वर्ष विभागीय प्रयोगशाला में ४ नये कम्प्यूटर जोड़े गये। श्री सुनील कुमार (प्रवक्ता) की देख रेख में विभागीय पुस्तकालय का निरन्तर विस्तार हो रहा है। इस वर्ष लगभग दो सौ नई पुस्तकें खरीदी गयीं। श्री वेदव्रत व श्री द्विजेन्द्र पंत का विभागीय प्रयोगशाला व पुस्तकालय के रख–रखाव संबंधी कार्यों में सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा।

११. एम०सी० ए० प्रोजेक्ट व रोजगार सम्बन्धी कार्य :

श्री कर्मजीत भाटिया, (प्रवक्ता) ने एम०सी०ए० तृतीय वर्ष के छात्रों के प्रोजेक्ट व रोजगार सम्बन्धी कार्यों का सफलतापूर्वक निष्पादन किया जिससे सभी छात्रों को विभिन्न कम्पनियों में प्रोजेक्ट करने का अवसर प्राप्त हुआ तथा एम०सी०ए० उत्तीर्ण लगभग सभी छात्रों को रोजगार प्राप्त हुआ। इन्ही प्रयासों से विभिन्न साफ्टवेयर कम्पनियों से परिसरीय साक्षात्कार हेतु पत्र आने प्रारम्भ हो गये हैं।

कम्प्यूटर केन्द्र

गु० का० वि० हरिद्वार में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना वि० वि० अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदान से १९८७ में की गई। वर्तमान में केन्द्र में ५० लाख रु० लगभग के आधुनिक कम्प्यूटर संयंत्र एवं साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिसे एम०सी०ए०, बी०एस०सी० और बी०ए० कम्प्यूटर के छात्र उपयोग में ला रहे हैं।

१. अत्याधुनिक कम्प्यूटर सयंत्रों से युक्त कम्प्यूटर केन्द्र में एम०सी०ए०, बी०एस०–सी० और बी०ए० के छात्रों की प्रयोगात्मक कार्य की आवश्यकता को देखते हुए केन्द्र को दो पालियों मे चलाया जा रहा है।

२. केन्द्र के पुराने ७ कम्प्यूटरों का अत्याधुनिक कम्प्यूटरों में नवीनीकरण किया गया जिस पर अनुमानतः ३ लाख रु० खर्च हुए। नवीनतम कम्प्यूटर साफ्टवेयर जैसे विन्डोज ९५, विजुवल सी और विजुवल बेसिक आदि का समावेश हुआ।

३. मुख्य कार्यालय में एक अलग कम्प्यूटर सेल का निर्माण किया गया है ताकि मुख्य कार्यालय की कम्प्यूटर सम्बंधी आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

४. विज्ञान संकाय की ९५–९६ सत्र की छात्रों की सूची कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गयी। दूसरे विभागों जैसे भौतिकी, रसायन, गणित के कार्यों के लिए वांछित कम्प्यूटर सुविधा प्रदान की गयी तथा वि० वि० अनुदान आयोग को भेजे गये विभिन्न पाठ्यक्रमों जैसे एम०बी०ए०, कन्या गुरुकुल आदि की रूपरेखा कम्प्यूटर केन्द्र में तैयार की गई। नवी पंचवर्षीय योजना के लिए सभी प्रस्तावों का मुद्रण कंप्यूटर केन्द्र में किया गया। वि०वि० अनुदान आयोग को भेजी विश्वविद्यालय प्रोफाइल तैयार करने में श्री शशिकान्त का विशिष्ट योगदान रहा ।

५. श्री महेन्द्र असवाल तथा श्री शशिकान्त ने कम्प्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से जनवरी १९९७ में आयोजित कम्प्यूटर शब्दावली में अपना लेख 'बहुमाध्यम : एक परिचय' प्रस्तुत किया।

६. श्री मनोज कुमार ने यू० जी० सी० के INFLIBNET PROGRAMME के अन्तर्गत पुस्तकालय में Dissertation & Thesis के कम्प्यूटरीकरण का प्रथम चरण पूरा किया गया। इस कार्य से प्रेरित होकर यू० जी० सी० पुस्तकालय के कम्प्यूटरीकरण के लिए शीघ्र ही एक लाख का अनुदान देने जा रही है।

७. श्री मनोज कुमार व श्री अचल कुमार गोयल ने कम्प्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के सहयोग से आयोजित कम्प्यूटर शब्दावली कार्यशाला में अपना लेख " इलेक्ट्रोनिकी डाक–ई–मेल" प्रस्तुत किया।

८. श्री अचल कुमार गोयल ने एम० एस० सी० (रसायन) के छात्रों को "Fortran Programming" विषय पर व्याख्यान दिये तथा प्रबन्धन संकाय व रसायन विज्ञान विभाग की प्रयोशालाओं में कम्प्यूटर उपकरणों की प्रतिस्थापना में सहयोग दिया।

जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग

सन् १६८४ में यू०जी०सी० द्वारा जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान दोनों को संयुक्त रूप से एम०एस०सी० माइक्रोबायोलोजी दी गयी। तब से लगातार इस विभाग द्वारा माइक्रो बायोलोजी (एम० एस० सी०) कक्षाओं को पढ़ाया जा रहा है। इस विभाग में किये गये लघु शोध प्रबन्ध के कारण, यहाँ के छात्र देश विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों में उच्च पदों पर आसीन है तथा क्लीनिकल माइक्रोबायोलोजी के कारण बहुत से छात्र स्वरोजगार योजना के अर्न्तगत अपनी–अपनी पैथोलोजी एवं माइक्रोबायोलोजी लैब चला रहे हैं।

सन् १६६५–६६ से विभाग में एम०एस०सी० पर्यावरण विज्ञान भी प्रारम्भ किया गया। जिसके अन्तर्गत इस वर्ष छात्रों के लाभ हेतू देश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं शोध सस्थानों से विषय विषेशज्ञों द्वारा नवीनतम, जानकारी विभिन्न व्याख्यानों द्वारा प्रदान की गयी। इसके साथ ही अमेरिकन वैज्ञानिक डा० होस्ट रसल वासर ने "पर्यावरण एवं स्वास्थ्य" नामक विषय पर २० नवम्बर १६६६ को सारगर्भित व्याख्यान दिया।

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा अपने ही प्रयास से एक शोध पत्रिका "Himalayan Journal of Enivronment and Zoology" का नियमित प्रकाशन विगत् १० वर्षों से हो रहा है। जिसकी शिक्षा जगत् में ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर बढ़ती जा रही है। एम०सी० सी० पर्यावरण विज्ञान के छात्रों को विशेष रूप से लाभान्वित करने हेतू देश विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों से विषय विशेषज्ञों द्वारा नवीनतम जानकारी विभिन्न व्याख्यानों द्वारा प्रदान की गयी। मुख्य विषय विशेषज्ञों, प्रो० रामाराव, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, डा० अमित राय, डब्लू० डब्लू० एफ० दिल्ली, डा० के० के० शर्मा, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, डा. आर० के० राय, पर्यावरण एवं वन मत्रांलय दिल्ली, डा० एस०वी०एस० राणा, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, प्रो, वी० के० झा०, इन्डियन इन्सटीट्यूट ऑफ रिमोट सेन्सिग देहरादून, डा० एम०सी० पोरवाल एवं डा० सरनाम सिंह (IIRS देहरादून) प्रो० डी० एन० सक्सेना, ग्वालियर विश्वविद्यालय ग्वालियर, प्रो० आशा सकलानी, गढवाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, प्रो० बी० के० श्रीवास्तव, सागर विश्वविद्यालय, सागर, प्रो० डी० के० बलसारे, भोपाल विश्वविद्यालय, प्रो० एस० के जोशी, नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी, दिल्ली एवं अमेरिकन वैज्ञानिक प्रो० रसल बासर ने जन्तु विज्ञान एवं पर्यावरण विभाग में अपने सारगर्भित व्याख्यानों से अमिट छाप प्रदान की। छात्रों की विशेष प्रगति को ध्यान में रखते हुए डा० पी० सी० जोशी एवं डा० डी० एस० मलिक के नेतृत्व में सरस्वती यात्रा पर बैंगलोर, ऊटी एवं मैसूर स्थित विभिन्न शोध सस्थानों, विश्वविद्यालयों, वन विहार, नेशनल पार्क एवं सैनचूरी पर एम० एस० सी० पर्यावरण विज्ञान (द्वितीय) वर्ष के छात्रों को भ्रमण कराया गया है।

विभागीय प्राध्यापकों द्वारा इस सत्र में किये गये विशिष्ट क्रिया–कलाप इस प्रकार हैं।

प्रो० बी० डी० जोशी

प्रो० जोशी माइक्रोबायलोजी एवं पर्यावरण विज्ञान विषयों के कोर्डिनेटर हैं। इनके निर्देशन में दोनों विषय विशेष प्रगति की ओर अग्रसर हैं और यहाँ के छात्र एवं शोधार्थी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का यश फैला रहे हैं ।

1- Prof. Joshi attended the following four congress held during the academic year.

2- Attended Indian National Science Congress Association's 93 Convention held at Delhi University, Delhi and delivered an invited Guest Lecture in the first week of January 1997.

3- Attended IV International Congress Of Indian Institute Of Ecology & Environment and delivered one special lecture on the vedic precepts of Environment, in the third week of December, 1996.

4- Delivered an invitee lecture to refresher course teachers in Zoology at the Deptt. of Zoology, Kurukshetra Univ., Kurukshetra and Magadh Univ., BodhGaya in 1997.

5- Prof. Joshi was awarded Honorary fellowship of the following organisations, in recognition of his contributions to the field of Ecology and Environmental sciences and contributions in Hindi.

(i) Delhi Hindi Sahitya Academy, Delhi.

6- Prof Joshi has been nominated as an expert member in the Governing body of Indian Institute of Ecology and Environment, Delhi.

7- Prof. Joshi has been nominated in the academic council of I.I.E.E., Delhi.

8- Prof. Joshi has been holding as university co-ordinator of N.S.S.

9- Prof. Joshi continus to be :

(i) Editor-in-chief of Himalayan Journal of Environment and Zoology.

(ii) President Ind. Acad. Env. Sci., Hardwar.

(iii) Chief proctor, G.K.V. Hardwar.

iv) Convenor flying squad of G.K.V. Examination for 1996.

10- Prof. Joshi has participated in various meeting as an subject expert of the following organisations and universities .

(i) U.G.C. committee on Emerging areas in Education for Enivronmental Sciences.

(ii) Himalyan ecology, G.B.P.I.H.E.D. Almora.

(iii) B.O.S. and R.D.C. of Garhwal University. Jiwaji Univ. Awadh Univ., Bhopal Univ., and Rohelkhand University.

11-Prof., Joshi acted as an expert member in various commettee of Jammu University, Awadh Univ., Bodh gaya and Garhwal University.

12- One student Sri T.N.Joshi has been awarded Ph.D. degree under the guidance of Prof. Johsi.

13- This year two students in Zoology and one student in Microbi-

ology get their registration for Ph.D.under the guidance of prof., Joshi.

14- Prof. Joshi published two research papers during the current academic year in two national Journals.

15-Fifteen female students and six male students are doing M.Sc. dessertation work under the guidance of prof B.D. Joshi in 1996-97.

16- Three major research Projects form G.B.P.I.H.E.D.,U.G.C. and Ministry of Environment and forest are currently in progress under the supervision of prof., Josh.

A-Studiees on the Eco-biology of selected tributories of river Ganga between Devparag and Rishikesh. (GBPIHED)

B- Haematological aterations in some fresh water fishes as an index of environmental stress with special refernce to ecophysical and hydro-biological conditions in the river Ganga and its tribularies between Haridwar and Rishikesh. (U.G.C.)

C- Extension of Infra-structural facilities of existing of Botanical Garden of Gurukul Kangri Vishwavidyalaya. Hardwar for situ conservation of endanced plants of Shilib river.

डा० टी० आर० सेठ :

रीडर : डा० सेठ द्वारा विभागीय एवं विश्वविद्यालय के क्रिया कलापों में सक्रिय योगदान दिया गया। आपने विज्ञान संकाय की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डा० सेठ विभिन्न वि०वि० की परीक्षाओं में परीक्षक हैं।

डा० ए०के० चोपड़ा : रीडर

इस सत्र में डा० चोपड़ा ने विश्वविद्यालय एवं विभागीय प्रगति हेतु अनेक कार्य किये – उनके कुछ क्रिया–कलापों का विवरण निम्नवत है :–

Research papers published :

1- A study on self purification of physico-chemical properties of Ganga Canal water at Jwalapur, Haridwar. Him. J. Env.& Zool., 9 : 11-13, 1995.

2- Changes in alkaline phosphatase activity of some fresh water snails naturally infected with larval trematodes.Him.J.Env.& Zool., 9: 11-93, 1995.

3- Changes in Acid phosphatase activity of few fresh-water snails due to larval trematode infection. Rivista Di parassitologica, 62 : 229-232

4- In vitro antibacterial activity of Calotropis procera AIT. (Abst.), p 8, National Symposium on Herbal Medicine, Dehradun, 1997.

M.Sc. Dissertatin (Completed):

1- A study on physico-Chemical and microbiological characteristics of waste-water effluents of Thermal Power Station of Bharat heavy

Electricals Ltd. Haridwar.----------------Jaishankar Arya.

2- Antimicrobial activity of some herbal medicines against Escheirichia coli. ------------Ravi Kumar.

Ph.D. Dissertation Awarded:

1- A study on Epidemiology and Pathology of Parasitic Diseases of Himan Beings At Hardwar -----Ravi Kant.

2- In vitro antimicrobial activity of some higher plants................Nand Kishore.

Other Activities :

1- As a memebr of Admission Committee of Life-science

2-As a member of Flying squad during Annual Examination

3- As Vice-president, Indian Academy of Environmental Sciences, Haridwar.

4- As Executive - editor of Him. J.Env. Zool.

डा० दिनेश भट्ट : रीडर :

१. डा० भट्ट एवं उनके शोध छात्रों ने Bird Life Intternational द्वारा प्रायोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में कोयम्बटूर में भाग लिया एवं दो शोध पत्र प्रस्तुत किये (नवम्बर,९६)

२. दिसम्बर १९९६ में Department of Sceience and Technology द्वारा डा० भट्ट को करीब ६ लाख की एक शोध परियोजना [Acoustic signals in a few avain species: Their Characteristics and significance] स्वीकृत की गई, जिस परियोजना पर कार्य प्रगति पर है।

३. जनवरी १९९७ में UGC Minor Research Project के अन्तर्गत "Study of Local & Visual signals in spotted dove & Magpie-Robin" नामक शोध परियोजना स्वीकृत हुई।

४. National Seminar on Biotechnology - New Trends & Prospects नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी (हरिद्वार, दिसम्बर ९६) के पोस्टर सेशन में शोध पत्र प्रस्तुत किया।

५. International Symposium on chronobiology, China; National Symposium on Herbal Medicine Dehradun or Ethological society of India conference Raipur में शोध पत्र हेतु स्वीकृत हुये।

६. XXIII International Ornithological Congress हेतु प्रस्तावित organising committee में सदस्यता हेतु आमंत्रण।

७. शोध पत्र "Effect of B. Frondosa on the reproduction of myna" Ind. J. Exptt. Biol. में प्रकाशनार्थ प्रस्तुत।

डा० डी० आर० खन्ना

वरिष्ठ प्रवक्ता :

डा० खन्ना ने विभागीय एवं विश्वविद्यालय के क्रिया कलापों में अपना सक्रिय योगदान दिया ।

१. डा० खन्ना ने "National convention water quality and Bioresource

Environment " नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया एवं शोध पत्र प्रस्तुत किया।

२. "Eco-conservation of lake - Bhimtal at Kumaon Himalaya" नामक शोध पत्र प्रकाशन हेतू भेजा गया।

३. N.S.S. के नियमित कार्यक्रमों में छात्रों का मार्ग दर्शन किया।

४. डा० खन्ना के निर्देशन में विनीत कुमार, एम०एस०सी० माइक्राबायोलोजी द्वारा लघु शोध प्रबन्ध "Comparative studies on physico" chemical and microbiological parameters of different Industrial effluents जमा किया गया व चार अन्य छात्रों का कार्य प्रगति पर है।

डॉ० प्रकाश चन्द्र जोशी : प्रवक्ता :

१. डा० प्रकाश चन्द्र जोशी के दो शोध पत्र प्रकाशनार्थ स्वीकृत किये गये हैं।

२. डा० जोशी को ICFRE एवं विश्व बैंक द्वारा संचालित परियोजना (INDIAN COUNCIL OF FORESTRY, RESEARCH, EDUCATION AND EXTENSION)के तहत एक बृहत शोध योजना स्वीकृत हुई है।

३. वर्ष १९९६–९७ में, डा० जोशी को ORTHOPTTERISTS SOCIETY की मानद सदस्यता प्रदान की गयी है। यह सदस्यता डा० जोशी के शोध कार्य एवं प्रकाशन के आधार पर अमेरिका के WYOMING UNIVERSITY द्वारा प्रदान की गयी है।

४. डा० जोशी ने ३ जनवरी से ८ जनवरी १९९७ तक दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ६३ वें सम्मेलन में भाग लिया ।

५. डा० प्रकाश जोशी ने दिनांक ६ अप्रैल १९९७ से २५ अप्रैल १९९७ तक जम्मू विश्व विद्यालय में आयोजित Refresher course में भाग लिया ।

डा० देवेन्द्र सिंह मलिक :

प्रवक्ता

डा० मलिक ने विभागीय एवं विश्वविद्यालय के क्रिया कलापों में अपना सक्रिय योगदान दिया। इसके अतिरिक्त निम्न राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया एवं शोध पत्र प्रस्तुत किये।

१. माइक्रोबायोलोजी विभाग, गु०का०वि० हरिद्वार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "BIOTECHNOLOGY : New Trends and Prospects" में शोध पत्र" Applicaton of Vermitechnology in recycling of organic waste products" प्रस्तुत किया ।

२. वनस्पति एवं जन्तु विज्ञान विभाग डी०ए०वी० कालेज, देहरादून (उ०प्र०) द्वारा आयोजित संगोष्ठी "National convention water quality and Bioresource Environment" में शोध पत्र Eco- conservation of lake-Bhimtal at kumaon Himalaya" प्रस्तुत किया।

३. एक शोध पत्र छपने के लिए स्वीकृत है।

४. डा०मलिक के नेतृत्व में एम०एस०–सी० पर्यावरण विज्ञान (द्वितीय वर्ष) के छात्रों ने सरस्वती यात्रा पर बैंगलौर, मैसूर एवं उटी का भ्रमण किया।

वार्षिक प्रगति विवरण– १६६६–६७
वनस्पति विज्ञान विभाग, गु० काँ० वि०, हरिद्वार

शैक्षणिक सत्र १६६६–६७ में विभाग में बी०एस०सी० इण्डस्ट्रियल माइक्रोबायोलोजी, बी० एस० सी० वनस्पति एवं एम० एस० सी० माइक्रोबायोलोजी कक्षाओं के अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० डी०के० माहेश्वरी के अथक प्रयासों के फलस्वरूप विभाग में एक बायोटेक्नोलोजी एवं १६ वीं एनुअल बोटेनिकल कान्फ्रेंस का सफल आयोजन किया गया, जिसमें विभाग के समस्त शिक्षक वर्ग व शिक्षकेतर कर्मचारियों का कान्फ्रेंस की अभूतपूर्व सफलता हेतु सहयोग रहा। इस संगोष्ठी को भारत सरकार के जैव एवं प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, सी०एस०आई आर०, एम०एन०इ०एस०, सी०एस०टी० (यू०पी०) और यू० जी० सी० आदि से प्रायोजित किया गया। संगोष्ठी में पूरे भारतवर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों से लगभग २०० से भी अधिक शिक्षक व वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

इस सत्र में विभाग में समय–समय पर विषय विशेषज्ञों ने अपने ज्ञान से परिपूरित व्याख्यानों द्वारा छात्रों एवं सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग, द्वितीय परिसर कन्या महाविद्यालय में छात्राओं को लाभान्वित किया :–

१. डा० कापे, जर्मनी

२. प्रो० बी० एन० जौहरी, जी०बी० पन्त, वि० वि० पन्तनगर

३. डा० ए० पी० गर्ग, चौ चरण सिंह वि०वि०, मेरठ

४. डा० लक्ष्मी नरसिंहम, त्रिचुरापल्ली वि वि०

५. प्रो० जे० के० गुप्ता पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़

भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों से स्वीकृत परियोजनायें डा० माहेश्वरी के कुशल निर्देशन में सुचारू रूप से चल रही हैं जिनमें ०४ जे० आर० एफ० व एक फील्ड असिस्टेण्ट कार्यरत हैं।

इस सत्र में विभाग में वनस्पति विज्ञान और माइक्रोबायोलोजी विषयों में तीन शोध प्रबंध जमा किये जा चुके हैं। वर्तमान में भी वनस्पति विज्ञान एवं माइक्रोबायोलोजी विषयों में शोध छात्र पंजीकृत हैं एवं अपने शोधकार्य में कार्यरत हैं।

सत्र १६६६–६७ में बी०एस०सी० इण्डस्ट्रियल माइक्रोबायोलोजी के सभी छात्र विशिष्ट औद्योगिक प्रतिष्ठानों जैसे आई०डी०पी०एल०, मोहन मीकेन्स और डाबर इण्डिया लि० आदि में सफलता पूर्वक तकनीकी प्रशिक्षण पा रहे हैं।

इस विश्वविद्यालय के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि वोकेशनल शिक्षा कोर्स के अन्तर्गत जिन आठ विश्वविद्यालयों में यह कोर्स आरम्भ किया गया उनमें से यह एक है, और इसके मध्य इस विश्वविद्यालय को ४,५०,०००/– की अनुदानित राशि प्रथम किस्त के रूप में प्राप्त हो चुकी है, जिसमें उपकरण क्रय करने एवं निर्माण कार्य, विद्वानों के व्याख्यान आदि

सम्मिलित हैं, जो कि प्रगति पर है ।

सत्र १९९६–९७ में शिक्षक वर्ग ने निम्नानुसार विभागीय एवं विश्वविद्यालय की प्रगति हेतु अनेक शैक्षणिक, शोध एवं प्रकाशन संबन्धी कार्य किये हैं।

Academic achievement of Prof. D.K. Maheshwari, (1996-97)

Selected in UGC Bilateral exchange programme to visit Russia for a period of one month in 1997-98.

Memeber, Haryana Council of Science & Technology, Chandigrah.

Appointed experts to judge the performance of the young scientists in the subject Bio-sciences XII[th] M.P. Young scientists congress sponsored by the Madhya Pradesh Council of Science & Technology, Bhopal.

Member, Board of Studies in Microbiology, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore.

Member, Board of Studies in Applied Microbiology and Biotechnology, Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya, Sagar.

Exteranl expert, Board of Studies in Bio-sciences, R.D. Vishwavidyalaya, Jabalpur.

External expert of Board of Studies in Ind. Microbiology, of Higher Education, M.P. Govt.

Member Board of studies in Botany, Barktullah University, Bhopal.

Invited to deliver guest lecture in the National Symposium on Current Trends in Biotechnology and Plant Pathology at Deptt. of Botany, Rajsthan University, Jaipur.

Delivered invited lecture in the National seminar on Biofertilizers : Trends & Prospects, organized by Deptt. of Biosciences & Biotechnology , Roorkee University, Roorkee.

Delivered invited lecture in the National Symposium on the Biology of Plant Microbe Interactions. held at Deptt. of Bio-Sciences, R.D. Univeristy Jabalpur.

Delivered lectures in Refresher Course in 'Teaching of Botany in 21st Century' at School of Studies in Botany, Jiwaji University, Gwalior.

Invited to participate in symposium at 84th session of Indian Science Congress at Delhi University, Delhi.

Invited to act as special guest during National Symoposium on herbal medicine and application of Biotechnology and futuristie approach organised by S. Bhagwan Singh P.G. Institute of Bio-Medical Sciences, Balawala, Dehradun.

Two candidates submitted their thesis for the award of Ph.D. degree in Botany and Microbiology at Gurukula Kangri Vishwavidyalaya.

Appointed UGC obsever for JRF and Eligibilityfor lecturership exams,

at Delhi University centres.

Appointed observer for M.B.A. Written entrance examination of the Vishwavidyalaya for the acdemic year 1996-97.

Convener, "Ved-Vigyan" Seminar during 97th Annual function of Gurukula Kangri Vishwavidyalaya.

Elected Vice - President of Indian Botanical Society for 1977 i.e. for a term of one year.

Appointed member inspection and expert committee of Ch. Charan Singh University, Meerut to visit S. Bhagwan Singh Memorial Institute of Biomedical Sciences, Dehradun.

Publications in Referred Journals :

(1) Bradyrthizobium Japonicum growth, characteristics, nodule formation, leghaemoglobin synthesis, and nitrogenase activity Glycine max var. JS-72-44. J.Ind. Bot. Soc., 74 : 159-163, 1995.

(2) Effect of storage temperature on biofertilizer preparation for tree legumes J. Ind. Bot. Soc., 1996.

(3) Influence of inoculation and nitrogen fertilizer on nitrogenase activity and nodule formulation in soyabeans. Proc. Seminar on Biotechnology : New Trends & prospects. held at Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar, 1996.

(4) Heavy metal influence the production of cellulase Using Trichoderma pseudokonengii and Aspergillus niger. J. Basic Microbiol. 1996.

(5) Characterization of of rhizobia that isolated form Acacia tree. J. Appl. Bact. 199.

(6) Cellulase biosynthesis in Trichoderma pululifera p-1015. Mycol. Res. 1996.

डा० पुरुषोत्तम कौशिक, वनस्पति विज्ञान विभाग

डा० पुरुषोत्तम कौशिक को पुनः एकेडमी ऑफ प्लान्ट साईंस ऑफ इण्डिया का अध्यक्ष चुना गया। ४–५ अक्टूबर १९९६ को डॉ० कौशिक ने "स्कोप ऑफ माइक्रोबायलाजी इन एग्रीकल्चर एण्ड इन्डस्ट्री एण्ड मैडिशनल पलान्ट्स" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का संयोजन किया जिसमें लगभग १२५ वैज्ञानिकों ने देश के सभी राज्यों से आकर भाग लिया। डा० कौशिक ने २७–२९ मार्च १९९७ को सरदार भगवान सिंह पोस्ट ग्रेज्यूएट इन्स्टीट्यूट ऑफ बायमैडिकल साईन्सिज के सूक्ष्मजैवीकी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक 'की नोट' लैक्चर दिया तथा प्लैनरी सैशन की अध्यक्षता की। अप्रैल 11-14 तक डा० कौशिक ने डेवलपमैन्ट बायलाजी एण्ड कमर्सियलाइजेशन.ऑफ आर्किड्स" विषय पर गंगटोक (सिक्किम में) राष्ट्रीय संगोष्ठी में हैमालिक -- आर्किड के उत्तक–वर्धन प्रणाली द्वारा उगाने के विषय पर अपना शोध पत्र पढ़ा और पोस्टर भी प्रस्तुत किया जिसके लिए उन्हें प्रशंसा पत्र दिया गया। इसी दौरान सिक्किम के महामहिम राज्यपाल ने भी उनको सिक्किम राज्य के वन एवं कृषि

कल्याण हेतु विचार विमर्श के लिए आमन्त्रित किया। डा० कौशिक केन्द्रीय विद्यालय संगठन के उत्तरी क्षेत्र की विज्ञान प्रदर्शनी के निर्णायक भी रहे। उनके मार्गदर्शन में श्री अनिल कुमार धीमान ने हरिद्वार के औषध पौधों और स्थानीय बाजार में बिकने वाली कच्ची पादक–औषधों पर पी०एच०डी० का शोध ग्रंथ जमा करवाया है।

पैन्टावाक्स इण्डिया लिमिटेड ने डा० कौशिक को अपना आनरेरी एडवाइजरी डाइरेक्टर नियुक्त किया है।

डा० पुरुषोत्तम कौशिक के निम्न प्रकाशन हुए

१. आर्किड, वनस्पति जगत का गौरव
विज्ञान गरिमा सिंधु (स्वीकृत)

2- The Orchids ; a journey from Shakespeare's Theater to Modern Drung Hoses. Abstract National Symposiun on Herbal Medicine, Applications of Biotechnology and Futuristic Approach.March 27-29. S Bhagwan Singh, Post Graduate Institution of Biomedical Sceinces. Balwala. Dehradun.

3- In Vitro Antibacterial Activity of Cleisostoma micranthum K. & P. Advances in Plant Sciences vol . 9 (11) 81-84.

4- Vedic Medicianl plansts. Advances in Plant sciences. Vol.9 (11) supplement

5- Introductory Microbiology. Emkay Publications. Post Box 9410, B-19 East Krishna Nagar, Swami Dayanand Marg, Delhi 110051. Pages VIII + 344

6- Indian Orchids : Problems and Prospects Current Trends in Biotechnology and Plant Pathology & Prof. Uma kant Felicitations Function. Botany Department, Univeristy Rajasthan, Jaipur.

7-सूक्ष्मजैविकी का विकास। वैज्ञानिक शब्दावली अनुवाद एवं मौलिक लेखन। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय शिक्षा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।

8- Common Medicinal Pteridophytes. Indian 1995 Ferm Journal, 12 : 139-145

9- Antibacterial activity of Dendrobium 1995 amoenum Wall. Ex. Lindl. - a Study in Vitro J.Orchid Soc. 9 (1-2) : 33-35.

१० लोकप्रिय औषधीय पौधे और उनका उपयोग, विज्ञान गरिमा सिन्धु १७ :३३.४०

11- Vanila, Vigyan Gami Sindhu 16 : 71.

Dr. R.C. Dubey

Publications from 1995-97

Books

1- A Text Book of Biotechnology. 2nd Ed. S. Chand & Co Ltd. New

Delhi.

2- Recent Adv. in Ecology, Environment and Pollution Vol XI. Himalayan Microbial Diversity. (eds S.C. Sati, J Saxena and R.C. Dubey), Today and tomorrow's printers & Pube. New Delhi, (in 2 vols. 1997).

Research/Review Papers

3- Antagonistic activities against Sclerotium rolfsii of some fungi form sclerotial surfaces and rhizosphere of soyabean (with R. Kaur). J.

Indian Bot. Soc. 74 ; 135-138 (1995).

4- Seasonal occurrence of VA- mycorrhizal fungi on roots of cypress tree in relation to edaphic factors (with C.M.S. Negi). Acta Botanica Indica. 23 ; 173-175 (1995)

5- Formationof sclerotial spawn, conidia and fruiting body initials in Morchella esculanta (with G.S. Mer). Vasundhara. 1 : 35-38 (1996).

6- Microbial decomposition of two coniferous leaf litter in Kumaun Himalaya (with S. Pandey). J Indian Bot. Soc. 75 ; 83-85 (1996).

7- Diversity in ectomycorrhizal fungi in different Central Himalyan Oak forests (with R.P. Singh and H.S. Ginwla) Ann. For. 4 (1) ; 65-69 (1996).

8- Seasonal changes in microbial community in relation to edaphic factors in banj-oak and chir-pine forest soils of Kuman Himalya (with S. Shail). In recent Adv. in Ecology, Environ and Pollution Vol XI. (Eds S.C. Sati, J. Saxena and R.C. Dubey). Today and Tomorrow's printers & Publ. New Delhi, pp. 381-391 (1997).

9- Prospects of mycorrhizal fungi in the Himalay a: Forms, f unction and Management (wtih H.S. Ginwal). In recent Adv. in Ecology, Environment and Pollution. (Eds S.C. Sati,) J. Saxena and R.C. Dubey). Today and Tommorrow's Printers & Publ. New Delhi, pp. 317-338 (1997).

10- Influence of nutients on growth and formation of ectomycorrhiza (with S. Pandey and P. Tripathi). Vasundhara. (Accepted).

Dr. G.P. Gupta

Research Publication

1. One paper entitled " Influence of carbohydrate and nitrogen source on production of pectolytic and cellulolytic enryme by Phytopthera nicotinace Var parasitica has been accepted and in press for selicitation Vol. of Prof. R.S. Mehrotra.

2- Studies on vedic Technology for environmental health (Abr.) in National Seminar on Biotechnology. New trends and perspects; 41 (1996).

Seminar Attended :

1- Attended annual meeting of Plant Scientist held at Shanti Kunj Hardwar 1996.

2- Attended National Seminar on biotechnology : New trends and perspects and IXXth Indian Botanical conference form 26 Dec. 28th Dec., 1996 at G.K.V., Hardwar.

Organising Work

Worked as an organising secretary for National seminar on Biotechnology : New trends and perspects from 26th Dec. 1996-28th Dec. 1996, held at Bot. Deptt. Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

Dr. NAVNEET, LECTURER,

1- Co- Principal Investigator of the project entitled, "Biopesticidal control of certain tropical diseases associated with oil seed crops".

2- A paper entitled , "Acromyloflora of Potato field" has been accepted for publicaton in Journal of Natural and Physical Sciences. Gurukul Kangri University, Hardwar.

3- An abstract entitled, " Acromgcoflora of Gurukula Kangri Pharmacy, Haridwar" has been published in the National Seminar on Biotechnology ": New Trends and Prospects.

4- Member of the organising team to organise the National Seminar on Biotechnology : New Trends and Prospects on December 26-28, 1996 at Microbiology Unit. Department of Botony, Gurukula Kangri University, Hardwar.

5- Attended the refresher course in Botony held at Gujrat University, Ahamedabad.

श्रद्धानन्द वैदिक शोध एवं प्रकाशन संस्थान

इस संस्थान ने इस वर्ष "स्वामी श्रद्धानन्द–समग्र मूल्यांकन" प्रस्तुत किया जिसका विमोचन कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी के द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान –दिवस के अवसर पर किया गया था। इस वर्ष के दीक्षांत के अवसर पर सोवियत संघ के प्रसिद्ध हिन्दी वेत्ता श्री उलत्सिफेरोव द्वारा" पं. इन्द्रविद्यावाचस्पति–कृतित्व के आयाम" पुस्तक का विमोचन हुआ। गुरुकुल पत्रिका के विशेष रूप में वृहद दार्शनिक ग्रन्थ का विमोचन भी दीक्षांत के अवसर पर आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी के कर कमलों से हुआ।

इस वर्ष विश्वविद्यालय में पधारने वाले विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की समिति ने विभाग का अवलोकन किया, भवन सम्बन्धी आवश्यकता के साथ ही विश्वविद्यालय के शोध केन्द्र के माध्यम से डी लिट, प्रारम्भ करने की प्रार्थना की गई। इसके साथ ही शोध केन्द्र के विस्तार हेतु विचार–विमर्श हुआ। वैदिक संस्कृति का अन्य संस्कृतियों यथा मिश्री सभ्यता, चीनी एवं तिब्बती सभ्यता प्राचीनतम सभ्यता फिनीशियन डेनिश, असीरियन आदि समस्याओं पर क्या प्रभाव पड़ा, उन संस्कृतियों के मूल पर भी विचार करना समय की आवश्यकता है। एतदर्थ उन समस्याओं एवं संस्कृतियों के प्रमुख ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद करके उन ग्रन्थों का प्रकाशन किया जाएगा साथ ही उनके आधार पर वैदिक एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति का पारस्परिक सम्बन्ध भी देखा जाएगा। इसके लिए विभाग में जर्मन तथा फ्रेंच, असीरियन, चाइनीज तथा तिब्बत, दक्षिण भारतीय भाषाओं के अनुवादों की आवश्यकता होगी। इन पांचों अनुवादकों के द्वारा इन सब भाषाओं की कक्षाएं भी प्रारंभ की जा सकेंगी। इस बृहद शोध कार्य के लिए एक विभागीय पुस्तकालय, कम्प्यूटर, कार्यालय, दो रीडर तथा दो लेक्चर स्टाफ की आवश्यकता होगी। समिति ने इसके लिए केन्द्र को आश्वासन प्रदान किया।

शोध केन्द्र द्वारा विदेशी छात्रों के लिए एक लघु पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की भी योजना है जिसके लिए कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। इससे संस्था का बहुमुखी प्रचार एवं प्रसार होगा तथा विश्व के विभिन्न भागों में संस्था का नाम पहुंचेगा तथा वहां से छात्रों तथा शोध कर्ताओं को आमन्त्रित किया जा सकेगा।

वैदिक विज्ञानों को दृष्टिगत करते हुए वैदिक भौतिकी, वैदिक रसायन, वैदिक वनस्पति शास्त्र, वैदिक पर्यावरण, वैदिक गणित, वैदिक सूक्ष्म जीव विज्ञान जैसे विषयों पर भी कार्य करने की योजना है।

शोध केन्द्र की ओर से एक बृहद परियोजना, वैदिक वनस्पतियों का चिकित्साशास्त्रीय तथा सूक्ष्म जैविक अध्ययन, विश्वविद्यलाय अनुदान आयोग के विचारार्थ गया हुआ है। इस वर्ष मान्य कुलपति जी की प्रेरणा तथा महर्षि सन्दीपनी संस्थान की ओर से आर्थिक सहायता उपलब्ध होने पर वैदिक प्रबंधन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विचारणीय है।

पुस्तकालय विभाग

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है।

संदर्भ संग्रह, पत्रिका संग्रह, आर्य साहित्य संग्रह, आयुर्वेद संग्रह, विभिन्न विषयों का हिन्दी संग्रह, विज्ञान संग्रह, अंग्रेजी साहित्य संग्रह पं० इन्द्र जी संग्रह, दुर्लभ संग्रह, प्रतियोगितात्मक संग्रह, शोध प्रबन्ध संग्रह, रूसी साहित्य संग्रह, आरक्षित पाठ्य पुस्तक संग्रह, उर्दू संग्रह, मराठी संग्रह, गुजराती संग्रह, गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक संग्रह, मानचित्र संग्रह, वेद मंत्र कैसेट संग्रह।

सदस्य संख्या :–

पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या में गत छह सात वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। वर्ष १९९१–९२ में पुस्तकालय सदस्य संख्या १०१५ थी तथा वर्ष १९९६–९७ में १८७१ है। ज़िसका विवरण निम्न प्रकार है–

१. बी०एस० सी०	६५०
२. बी०ए०	२१६
३. एम०ए०	३१७
४. एम०एस०सी० / एम०सी०ए० / एम०बी०ए०	३३२
५. पी०जी० डिप्लोमा	७३
६. शोध छात्र	३२
७. बाह्य सदस्य	१२
८. वि०वि० कर्मचारी	२१६
कुल योग	१८७१

पुस्तकालय की विशिष्टताए

यह पुस्तकालय देश का एक मात्र ऐसा पुस्तकालय है, जहाँ आर्य समाज की पुस्तकों का संग्रह एक पृथक वीथिका के रूप में किया हुआ है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा लिखित पुस्तकों का पृथक प्रकोष्ट पुस्तकालय में बनाया हुआ है। पुस्तकालय का संदर्भ विभाग प्राच्य विद्याओं के सभी प्रमुख संदर्भों को समेटे हुए है।

विभागीय पुस्तकालय–

विश्वविद्यालय के छात्रों की सुविधा एवं उपयोग हेतु विभिन्न विभागों मे विभागीय पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। इसके अन्तर्गत रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान पर्यावरण

विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, हिन्दी पत्रकारिता, वेद अंग्रेजी एवं कन्या महाविद्यालय आदि विभागों में विभागीय पुस्तकालय है। आलोच्य वर्ष १९९६–९७ में १४२२ पुस्तकों को विभागीय पुस्तकालयों हेतु इश्यू किया गया।

पत्रिका विभाग–

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा आलोच्य वर्ष १९९६–९७ में २४८ पत्रिकायें मंगवाई गई जिनमें २२ पत्रिकाएं विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के विनिमय से प्राप्त हुई हैं। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विभिन्न विषयों की पत्रिकाओं को मंगाने में ९९३३९.०० रु० आलोच्य वर्ष में व्यय किया गया तथा ७५ पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की गई।

संदर्भ विभाग–

संदर्भ विभाग मे केवल शोध छात्र/छात्राओं एवं स्नातकोत्तर छात्र/छात्राओं को ही प्रवेश की अनुमति है। प्रतिदिन लगभग २५ से ३० छात्र संदर्भ विभाग का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों के शोध छात्र भी संदर्भ विभाग का उपयोग करते हैं।

अधिग्रहण विभाग–

आलोच्य वर्ष में ४,८६,२८१.३० रु० की ३०८१ नई पुस्तकें क्रय की गई। भारत सरकार तथा उ०प्र० सरकार द्वारा लगभग १४३७७.०० रु० मूल्य की ५०३ पुस्तकें भेंट स्वरूप प्राप्त हुई।

तकनीकि विभाग–

तकनीकि विभाग द्वारा आलोच्य वर्ष में ३९५० पुस्तकों को विषयानुसार वर्गीकृत तथा ३३७४ पुस्तकों को सूची कृत किया गया, ४५०० पुस्तकों पर टैग आदि का कार्य किया गया, ७५ पत्रिकाओं एवं ६५७ पुस्तकों की बाइडिंग कराई गई।

पुस्तक आवर्तन विभाग –

पुस्तक आवर्तन विभाग द्वारा कुल २३,७२७ पुस्तकें इश्यू की गई तथा ९९८७ पुस्तकें वापस की गई। जिसके अन्तर्गत विभागीय खातों में इश्यू १४२२ पुस्तकें शामिल हैं।

प्रलेखन विभाग –

विश्वविद्यालय पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री को पाठकों की सुविधा हेतु पुस्तकालय द्वारा समय–समय पर सूचीबद्ध कर प्रकाशित किया जाता रहा है। इसके अन्तर्गत अब तक निम्न प्रकाशन प्रकाशित किये जा चुके हैं।

१. क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर –

आठ सौ पृष्ठों के इस ग्रन्थ में पुस्तकालय में उपलब्ध वैदिक तथा संस्कृत साहित्य से सम्बद्ध ८००० ग्रंन्थों को सूचीबद्ध किया गया है।

२– शोध एवं प्रकाशन संदर्भ–

पुस्तकालय में उपलब्ध स्नातकों एवं प्राध्यापकों के शोध एवं प्रकाशन कार्यों हेतु जानकारी दिये जाने वाले उक्त ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है।

३– शोध सारावली –

विश्वविद्यालय के शोध छात्रों द्वारा किये गये शोध कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी हेतु शोध प्रबन्धों के सारांशों का सम्मिलित रूप से प्रकाशन किया गया है।

४– कैटलाग ऑफ बुक्स इन इंग्लिस लैंगवेज आन लिटरेचर इन लाइब्रेरी –

उक्त क्रम में गत वर्ष पुस्तकालय के अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध साहित्य सम्बन्धी सभी पुस्तकों को एक सूचीबद्ध रूप में तैयार किया गया है। जिसमें ३५६८ पुस्तकों में जानकारी पाठकों को हो सकेगी।

५– थिसिस इन गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार –

इस वांग्मय सूची में पुस्तकालय में उपलब्ध शोध प्रबन्धों को कम्प्यूटर द्वारा सूचीबद्ध किया गया है। शोध प्रबन्धों की सूची का एक डेटा बैंक तैयार किया गया है। इस डेटा बैंक को यू०जी०सी० प्रायोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के शोध प्रबन्ध के साथ नेशनल स्तर पर जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। इस कार्य के साथ पुस्तकालय के अन्य संग्रहों का भी कम्प्यूटर से डेटा बैंक तैयार किया जायेगा। यू०जी०सी० द्वारा हाल ही में इस कार्य हेतु १ लाख रु० की राशि स्वीकृत की गई है।

श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र –

विश्वविद्यालय पुस्तकालय के अन्तर्गत श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र का कार्य भी चल रहा है जिसके निदेशक डॉ० विष्णुदत्त राकेश पूर्व संकायाध्यक्ष गु० काँ० वि० हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष प्रकाशन केन्द्र के व्यवसाय प्रबन्धक का कार्य भी कर रहे हैं। आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय के प्रकाशनों से ६४३६ रु० की आमदनी हुई तथा ५६१७/रु० की पुस्तकें विनिमय में प्राप्त हुईं। अब तक २१३१०२१/रु० की कुल बिक्री विश्वविद्यालय को इन प्रकाशनों से हुई है। अनुसंधान केन्द्र के प्रकाशन निम्न है-

१. क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर।

२. वैदिक साहित्य संस्कृति और समाज दर्शन।

३. वेद का राष्ट्रीय गीत।

४. वेद और उसकी वैज्ञानिकता।

५. शोध सारावली।

६. श्रुति पर्णा।

७. स्वामी श्रद्धानन्द।

८. भारत वर्ष का इतिहास भाग १ एवं २ (पुनर्प्रकाशन)

९. आलोच्य वर्ष १९९६–९७ के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र के द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ " दीक्षा लोक" का विमोचन किया गया, इस ग्रन्थ में गुरुकुल की स्थापना से अब तक के दीक्षान्त भाषणों का प्रकाशन किया गया है। इसको वि०वि० में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक छात्र को देने हेतु प्रस्ताव है। यह ग्रन्थ गु० के १०० वर्षों के इतिहास की झलक दिखाये जाने हेतु ऐतिहासिक दस्तावेज है।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना –

यह पुस्तकालय देश का पहला ऐसा पुस्तकालय है जहाँ निर्धन एवं मेधावी छात्रों को

पुस्तकालय में आंशिक रोजगार देकर उन्हें उनकी शिक्षा–दीक्षा के कार्य में सहायता प्रदान की जाती है। आलोच्य वर्ष १९९६–९७ में इस योजना के अन्तर्गत ४ छात्रों को नियुक्त किया गया था।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा –

विश्वविद्यालय पुस्तकालय में प्रतियोगिता परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्रों हेतु एक पृथक संग्रह स्थापित है जिसमें १५०० पुस्तकें है। प्रतियोगिता परीक्षा से सम्बद्ध १५ पत्रिकायें भी मंगवाई जा रही हैं।

फोटोस्टेट सेवा–

आलोच्य वर्ष में पुस्तकालय फोटोस्टेट मशीन द्वारा पाठकों एवं विभिन्न विभागों का ४३३०५.७० का कार्य किया गया तथा १२ अति दुर्लभ ग्रन्थों को फोटोस्टेट कर सुरक्षित किया गया।

विशिष्ट अतिथि–

वर्ष १९९६–९७ में जो विशिष्ट महानुभाव विश्वविद्यालय पुस्तकालय में आये उनका विवरण निम्न प्रकार है–

क्रं सं०	नाम	पता	दिनांक
१	डा० स्मेकल ओदोलेन	राजदूत, चैक गणराज्य	१३–४–९६
२	श्री महेन्द्र महर्षि	दूरदर्शन समाचार, आकाशवाणी भवन, नई दिल्ली ।	१३–६–९६
४	श्री साहिब सिंह वर्मा	मुख्य मंत्री, दिल्ली सरकार	२९–७–९६
५	श्री जयपाल विद्यांलकार	हंस राज कालेज, दिल्ली	१–११–९७
६	डा० प्रेमकान्त टण्डन	प्रो० हिन्दी विभाग, इलाहाबाद वि०वि०।	३–२–९७
७	डा० पी० के० मुखोपाध्याय	दर्शन विभाग, जाधवपुर वि०वि०, कलकत्ता	१८–२–९७
८.	डा० जी० पी० ठाकुर	डीन, समाज विज्ञान एवं विज्ञान एवं तकनीकी, काशी विद्यापीठ, वाराणसी	२७–२–९७

पुस्तकालय, कार्यवृत्त वर्ष
१९९६–९७ एक नजर

	नाम	वर्ष १९९४–९५	वर्ष १९९५–९६	वर्ष १९९६–९७
१.	पाठकों द्वारा पुस्तकालय उपयोग	२९,५००	३०,०००	३०,०००
२	भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	१,४०७	६१३	५०३
३	नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	३,००८	१,५६६	३,०८१
४	वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	३,२६५	३,५६०	३,६५०
५	सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	३,२५३	३,३३५	३,३७४

६	पत्रिकाओं की संख्या	२३६	२५४	२४८
७	सजिल्द पत्रिकाओं की जिल्दबंदी की सं०	८,०५०	८,२६०	८,३३५
८	पत्रिकाओं की जिल्दबंदी की संख्या	१४६	२१०	७५
६	पुस्तकों की जिल्दबंदी	१,७२८	४४८	६५७
१०	पुस्तकों का कुल संग्रह	१,१८,३३८	१,२०,८४७	१,२४,४३१
११.	सदस्य संख्या	१,६१६	१,६६१	१,८७१
१२.	पुस्तकों पर विलम्ब शुल्क	१,३४०	१,६०६	५६५
१३.	गुम पुस्तकों का मूल्य	२,६८२०४० रु०	५,२८३.१०रु०	४,३८६.२०रु
१४.	विभागीय पुस्तकालय हेतु इश्यू पुस्तकें	१,३४५	१,३६६	१,४२२
१५.	विनिमय में प्राप्त पुस्तकें/पत्रिकायं	७७	५८+२००	६१+२२
१६.	प्रकाशन केन्द्र द्वारा पुस्तकें के विक्रय से प्राप्त राशि	६,०००रु०	६,५००रु०	१७,०५६
१७.	फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित पुस्तकों की सं०	२३	१०	१२
१८.	फोटोस्टेट द्वारा विभिन्न विभागों का किया गया कार्य	४०,०००रु०	४६,८७६.६०रु.	४३३०५.७०
१६.	कुल इश्यू की गई पुस्तक संख्या	३४,७३६	३१,६३१	२२,३०५

GURUKUL KANGRI VISHWAVIDYALAYA, HARDWAR

DETAILS OF OPENING AND CLOSING BALANCE IN RESPECT OF BOOKS FOR THE YEAR 1996-97

NAME OF DEPTT.	OPENING BALANCE No. OF BOOKS AS	COST OF BOOKS	NO OF BOOKS (PURCHASED DURING THE YEAR)	AMOUNT SPENT DURING THE YEAR	CLOSING BALANCE OF BOOKS	TOLAL VALUE OF BOOKS AS ON
Sanskrit	9453	2,52,525.40	150	11,412.90	9603	2,63,938.30
Hindi	11802	4,26,974.99	105	12,104.25	11907	4,39,079.24
Ved	7818	3,22,094.25	80	15,738.00	7898	3,37,832.25
Psychology	3644	2,55,303.15	81	10,327.00	3725	2,65,630.15
History	3710	1,95,577.00	92	15159.00	3802	2,10,736.00
Philosophy	2656	1,90,090.50	40	5,022.50	2696	1,95,113.00
Yoga	56	5,624.20	7	2555.90	63	8,180.10
English	5237	2,22,836.35	55	12839.95	5292	2,35,671.30
Mathematics	3819	2,76,718.68	168	19897.50	3987	2,96,566.18
Chemistry	4088	2,18,381.78	249	46600.70	4337	2,64,982.48
Physics	3801	2,10,359.35	180	18420.00	3904	2,28,779.35
Zoology	3805	2,89,316.83	99	4900.00	3904	3,14,609.93
Botany	2850	2,19,854.20	8	4900.00	2858	2,24,754.20
Gen. Subject	42139	4,81,934.87	35	10233.00	49174	4,92,167.87
Journal	581	5,90,492.24	250	96336.00	831	6,86,828.24
Computer	1913	2,75,319.24	416	89408.85	2329	3,64,728.09
Kanya Gurukul	401	28,256.53	-	-	401	28,256.53
Himalaya Reasearch	5	1,137.00	-	-	5	1,137.00
DCA Computer	139	52,973.30	-	-	139	52,973.39
Economics	56	2,078.60	23	1751.75	79	3,830.35
Donation	3577	17,700.00	503	14377.00	4080	32,077.00
Kanya Mahavidyalaya	750	97,221.00	805	94522.80	1555	1,91,743.80
Pol. Science	41	2,968.10	12	1023.00	53	3,991.30
Management Psy.	465	52,864.35	306	30337.75	776	83,192.10
Environment Science	1,19,906	4688592.00	170	51603.15	170	51603.15
			3834	5,89,809.30	123740	52,78,401.30

राष्ट्रीय छात्र–सेना (एन०सी०सी०)

उपक्रम १/३१ यू०पी० एन०सी०सी० कम्पनी

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

यह सत्र एन.सी.सी. विभाग की प्रगति के रूप में महत्वपूर्ण सत्र रहा। इस सत्र में गत कई वर्षों से प्रस्तावित एक और प्लाटून की संस्तुति एन०सी०सी० मुख्यालय लखनऊ द्वारा की गई।

गत वर्षों की भांति इस सत्र में भी विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों से श्रेष्ठ छात्रों का चयन एन०सी०सी० कैडट के रूप में किया गया तत्पश्चात् चयनित कैडट्स् को ३१ यू०पी० एन०सी०सी० बटालियन के कमान अधिकारी ले० कर्नल जे० एस० पन्नु प्रशासनिक अधिकारी मेजर अरुण कृष्ण एवं कम्पनी कमान्डर कैप्टन डा० राकेश शर्मा के निदेशन में भारतीय थल सेना के प्रशिक्षित जूनियर कमीशन आफिसर एवं हवलदारों द्वारा बी०एच०ई०एल० सेक्टर –१ के परेड मैदान तथा बटालियन मुख्यालय पर गहन प्रशिक्षण दिया गया।

एन०सी०सी० मुख्यालय द्वारा एन०सी०सी० बटालियन का वार्षिकं प्रशिक्षण शिविर इस सत्र में रायपुर देहरादून में लगाया गया। उक्त शिविर में विश्वविद्यालय ३५ कैडट्स् ने पूर्ण उत्साह से प्रशिक्षण प्राप्त किया। उक्त शिविर में वि०वि० के कैडेट्स् ने रेडक्रास सोसाइटी के लिये रक्तदान भी किया। गत वर्षों की भाँति सत्र ९५–९६ का बी० एवं सी० प्रमाण पत्रों का परिणाम भी क्रमशः ८५ प्रतिशत रहा यह प्रमाण पत्र २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के अवसर पर माननीय कुलपति डा० धर्मपाल द्वारा कैडट्स् को वितरित किये गये।

इस सत्र में १६ अगस्त १७ सितमबर ९६ तक लगने वाले रेफ्रेशर कोर्स में बटालियन मुख्यालय द्वारा कम्पनी कमान्डर डा० राकेश शर्मा को प्रशिक्षण हेतु भेजा गया।

विश्वविद्यालय छात्रावास

विश्वविद्यालय के अन्दर सन् १९९५–९६ सन् १९९६–९७ में कुछ नए आधुनिक पाठ्य कम जैसे प्रबन्धन संकाय एवं तकनीकी विज्ञान संकाय से सम्बन्धित विषय खोले गए हैं जिससे बाहर से आने वाले छात्रों की संख्या इस वर्ष अत्यधिक बढ़ी है। बाहर से आने वाले छात्रो की संख्या को देखते हुए छात्रावास के अन्दर इस वर्ष कुछ नए कमरों को निर्माण हुआ है। इससे पूर्व छात्रावास के अन्दर सीमित कमरे थे। अब छात्रावास के अन्दर लगभग १०० छात्रों की रहने की व्यवस्था हो गयी है, जिससे बाहर से आने वाले छात्रों को छात्रावास में रहकर अपने अध्ययन को पूर्ण करने में सुविधा होगी। विश्वविद्यालय छात्रावास सभी संकायों के छात्रों को आवास सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। छात्रावास अध्यक्ष का दायित्व मनोविज्ञान विभाग के डॉ० एस०के० श्रीवास्तव को दिया गया है।

शारीरिक शिक्षा विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत इस सत्र में प्रथम बार विश्वविद्यालय की एथलेटिक्स टीम ने अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें सभी खिलाडियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा। प्रतियोगिता का आयोजन एल०एन०आई०पी०ई०, ग्वालियर द्वारा किया गया था। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के एम०ए० योग प्रथम वर्ष के छात्र श्री तेज प्रसाद पोखरियाल ने व्यक्तिगत तृतीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। डा० वाई०एस० परमार विश्वविद्यालय नौणीं, हिमाचल द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की टीम ने क्वाटर फाईनल तक खेलकर भविष्य में अच्छे खेल की संभावनायें प्रकट की। वि०वि० के छात्र जयवीर सिंह रावत ने जय नारायण वि०वि० जोधपुर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय बॉक्सिंगं प्रतियोगिता में क्वाटर फाईनल तक खेल कर विश्वविद्यालय का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। वि०वि० की वॉलीबाल टीम ने बी०एस०एम०, कॉलिज, रुड़की द्वारा आयोजित क्षेत्रीय अन्तर वि०वि० मुखिया ज़ी मैमोरियल कप में प्रथम स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम ऊँचा किया। इस वर्ष विश्वविद्यालय में खिलाडियों की आवश्यकताओं के अनुरूप हॉकी, कबड्ड़ी, क्रिकेट तथा हॉकी एवं वॉलीबॉल आदि टीमों के लिए कोचिंग कैम्प का आयोजन किया, जिसके परिणामस्वरूप इस वर्ष इन टीमों का प्रदर्शन काफी हद तक सकारात्मक एवं सराहनीय रहा।

इस वर्ष डा० आर०के०एस० डागर ने दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित सेमीनार में भाग लिया। सत्र १९९६–९७ में अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली ने डा० आर०के०एस० डागर को अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय वेट लिफ्टिंग (पु०), वेट लिफ्टिंग (महिला), पावर लिफ्टिंग, एवं शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता के पर्यवेक्षण की जिम्मेदारी सौंपी गई, जिसका निर्वाह उन्होंने भली भाँति किया।

कन्या गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून

कन्या गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय ४७ सेवक आश्रम रोड, देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का द्वितीय परिसर है। यहाँ स्नातक स्तर की कक्षाएँ पचास के दशक से ही चल रही हैं। १.१.१९८६ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस महाविद्यालय को विधिवत् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का द्वितीय परिसर घोषित किया गया। १९९३ से यहाँ एम०सी०ए० की कक्षाएँ भी चल रही हैं। १९९७–९८ के सत्र से यहाँ एम०बी०ए० एवं पी०एम०आई०आर० की कक्षाएं भी प्रारम्भ हो रही हैं। इस प्रकार इस परिसर की अभूतपूर्व प्रगति माननीय कुलपति डा० धर्मपाल जी के प्रयासों से सम्भव हो गई है।

महाविद्यालय की छवि :–

इस महाविद्यालय में सभी छात्राएँ छात्रावास में ही रहकर अध्ययन करती हैं। यहाँ की छात्राओं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहता है।

वेद एवं संस्कृत विभागः–

इस वर्ष इस विभाग में वेद का अध्यापन डा० शीला डागा के द्वारा किया गया। इनका शोध कार्य वेद एवं भाषाविज्ञान पर है। शोध प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित है। अनेक अखिल भारतीय वेद संस्कृत संगोष्ठियों में शोध पत्र पढ़े है एवं कुछ प्रकाशित हैं।

श्रीमती सरोज नौटियाल ने अपना कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न किया। महाविद्यालय में समय–समय पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रमां–स्वतन्त्रता दिवस, स्वाधीनता दिवस, जन्मोत्सव, श्रद्धानन्द दिवस आदि पर छात्राओं ने संस्कृत में स्वागत गान, वन्दना, भाषण, नाटक आदि प्रस्तुत किये। संस्कृत दिवस पर संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला।

हिन्दी विभाग

डा० श्रीमती रंजना राजदान इस विभाग की प्रवक्ता हैं। अध्ययन एवं अध्यापन कार्य परिश्रम एवं उत्साह से करती हैं।

अंग्रेजी विभाग

श्रीमती हेमलता ने इस वर्ष विद्यालंकार के साथ–२ एम०ए० प्रथम वर्ष की कक्षाओं का अध्यापन भी किया। इन्होंने अपना शोध प्रबन्ध भी विश्वविद्यालय में जमा किया। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्राओं ने अंग्रेजी में नाटक, गीत आदि प्रस्तुत किये।

मनोविज्ञान विभाग

१९९६–९७ के सत्र में इस विभाग का भी शुभारम्भ हो गया है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास

इस सत्र में इस विभाग में डा. रेणु शुक्ला की प्रवक्ता पद पर नियुक्ति हुई। इन्होंने छात्राओं को अत्यन्त परिश्रम एवं उत्साह से पढ़ाया। कुछ शोध पत्र भी प्रकाशित हुए।

संगीत विभाग :–

इस विभाग में छात्राओं को भारतीय शास्त्रीय संगीत गायन एवं वादन (सितार) की शिक्षा

दी जाती है। साथ ही साथ विभिन्न प्रान्तों का लोक संगीत गायन एवं नृत्य आदि भी सिखाया जाता है। इस वर्ष महाविद्यालय एवं देहरादून नगर में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में श्रीमती प्रतिभा शर्मा एवं डा० श्रीमती मीरा दास गुप्ता ने बहुत परिश्रम एवं उत्साह से छात्राओं को गीत, भजन, लोकगीत, लोकनृत्य, समूहगान आदि सिखाये।

श्रीमती प्रतिभा शर्मा जी आर्य सामज पर सुन्दर गीतों की एक टेप–कैसेट तैयार कर रही हैं, यह लगभग अन्तिम चरणों में है।

गढ़वाल विश्वविद्यालय ने इन्हें बोर्ड ऑफ स्टडीज की सदस्या मनोनीत किया है।

डा० मीरा दास गुप्ता ने इस वर्ष संगीत में पी०एच०डी उपाधि प्राप्त की।

संगीत के कार्यक्रमों में:–

स्पिक मैके द्वारा आयोजित गोष्ठी "संगीत में रागों का विभाग" में भाषण दिया।

चित्रकला विभाग

इस विभाग की छात्रायें चित्रकला की अनेक विधाओं का ज्ञान प्राप्त करती हैं। विभिन्न अवसरों पर सुन्दर सुसज्जित पृष्ठभूमि प्रस्तुत करना इस विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

कम्प्यूटर विभाग :–

विगत चार वर्षों से यह विभाग उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है। छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। प्रयोगशाला में नये कम्प्यूटर एवं प्रिन्टर क्रय किये गये। स्लाइड प्रोजेक्टर भी क्रय किया गया।

कम्प्यूटर विभाग में छात्रावास का विस्तार किया गया है। जिससे छात्रावास की क्षमता दुगनी हुयी है।

इस वर्ष छात्रावास में श्रीमती आभा विद्यालंकार, एम०ए० ने आश्रम अध्यक्षा का कार्यभार संभाला। छात्राओं को प्रातः सायं सन्ध्या हवन कराया जाता है। स्वतंत्रता दिवस, जन्मोत्सव आदि विभिन्न समारोहों में छात्राएं सम्मिलित हुईं।

क्रीड़ा विभाग :–

१९९६–९७ के सत्र में भी प्रतिवर्ष की भाँति छात्राओं ने बैडमिन्टन, चैस, कैरम, टेबिल–टेनिस का अभ्यास किया। जिला स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में छात्राओं ने अच्छा प्रयास किया एवं पुरस्कार प्राप्त किये।

श्रीमती बलबीर कौर ने विभाग को सुचारु रूप से चलाया। बास्केट बाल के पोल्स एवं बोर्ड पुराने होने से क्षतिग्रस्त हो गये थे, इस वर्ष नये लगये गये।

पुस्तकालय :–

महाविद्यालय में एक वृहत् पुस्तकालय है। इसका संचालन एवं समस्त कार्य श्रीमती सुदेश खन्ना द्वारा अकेले ही किया जाता है। इस वर्ष पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की पुस्तकें क्रय की गयी। पुस्तकालय में हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत की अनेक पत्र पत्रिकायें नियमित रूप से आती है। श्रीमती सुदेश खन्ना ने इस वर्ष अलंकार (तृतीय वर्ष) में समाजशास्त्र का अध्यापन कार्य भी किया। सरस्वती यात्रा की व्यवस्था भी इन्हीं के द्वारा की जाती है।

प्रतिवर्ष की भांति इस सत्र में छात्राएं सरस्वती यात्रा पर गयी।

शिक्षकेत्तर अन्य कर्मचारियों ने भी अपना–अपना कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न किया।

वित्त एवं लेखा

मास सितम्बर ६६ में विश्वविद्यालय का १६६६–६७ का संशोधित बजट एवं वर्ष १६६७–६८ का अनुमानित बजट वित्त समिति की बैठक दिनांक २–६–६६ में प्रस्तुत किया गया। वित्त समिति ने निम्न प्रकार बजट स्वीकृत किया –

बजट सारांश

संशोधित अनुमान ६६–६७		बजट अनुमान ६७–६८
१. वेतन एवं भत्ते आदि	१,६६,६३,७३०	२,१५,६७,४८०
२. अंशदायी भविष्यनिधि	८२,६००	८५,०००
३. अन्य व्यय	७५,६२,५७५	५७,३७,७५०
योग व्यय	२,७३,३८,६०५	२,७३,६०,२३०
आय	६३,०५,७५०	६३,०६,७५०
योग	२,१०,३३,१५५	२,१०,८०,४८०

समीक्षाधीन वर्ष १६६६–६७ में वित्त समिति एवं कार्य परिषद द्वारा २,१०,३३,०० का अनुरक्षण-अनुदान स्वीकृत किया गया था किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा १,६७,५६,००० का अनुदान ही दिया गया। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए है, उनका विवरण आगे दिया गया है।

१९९६–९७ में विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान का विवरण

अष्टम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से निम्न अनुदान प्राप्त हुए–

१. भवन निर्माण के लिये	२,६४,०००.००
२. विकास अनुदान वेतन	३,००,०००.००

अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से :–

१. अनएसाइण्ड ग्रान्ट	२,००,०००.००
२. प्रौढ़ शिक्षा	१,२२,६६५.००
३. पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु	८,३७,५००.००
४. योग प्रशिक्षण हेतु	६८,०००.००

मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट

१. डा० रूपकिशोर शास्त्री	८७,००,००
२. डा० बी०डी० जोशी	२१,६००.००
३. डा० डी०के० महेश्वरी	१,३७,१००.००

भारत सरकार से प्राप्त

वनस्पति सेमीनार ग्रान्ट – डा० डी० के० महेश्वरी	२५,०००.००

उत्तर प्रदेश सरकार

१. मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० डी० के० महेश्वरी	६६,३६५.००
२. वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली	२,००,००,००

अन्य स्रोतों से प्राप्त :–

१. आई०सी०पी०आर०	दर्शन सेमीनार	१,००,०००.००
२. आई०एस०सी०ई०	प्रौढ़ शिक्षा सेमीनार	१८,०००.००
३. डी०एस०टी०	वनस्पति सेमीनार	३०,०००.००
४. डी०बी०टी०	वनस्पति सेमीनार	२०,०००.००
५. सी०एस०आई०आर०	वनस्पति सेमीनार	१०,०००.००
६. एम०एन०ई०एस०	वनस्पति सेमीनार	१५,०००.००
७. सी. एस० आई० आर०	मनोविज्ञान सेमीनार	२०,०००.००
८. आई० सी०पी० आर०	मनोविज्ञान सेमीनार	१०,०००.००
९. आई० सी० एम० आर०	मनोविज्ञान सेमीनार	५,०००.००

आय का विवरण

१९९६–९७

क्रम स०	आय का मद	धनराशि
	(क) अनुदान का मद	
	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	१,६७,५६,०००.००
	योग (क)	१,६७,५६,०००.००
	(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय:–	
१.	पंजीकरण शुल्क	. ६३,४००.००
२.	पी०एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	५,११०.००
३.	पी० एच०डी० मासिक शुल्क	४२,७८०.००
४.	परीक्षा शुल्क	१५,७६,३३०.००
५.	अंक – पत्र शुल्क	५४,६३०.००
६.	विलम्ब दण्ड एवं टूट–फूट	२,४८,३०६.००
७.	माइग्रेशन शुल्क	११,६८०.००
८.	प्रमाण–पत्र शुल्क	३२,११५.००
९.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों का शुल्क	२,६६,६७६.००
१०.	सेवा आवेदन	२६,८५०.००
११.	शिक्षा शुल्क आदि	२६,५७,६५५.००
१२.	प्रवेश एवं पुनः प्रवेश शुल्क	३८,२३०.००
१३.	भवन शुल्क	१,४०,६३०.००
१४.	क्रीडा शुल्क	२,१४,६८०.००
१५.	पुस्तकालय शुल्क	१,६५,५१५.००
१६.	परिचय पत्र शुल्क	१३,०६५.००
१७.	ऐसोसियेशन शुल्क	१२,०५५.००
१८.	प्रयोगशाला शुल्क	१६,३६,२४५.००
१९.	मंहगाई शुल्क	१,४०,६३०.००
२०.	पुस्तकालय से आय	१५,६५६.००
२१.	विकास	१८,७७,५७५.००
२२.	पड़ताल शुल्क	१,८२०.००
२३.	पत्रिका शुल्क	४१,८३०.००
२४.	अन्य आय	११,३२,३२४.००

२५. किराया प्रोफेसर क्वार्टर	२६,८८०.००
२६. वाहन ऋण	६४,०६६.००
२७. छात्रावास	१,१६,७६०.००
२८. श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र	८,६८४.००
२६. निर्धनता शुल्क	११,६३५.००
३०. साईकिल स्टैण्ड शुल्क	८१,८५०.००
३१. संग्रहालय	५५०.००
३२. विद्युत	१,८००.००
३३. कमरा किराया अतिथि ग्रह	५,१७५.००
३४ प्रोजेक्टर	१३,५००.००
योग	१,११,४८,११०.००
सर्व योग क+ख	३,०६,०४,११०,००

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

सत्र १९९६–९७

क्र०सं०	व्यय का मद	धनराशि
क		
१.	वेतन	१,८७,०९,६७७.००
२.	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	१,१०,०७६.००
३.	ग्रेच्युटी	२,४३,३२८.००
४.	पेंशन	८,८०,६६२.००
	योग	१,९९,४३,७४३.००
ख		
१.	विद्युत एंव जल	८,९७,७४८.००
२.	टेलीफोन	८२,६९१.००
३.	मार्ग व्यय	३,१४,६५८.००
४.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	६६,१८०.००
५.	लेखन सामग्री एवं छपाई	२,२२,४७०.००
६.	डाक एवं तार	३७,२२६.००
७.	वाहन एवं पैट्रोल	६,१५,६४२.००
८.	विज्ञापन	६६,३२४.००
९.	कानूनी व्यय	१,६२,३५६.००
१०.	आतिथ्य व्यय	१,२२,०२१.००
११.	आडिट व्यय	
१२.	दीक्षान्त व्यय	६५,६०३.००
१३.	लोन संरक्षण	४,०३८.००
१४.	भवन मरम्मत	४६,८९,६८०.००
१५.	आकस्मिक व्यय	५,११३.००
१६.	मिश्रित व्यय	२,०७,७११.००
१७.	उपकरण एवं मरम्मत	७,०६,२९३.००
१८.	फर्नीचर एवं साज सज्जा	४,४०,१८६.००
१९.	सदस्यता अंशदान	४०,६३०,००
२०.	परीक्षकों का पारिश्रमिक	२,८६,७६४.००
२१.	मार्ग व्यय परीक्षक	१,०५,६४७.००
२२.	निरीक्षक व्यय	५६,५२०.००
२३.	प्रश्न पत्रों की छपाई	२,१८,३७९.००
२४.	डाक तार व्यय	१८,१९१.००
२५.	कापियों का मूल्य	१५,७८८.००
२६.	लेखन सामग्री	२४,५९५.००
२७.	अन्य व्यय	५,१८४.००

२८.	नियमावली तथा पाठ्य विधि छपाई	५४,०००.००
२९.	छात्रों की छात्रवृत्ति	४७,७२९.००
३०.	वागवर्धिनी सभा	५,१२८.००
३१.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	१५,८६०.००
३२.	सरस्वती यात्रा	१३,१७९.००
३३.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	१५,४४५.००
३४.	खेल–कूद एवं क्रीडा	१,६५,८१४.००
३५.	सेमीनार	२,८१५.००
३६.	रसायन प्रयोगशाला	४,४१,८६६.००
३७.	भौतिक प्रयोगशाला	२,०८,२९२.००
३८.	जन्तु विज्ञान प्रयोगशाला	१,७०,३००.००
३९.	वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	१,०५,६७९.००
४०.	गैस प्लान्ट	१०,३७५.००
४१.	भौतिक विज्ञान शोध पत्रिका	१,२४३.००
४२.	पुस्तकें	३,९०,८६४.००
४३.	जिल्द बन्दी एवं पुस्तक सुरक्षा	१४,०६३.००
४४	कैटलोग एवं काड्र्स	३०,२३४.००
४५.	पत्रिकाओं की छपाई	७,८६५.००
४६.	निर्धन छात्र कोष	२,०००.००
४७.	समाचार पत्र–पत्रिकाएं	१,०२,५८३.००
४८.	पढ़ते हुए कमाओं	५,१३०.००
४९.	वाहन हेतु ऋण	२,०६६.००
५०.	वेद प्रयोगशाला	२,९५५.००
५१.	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	१३,१३८.००
५२.	योग	११,९१५.००
५३.	गणित विभाग	६,८२७.००
५४.	श्रद्धानन्द प्रकाशन	२,०४०.००
५५.	कम्प्यूटर रख–रखाव	८६,९७५.००
५६.	अंग्रेजी लैब	५,१४०.००
५७.	हिन्दी पत्रकारिता	८३३.००
५८.	कम्प्यूटर स्टेशनरी	१६,९८०.००
५९.	पुस्तकालय बीमा	६,०१०.००
६०.	कम्प्यूटर उपकरण	२,२३,८३५.००
६१.	माइक्रोबायलोजी	१,९०,९४२.००
६२.	पर्यावरण	२,६७,५४७.००
६३.	छात्र कल्याण	१२,३०९.००
	कुल आकस्मिक व्यय	१,२१,७१,२४७.००
	कुल वेतन व्यय	१,९९,४३,७४३.००
	कुल व्यय	३,२१,१४,९९०.००

❖❖❖

प्राध्यापकों की सूची

प्राच्य विद्या संकाय

क्र.सं.	नाम कर्मचारी	पदनाम
वेद विभाग		
१.	डॉ० मनुदेव बन्धु	रीडर
२.	डॉ० रूप किशोर शास्त्री	प्रवक्ता
३.	डॉ० दिनेश चन्द्र	प्रवक्ता
४.	डॉ० सत्यदेव निगमालंकार	प्रवक्ता
संस्कृत विभाग		
१.	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री	आचार्य (उपकुलपति)
२.	डॉ० महावीर अग्रवाल	रीडर
३.	डॉ० सोमदेव शतांशु	रीडर
४..	श्री रामप्रकाश शर्मा	रीडर
५.	श्री ब्रह्मदेव	पवक्ता
इतिहास		
१.	डॉ० एस०एन० सिंह	प्रोफेसर
२.	डॉ० कशमीर सिंह	रीडर
३.	डॉ० राकेश कुमार शर्मा	प्रवक्ता
४.	डॉ० प्रभात कुमार	प्रवक्ता
५.	डॉ० देवेन्द्र कुमार गुप्ता	प्रवक्ता
दर्शनशास्त्र		
१.	डॉ० जयदेव वेदालंकार	प्रोफेसर
२.	डॉ० विजयपाल शास्त्री	रीडर
३.	डॉ० त्रिलोक चन्द्र	रीडर
४.	डॉ० उमराव सिंह बिष्ट	रीडर
५.	डॉ० सोहनलाल सिंह आर्य	प्रवक्ता
योग विभाग		
१.	डॉ० ईश्वर भारद्वाज	प्रवक्ता

श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान

१.	डॉ० भारत भूषण	प्रोफेसर

मानविकी संकाय

हिन्दी

१.	डॉ० विष्णुदत्त राकेश	प्रोफेसर
२.	डॉ० सन्तराम वैश्य	रीडर
३.	डॉ० ज्ञानचन्द्र रावल	रीडर
४.	डॉ० भगवान देव पांडेय	रीडर
५.	श्री कमलकांत बुधकर	प्रवक्ता

अंग्रेजी

१.	डॉ० नारायण शर्मा	प्रोफेसर
२.	श्री सदाशिव भगत	रीडर
३.	डॉ० श्रवण कुमार शर्मा	रीडर
४.	डॉ० अम्बुज कुमार शर्मा	रीडर
५.	डॉ० कृष्ण अवतार अग्रवाल	प्रवक्ता

मनोविज्ञान

१.	श्री आमप्रकाश मिश्रा	प्रोफेसर
२.	श्री सतीश चन्द्र धमीजा	रीडर
३.	डॉ० सूर्य कुमार श्रीवास्तव	रीडर
४.	डॉ० चन्द्रपाल खोखर	प्रवक्ता

प्रबंधन संकाय

१.	डॉ० विवेक साहनी	प्रवक्ता
२.	श्री वी०के० सिंह	प्रवक्ता

विज्ञान संकाय

गणित विभाग

१.	डॉ० श्यामलाल सिंह	प्रोफेसर
२.	डॉ० वीरेन्द्र अरोड़ा	रीडर
३.	डॉ० विजयेन्द्र कुमार	रीडर
४.	डॉ० महीपाल सिंह	रीडर
५.	डॉ० हरवंशलाल गुलाटी	रीडर
६.	डॉ० राजेन्द्र कुमार शर्मा	प्रवक्ता

भौतिकी

१.	श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर	रीडर
२.	डॉ० बुद्धप्रकाश शुक्ला	रीडर
३.	डॉ० राजेन्द्र कुमार अग्रवाल	रीडर
४.	डॉ० पी०पी० पाठक	प्रवक्ता
५.	डॉ० यशपाल सिंह	प्रवक्ता (अवकाश पर)

रसायन विभाग

१.	श्री रामकुमार पालीवाल	रीडर
२.	डॉ० ए०के० इन्द्रायण	रीडर
३.	डॉ० कौशल कुमार	रीडर
४.	डॉ० आर०डी० कौशिक	रीडर
५.	डॉ० रणधीर सिंह	रीडर
६.	डॉ० श्रीकृष्ण	प्रवक्ता

कम्प्यूटर

१.	डॉ० विनोद कुमार शर्मा	रीडर
२.	श्री कर्मजीत भाटिया	प्रवक्ता
३.	श्री सुनील कुमार	प्रवक्ता

जीव विज्ञान संकाय

वनस्पति

१.	डॉ० डी०के० महेश्वरी	प्रोफेसर
२.	डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक	रीडर
३.	डॉ० रमेश चन्द्र दूबे	रीडर
४.	डॉ० गंगा प्रसाद गुप्ता	प्रवक्ता
५.	डॉ० नवनीत	प्रवक्ता

जन्तु विज्ञान

१.	डॉ० बी०डी० जोशी	प्रोफेसर
२.	डॉ० तिलक राज सेठ	रीडर
३.	डॉ० अशोक कुमार चोपड़ा	रीडर
४.	डॉ० देवराज खन्ना	प्रवक्ता

पर्यावरण

१.	डॉ० दिनेशचन्द्र भट्ट	रीडर
२.	डॉ० प्रकाश चन्द्र जोशी	प्रवक्ता

कन्या गुरुकुल, देहरादून

१.	श्रीमती सुदेश खन्ना	पुस्तकालयाध्यक्ष
२.	श्रीमती बलबीर कौर	पी०टी०आई०
३.	श्रीमती भागेश्वरी	स्टोर कीपर
४.	श्री ओमप्रकाश नवानी	जू०असि०कम टाइपिस्ट
५.	श्रीमती महेश्वरी देवी	सेविका
६.	श्रीमती बिमला	स० कर्म०
७.	श्री मुन्नालाल	माली
८.	श्री सूरत सिंह राणा	भृत्य
९.	श्री वीर बहादुर	चौकीदार

कन्या गुरुकुल, हरिद्वार

१.	श्री मदनपाल सिंह	जू०असि०कम–टाइपिस्ट
२.	श्री हरपाल सिंह	सम्पदाधिकारी
३.	श्रीमती ममता गर्ग	लिपिक
४.	श्रीमती बाला देवी	सेविका

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

१.	श्रीमती शीला डागा	प्राचार्या
२.	श्रीमती प्रतिभा शर्मा	वरिष्ठ प्रवक्ता
३.	श्रीमती मीरादास गुप्ता	वरिष्ठ प्रवक्ता
४.	श्रीमती सरोज नौटियाल	वरिष्ठ प्रवक्ता
५.	श्रीमती रंजना राजदान	प्रवक्ता
६.	श्रीमती हेमलता	प्रवक्ता
७.	श्रीमती निपुर	प्रवक्ता
८.	श्रीमती रेणु शुक्ला	प्रवक्ता

प्रबन्धन संकाय

१.	डॉ० सुरेश राणा	प्रवक्ता
२.	डॉ० बिन्दु अरोड़ा	प्रवक्ता
३.	डॉ० पतिराज कुमारी	प्रवक्ता

महिला शिक्षा संकाय, द्वितीय परिसर, ज्वालापुर

१.	डॉ० सुनृता विद्यालंकार	प्रवक्ता / प्रभारी

शिक्षकेत्तर कर्मचारी

प्रशासन

१.	डॉ० धर्मपाल	कुलपति
२.	डॉ० एस.एन. सिंह	कुलसचिव

३.	श्री जयसिंह गुप्ता	वित्त अधिकारी
४.	श्री नन्दगोपाल आनन्द	अनुभाग अधिकारी, लेखा
५.	श्री आनन्द कुमार सिह	अनुभाग अधिकारी, स्थापना
६.	श्री महेन्द्र सिंह नेगी	अनुभाग अधिकारी, शि.प.
७.	श्री एस०पी० सिंह	नि.स. सचिव (कुलपति)
८.	श्री गिरीश सुन्दरियाल	नि.स., कुलपति
९.	श्री करतार सिंह	सम्पदा अधिकारी
१०.	श्री गन्धर्व सैन	उद्यान अधिकारी
११.	श्री वेदपाल सिंह	सुरक्षाधिकारी
१२.	श्री कमलेश नैथानी	निजि सचिव, कुलसचिव
१३.	श्री प्रेमचन्द्र जुयाल	सहायक
१४.	श्री देवी प्रसाद	सहायक
१५.	श्री रामनरेश शर्मा	वंरिष्ठ सहायक
१६.	डॉ० प्रदीप कुमार जोशी	सहायक
१७.	श्री यशपाल राणा	सहायक
१८.	श्री कैलाश चन्द्र वैष्णव	विद्युतकार
१९.	श्री संजीव कुमार	जे.ई.
२०.	श्री वीरेन्द्र सिंह असवाल	जू.असि./टाइपिस्ट
२१.	श्री हेमन्त कुमार	जू.असि./टाइपिस्ट
२२.	श्री बालकृष्ण शुक्ला	जू.असि./टाइपिस्ट
२३.	श्री महावीर सिंह	जू.असि./टाइपिस्ट
२४.	श्री नन्द किशोर	जू.असि./टाइपिस्ट
२५.	श्री मदनगोपाल उपाध्याय	जू.असि./टाइपिस्ट
२६.	श्री रामस्वरूप	जू.असि./टाइपिस्ट
२७.	श्री कालूराम त्यागी	जू.असि./टाइपिस्ट
२८.	श्री अशोक कुमार डे	जू.असि./टाइपिस्ट
२९.	श्री राज किशोर शर्मा	जू.असि./टाइपिस्ट
३०.	श्री कुमुद चन्द्र जोशी	जू.असि./टाइपिस्ट
३१.	डॉ० दीपक घोष	जू.असि./टाइपिस्ट
३२.	श्री वीर सिंह	जू.असि./टाइपिस्ट
३३.	श्री अजय कुमार	जू०असि०कम०टाइपिस्ट
३४.	श्री रमाशंकर	जू.असि.कम–टाइपिस्ट
३५.	श्री हरपाल सिंह	जू.असि./टाइपिस्ट
३६.	श्री प्रेम सिंह	जू.असि./टाइपिस्ट
३७.	श्री अशोक कुमार	कारपेन्टर
३८.	श्री गिरिश चन्द्र जोशी	पलम्बर
३९.	श्री जगमोहन सिंह नेगी	दफ्तरी

४०.	श्री दिवान सिंह	कुक
४१.	श्री श्रीराम	ड्राईवर
४२.	श्री मांगेराम	ड्राईवर
४३.	श्री रामकृष्ण	भृत्य
४४.	श्री चन्द्रभान	भृत्य
४५.	श्री महानन्द	भृत्य
४६.	श्री योगेन्द्र सिंह	भृत्य
४७.	श्री बलबीर सिंह	भृत्य
४८.	श्री मदनमोहन सिंह	भृत्य
४६.	श्री घासीराम	भृत्य
५०.	श्री महेश चन्द्र जोशी	भृत्य
५१.	श्री कमल सिंह	भृत्य
५२.	श्री राजेन्द्र सिंह	भृत्य
५३.	श्री माता प्रसाद	चौकीदार
५४.	श्री राम सिंह	चौकीदार
५५.	श्री रूल्हा सिंह	चौकीदार
५६.	श्री जल सिंह	चौकीदार
५७.	श्री ईसम सिंह	चौकीदार
५८.	श्री भूरी सिंह	चौकीदार
५६.	श्री योगेन्द्र नाथ शर्मा	चौकीदार
६०.	श्री राम बहादुर	चौकीदार
६१.	श्री हिम्मत सिंह	चौकीदार
६२.	श्री रमेश चन्द्र	चौकीदार
६३.	श्री श्याम सिंह	चौकीदार
६४.	श्री चन्द्र कुमार मल	चौकीदार
६५.	श्री राम प्रसाद राय	चौकीदार
६६.	श्री जसबीर सिंह	चौकीदार
६७.	श्री श्यामलाल	माली
६८.	श्री हरीराम	माली
६६.	श्री ब्रजपाल	माली
७०.	श्री घिर्राऊ	माली
७१.	श्री बाबूलाल	माली
७२.	श्री राम अजोर	माली
७३.	श्री गुरूप्रसाद	माली
७४.	श्री बालेश्वर	सफाई कर्मचारी
७५.	श्री आनन्द	सफाई कर्मचारी

प्राच्य विद्या संकाय

१.	श्री रामकुमार सिंह डागर	डी.पी.ई.
२.	श्री सुरेन्द्र कुमार	योग प्रशिक्षक
३.	श्री राजपाल सिंह	जू.असि./टाइपिस्ट
४.	श्री सन्दीप कुमार	जू.असि./टाइपिस्ट
५.	श्री राजेश कुमार	भृत्य
६.	श्री महेन्द्र कुमार	भृत्य
७.	श्री राजकुमार	भृत्य
८.	श्री देवेन्द्र कुमार	माली
६.	श्री सन्तोष कुमार	फी०अटे०

मानविकी संकाय

१.	श्री लाल नरसिंह	प्रयोगशाला सहायक
२.	श्री सुभाष चन्द्र कपिल	जू.असि./टाइपिस्ट
३.	श्री शिवकुमार	भृत्य
४.	श्री मनोज कुमार	भृत्य
५.	श्री सुधाकर सिंह	भृत्य
६.	श्री मान सिंह	चौकीदार
७.	श्री बलजीत सिंह	सफाई कर्मचारी

विज्ञान संकाय

१.	श्री धर्मवीर सिंह	जू.असि./टाइपिस्ट
२.	श्री हंसराज जोशी	जू.असि./टाइपिस्ट
३.	श्री प्रमोद कुमार	लैब टेक्निशियन
४.	श्री शशीभूषण	लैब टैक्निशियन
५.	श्री ठकुरा सिंह	प्रयोगशाला सहायक
६.	श्री नरेश कुमार	प्रयोगशाला सहायक
७.	श्री प्रवीण कुमार	प्रयोगशाला सहायक
८.	श्री मान सिंह	गैसमैन
६.	श्री जयपाल सिंह	लैब अटै०
१०.	श्री पुरुषोत्तम कुमार	लैब अटै०
११.	श्री बाबादीन	लै० अटै०
१२.	श्री अरुण कुमार	लैब अटै०
१३.	श्री सुशील कुमार	लैब अटै०
१४.	श्री रामदास	भृत्य
१५.	श्री राय सिंह	भृत्य
१६.	श्री राजपाल सिंह	भृत्य

१७.	श्री विनोद कुमार	सफाई कर्मचारी

कम्प्यूटर

१.	श्री दिनेश कुमार	सि० मैनेजर
२.	श्री अचल कुमार गोयल	प्रोग्रामर
३.	श्री महेन्द्र कुमार असवाल	कम्प्यूटर आपरेटर
४.	श्री मनोज कुमार	कम्प्यूटर आपरेटर
५.	श्री शशीकान्त	जू० स्टैनोग्राफर

एम०सी०ए०

१.	श्री द्विजेन्द्र कुमार पन्त	तकनीक सहायक
२.	श्री वेदव्रत	तकनीक सहायक

जीव विज्ञान संकाय

१.	कृष्ण कुमार शर्मा	जू० असि०/टाइपिस्ट
२.	हरिशचन्द्र	प्रयोगशाला सहायक
३.	रूद्रमणी	प्रयोगशाला सहायक
४.	श्री चन्द्रप्रकाश	प्रयोगशाला सहायक
५.	रजत सिन्हा	लिपिक/स्टोर कीपर
६.	प्रीतम लाल	लैब ब्वाय
७.	विजय सिंह	लैब ब्वाय
८.	रतनलाल	भृत्य
६.	शशीकान्त	प्रयोगशाला सहायक
१०.	वीरेन्द्र सिंह	माली
११.	राम सुमंत	माली
१२.	सुशील कुमार	सफाई कर्मचारी
१३.	चमनलाल	भृत्य

एम०बी०ए०

१.	श्री अनिल कुमार धीमान	सेमी०प्रो०असि०

पुस्तकालय

१.	डॉ० जगदीश विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष
२.	डॉ० गुलजार सिंह चौहान	सहा० पु० अध्यक्ष
३.	श्री उपेन्द्र झा	प्रो० सहायक
४.	श्री ललित किशोर	सेमी० प्रो० सहायक
५.	श्री मिथिलेश कुमार	सेमी०प्रो० सहायक
६.	श्री कौस्तुभ पांडेय	सेमी०प्रो० सहायक
७.	श्री सोमपाल सिंह	सहायक

८.	श्री आनन्द बल्लभ जोशी	जू० असि० कम टाइपिस्ट
६.	श्री विजयेन्द्र सिंह	जू० असि० कम टाइपिस्ट
१०.	श्री नवीन कुमार	जू० असि० कम टाइपिस्ट
११.	श्री राजीव कुमार	जू० असि० कम टाइपिस्ट
१२.	श्री जयप्रकाश	बुक बाइंडर
१३.	श्री गोविन्द्र सिंह	बुक लिफ्टर
१४.	श्री घनश्याम सिंह	भृत्य
१५.	श्री बृजमोहन शर्मा	भृत्य
१६.	श्री कुलभूषण शर्मा	भृत्य
१७.	श्री रामपद राय	भृत्य
१८.	श्री रविन्द्र कुमार	भृत्य
१६.	श्री विजयेन्द्र कुमार सिंह	भृत्य

पुरातत्व संग्रहालय

१.	श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	संग्रहपाल
२.	श्री सुखबीर सिंह	सहा० क्यूरेटर
३.	श्री अनिल कुमार सिंह	संग्रहपाल
४.	श्री रमेशचन्द्र पाल	गैलरी अटैन्डेन्ट
५.	श्री ओमप्रकाश	गैलरी अटैन्डेन्ट
६.	श्री अरविन्द कुमार	जू०असि० कम टाइपिस्ट
७.	श्री वासुदेव मिश्रा	चौकीदार
८.	श्री रामजीत	माली
६.	श्री फूल सिंह	सफाई कर्मचारी

प्रौढ़ शिक्षा

१.	डॉ० आर०डी० शर्मा	स० निदेशक
२.	श्री जसबीर सिंह मलिक	परि० अधिकारी

Statment showing the represention of SCS/STS during the year 1995-96 (upto 1-1-1996) in admussion, teacher Non-teaching posts-students, hostals, staff quarter felloweships etc.

Note : Among Non-teaching staff, safal karamcharis been included in Group D

DEEMED UNIVERSITIES

S.No.	Name of the University	State	Teaching posts P	R	L	Non-teaching posts A	B	C	D	Admission	non-proflofl	Research fellowship	Hostel student	Staff T. staff	Other. N.T. staff
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1.	UTTER PRADESH GURUKUL KANGRI UNIVERSITI, HARDWAR		10	24	32	11	23	54	73	n.av.	n.av.	2	24	8	8
		Total													
		SC %	-	1	-	-	1	2	20	n.av.	n.av.	-	-	-	-
		ST %	-	-	-	-	-	-	7	n.av.	n.av.	-	6	-	1

NOTE: 7 Staff Karamchari have been included in Group D.

Enrolment

1. a) Research M.Phil/Ph.d : 95-96=62 96-97=upto 32
   b) Postgraduate : 857
   c) Undergraduate : 1119
2. Women's enrolment : 532
3. SC/ST enrolment : 89

दीक्षान्त समारोह १९९७ में पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	निर्देशक	विभाग	शोध प्रबन्ध का नाम
१–	नरेन्द्रपाल सिंह	डॉ० भारतभूषण	वैदिक सा०	उपनिषदों का मन शरीर पक्ष
२–	स्वामी प्रकाश स्वरूप	डॉ० भारतभूषण	वैदिक सा०	उपनिषदों में वर्णित विभिन्न विधाओं का समीक्षात्मक अध्ययन
३–	हरिशंकर	प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री	संस्कृत सा०	डॉ० हरीनारायण दीक्षित प्रणोत भीष्म चरितम महाकाव्य का समालोचनात्मक अध्ययन।
४–	शशिभानु	प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री	संस्कृत सा०	संस्कृत के प्रमुख नाटकों में दार्शनिक तत्व।
५–	ताराचन्द	प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री	संस्कृत सा०	सोमेश्वरदेव विरचित उलाघ राघव नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन।
६–	शिवकुमार शर्मा	प्रो०वेदप्रकाश शास्त्री	संस्कृत सा०	आचार्य रामनाथ वेदालंकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक समीक्षात्मक अध्ययन।
७–	कु० गीता वर्मा	डॉ० महावीर अग्रवाल	संस्कृत सा०	श्री दिलीपदत्त शर्मा विरचित श्री प्रताप चम्पूकाव्यम एक अनुशीलन।
८–	कु० प्रेरणा कुमारी	डॉ०महावीर अग्रवाल	संस्कृत सा०	औचित्य सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में नैषधीय चरितम का अध्ययन।
९–	कु० बबीता	" "	" '	वैदिक शिक्षा व्यवस्था।
१०–	देवन्द्र कुमार	डा०एस०एन०सिंह	प्रा०भा०इति०	प्राचीन भारत में वाणिज्य एवं व्यापार का विवेचनात्मक अध्ययन (प्रारम्भ से ६०० ई० तक)
११–	स्व.प्र.विद्यासागर	डॉ० विष्णुदत्त राकेश	हिन्दी सा०	महर्षि दयानन्द की विचारधारा और उसका स्वातन्त्रय पूर्व कविता पर प्रभाव।
१२–	सच्चिदानन्द आर्य	डॉ० विष्णुदत्त राकेश	हिन्दी सा०	महर्षि दयानन्द विषयक हिन्दी महाकाव्यों का आलोचनात्मक अनुशीलन।
१३–	राजीव मलिक	डॉ० सन्तराम वैश्य	हिन्दी सा०	आर्यसमाज के हिन्दी नाटककार (नारायण प्रसाद बेताब से चन्द्रगुप्त विद्यालंकार तक)
१४–	सुभाषचन्द्र भाटी	" "	" "	हिन्दी पत्रकारिता के विकास में स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान।

१५–	पुष्पा बतरा	डॉ० ज्ञानचन्द्र रावल	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में भारतीय जीवन।
१६–	तन्मय भट्टाचार्य	प्रो० ओ०पी० मिश्र मनोविज्ञान	Anxiety and coping be haviour medical and surgical cardiac patients
१७–	बालकृष्ण पाल	श्रीएस०सी०धमीजा "	A clinical study of or thopaedically handcappet
१८–	ऊषा पण्डित	डॉ० नारायण शर्मा अंग्रेजी सा०	Historical respective and actional Art a study of Manohar Malgongar's novels
१९–	सतेन्द्र कुमार	डॉ० श्रवण कुमार शर्मा " "	Time in the poetry of Mathew Arnold
२०–	कु० वन्या जैन	डॉ० आर०डी०कौशिक रसायन	Kinetic studies on the aminolysis of some o-aryl oximes.

विज्ञान

२१–	ऋषिकुमार	डॉ०ए०के० इन्द्रायण " "	Preparation stability and Applications of Bivelent silver.
२२–	रविकान्त	डॉ० ए०के० चौपड़ा जुलोजी	A study on epidemiology and pathbology of some paramitic diseases of hu man beings at Hardwar
२३–	नन्दकिशोर	डॉ० ए०के० चौपड़ा जुलोजी	In vitro antimicrobial activity of sopr higher plants.

दीक्षान्त समारोह १६६७ में उपाधि प्राप्त करने वाले अलंकार के छात्रों की सूची।

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६१६	६३०५३४	कु० आराधना	श्री विजय कुमार राय	प्रथम
२	६१७	६३०५३३	" दीपा	श्री वागेश्वरी प्रसाद सिंह	प्रथम
३	६१८	६३०५३२	" लक्ष्मी	श्री लाल बाबू गुप्ता	प्रथम
४	६१६	६३०५३०	" मीरा देवी	श्री बहादुर सिंह	प्रथम
५	६२०	६३०५३१	" मनसा	श्री गुलाब सिंह	प्रथम
६	६२१	६३०६७२	" मधुलिका भटनागर	श्री हरिओम भटनागर	द्वितीय
७	६२२	६३०५२८	" नीरा	श्री मांगेराम तोमर	प्रथम
८	६२३	६३०५२६	" नीलम कुमारी	श्री जगन्नाथ यादव	प्रथम
६	६२४	६३०५२७	" प्रतिभा कुमारी	श्री वेद्यनाथ सिंह	प्रथम
१०	६२५	६३०५२६	" पूजा जायसवाल	श्री मदन मोहन जायसवाल	प्रथम
११	६२६	६३०५३५	" प्रतिभा आर्य	श्री सोनेराव	प्रथम
१२	६२७	६३०५३४	" रजनी	श्री नरेन्द्र मोहन सिंह नेगी	द्वितीय
१३	६२८	६३०५२३	" सुमन लता	श्री प्रेम सिंह	प्रथम
१४	६२६	६३०५२२	" सुनीता	श्री भूपेन्द्र सिंह	प्रथम
१५	६३०	६३०५२४	" शालिनी	श्री भगवान दास	प्रथम
१६	६३१	६३०५२५	" श्रेयसी कुमारी	श्री उमेश चन्द्र पाण्डेय	प्रथम

कन्या गुरुकुल हाथरस

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६३२	६३०५३६	कु० अंजलि	श्री ओंकार सिंह	प्रथम
२	६३३	६३०५३८	कु० भूमिसुता	श्री शोभा राम	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
३	६३४	६३०५३७	कु० रंजना	श्री राम खलावन भगत	प्रथम
४	६३५	६३०५३६	कु० सन्ध्या	श्री पीतम सिंह	प्रथम
५	६३६	६१०३१७	कु० भारती	श्री रतीराम	द्वितीय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (कला वर्ग)

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६३७	६३०६२६	नेत राम	श्री सुखराम	तृतीय
२	६३८	६३०६३५	सर्वेश कुमार	श्री भूरे लाल	प्रथम
३	६३९	६३०६२०	मतेन्द्र कुमार	श्री यशपाल सिह	द्वितीय

वेदालंकार

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६४०	६३०४६२	अशोक कुमार	श्री सुदामा प्रसाद	प्रथम
२	६४१	६३०४६०	भानु प्रताप	श्री इन्द्र सिंह	प्रथम
३	६४२	६३०४०५	सुरेन्द्र कुमार	श्री चन्दन सिंह	प्रथम
४	६४३	६३०४६१	संदीप कुमार	श्री रमेश चन्द्र	प्रथम

बी० ए० (सामान्य) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६४४	६३०३३७	अजय कुमार आनन्द	श्री मोती लाल	प्रथम
२	६४५	६३०३८८	अविनाश कुमार	श्री ओमप्रकाश शर्मा	द्वितीय
३	६४७	६३०३६४	अशोक कुमार	श्री रमेश चन्द्र	द्वितीय
४	६४८	६३०६७७	आशीष कुमार	श्री सुशील कुमार शर्मा	तृतीय
५	६५१	६३०३४५	द्रोपेश	श्री सी० एल० बघेल	द्वितीय
६	६५२	६३०३४८	धर्मेन्द्र सिंह	श्री बिजेन्द्र कुमार	द्वितीय
७	६५३	६३०३४४	धर्मपाल सिंह रावत	श्री स्वरूप सिंह रावत	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
८	६५४	६३०३६२	हेमचन्द्र पाण्डेय	श्री लीलाधर पाण्डेय		प्रथम
९	६५५	६३०३४०	जितेन्द्र कुमार	श्री महेन्द्र सिंह		द्वितीय
१०	६५८	६३०३७४	मोहन प्रसाद सापकोटा	श्री पदम नारायण सापकोटा		द्वितीय
११	६६२	६३०३५६	नीरज भण्डारी	श्री टी० एस० भण्डारी		द्वितीय
१२	६६३	६२०६०७	संजय कुमार	श्री जीवन सिंह		प्रथम
१३	६६५	६३०६१०	सुधाकर सैनी	श्री शिव कुमार सैनी		द्वितीय
१४	६६६	६३०३४१	सुशील कुमार	श्री बिजेन्द्र सिंह		द्वितीय
१५	६६७	६३०३५४	विनोद सिंह	श्री रणजीत सिंह		प्रथम

बी० एस० सी० के छात्रों की सूची

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१	१०३६	६३०१९७	अजय मल्होत्रा	श्री लक्षवीर मल्होत्रा	गणित, कम्पयूटर, भौतिक	प्रथम
२	१०३७	६३००७६	अमित डंग	श्री एच०बी०एल० डंग	,, ,, ,,	प्रथम
३	१०३८	६३००३०	अमित कुमार शर्मा	श्री राजकुमार शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
४	१०३९	६३००३१	अनिल कुमार चौहान	श्री जगदीश प्रसाद चौहान	,, ,, ,,	द्वितीय
५	१०४०	६३००४६	अनिल कुमार पन्त	श्री एस०डी० पन्त	,, ,, ,,	द्वितीय
६	१०४१	६३००३२	अंजन शर्मा	श्री बुद्धदेव शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
७	१०४२	६३००३३	अनुपम महाजन	श्री यशपाल महाजन	,, ,, ,,	प्रथम
८	१०४३	६३००८०	अनुवत आर्य	श्री आर०पी०आर्य	,, ,, ,,	द्वितीय
९	१०४४	६३००३४	अरुण राबरा	श्री एस०पी०राबरा	,, ,, ,,	प्रथम
१०	१०४५	६३००३५	अरविन्द कुमार	श्री गंगा शरण	,, ,, ,,	प्रथम
११	१०४६	६३००३८	अशोक कुमार	श्री घासीराम	,, ,, ,,	प्रथम
१२	१०४७	६३००६२	आशु कुमार शर्मा	श्री प्रेम कुमार शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१३	१०४८	६३०० ३७	आशीष तिवारी	श्री आर० सी० शर्मा	" " "	द्वितीय
१४	१०४६	६३००२८	आलोक कुमार ऐलवादी	श्री डी० आर० ऐलवादी	" " "	प्रथम
१५	१०५०	६३००२६	आदित्य कुमार	श्री श्याम स्वरूप	" " "	द्वितीय
१६	१०५१	६३००८१	भारत कालरा	श्री एफ०सी० कालरा	" " "	द्वितीय
१७	१०५२	६३००४०	भूपेन्द्र कुमार ढींगरा	श्री एन० एन० ढींगरा	" " "	प्रथम
१८	१०५३	६३००४१	दीपक आनन्द	श्री नन्द गोपाल आनन्द	" " "	प्रथम
१६	१०५४	६३००४२	गगन गम्भीर	श्री पन्नालाल गम्भीर	" " "	प्रथम
२०	१०५५	६३००४३	गुँजन कुमार पुँडीर	श्री जयपाल सिंह	" " "	प्रथम
२१	१०५६	६३००८३	जितेन्द्र सिंह डडवाल	श्री एस० सिंह डडवाल	" " "	प्रथम
२२	१०५७	६३००४५	जोगेन्द्र कुमार	श्री रविन्द्र सिंह चौहान	" " "	प्रथम
२३	१०५८	६३००४६	कंचन लोहानी	श्री आर०सी० लोहानी	" " "	प्रथम
२४	१०५६	६३००४७	मणिकांत चौहान	श्री बनारसी दास चौहान	" " "	प्रथम
२५	१०६०	६३००४८	मनीष कुमार	श्री देवीचन्द ठाकुर	" " "	प्रथम
२६	१०६१	६३००४६	मनोज कुमार	श्री धर्मवीर सिंह	" " "	प्रथम
२७	१०६२	६३००५०	मनोज कुमार पाठक	श्री प्रमोद कुमार पाठक	" " "	प्रथम
२८	१०६३	६३००५१	मुकेश कुमार	श्री सुरेश कुमार सिंघल	" " "	प्रथम
२६	१०६४	६२०३७७	नेपाल सिंह	श्री ज़िले सिंह	" " "	द्वितीय
३०	१०६५	६३००५३	निखिल गुप्ता	श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता	" " "	द्वितीय
३१	१०६६	६३००५४	पवन गुप्ता	श्री रामगोपाल वार्ष्णेय	" " "	द्वितीय
३२	१०६७	६२०४६३	पीयूष कुमार कपिल	श्री यतीन्द्र कुमार कपिल	" " "	द्वितीय
३३	१०६८	६३००५५	पीयूष मणि	श्री राजेन्द्र प्रसाद	" " "	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
३४	१०६९	६३००५६	प्रयास कद	श्री रविन्द्र कुमार कद	„ „ „	प्रथम
३५	१०७०	६२०३८४	प्रीतम सिंह	श्री ओम प्रकाश सिंह	„ „ „	द्वितीय
३६	१०७१	६३००५७	राजीव कुमार	श्री महेन्द्र पाल सिंह	„ „ „	प्रथम
३७	१०७२	६३०४७३	राजेश खन्ना	श्री ओ० एल० खन्ना	„ „ „	प्रथम
३८	१०७३	६३००५९	राजेश कुमार	श्री राम कृष्ण जोशी	„ „ „	प्रथम
३९	१०७४	६३००६०	राकेश रावत	श्री जे० एल० रावत	„ „ „	प्रथम
४०	१०७५	६३००६१	रामानाथ झा	श्री चन्द्रनाथ झा	„ „ „	द्वितीय
४१	१०७६	६३००६३	रविन्द्र कुमार सिंह सेंगर	श्री के०बी०एस० सेंगर	„ „ „	द्वितीय
४२	१०७७	६२०३६२	सचिन शाह	श्री डी०सी० शाह	„ „ „	द्वितीय
४३	१०७८	६३००६५	संदीप भारद्वाज	श्री रामगोपाल शर्मा	„ „ „	प्रथम
४४	१०७९	६३००६८	संजीव सिंह	श्री इन्द्रराज सिंह	„ „ „	प्रथम
४५	१०८०	६३००६९	शैलेन्द्र कुमार उनियाल	श्री बुद्धिसागर उनियाल	„ „ „	प्रथम
४६	१०८१	६३००७०	श्याम सुन्दर गुप्ता	श्री प्रेम नारायण	„ „ „	प्रथम
४७	१०८२	६३००७१	सुनील कुमार	श्री आनन्द प्रकाश	„ „ „	प्रथम
४८	१०८३	६३००७२	सुरेन्द्र कुमार पाल	श्री रूपचन्द पाल	„ „ „	द्वितीय
४९	१०८४	६३००७३	वेद प्रकाश आर्य	श्री भगवान दास आर्य	„ „ „	द्वितीय
५०	१०८५	६२०४०१	विकाश श्रीवास्तव	श्री शिव मोहन श्रीवास्तव	„ „ „	द्वितीय
५१	१०८६	६३००७७	विशाल उनियाल	श्री बी० के० उनियाल	„ „ „	द्वितीय
५२	१०८७	६१०२१८	विश्वेश कुमार	श्री देवीदत्त शर्मा	„ „ „	द्वितीय
५३	१०८८	६३००७५	विनय सिंह	श्री एस० सी० चौहान	„ „ „	प्रथम
५४	१०८९	६३००७८	योगेन्द्र सिंह	श्री राजेन्द्र सिंह	„ „ „	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय			श्रेणी
१	१०९०	९३०१५६	अजय बजाज	श्री बलदेवराज बजाज	गणित,	भौतिक,	रसायन	प्रथम
२	१०९१	९३०१५८	अजय कुमार	श्री परशुराम	"	"	"	प्रथम
३	१०९२	९३०१५९	अजय पोखरियाल	श्री ताराचन्द पोखरियाल	"	"	"	द्वितीय
४	१०९३	९२०१५३	अमित शर्मा	श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा	"	"	"	द्वितीय
५	१०९४	९२०३४०	अमित कुमार शर्मा	श्री एस० एन० शर्मा	"	"	"	प्रथम
६	१०९५	९३०१६६	अमित शर्मा	श्री तेज प्रकाश शर्मा	"	"	"	प्रथम
७	१०९६	९३०१६८	अमरीश कुमार	श्री देवराज सिंह	"	"	"	द्वितीय
८	१०९७	९३०१७१	अनुज कमल	श्री इन्द्रराज	"	"	"	प्रथम
९	१०९८	९३०१७२	अरविन्द कुमार जोशी	श्री नत्थी प्रसाद जोशी	"	"	"	प्रथम
१०	१०९९	९२०३३४	अशीष कुमार	श्री कामेश्वर चौधरी	"	"	"	द्वितीय
११	११००	९३०१७६	अश्वनी कुमार	श्री चन्द्र प्रकाश	"	"	"	द्वितीय
१२	११०१	९३०१७५	अश्वनी कुमार	श्री भगत सिंह	"	"	"	प्रथम
१३	११०२	९३०१७९	आवेश यादव	श्री सुखदेव सिंह यादव	"	"	"	प्रथम
१४	११०३	९३०१८२	चक्रवीर सिंह	श्री राजेन्द्र सिंह रावत	"	"	"	प्रथम
१५	११०४	९३०१८३	दर्शन	श्री बीरू सिंह	"	"	"	द्वितीय
१६	११०५	९३०१८४	दीपक कुमार	श्री राजकुमार	"	"	"	द्वितीय
१७	११०६	९३०१८५	दीपक कुमार त्यागी	श्री अरविन्द कुमार त्यागी	"	"	"	प्रथम
१८	११०७	९३०१८७	धीरज कुमार वेद	श्री कृष्ण कुमार वेद	"	"	"	प्रथम
१९	११०८	९३०१८८	दिलीप कुमार शर्मा	श्री पापेन्द्र स्वरूप शर्मा	"	"	"	प्रथम
२०	११०९	९२०१८९	हरेन्द्र प्रताप सिंह	श्री राजपाल सिंह	"	"	"	द्वितीय
२१	१११०	९३०१९०	हर्षवर्धन त्रेहन	श्री एन०सी० त्रेहन	"	"	"	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय			श्रेणी
२२	११११	६२०१६४	हिमांशु मेहता	श्री बी०एस० मेहता	,,	,,	,,	द्वितीय
२३	१११२	६३०१६६	कुलदीप त्यागी	श्री मंगलेश कुमार	,,	,,	,,	प्रथम
२४	१११३	६२०२००	कुलदीप सिंह	श्री सेवा राम	,,	,,	,,	द्वितीय
२५	१११४	६२०२०१	ललित मोहन पैन्यूली	श्री बृजमोहन पैन्यूली	,,	,,	,,	प्रथम
२६	१११५	६३०२०१	मनीष कुमार प्रधान	श्री उपेन्द्र कुमार प्रधान	,,	,,	,,	द्वितीय
२७	१११६	६२०२१०	मौ० इनाम साबिर	श्री शमीम उददीन	,,	,,	,,	द्वितीय
२८	१११७	६२०२२०	नीरज धीमान	श्री मामचन्द धीमान	,,	,,	,,	द्वितीय
२९	१११८	६३०२०५	नीरज कुमार	श्री राजकुमार	,,	,,	,,	प्रथम
३०	१११९	६३०२१६	प्रदीप कुमार त्यागी	श्री रामपाल सिंह	,,	,,	,,	प्रथम
३१	११२०	६३०२१३	प्रदीप चन्द	श्री जीवानन्द बुड़ाकोटी	,,	,,	,,	द्वितीय
३२	११२१	६३०२१४	प्रदीप कुमार गर्ग	श्री आर०पी०गर्ग	,,	,,	,,	प्रथम
३३	११२२	६३०२१८	प्रवीन कुमार	श्री सत्यपाल सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
३४	११२३	६३०२१९	प्रवीन कुमार सिंह	श्री सुरेन्द्र पाल सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
३५	११२४	६३०२११	पंकज मलिक	श्री हंसराज मलिक	,,	,,	,,	प्रथम
३६	११२५	६३०२०६	पंकज चौहान	श्री हरीश चौहान	,,	,,	,,	द्वितीय
३७	११२६	६३०२१२	पवन कुमार	श्री पोशाकी लाल	,,	,,	,,	प्रथम
३८	११२८	६३०२२०	प्रवीन मलिक	श्री चन्द्रपाल मलिक	,,	,,	,,	प्रथम
३९	११२९	६३०२२५	राहुल वर्मा	श्री राजेन्द्र कुमार व़र्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
४०	११३०	६३०२२६	रजनीश विश्वकर्मा	श्री भोला नाथ शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
४१	११३१	६३०२२८	राकेश कुमार सिंह	श्री रामचन्द्र सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
४२	११३२	६३०२३१	रमेश चन्द भट्ट	श्री पीताम्बर दत्त भट्ट	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
४३	११३३	६२०२५४	रविन्द्र सिंह	श्री विनोद सिंह	,, ,, ,,	द्वितीय
४४	११३४	६२०२५६	साकेत त्रिवेदी	श्री विनोद चन्द्र त्रिवेदी	,, ,, ,,	द्वितीय
४५	११३५	६३०२३७	संदीप कुमार	श्री राजपाल सिंह	,, ,, ,,	प्रथम
४६	११३६	६३०२३६	संजीव कुमार वर्मा	श्री रामकृष्ण वर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
४७	११३७	६३०२४०	संजीव शांडिल्य	श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
४८	११३८	६३०२४३	शरद कुमार शर्मा	श्री राज कुमार	,, ,, ,,	द्वितीय
४६	११३६	६३०२४७	शोभित कुलश्रेष्ठ	श्री अरविन्द कुमार कुलश्रेष्ठ	,, ,, ,,	द्वितीय
५०	११४०	६२०२७८	सुमित कुमार गोयल	श्री सोहन लाल गोयल	,, ,, ,,	द्वितीय
५१	११४१	६३०२५०	सुधीर कुमार तिवारी	श्री शिवजी तिवारी	,, ,, ,,	प्रथम
५२	११४२	६३०२४६	सुधीर कोहली	श्री एम० एम० कोहली	,, ,, ,,	द्वितीय
५३	११४३	६१०१५६	संजय कुमार गुप्ता	श्री जगतबन्धु गुप्ता	,, ,, ,,	द्वितीय
५४	११४४	६३०२५१	तपन भटनागर	श्री जगमोहन भटनागर	,, ,, ,,	प्रथम
५५	११४५	६३०२५३	तिरेन्द्र कुमार	श्री रूपचन्द	,, ,, ,,	प्रथम
५६	११४६	६३०२५६	उमेश कुमार शर्मा	श्री राज कुमार	,, ,, ,,	द्वितीय
५७	११४७	६३०२५७	विनय कुमार	श्री टी० पी० सिंह	,, ,, ,,	प्रथम
५८	११४८	६३०२५६	विनोद कुमार	श्री दयाराम सिंह यादव	,, ,, ,,	द्वितीय
५६	११४६	६२०३०१	विशाल शर्मा	श्री दिनेश कुमार	,, ,, ,,	प्रथम
६०	११५१	६२०२८८	विघ्नेश शर्मा	श्री वाई० के० शर्मा	,, ,, ,,	द्वितीय
१	११५२	६३००८७	अजय कुमार	श्री जयपाल सिंह	गणित, भौतिक, मनोविज्ञान	प्रथम
२	११५३	६३००६२	अनिल कुमार बाधव	श्री कृष्णलाल बाधव	,, ,, ,,	द्वितीय
३	११५४	६३००६३	अनु चौधरी	श्री रामनगीना चौधरी	,, ,, ,,	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
४	११५५	६३००८६	आलोक कुमार	श्री एम० एम० शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
५	११५६	६३००८८	आलोक कुमार	श्री धर्मवीर सिंह	,, ,, ,,	प्रथम
६	११५७	६३००६४	आशीष कुमार	श्री रमेश चन्द्र	,, ,, ,,	प्रथम
७	११५८	६३०१०३	हरीश त्यागी	श्री भगवान स्वरूप त्यागी	,, ,, ,,	द्वितीय
८	११५९	६३०१०२	हरिओम अरोड़ा	श्री बन्शीलाल अरोड़ा	,, ,, ,,	द्वितीय
६	११६०	६३०१०६	जयकुमार राजवंशी	श्री सुरेन्द्र कुमार राजवंशी	,, ,, ,,	प्रथम
१०	११६१	६३०१०८	जनविन्द्र सिंह	श्री मणि सिंह	,, ,, ,,	द्वितीय
११	११६२	६२०४०७	जितेन्द्र कौशिष	श्री बी०के० कौशिष	,, ,, ,,	द्वितीय
१२	११६३	६३०११२	जितेन्द्र कुमार	श्री शिवदान सिंह	,, ,, ,,	प्रथम
१३	११६४	६३०११५	मनीष बमोला	श्री शालिगराम बमोला	,, ,, ,,	द्वितीय
१४	११६५	६३०११७	मनोज कुमार	श्री राजेन्द्र प्रसाद	,, ,, ,,	द्वितीय
१५	११६६	६३०११६	मनोकरण	श्री राम निवास	,, ,, ,,	द्वितीय
१६	११६७	६३०६४१	मुकेश बाबू	श्री गनेशी लाल	,, ,, ,,	प्रथम
१७	११६८	६३०१२१	नीरज कुमार	श्री राम कृष्ण वर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
१८	११६६	६३०१२४	पवन कुमार	श्री बलवन्त सिंह	,, ,, ,,	द्वितीय
१६	११७०	६३०१२३	परमिन्दर शर्मा	श्री कृष्ण चन्द्र	,, ,, ,,	द्वितीय
२०	११७१	६३०१२७	राहुल	श्री यू०सी० अग्रवाल	,, ,, ,,	द्वितीय
२१	११७२	६३०१२८	राहुल वत्स	श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा	,, ,, ,,	द्वितीय
२२	११७३	६३०१३०	राजीव कुमार गुप्ता	श्री एस०एस०पी० गुप्ता	,, ,, ,,	द्वितीय
२३	११७४	६३०१३१	राजेश बिष्ट	श्री शिव सिंह बिष्ट	,, ,, ,,	द्वितीय
२४	११७५	६३०१३३	समीर कुमार	श्री ओमप्रकाश क्वात्रा	,, ,, ,,	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
२५	११७६	६३०१३५	संजय	श्री गोसांई दत्त शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम
२६	११७७	६३०१३६	संजय कुमार गुप्ता	श्री राम प्रकाश गुप्ता	,, ,, ,,	प्रथम
२७	११७८	६३०१३८	संजीव राजपूत	श्री देवेन्द्र पाल सिंह	,, ,, ,,	द्वितीय
२८	११७९	६३०१३९	सत्यकाम	श्री जे० प्रसाद	,, ,, ,,	प्रथम
२९	११८०	६३०१४०	सत्येन्द्र प्रसाद	श्री अमर देव	,, ,, ,,	द्वितीय
३०	११८१	६३०१४४	सुशील कुमार	श्री रामयतन पंडित	,, ,, ,,	प्रथम
३१	११८२	६३०१४६	उमेश कुमार सिंह	श्री राम कुमार सिंह	,, ,, ,,	प्रथम
३२	११८३	६३०१४८	उत्पल जुनेजा	श्री केसर सिंह जुनेजा	,, ,, ,,	प्रथम
३३	११८४	६३०१४९	विकास गुप्ता	श्री सूर्य प्रकाश गुप्ता	,, ,, ,,	प्रथम
३४	११८५	६३०१५०	विनोद प्रसाद मिश्र	श्री गिरीश चन्द्र मिश्र	,, ,, ,,	द्वितीय
३५	११८६	६३०१५३	विशाल शुक्ल	श्री सुरेश कुमार शुक्ल	,, ,, ,,	द्वितीय
१	११८७	६३००१३	अजय कुमार रवि	श्री फूल सिंह	गणित, कम्पयूटर, दर्शनशास्त्र	द्वितीय
२	११८८	६३००१७	नवीन रावत	श्री के०एस० रावत	,, ,, ,,	द्वितीय
३	११८९	६३००१९	राजन कृष्ण	श्री जी० एल० शर्मा	,, ,, ,,	प्रथम

दीक्षान्त समारोह १९९७ में उपाधि प्राप्त करने वाले बी०एस०सी० के छात्रों की सूची।

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१	११९०	६२०११८	अरविन्द	श्री आर०पी०सिंह	वनस्पति, जुलौजी, रसायन	द्वितीय
२	११९१	६३०३०४	अभिषेक भटनागर	श्री सुशील कुमार भटनागर	,, ,, ,,	द्वितीय
३	११९२	६३०३०२	अनुराग यादव	श्री जे०एस० यादव	,, ,, ,,	प्रथम
४	११९३	६३०३०५	अनिल कुमार पचौरी	श्री महेन्द्र कुमार शर्मा	,, ,, ,,	द्वितीय
५	११९४	६३०३००	अजय कुमार	श्री शम्भू प्रसाद	,, ,, ,,	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय			श्रेणी
६	११६५	६३०३०६	आलोक कुमार सैनी	श्री धर्म सिंह सैनी	,,	,,	,,	द्वितीय
७	११६६	६३०३०१	आसिफ अली खाँ	श्री आस मोहम्मद	,,	,,	,,	द्वितीय
८	११६७	६३०३०७	धीरज चुग	श्री ऋषि कुमार चुग	,,	,,	,,	प्रथम
६	११६८	६३०२८५	देवराजसिंह	श्री राम चरण सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
१०	११६६	६३०३१०	हरप्रीत सिंह	श्री अवतार सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
११	१२००	६३०३११	जयवीर सिंह	श्री रामस्वरूप सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
१२	१२०१	६२००६४	कमल शर्मा	श्री चन्द्र शेखर शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
१३	१२०२	६३०३८०	ललित कुमार सैनी	श्री एस०एन० सैनी	,,	,,	,,	द्वितीय
१४	१२०३	६३०३१५	मनोज भट्ट	श्री धर्मानन्द भट्ट	,,	,,	,,	प्रथम
१५	१२०४	६३०३१३	मनोज कुमार सिंह चौ.	श्री बाबू सिंह चौहान	,,	,,	,,	द्वितीय
१६	१२०५	६३०३१६	मिथिलेश कुमार त्रिपाठी	श्री सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी	,,	,,	,,	प्रथम
१७	१२०६	६३०२६०	नागेन्द्र भूषण पारागर	श्री ब्रह्मानन्द पाराशर	,,	,,	,,	द्वितीय
१८	१२०७	६३०२६६	निजि हरमेन्द्र सिंह खुराना	श्री एच.एस. खुराना	,,	,,	,,	द्वितीय
१६	१२०८	६३०३२०	नरेन्द्र सिंह	श्री रामसेवक	,,	,,	,,	द्वितीय
२०	१२०६	६३०२८७	पवन कुमार जोशी	श्री गोपाल दत्त जोशी	,,	,,	,,	प्रथम
२१	१२१०	६३०३२३	प्रवेश कुमार	श्री सुखराम	,,	,,	,,	प्रथम
२२	१२११	६३०३२१	पुष्पेन्द्र सौरायण	श्री भूपेन्द्र सिंह सौ०	,,	,,	,,	प्रथम
२३	१२१२	६३०२८८	पवन कुमार गुप्ता	श्री महावीर प्रसाद	,,	,,	,,	प्रथम
२४	१२१३	६३०३२२	पंकज ढींगड़ा	श्री सुभाष चन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
२५	१२१४	६३०३२६	रमेश चन्द्र पन्तोला	श्री रेवाधर पन्तोला	,,	,,	,,	प्रथम
२६	१२१५	६३०३२५	राजीव कुमार	श्री नेपाल सिंह	,,	,,	,,	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय			श्रेणी
२७	१२१६	६३०३२४	राहूल सिंह	श्री राजकुमार सिंह	"	"	"	प्रथम
२८	१२१७	६३०३८१	रूपेन्द्र	श्री एस०पी० भट्ट	"	"	"	द्वितीय
२६	१२१८	६३०३२७	संजीव चोपडा	श्री जागीर सिंह	"	"	"	प्रथम
३०	१२१६	६३०३३०	शचीन्द्र कुमार पाण्डेय	श्री रवीन्द्र नाथ पाण्डेय	"	"	"	प्रथम
३१	१२२०	६३०२८६	संजय कुमार वर्मा	श्री नागेश चन्द्र वर्मा	"	"	"	द्वितीय
३२	१२२१	६३०४८४	सुमीत मिश्र	श्री के.के. मिश्र	"	"	"	द्वितीय
३३	१२२२	६३०२६२	उत्तम कुमार चक्रवर्ती	श्री एच. सी. चक्रवर्ती	"	"	"	द्वितीय
३४	१२२३	६३०२६५	वैभव भारद्वाज	श्री एस. सी. शर्मा	"	"	"	प्रथम
३५	१२२४	६३०२६७	विजय कुमार तिवारी	श्री राजेन्द्र प्रसाद तिवारी	"	"	"	द्वितीय
३६	१२२५	६३०२६३	विश्वबन्धु सिंह भण्डारी	श्री हरि सिंह भण्डारी	"	"	"	द्वितीय
३७	१२२६	६३००७७	विप्रेन्द्र कुमार	श्री राजपाल सिंह	"	"	"	द्वितीय
३८	१२२७	६३०२८६	योगेश मल्होत्रा	श्री श्यामलाल मल्होत्रा	"	"	"	प्रथम
३६	१२२८	६३०२६८	योगेश चन्द्र नैनवील	श्री ईश्वरी दत्त नैनवाल	"	"	"	प्रथम

बी०एस०सी० के छात्रों की सूची।

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय			श्रेणी
१	१२२६	६३०२६४	अनुराग	श्री महेन्द्रपाल सिंह चौहान	मनोविज्ञान	वनस्पति,	जुलौजी	द्वितीय
२	१२३०	६३०२६८	अरुण कुमार	श्री तेलूराम.	"	"	"	प्रथम
३	१२३१	६३०२६६	बलबीर सिंह	श्री चन्द सिंह.	"	"	"	प्रथम
४	१२३२	६३०४८३	दीपक कुमार	श्री गंगाशरण	"	"	"	द्वितीय
५	१२३३	६३०२७१	दीपेशचन्द्र प्रसाद	श्री उमेश चन्द्र	"	"	"	द्वितीय
६	१२३४	६३०२७३	जयभगवान	श्री अमन सिंह	"	"	"	द्वितीय
७	१२३५	६३०२७४	ललित किशोर सक्सेना	श्री कंचन स्वरूप सक्सेना	"	"	"	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय			श्रेणी
८	१२३७	६३०२७६	नरेन्द्र सिंह	श्री सुगन चन्द्र	,,	,,	,,	प्रथम
६	१२३८	६३०२७७	प्रदीप कुमार	श्री साधू राम शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
१०	१२३६	६३०२७८	राजपाल सिंह	श्री अर्जुन सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
११	१२४०	६३०२८०	संजय कुमार वर्मा	श्री शिव पूजन	,,	,,	,,	द्वितीय
१२	१२४१	६३०२८२	सुभाष कुमार	श्री यमुना सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
१३	१२४२	६३०२८३	संजय कुमार	श्री सोहन सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
१४	१२४३	६३०२८१	सुमित सूरी	श्री अमृत लाल सूरी	,,	,,	,,	द्वितीय
१५	१२४४	६३०२८४	तरुण कुमार त्यागी	श्री महेन्द्र कुमार त्यागी.	,,	,,	,,	द्वितीय

एम०ए, एम०एस०सी के छात्र/छात्राओं की सूची।

वैदिक साहित्य

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६७५	६४०६४६	बिजेन्द्र कुमार	श्री धुरेन्द्र कुमार	प्रथम

संस्कृत साहित्य

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	८७७	६१०३६२	अनिल कुमार	श्री सत्यवीर सिंह	प्रथम
२	८७८	६४०५३६	भुवनचन्द्र पाठक	श्री त्रिलोचन पाठक	द्वितीय
३	८७६	६४०४८६	दयाशंकर	श्री सुधाकर प्रकाश	प्रथम
४	८८०	६४०४३१	राम सिंह	श्री रघुवीर सिंह	प्रथम
५	८८१	६१००१४	सुबोध कुमार शुक्ल	श्री काशी नाथ शुक्ल	प्रथम
६	८८३	६४०५३३	कु० अमिता शर्मा	" रमेश चन्द शर्मा	प्रथम
७	८८४	६४०५३४	" मोनिका कपूर	" ब्रज मोहन कपूर	द्वितीय
८	८८६	६४०६२४	" रोहिणी गुप्ता	" गंगा शरण गुप्ता	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
६	८८७	६४००५५	" ऋतु शर्मा	" शिव नारायण शर्मा	प्रथम
१०	८८८	६४०४६८	" संगीता	" साधू राम	प्रथम
११	८८६	६४०७०४	" आशा कुमारी	" शिव नारायण	द्वितीय
१२	८६०	६४०७०३	" बबली देवी	" मांगेराम	द्वितीय
१३	८६१	६४०४०४	श्रीमती बीना सिंह	" मान्धाता सिंह	प्रथम
१४	८६२	६४०४०६	कु० एकता आनन्द	" नन्दगोपाल आनन्द	प्रथम
१५	८६३	६४०५१०	" कविता रानी	" सरदारा सिंह	द्वितीय
१६	८६४	६४०५०६	" हेमलता	" महावीर सिंह	तृतीय
१७	८६५	६४०५०८	" मुकेश देवी	" सतबीर सिंह	तृतीय
१८	८६६	६४०७०२	" नवीन बाला	" करतार सिंह	द्वितीय
१६	८६८	६४०१३५	" संतोष	" रामचन्द्र	द्वितीय
२०	६००	६४०४०६	" सुदेश	" जगबीर सिंह	द्वितीय
२१	६०१	६४०६६४	" तरुणा रानी	" प्रकाश चन्द्र	द्वितीय
२२	६०२	६४०४०८	" वसुधा आनन्द	" नन्दगोपाल आनन्द	प्रथम
२३	६०३	८३०११६	अशोक कुमार शर्मा	" हर प्रसाद शर्मा	प्रथम
२४	६०४	६४०४३३	अनन्त कुमार आर्य	" बलि प्रधान	प्रथम
२५	६०५	६४०५३८	जंगशेर कुमार	" सियाराम	प्रथम
२६	६०६	६२०३२८	महेन्द्र कुमार पुरी	श्री विश्वनाथ पुरी	द्वितीय
२७	६०७	६४०५१६	रजनीश शर्मा	श्री नरोत्तम शर्मा	द्वितीय
२८	६०८	६५०४१८	श्री भगवान	श्री कृष्ण कुमार	द्वितीय
२६	६०६	६४०४०७	शशिभूषण शर्मा	श्री वाचस्पति	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
३०	६१०	६४०६३१	संतेश्वर प्रसाद काण्डपाल	श्री भुद्रमणि काण्डपाल	प्रथम
			योग		
१	६११	६४०४६५	अजीत कुमार	श्री कन्ही राम	द्वितीय
२	६१२	६२०४६८	गौतम ब्रह्म	श्री ओमिन चन्द्र ब्रह्म	द्वितीय
३	६१४	६४०४६७	संजीव राजपूत	श्री श्रीराम राजपूत	प्रथम
			एम० ए० प्रा०भा० इतिहास		
१	६१५	६३०६४३	चन्द्रबोस	श्री राम सिंह	द्वितीय
२	६१६	६४०६६०	नरेन्द्रपाल सिंह	श्री राम सिंह	द्वितीय
३	६१७	६४०६४०	संजीव सिंह राठौर	श्री सुरेन्द्रपाल सिंह राठौर	द्वितीय
४	६१८	६४०४८५	तरुण	श्री मूलचन्द्र	प्रथम
५	६१६	६४०५२५	कु० निधि	श्री ख्यालीराम	द्वितीय
६	६२०	६४०५२३	" प्रिया शर्मा	श्री यशपाल शर्मा	द्वितीय
७	६२१	६४०६८६	" सीमा राय	श्री विश्रामराम	द्वितीय
८	६२२	६४०५२२	" वीथिका भारतीय	श्री कमल भारतीय	द्वितीय
६	६२३	६४०६५०	" गीता भौंरे	श्री नकली राम	द्वितीय
१०	६२४	६४०५३०	" सरोज कुमारी	श्री किशन स्वरूप जाटव	द्वितीय
११	६२६	६००२८३	मदनगोपाल उपाध्याय	श्री बामूलाल उपाध्याय	द्वितीय
१२	६२८	६५०६८३	प्रदीप कुमार	श्री वेदपाल सिंह	प्रथम
			दर्शन शास्त्र		
१	६२६	६४०४८४	बद्रीनारायण पाल	श्री मथुरा प्रसाद	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय
२	६३०	६४०६३५	एन० सुब्रमण्य शर्मा	श्री एन० नारायण मूसथ	प्रथम
३	६३१	६४०४८६	वीरेन्द्र सिंह	श्री कृपा राम	प्रथम
४	६१३	६२०४२२	पंचम सिंह चौहान	श्री पीताम्बर सिंह चौहान	द्वितीय
५	६३२	६४०६५५	कु० बबीता शर्मा	श्री मामचन्द्र शर्मा	प्रथम
६	६३४	६४०५३५	कु० मनीषा जैन	श्री देवेन्द्र जैन	प्रथम
७	६३५	६४०५२१	कु० पूनम शर्मा	श्री शरदचन्द्र शर्मा	प्रथम
८	६३६	६४०७०६	कु० रश्मि	श्री देवकी नन्दन	प्रथम
६	६३७	६४०४६१	कु० संजू चौपड़ा	श्री जागीर सिंह चोपड़ा	द्वितीय
१०	६३८	६१०२८३	कु० अनुराधा शर्मा	श्री राजकुमार शर्मा	तृतीय
११	६३६	६४०५६३	कु० प्रेम चैतन्य	श्री ओमानन्द जी	प्रथम
१२	६४०	६३०४४१	कु० नागेन्द्रनाथ मिश्र	श्री रघुनाथ मिश्र	प्रथम
१३	७३३	६३०६२५	कु० सीता पन्त	श्री पूरन चन्द पन्त	द्वितीय

हिन्दी साहित्य

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय
१	६४४	६४०६५७	विश्वास कुमार	श्री हिरदेराम	प्रथम
२	६४५	६४०१५४	कु० अर्चना पन्त	श्री बुद्धिबल्लभ पन्त	प्रथम
३	६४६	६४०६४४	कु० भावना	श्री शिव कुमार शर्मा	द्वितीय
४	६४७	६४०५३१	कु० कल्पना	श्री सेवा राम चौहान	तृतीय
५	६५१	६४०५०२	कु० सोनिया गर्ग	श्री नरेश गर्ग	प्रथम
६	६५२	६४०६६६	कु० उदिता त्रिपाठी	श्री ख्याली राम त्रिपाठी	प्रथम
७	६५३	६४०६३४	कु० बीना भट्ट	श्री डी० एन० भट्ट	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
८	६५४	६४०७१७	कु० अनिता पंवार	श्री धीर सिंह पंवार	द्वितीय
९	६५६	६४०४१८	कु० पवित्रा त्यागी	श्री वेद प्रकाश त्यागी	द्वितीय
१०	६५७	६४०४३०	कु० मनीषा	श्री जयदेव वेदालंकार	प्रथम
११	६५८	६३०५४१	नीलू पाण्डेय	हरचरण पाण्डेय	तृतीय
१२	६५९	६४०५४३	नीतू रानी शर्मा	रमेश चन्द शर्मा	द्वितीय
१३	६६०	६४०४७१	ऋतम्भरा आर्या	गोविन्द राम	द्वितीय
१४	६६१	६४०४६६	सुनीता चौहान	ओम प्रकाश चौहान	द्वितीय
१५	६६२	६३०४८८	श्रीमती सुजाता माताबदल	श्री नेमी शरण मित्तल	द्वितीय
१६	६६३	६४०५१७	कु० सरोज मठपाल	श्री लीलाधर मठपाल	द्वितीय
१७	६६४	६४०५६०	अमन सिंह	श्री विशम्बर सिंह	द्वितीय
१८	६६५	६२०००२	बिहारी लाल	श्री बोदल दास	द्वितीय
१९	६६६	६४०४६८	होशियार सिंह	श्री दलशेर सिंह	द्वितीय
२०	६६७	६२०४४७	राम प्रकाश सिंह	श्री रामचन्द्र सिंह	द्वितीय
२१	६६९	६४०५२४	सुरेश चन्द्र	श्री बुद्धिबल्लभ	प्रथम
२२	६७१	६३०४९९	त्रिलोचन भट्ट	श्री देवदत्त	द्वितीय (श्रेणी सुधार)

अंग्रेजी साहित्य

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	६७६	६४०६४८	कु० हेमू अरोड़ा	श्री गनेश दास अरोड़ा	द्वितीय
२	६७७	६३०६१४	कु० कृष्णा रावत	श्री बी०एस० रावत	द्वितीय
३	६८०	६५०५८६	कु० पूनम	श्री महेन्द्र गुप्ता	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
४	६८१	६४०६४६	कु० पूनम कपिला	श्री बी०के० कपिला	प्रथम
५	६८५	६४०७१३	कु० समिता गुप्ता	श्री पी० डी० गुप्ता	द्वितीय
६	६८६	६२०६१८	कु० अर्चना मिश्रा	श्री दुर्गेन्द्र कुमार मिश्रा	द्वितीय
७	६६०	६४०५२७	कु० गीतिका विश्नोई	श्री नरेन्द्र कुमार विश्नोई	द्वितीय
८	६६४	६३०५६०	कु० नीलू शर्मा	श्री श्याम लाल शर्मा	द्वितीय
६	६६७	६४०६६६	कु० श्रीमती रूचि कुमार	श्री राजेन्द्र कुमार तलवार	प्रथम
१०	८३३	६५०४२६	कु० लक्ष्मी	श्री गुलाब सिंह राणा	द्वितीय
					श्रेणी सुधार
११	१००२	६२०१३०	देवेश प्रसाद उप्रेती	श्री धर्मेन्द्र प्रसाद उप्रेती	तृतीय
१२	१००५	६४०४६७	वीरेन्द्र सिंह यादव	श्री खुशी राम यादव	द्वितीय
१३	८४२	६३०४७५	प्रमोद कुमार	श्री पुन्ना मल	द्वितीय

एम०ए०/एम०सी०—सी० मनोविज्ञान

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
१	१००६	६४०६२१	हरिशंकर शर्मा	श्री जे०पी गौतम	प्रथम	एम०ए०
२	१००८	६००१०४	मनीष कौशिक	श्री विजय कुमार कौशिक	द्वितीय	एम०एस०सी०
३	१०१०	६४०६६८	राजीव कुमार	श्री ओमप्रकाश वैद्य	द्वितीय	एम०एस०सी०
४	१०१२	६४०५६६	संजय कुमार	श्री किशन सिंह	द्वितीय	एम०एस०सी०
५	१०१३	६१०२००	शिव कुमार	श्री लाल सिंह	प्रथम	एम०एस०सी०
६	१०१५	६३०६७०	कु० अनिता	श्री मंगल दास	द्वितीय	एम०एस०सी०
७	१०१६	६४०५००	कु० अंजू शर्मा	श्री डी० आर० शर्मा	प्रथम	एम०एस०सी०

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
८	१०१८	६४०६४७	कु० बबीता सैनी	श्री बलवीर सिंह	द्वितीय	एम०एस०सी०
९	१०१९	६४०४६४	कु० भावना सक्सेना	श्री एस० सी सक्सेना	प्रथम	एम०एस०सी०
१०	१०२०	६४०५६१	कु० चित्रा शर्मा	श्री कालीचरण शर्मा	द्वितीय	एम०एस०सी०
११	१०२१	६४०५६२	कु० गीता जोशी	श्री रमेश चन्द्र जोशी	द्वितीय	एम०एस०सी०
१२	१०२२	६३०६६६	कु० मधुरानी गोयल	श्री जी० डी० गोयल	प्रथम	एम०एस०सी०
१३	१०२३	६४०५४४	कु० मीनाक्षी	श्री दयानन्द शर्मा	द्वितीय	एम०एस०सी०
१४	१०२४	६४०६१३	कु० नीनू कुमारी	श्री एच० एन० मकरू	प्रथम	एम० ए०
१५	१०२६	६४०६१२	कु० राखी मेहता	श्री एल०डी० मेहता	प्रथम	एम०एस०सी०
१६	१०२७	६४०६४३	कु० शालिनी अग्रवाल	श्री आर०जी० अग्रवाल	प्रथम	एम०एस०सी०
१७	१०२८	६४०५६३	कु० सीमा मिश्रा	श्री राम प्रकाश मिश्रा	द्वितीय	एम०एस०सी०
१८	१०२९	६५०५३६	कु० संगीता यादव	श्री जयराम सिंह	द्वितीय	एम०एस०सी०
१९	१०३०	६४०६३६	कु० सोनिया सेठ	श्री आर० के० सेठ	प्रथम	एम०एस०सी०
२०	१०३१	६४०५३७	कु० सीमा त्रिपाठी	श्री जयप्रकाश मणि त्रिपाठी	द्वितीय	एम०एस०सी०
२१	१०३२	६४०६७१	कु० राजबाला	श्री उदय सिंह	प्रथम	एम०ए०
२२	१०३३	६४०५१३	कु० शालू गोयल	श्री सत्य प्रकाश गोयल	प्रथम	एम०एस०सी०
२३	१०३४	६४०६३६	अजय शर्मा	श्री बी०एस० शर्मा	द्वितीय	एम ए०

पी० एम० आई० आर०

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	१६७३	६४०६७६	अरविन्द अरोड़ा	श्री वीरेन्द्र अरोड़ा	प्रथम
२	१६७४	६४०६८६	अरविन्द सिंह चौहान	श्री तेज सिंह चौहान	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
३	१९७५	६४०६७४	अजय आनन्द चौहान	श्री त्रिलोक प्रसाद	प्रथम
४	१९७६	६४०६६४	अक्षत कुमार चौहान	श्री एम०पी० चौहान	प्रथम
५	१९८०	६४०६८०	चरनजीत सिंह	श्री तेजा सिंह	प्रथम
६	१९८२	६२०५१६	कृष्णपाल सिंह	श्री कर्ण सिंह	प्रथम
७	१९८५	६१०२२९	मुकेश ममगांई	श्री पी०आर० ममगांई	प्रथम
८	१९८७	६४०६७८	नवीन लुनियाल	श्री जी० डी० लुनियाल	प्रथम
९	१९८८	६४०६७२	ओमप्रकाश सिंह	श्री हरपाल सिंह	प्रथम
१०	१९९०	६४०६७३	राहुल मेहता	श्री लाजपत राय मेहता	प्रथम
११	१९९१	६४०६७७	रविप्रसाद	श्री कारी प्रसाद	प्रथम
१२	१९९२	६४०७२१	राजकुमार रावत	श्री ठाकुर मुकन्द सिंह	प्रथम
१३	१९९३	६४०६६७	राजेश देवरानी	श्री मोहन चन्द देवरानी	प्रथम
१४	१९९४	६०००४७	राजेश लौहानी	श्री भुवन चन्द्र लौहानी	द्वितीय
१५	१९९५	६४०६७५	संजीव श्रीवास्तव	श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव	प्रथम
१६	१९९८	६४०६६६	विपिन कुमार	श्री रामानन्द	प्रथम
१७	१९९९	६४०६८५	विकास अरोड़ा	श्री नन्द गोपाल अरोड़ा	प्रथम
१८	२०००	६४०६८८	विवेकपाल सिंह चौहान	श्री कबूल सिंह चौहान	प्रथम

एम०एस०सी० (गणित)

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	१७६५	८८०२००	भरत लाल गर्ग	श्री पूरणचन्द गर्ग	प्रथम
२	१७६६	८९०१९६	दुर्गादास धीमान	श्री हरीश चन्द धीमान	द्वितीय
३	१७६७	६१०४४६	राकेश कुमार भटनागर	श्री बी० ए० भटनागर	द्वितीय
४	१७६९	६४०६०५	सुविज्ञान गडतिआ	श्री गौरा गडतिआ	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
५	१७७०	६४०६०६	कु० अनिता	श्री लक्ष्मण शंकर गोटेवाल	प्रथम
६	१७७१	६४०६३३	कु० अमिता शर्मा	श्री के० एस० शर्मा	प्रथम
७	१७७२	६४०५६७	कु० आरती	श्री बी० एल० झा	प्रथम
८	१७७४	६४०६०८	कु० मधु सक्सेना	श्री कंचन स्वरूप सक्सेना	प्रथम
६	१७७५	६४०६२६	कु० नीता त्यागी	श्री आर० एस० त्यागी	प्रथम
१०	१७७८	६४०६०७	कु० योगिता बाना	श्री वेद प्रकाश बाना	प्रथम
११	१७७६	६३०५०५	कु० दीपशिखा	श्री एस० पी० एस० तोमर	प्रथम

एम०एस०सी० (भौतिक शास्त्र)

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१	१७६४	६१०२०१	अरविन्द कुमार	श्री राजेन्द्र सिंह	प्रथम
२	१७६६	६१०३११	ललित गुप्ता	श्री राम प्रकाश गुप्ता	प्रथम
३	१७६७	६४०६०४	मिथिलेश कुमार पाण्डेय	श्री भगवान देव पाण्डेय	प्रथम
४	१७६८	६४०४३८	मोहित चुग	श्री वेद प्रकाश चुग	प्रथम
५	१७६६	६०००१८	रमेश चन्द्र जोशी	श्री चरण दत्त जोशी	द्वितीय
६	१८००	६४०४३७	रमेश चन्द	श्री सुखराम	प्रथम
७	१८०१	८६०२४१	रामपाल सिंह	श्री इन्द्र सिंह	द्वितीय
८	१८०२	६१०३१०	राजेश कुमार गुप्ता	श्री आर०के० गुप्ता	प्रथम
६	१८०३	६४०४३६	सतीश कुमार	श्री नत्थू दास	द्वितीय
१०	१८०४	६२०५२१	पंकज लाल	श्री आर० बी० लाल	द्वितीय
११	१८०५	६१०४५३	अनिल कुमार पाण्डेय	श्री वासुदेव पाण्डेय	द्वितीय
१२	१७६१	८८०१२१	भूपेन्द्र कुमार	श्री गोविन्द लाल सचदेवा	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
			एम०एस०सी० (रसायन शास्त्र)		
१	१८४०	६४०४३६	अनिल कुमार धीमान	श्री बिहारी लाल धीमान	प्रथम
२	१८४१	६१०१६१	धीर सिंह	श्री होरी सिंह	प्रथम
३	१८४२	६१०२४८	हर्षवर्धन पन्त	श्री हरीशंकर पन्त	प्रथम
४	१८४३	६१०००३	मनोज कुमार	श्री वेद प्रकाश	प्रथम
५	१८४४	६००१६७	मुकुल किशोर शर्मा	श्री राधेश्याम शर्मा	प्रथम
६	१८४५	६३०५२१	ओमपाल सिंह	श्री सगवा सिंह	प्रथम
७	१८४६	६१०१८६	सुरेश कुमार	श्री बंसत कुमार	प्रथम
८	१८४७	६०००७५	शीशपाल	श्री मेहर चन्द	द्वितीय
६	१८४८	६१०१८३	विशाल शर्मा	श्री राधे श्याम शर्मा	प्रथम
१०	१८४६	६१०१६३	विपिन कुमार	श्री सुखवीर सिंह	प्रथम
			एम०एस०सी० (माइक्रोबायोलोजी)		
१	१८८६	६१०१८४	अमित कुमार	श्री बृजमोहन	प्रथम
२	१८८८	६१००३१	चन्द्र प्रकाश	श्री सुरेश चन्द्र	प्रथम
३	१८८६	६१०२६२	जय शंकर आर्य	श्री राम प्रकाश आर्य	प्रथम
४	१८६०	६१००३८	नवीन कुमार अरोड़ा	श्री राम प्रकाश	प्रथम
५	१८६१	६१०१६६	रवि कुमार	श्री वीरेन्द्र कुमार	प्रथम
६	१८६३	६१०२२५	उमेश चन्द्र जोशी	श्री हरिश चन्द्र जोशी	प्रथम
७	१८६४	६१०१८५	विनीत कुमार	श्री वेद प्रकाश शास्त्री	प्रथम
८	१८८७	६४०४०२	अमित कुमार	श्री नवरत्न सिंह धनाकक्ष	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
			१६६५ एम०एस०सी० (माइक्रो)		
१	१६०६	८६००२२	उमेश कुमार	श्री ओमप्रकाश	द्वितीय
			एम०सी०ए०		
१	२११७	६३०४५३	अमित अग्रवाल	राधेश्याम अग्रवाल	प्रथम
२	२११८	६३०४४२	असीम गुप्ता	के०के० गुप्ता	प्रथम
३	२११६	६३०४५७	आशीष भाटिया	आर०एस० भाटिया	प्रथम
४	२१२०	६३०४५२	बृजमोहन	हंसराज	प्रथम
५	२१२१	६३०४५६	धीरेन्द्र कुमार	धर्मपाल सिंह	प्रथम
६	२१२२	८७०१८३	गिरीश कुमार शर्मा	विजेन्द्र सिंह शर्मा	प्रथम
७	२१२३	६३०४५५	कंजन शर्मा	बुद्धदेव शर्मा	प्रथम
८	२१२४	६०००२२	कपिल कुमार	विजय कुमार	प्रथम
६	२१२५	६१०४२२	मनीष वी० शर्मा	वी०बी० शर्मा	प्रथम
१०	२१२६	६३०५१२	मनोज कुमार शर्मा	सीताराम शर्मा	प्रथम
११	२१२७	६३०६०७	नरेश चन्द्र	सोरण सिंह	प्रथम
१२	२१२८	८६०००६	नवीन कुमार	एल०पी० सिंह	प्रथम
१३	२१३०	६३०४४३	नीरज कपूर	कृष्ण कुमार कपूर	प्रथम
१४	२१३१	६३०५१३	नीतिन अग्रवाल	चुन्नी लाल अग्रवाल	प्रथम
१५	२१३२	६३०४५१	पंकज मलिक	विजय सिंह मलिक	द्वितीय
१६	२१३३	६३०५११	पीयूष वर्द्धन	सरजू प्रसाद यादव	प्रथम
१७	२१३४	६३०४४७	प्रतीक माहेश्वरी	रमेश चन्द्र माहेश्वरी	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
१८	२१३६	६००१५६	संजय भार्गव	मनमोहन स्वरूप भार्गव	प्रथम
१६	२१३७	६३०४४८	संजय प्रकाश	केदार नाथ यादव	प्रथम
२०	२१३८	६३०४४६	संजय कुमार वर्मा	ब्रह्मपाल वर्मा	प्रथम
२१	२१३६	६००१४५	संजीव कुमार	वेद प्रकाश शास्त्री	प्रथम
२२	२१४०	६३०४५४	सतीश कुमार पाल	नारायण दास पाल	प्रथम
२३	२१४१	८६०१००	शशिकान्त शुक्ला	श्रद्धानंद शुक्ला	प्रथम
२४	२१४२	६३०४५६	सुभाष चन्द	गिरधारी लाल	प्रथम
२५	२१४३	६३०५०८	सुधीर	जगन्नाथ	प्रथम
२६	२१४४	६३०६००	सुधीर कुमार चावला	ठाकुर दास चावला	प्रथम
२७	२१४५	६३०५६६	वागीश पालीवाल	विष्णुदत्त राकेश	प्रथम
२८	२१४६	६३०४५८	विजय कुमार डण्डरियाल	आनन्द स्वरूप डण्डरियाल	प्रथम
२६	२१४७	६३०४४५	विजय कुमार टोंक	बी०के० टोंक	प्रथम
३०	२१४८	६३०५०६	विनीत आनन्द	आर०के० आनन्द	प्रथम
३१	२१४६	६३०४५०	विपिन कुमार राणा	वीरपाल सिंह	प्रथम
३२	२१६४	६३०५१०	रजनीश झाम्ब	मनोहरलाल झाम्ब	प्रथम
३३	२१५०	६३०५८५	कु० अनुपमा वर्मा	बी०एस० वर्मा	प्रथम
३४	२१५१	६३०५८६	कु० गरिमा जैन	रवीन्द्र कुमार जैन	प्रथम
३५	२१५२	६३०६४२	कु० ज्योत्सना	सुदेश पालसिंह	प्रथम
३६	२१५३	६३०५८८	कु० निशा गुप्ता	बालेश कुमार गुप्ता	प्रथम
३७	२१५६	६३०५६१	कु० मनीषा शर्मा	राज कुमार शर्मा	प्रथम
३८	२१५७	६३०५८६	कु० वसुधा शर्मा	आर०डी० शर्मा	प्रथम

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
३६	२१५८	६३०५६०	कु० वन्दना शर्मा	राजेन्द्र कुमार शर्मा	प्रथम
४०	२१५६	६३०६५७	कु० सुरभि	हरिशंकर	प्रथम
४१	२१६०	६३०५६५	कु० सुमन	रामचन्द्र	प्रथम
४२	२१६१	६३०६४०	कु० शैली	डी०पी० सिंह पुण्डीर	प्रथम
४३	२१६२	६३०५६३	कु० शिवा	भोपाल सिंह रोहल	प्रथम
४४	२१६४	६३०५८७	कु० नीलम सेठी	एम०एल० सेठी	प्रथम
४५	२१६५	६३०५६६	कु० विनीता त्यागी	ब्रह्मपाल सिंह त्यागी	प्रथम
४६	२१६६	६३०५८४	कु० अंजना अग्रवाल	मदन मोहन अग्रवाल	प्रथम